लक्ष्मीवेङ्कटेशायनमः ।

श्रीमन्महानुभावब्रजवासीदासकृत ।

ब्रजविलास.

सटिप्पण

जिसमें नित्यनिकुंजविहारी राधाकृष्णकी अशेष विचित्रविचित्र ब्रज-
लीला अनेक दोहा, सोरठा, चौपाई आदिमें वर्णन करी हैं ।

जिसको

लोकरंजनार्थ अनेक विद्वज्जनोंके द्वारा शुद्ध कराकर

द्वितीयवार

गंगाविष्णु-श्रीकृष्णदासने

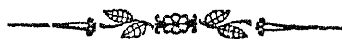
निज " लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " छापाखानेमें छापकर

प्रकट किया

कल्याण-मुंबई

भाद्रपद संवत् १९५१ तथा सप्टेंबर सन् १८९४ ईसवी.

प्रस्तावना.



विदित हो कि यह जगत्प्रसिद्ध पुस्तक कई वेर अन्यत्र छपी परन्तु रसिकवृंद इसके रसकापान कर संतुष्ट न हुये इसलिये हमने अत्यन्त उत्तमता पूर्वक बहु प्राचीन ब्रजकी पुस्तकोंसे मुकाबिला करवाय और श्रीवर पण्डित दत्तराम चौबे आयुर्वेदोद्धारकसे शुद्ध करवाय परम पुष्ट मोटे अक्षरोंमें छापी जो आप लोगोंके नेत्रगोचर है इसकी टिप्पणीभी उक्त पण्डित व पण्डित कृष्णविहारी शुक्ल बदर्क ग्राम निवासि से कराई जिससे सब छोटे बडे सुजन जनोंको समझनेमें सुलभ पडे आप लोगोंके चित्तविनोदार्थ हमने जो यह परिश्रम कियाहै आशा है कि सर्व महात्मालोग हरिभक्त कृपापूर्वक ग्रहण करेंगे. और जो कोई भूलचूक इसमें छपते रहगई हो उसको सर्व महात्मालोग क्षमा करके कृपापूर्वक उसका शुद्धाशुद्ध पत्र बनाकर भेजेंगे तो हम पुनर्वार छापकर आप लोगोंके दृष्टिगोचर करेंगे.

दोहा—यद्यपि छपिहै बंबई, लखनउ मथुरामाहिं ।
पर प्रभुकी यह प्रेरणा, छपी सो दूसरि नाहिं ॥
श्रीयुत पण्डित विशदमति, दत्तराम गुणवान ।
सहित टिप्पणी शोधि यीह, कियो जगतकल्यान ॥
बहुरिसो अवसर पाय धन, करि मन बहुत बिचार ।
पण्डित कृष्णविहारिने, शोधी मतिअनुसार ॥
जो यह पुस्तक छापि हैं, विनआज्ञा यंत्रेश ।
उचित दण्ड ते पाइहैं, लाभ लागि बहु क्लेश ॥

आपका शुभचिंतक—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

“लक्ष्मीवेंकटेश्वर”छापाखाना

कल्याण—मुम्बई.

॥ श्रीः ॥

अथ ब्रजविलास की लीलाओं का सूचीपत्र.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना कल्याण-मुम्बई.

शाक्तप्रमोद.

दश महाविद्या और पञ्च देवों का पञ्चाङ्ग।

भारतनिवासी सम्पूर्ण द्विजोत्तमों को विदित हो कि यह अलभ्य, क्लिष्टता से प्राप्त, परम गुप्त, अत्युत्तम, नवीन ग्रन्थ हमारे यहां छपा है। इस में आदिशक्ति जगन्माता के दशों स्वरूप अर्थात् काली, तारा, त्रिपुरसुंदरी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुरभैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमलात्मिका तथा पञ्च देवता—दुर्गा, शिव, गणेश, सूर्य, विष्णु का वेदोक्त, शास्त्रोक्त, मंत्रोक्त, तंत्रोक्त, विस्तार पूर्वक वर्णन लिखा है तथा फोटोग्राफ के अनुसार सब देवी देवताओं के यथावत् चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य ५ रु०

भागवतसार।

भगवान के चरण-कमलों के प्रेमियों और कथा श्रवण करने के नेमियों के निमित्त भक्ति मुक्ति के क्षीरसागर श्रीमद्भागवत का भली भांति मथन कर अमृतरूप यह 'भागवतसार' तयार किया गया है कि जिस का वारंवार पठन पाठन कर भक्त जन अनुपम आनन्दको प्राप्त करें। और भगवान के मंदिर में जाने को महान् परिश्रम समझते हैं ऐसे नरभी इस 'सार' का घरद्वार पर बैठे पाठ कर भवसागर से पार उतरें। इसकी रसीली भाषा और लेख की गम्भीरता का अनुभव पुस्तक देखनेही से होगा। इस अधमउद्धारिणी भक्तिप्रचारिणी परम हितकारिणी पुस्तक का मूल्य १ रु० मात्र।

सामान्य निरुक्ति—न्यायशास्त्र तत्वप्रदर्शिनी श्रीरंगनाथीय नवीन विवेचनासहित अपूर्व ग्रन्थ मूल्य ४ रु० मात्र **गोरक्षपद्धति**—परम प्रसिद्ध, अलौकिक योगशक्तिशाली, परम योगीश्वर श्रीगोरक्षनाथजी ने स्वयम् यह परम उपकारक ग्रन्थ निर्माण किया है इसलिये इसकी प्रशंसा जितनी की जाय उतनी थोडी है। विशेषता यह कि भाषाटीका साथ है। सर्व साधारण के सुभीते के लिये मूल्य केवल १२ आनेही रक्खे गये हैं। **हितोपदेश**—नीतिविषयक परम प्रसिद्ध और सर्वोत्तम ग्रन्थ। भाषाटीका सहित छापागया है मूल्य १ रु ८ आ० मात्र। **जंजीरा**—कवि कालिदास विरचित चुहचुहाते और टपकते हुए ललित कवित्तों का संग्रह। इसमें श्रीकृष्णभगवान की केलिकथा का वर्णन है. मूल्य ३ आ०। **सदुपदेशमाला**—महाभारत और भागवतादिक ग्रन्थों की अनेक कथाओं के धर्म अर्थ और राजनीति के बोधक सार वचनों का यह छोटासा संग्रह है मूल्य २ आ. मात्र। **न्यायमुक्तावली**—न्यायशास्त्र का प्रसिद्ध ग्रन्थ। मूल्य ८ आ० मात्र। **संस्कृतनामावली**—बोलचाल में काम आनेवाले सब प्रकार के संस्कृत शब्दों का भाषा में अर्थ, मूल्य २ आ० **कलाविलास**—एक हजार कलाओं की कलित कथा। व्यवहार का रहस्य समझाने और संसार का सुख प्राप्त करानेवाला यही पुस्तक है. छपगया। **मदनपालनिघंटु**—वैद्यजनों का परमसहायक और संपूर्ण द्रव्यों के नाम गुण बतानेवाला चमत्कारक प्राचीन ग्रन्थ भाषाटीका सहित छपकर तैयार है। न्यायतत्वबोधिनी—न्यायदर्शन की अति उत्तम सरल भाषाटीका सुन्दरता के साथ छपकर तयार है मूल्य १। रु०। **श्रीगोपाल सहस्रनाम** अति सरल, प्रामाणिक और गूढार्थ प्रकाशिका भाषाटीका सहित छपकर तयार है। इसकी टीका को देख विद्वज्जन अवश्य संतुष्ट होंगे। मूल्य ६ आना मात्र। **गीताश्लोकार्थदीपिका**—गीताजीकी सम्पूर्ण प्रकाशित टीकाओं में सबसे उत्तम यही टीका है इसलिये कि किसी मतविशेष का पक्ष न कर यथार्थ अर्थ का प्रतिपादन करती है कि जिसको अनेक विद्वज्जनों ने मान्य किया है मूल्य १। रु०। नारायणकवच (भाषाटीका) मूल्य २ आ० **सप्तगीत** (श्रीमद्भागवतान्तर्गत वेणुगीत, गोपीगीत, भ्रमरगीत, युगलगीत, श्रुतिगीत, महिषीगीत और अवधूतगीत) परम पावन रसमय श्लोकों की चित्त-कमल को प्रफुल्लित करने वाली भाषाटीका सहित छपकर तयार, मूल्य ८ आ० गीता चिद्घनानन्द स्वामीकृत टीका सहित ८ रु० गीता आनंदगिरि कृत भाषाटीका ३ रु०। शिवसंहिता १ रु० शाक्तप्रमोद ५ रु० गरुड पुरान भाषाटीका १ रु० मनुस्मृति भाषाटीका २॥ रु० मनुस्मृति कुल्लूकभट्टीय संस्कृतटीका २ रु० ज्योतिषसार भाषाटीका १ रु० गीतगोविंद संस्कृत तथा भाषाटीका सहित १। रु० रघुवंश सटीक २ रु० बृहन्निवण्टरत्नाकर वैद्यक का अति उत्तम ग्रन्थ भाषाटीका सहित ४ भाग १२ रु० संप्रदाय कल्पद्रुम १। रु० रागरत्नाकर बडा २ रु० सितारचन्द्रिका ६ आना. विशेष देखना हो तो एक पोष्टकार्ड भेजकर बडा सूचीपत्र मंगालीजिये।

श्रीमद्भागवत केवल भाषा—खुलापत्रा श्लोकांकसहित (कथा बांचने वालों के लिये परम उत्तम) श्रीमद्भागवत—मूल मात्र—(पाठ करने के उपयोगी) शुकसागर—बृजभाषाटीका और श्रीमद्भागवत भाषाटीका। श्रीमद्भागवत वीरराघवी टीका—स्वरताल समूह (गान विद्याका अलौकिक पुस्तक बिना उस्ताद के सितार बजाना और गाना सीखनेके लिये परम उत्तम) काव्यमंजरी (छन्दोंके भेद और बनाने की रीति तथा अलङ्कार का पूरा वर्णन छत्रबंधादिक प्रस्तार इत्यादिक विषयोंका पूर्ण रीति से ज्ञान कराने वाला उत्कर्ष ग्रन्थ) ये सब ग्रन्थ छप रहे हैं।




वसुदेव

नंद
कृ
यशोदा

पूतना
कृ.
यशोदा

अघासुर
कृ.

यशोदा
कृ.

ब्रह्मदेव
कृ.

ग्वाल
यशोदा
कृष्ण

धेनुकासुर
कृ.

बकासुर
वत्सासुर
कृ.

कृ.
का.


दावानल
कृ.


गोपी
गोपी


प्रलंब
कृ


गोवर्द्धनोद्धार


गोपी
राधा
कृष्ण
गोपी


विद्याधर
कृ.


शंखचूड
कृ.


केशी
कृ.


व्योमासुर
कृ.


अ


अक्रूर.
नंद
कृ
ब.


अ.


कुबजा
कृ.

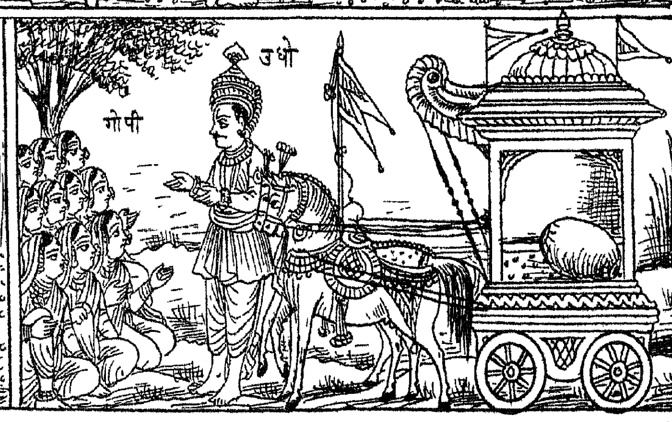

कुवलया पीड
कृ.
ब.




ब.
कृ
कंस


कृ.
उग्रसेन


कृ


उधो
गोपी

श्रीः ।

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ।

अथ श्रीब्रजविलास ।

(मंगलाचरण)

सोरठा-

होत गुणनकी खान, जाके गुण उरगनतहीं ॥
द्रवो सु दयानिधान, वासुदेव भगवंत हरि ॥ १ ॥
मिटत तापत्रय[1] फांसि, जासु नाम मुखसों कहत ॥
वन्दौं सो शुभराशि, नन्दसुवन सुन्दर सुखद ॥ २ ॥
अरुण कमल दलनैन, गोपवृन्द[2] मंडन शुभग ॥
करहु सो मम उर ऐन, पीताम्बर वर वेणुधर ॥ ३ ॥
वन्दौं जगत अधार, कृष्णाग्रज बलदेवपद ॥
अभिमत[3] फल दातार, नीलाम्बररेवतिरमण ॥ ४ ॥
श्रीगुरु कृपानिधान, वन्दौं पद महि माथ धरि ॥
जासु वचन जलयान[4], नर चढि भव[5]सागर तरहिं ॥ ५ ॥
वंदौं संत कृपाल, पद सरोज[6]रज राखि शिर ॥
जग हितरत शुभमाल, जिन जिन गुण हरिवशकरे ॥ ६ ॥
पुनि वंदौं ब्रजदेश, परम रम्य पावन परम ॥
महिमा जासु सुदेश, राधानाथ विहारथल ॥ ७ ॥
प्रथम कृष्णको तात मनाऊं ❋ श्रीवसुदेव चरण शिरनाऊं ॥
बहुरि देवकी पद जलजाता ❋ वंदन करौं कृष्णकी माता ॥

१ अध्यात्म । अधिभूत । अधिदैव । २ समूह । ३ वांछित । ४ नौका । ५ संसारसागर । ६ कमल ।

इनते और कौन बड़भागी ❀ ब्रह्म धर्यो नर तनु जिनलागी ॥
वंदौं नंद महरके चरणा ❀ सहित यशोमति मंगल करणा ॥
जिनकी महिमा भाग्य बड़ाई ❀ निगमागम शिव शारद गाई ॥
वंदौं रोहिणि पद जलजाता ❀ कृष्णाग्रज बलदेवकी माता ॥
कीरतयुत वृषभानु गोपवर ❀ वंदौं चरण कमल रज शिरधर ॥
तात मात राधा रानीके ❀ त्रिभुवन ठाकुर ठकुरानीके ॥
कृष्ण कमल दृगकी कमलाके ❀ कलुष विभंजन सब विमलाके ॥
वंदौं श्रीराधापद अम्बुज ❀ जिनके ध्यान मिटत भवभैरुज
होत कृष्ण सहजहि वशताके ❀ प्रेमसहित गुणगावत जाके ॥
वन्दौं सो वृषभानु दुलारी ❀ कृष्ण प्राण जीवन धन प्यारी ॥

दोहा—राधाकृष्ण पदाम्बुजन, वन्दौं महि शिर टेक ॥
ब्रज बिलास हित दोयतन, प्रगट कियेहैं एक ॥
सो० वन्दौं युगल किशोर, रूपराशि आनंदघन ॥
दोऊ चंद्र चकोर, प्रीति रीति रसवश सदा ॥

अपर गोप गोपी गोपाला ❀ जिनके सँग विचरहिं नँदलाला ॥
गाय बच्छ बालक ब्रजवासी ❀ जिनके सखा कृष्ण अविनासी ।
और जात जो ब्रजहिं निवासी ❀ वंदौं सकल सुकृतकी रासी ॥
मथुरापुरी नारि नर नागर ❀ गोकुलादि जो ग्राम उजागर ॥
श्रीयमुनासरि पर्व पुनीता ❀ जासु दरश नहिं यमपुर भीता ॥
पर्वत वापी कूप तड़ागा ❀ श्रीवृंदावनादि वन बागा ॥
खग मृग जलचर जीव विभागा ❀ वंदौं सकल सहित अनुरागा ॥
वंदौं गिरि गोवर्द्धन देवा ❀ अपर देव तिन सम नहिं केवा ॥
सुरपति मेटि जाहि हरि पूजा ❀ आनदेव तिन समको दूजा ॥

१ वेद-पुराण । २ पृथ्वी । ३ बावड़ी । ४ तलाव । ५ पखेरू । ६ इन्द्र । ७ जिनका ।

अति रमणीय रेत यमुनातट * उपवन अमित सुभग वंशीवट ॥
जहँ जहँ श्रीहरि धेनु चराई * सुन्दर श्यामल कुँवर कन्हाई ॥
रास बिलास जहां हरि कीन्हों * भक्तवछल भक्तन सुखदीन्हो ॥
दो०—जड़चेतनब्रजदेशके, तृण तरु मांहिरज जेत॥
वंदौं कीट पतंग सब, पुनि पुनि प्रीति समेत ॥
सो०—ब्रज जनपद शिर राख, विनय करौंकरजोरि पुनि॥
मोमनको अभिलाष, पूरन करिये जानजन ॥
ब्रजबिलास कछु कहौं बखानी * करन पुनीत जान निजवानी ॥
सो तबलौं नहिं उरमें आवे * जबलग तुम्हरी कृपा न पावे ॥
मैं मन वच क्रम तुम्हरो दासा * तातेपुरवहु मोरी आसा ॥
यद्यपि मति इतनी मोहिं नाहीं * करौं उक्ति कछु निज तेहि माहीं
तहां एक मैं कियो विचारा * या विधि बल अपने उर धारा॥
श्रीशुकदेव कही हरि लीला * सुनी परीक्षित सब गुणशीला ॥
सूरदास सोइ हरिरस सागर * गायो बहु विधि परम उजागर॥
फैल रह्यो सो त्रिभुवन माहीं * गावत सुनत सुयश हरषाहीं॥
विविध प्रकार चरित हरिकेरे * तामहि वरणे सूर घनेरे ॥
सो वह प्रीति रीति सुखदाई * मेरे मन अतिशय करिभाई ॥
सोतो कथा अमित विस्तारा * मोपै पायो जात न पारा ॥
तामें ब्रजबिलास सुखदाई * सो कछु कहिहौं कर चौपाई ॥
दो०—भाषाकी भाषा करौं, क्षमियो कवि अपराध ॥
जिहि तिहिं विधि हरि गाइये, कहत सकल श्रुतिसाध॥
सो०—हरिपद प्रीति नहोय, विन हरि गुण गाये सुने ॥
भवते छुटत न कोय, विना प्रीति हरिपद भये ॥

१ पृथ्वी । २ कविता ।

तातें मैं सन्तन शिर नाई ❀ गावौं हरियश जन सुखदाई ॥
जो ब्रजमें हरि कियो विलासा ❀ सो कछु कहिहौं सहित हुलासा
यामें इतनी ❀ कथा बखानौं ❀ ताकी सूचनका यह जानौं ॥
श्रीवसुदेव देवकी व्याही ❀ चल्यौ कंस पहुँचावनताही॥
तहां भई नभवाणी वाही ॥ सुनिके कंसडर्यो पुनिताही॥
अठयों गर्भ होयगो याके ❀ तेरी मृत्यु हाथ है ताके ॥
तबइ देवकी हतन विचार्यो ❀ करि विनती वसुदेव उबार्यो॥
सबसुत ताहिदेन को भाखे ❀ नृप तब दुहुँन बन्दिमें राखे ॥
षट् बालक तिनके नृप मारे ❀ पातक भये भूमिपर भारे ॥
दुखित गई सो हरिके पासा ❀ हरिताको जिमि दई दिलासा ॥
पुनि संकर्षण गर्भहि आये ❀ तिनको बहुरि रोहिणी जाये ॥
सो सब कहिहौं मति अनुमाना ❀ जैसी भांतन सुन्यो पुराना ॥

दोहा—पुनि भगवान अनादि अज, ब्रह्म सच्चिदानन्द ॥
प्रगट भये वसुदेव गृह, निज इच्छा सुखकन्द ॥
सो०—तात मात सुख देन, सुन्दर रूप दिखायके ॥
कियो परम उरचैन, दूर किये दुखद्वंद्व सब ॥

तात मात पुनि जिमि समझाये ❀ लैगोकुल वसुदेव सिधाये ॥
यशुदा गोद राखि घनश्यामहि ❀ कन्या तासु गये लै धामहि ॥
कंसासुर सो कन्या पाई ❀ सो जैसे आकाश सिधाई ॥
तासु वचन सुनि अति भयमाना ❀ बालक हतन मंत्र तबठाना ॥
बजे नन्दघर अँनद बधाये ❀ ब्रज युवतिन मिल मंगल गाये ॥
भयो नन्दघर अति उत्साहू ❀ ब्रज वासिनको परम उछाहू ॥
प्रीति सहित सो सब सुख गैहौं ❀ जितनो निज मति को बल पैहौं

❀ यहांसे श्रीब्रजवासीदासजी ब्रजविलासकी कथानकी सूचना कहेहैं । १ आकाशवाणी ।

बहुरि कंस पूतना पठाई सो जैसे हरिके ढिग आई ॥
ताहि मारिजननी गति दीन्ही ❀ प्राण पान करि पावन कीन्ही ॥
कागासुरपुनि जाविधिआयो ❀ ताको पुनि हरि मारि बहायो ॥
बहुर्‌यो शकट चरण ते डार्‌यो ❀ तृणावर्त्तको जाविधिमा यो ॥
अन्न पराशनादि जे कर्मा ❀ किये नंद जिमानजकुलधर्मा ॥

दो०—बाल चरित्र पवित्र पुनि, जिमि कीने अभिराम ॥
जानु पाणि चलि सुख दियो, तात मातकोश्याम ॥

सो०—ब्रज जनके मनमोद, चले बहुरि पाँयन कछुक ॥
कीने बाल विनोद, नन्द यशोमतिके अजिर ॥

गर्ग आय लक्षण पुनि भाषे ❀ पुनिसबब्रजवासीअभिलाषे ॥
पुनि बालनसंग खेलन लागे ❀ बालखेल लीला अनुरागे ॥
विप्रपाक जैसे छुइ लीनो ❀ चन्दाहेत बहुरि हठ कीनो ॥
कर्नछेदन लीला सुखदाई ❀ कहि सब आनन्द बधाई ॥
पुनि हरि खेलत माटी खाई ❀ यशुमतिले सांटी उठिधाई ॥
माता आगे मुख जिमि बायो ❀ ताही में त्रिभुवन दिखरायो ॥
शालग्राम मेलि मुख लीन्हों ❀ नन्दहि पूजामें सुख दीन्हों ॥
अन्हवावनहित जिमिमचलाये ❀ बहुत भांति यशुमति फुसलाये
ग्वालन संग बहुरि अनुरागे ❀ माखन चोरीके रस पागे ॥
बहुरों माता क्रोध उपायो ❀ भक्तिहेत दावरी बँधायो ॥
यमला अर्जुन वृक्ष ढहाये ❀ धनद सुतनके पाप नशाये ॥
पुनि बनगोचारन मन आन्यो ❀ ग्वालन संग जान हठठान्यो ॥

दो०—बहुरि जाय वनमें हन्यो, बत्सासुर नँदनन्द ॥
ग्वाल संग आनँद सहित, घर आये सुखकन्द ॥

१ माता। २ पवित्र। ३ घुटरुअन। ४ आंगन। ५ कर्णछेदन। ६ कुबेर।

सो०—सोकरिके विस्तार,प्रेम सहित सब वरणिहौं ॥
निज मतिके अनुसार,ब्रजवासी प्रभुकेगुणन ॥
गोदोहन जैसे पुनि कीनो * तात मात ब्रजजन सुखदीनो ॥
मोतीबये नन्दके धामैं * सुर नर लखि चकृत भयेजामैं ॥
बहुरि जाय वन नन्दकुमारा * बका असुरको वदन विदारा ॥
बहुरें बालचरित चितदीने * भौंरा चकई खेलन लीने ॥
श्रीराधा सों प्रीति बढ़ाई * कीने चरित ललित सुखदाई ॥
अघा असुर मार्‍यो पुनि जाई * ग्वालन संग छाक वन खाई ॥
भयो मोह जिमि विधिके मतमें * बालक वत्स हरे तिन वनमें ॥
तिनको रूप आप प्रभुकीनो * ब्रजके वासिनको सुखदीनो ॥
सो सब कहिहौं कर विस्तारा * अघनाशन प्रभु चरित उदारा ॥
श्रीवृषभानु लली पुनि आई * जैसे हरिसों गाय दुहाई ॥
कहिहों सो रसकथा सुहाई * अति विचित्र जनमन सुखदाई ॥
बहुरे धेनुकको वधकीनो * विष जलते ग्वालन रखलीनो ॥
दो०—पुनि नाथ्यो काली उरग,जलमें पैठि मुरारि ॥
यमुनाजल निर्मल कियो. ब्रजते दियो निकारि ॥
सो०—कियो दावानलपान, राखिलिये ब्रज लोग सब ॥
जिनके कृपानिधान,सदा भक्ति संकट हरण ॥
बहुरि प्रलंब असुर ब्रज आयो * खेलतमें हरि ताहि नशायो ॥
पनघट यमुनातट पुनि जाई * गोपिनसो रसकियो कन्हाई ॥
चीरहरण लीला पुनि कीनी * कहिहों सकल प्रेम रसभीनी ॥
पुनि वृन्दावनमें सुखशीला * ग्वालनसंग करी जो लीला ॥
वृन्दावनकी महत बड़ाई * श्रीमुख श्रीबलजू सों गाई ॥

१ ब्रह्मा। २ पाप । ३ सर्प।

ऋषिपत्निनसों भोजन लीनो ❀ भक्ति दान तिनको प्रभु दीनो॥
पुनि श्रीगोवर्द्धन गिरि राई ❀ ब्रज थापे सुरपतिहि मिटाई॥
सुरपति कोपिकियो यह जानी ❀ वरष्यो प्रलय काल को पानी॥
तब प्रभु गिरिकरधरि ब्रज राख्यो ❀ जै जै सब ब्रजवासिन भाख्यो
सो सब अनुपम कथा सुहाई ❀ कृष्ण कृपाते कहिहौं गाई ॥
नन्दहि पकरि वरुणके दासा ❀ जिमि लै गये वरुणके पासा ॥
लाये श्याम तहाँ ते जाई ❀ ब्रजमें भइ आनन्द बधाई ॥

दोहा—बहुरों पुर वैकुंठजो, अति पुनीत निजधाम ॥
ब्रजवासिनको करि कृपा, दिखरायो घनश्याम ॥

सो०—सोसब कथा अनूप, अति विचित्र पावन परम ॥
कहिहौं मति अनुरूप, सन्तजनन मन भावनी ॥

पुनि जो करी श्याम सुखशीला ❀ अति अद्भुत ब्रजमें रसलीला॥
श्रीराधा वृषभानु दुलारी ❀ और सकल ब्रज गोप कुमारी॥
तिन सों मिल श्रीकुञ्जबिहारी ❀ रस शृंगार लीला विस्तारी ॥
आनंद मई सकल सुखकारी ❀ गाय तरत भव सब नर नारी ॥
जिमि गोपिन हरि सों मन लायो ❀ प्रेम पंथ दृढकरि दिखरायो ॥
गोरस लै निकसीं ब्रजनारी ❀ जिमि दधि दानलिये वनवारी॥
भईं प्रेम उनमत्त गुवारी ❀ लोक लाज तनु दशा विसारी॥
बहुरि चरित्र कुँवरि राधाके ❀ परम पवित्र हरण बाधाके ॥
जैसे मिली श्याम सों जाई ❀ बहुरौं जैसी प्रीति दुराई ॥
पुनि संकेत चरित्र विविधवर ❀ किये प्रिया प्रीतम अतिसुन्दर
गर्व विरह अभिलाष परस्पर ❀ अति रहस्य लीलासुंदरवर ॥
कहिहौं सकल कथा सुखदाई ❀ भक्ति रसज्ञन के मन भाई ॥

१ मथुराद्विजनकीस्त्री । २ गोवर्द्धन । ३ भक्तिरसकेजाननेवारे ।

दोहा—देखि मुकुर[1] में लाड़िली, पुनि जैसो निजरूप ॥
विवस भई सो गायहौं, लीला परम अनूप ॥
सो०—पुनि नैनन अनुराग, अरु मुरलीकीप्रियकथा ॥
कहिहौं सहित विभाग, प्रेम सुधारस सों भरी ॥
बहुरौं शरदरैनि अति पावन * श्रीवृन्दावन परम सुहावन ॥
तहाँ श्याम बाँसुरी बजाई * घर घर ते ब्रज नारि बुलाई ॥
कियो रास रस रसिक बिहारी * भईं प्रेम गर्वित तहँ नारी ॥
अन्तरध्यान चरित तब कीनो * गर्व[2] गोपिकनको हरिलीनो ॥
कियो महा मंगल पुनि रासा * बाढ्यो परमानन्द हुलासा ॥
पुनि जल[3] केलि करी मनभावन । कहिहौं चरित सकल अतिपावन
मान[4] चरित लीला सुखदाई * करी बहुरि जिमि कुँवर कन्हाई
विस्तर सहित कहौं सो वरनी * भरी प्रेम रस आनँद करनी ॥
बहुरौं जाय हिंडोला झूले * भये सकल गोपिन अनुकूले ॥
ऋतु बसंत फागुन जब आयो * कियो फाग रँग सब मन भायो
सो रस कथा सकल सुखदानी * मति समान सब कहौं बखानी ।
पुनि विद्याधर[5] शाप नशायो * अजगर तनु ते ताहि छुड़ायो ॥
दोहा—शंखचूड़ मारयो बहुरि, अधम निशाचर नीच ॥
पुनि मार्यो वृषभा असुर, हरि ब्रजवासिन बीच ॥
सो०—वध्यो बहुरि गोपाल, केशी व्योमा असुरजिमि ॥
दुष्टदलन नँदलाल, कहिहौं चरित पुनीत सब ॥
बहुरि आय नारद यश गायो * सुनि के श्याम बहुत सुख पायो
तबहिं कंस अक्रूर पठायो * लेन कृष्ण को सो ब्रज आयो ॥
भये सुनत ब्रज लोग उदासी * मधुपुरि[6] चले बहुरि सुखरासी ॥

१ दर्पण । २ अभिमान । ३ जलविहार । ४ मानलीला । ५ सुदर्शनविद्याधर । ६ मथुरा ।

जब अक्रूर हृदय दुख पायो ❀ तब हरि जलमें दरश दिखायो ॥
भये सुखी लखि प्रभु प्रभुताई ❀ सो सब चरित कहौं सुखदाई ॥
गये बहुरि मथुरा रजधानी ❀ मार्‍यो प्रथम रजक[1] अभिमानी
बसन लुटाय सखन पहिराये ❀ बहुरि सुदामाके घर आये ॥
कुबजाते चन्दन हरि लीन्हों ❀ ताको रूप अनूपम दीन्हों ॥
तोर्‍यो धनुष असुर बहु मारे ❀ द्विरद[2] जीति पुनि दंत उखारे ॥
भिरे बहुरि मल्लन सों जाई ❀ कियो युद्ध तिनसों दोउ भाई ॥
जीति मल्ल सब असुर संहारे ❀ डर्‍यो कंस लखि अति बलभारे
गये नृपति पहँ तब दोउ भाई ❀ दियो मंचते[3] भूमि[4] गिराई ॥

दोहा—मारि कंस पुनि केश[5] धरि, दियो यमुनजल डारि ॥
उग्रसेन राजा कियो, चमर छत्र शिर ढारि ॥

सो०—बहुरि दियो सुख जाय, बन्दि काटि पितु मातकी ॥
सुंदर दरश दिखाय, भयो तहां मंगल परम ॥

कहिहौं सकल चरित विस्तारी ❀ भव[6] भय भंजन मंगलकारी ॥
करि मधुपुरिके लोग सनाथा ❀ कुबिजासदन[7] बसे ब्रजनाथा ॥
नंद बिदा करि ब्रजहिं पठाये ❀ बिछुरत ब्रजबासिन दुखपाये ॥
हरितजि नंद आये ब्रज जबहीं ❀ भई यशोदा व्याकुल तबहीं ॥
गोपी सुनि हित कुबिजा हरिको ❀ कियोपरेखो अति गिरिधरको ॥
भई बिरहवश सब ब्रजबाला ❀ कहिहौं सो सब प्रेम विशाला ॥
पुनि कुल रीति जानि बसुदेऊ ❀ हरि हलधरको कियो जनेऊ ॥
विद्या निधि पुनि जानतराई ❀ विद्या पढन लगे दोउ भाई ॥
पूरण काम गुरूके कीन्हे ❀ मरे पुत्र प्रभु तिनके दीन्हे ॥
ज्ञान गर्व उद्धव मन जानी ❀ पठये ब्रजहिं श्याम सुखखानी ॥

१ धोबी । २ कुबलयापीडहाथी । ३ मांच्यो । ४ पृथ्वी । ५ चुटिया । ६ संसारभय । ७ कुब्जाके घरमें ।

सो उद्धव गोपी सम्वादा ❀ प्रेम भक्ति रसकी मर्य्यादा ॥
कहौं सु कथा विचित्र सुहाई ❀ भक्त जननको अति सुखदाई ॥
दो०—पुनि उद्धव जैसे गये, प्रेम भक्तिको पाय ॥
ब्रजवासिनकी सब कथा, कही श्याम सों जाय ॥
सो०—ब्रजहिं रहे ब्रजराज, ब्रजवासिनके प्रेमवश ॥
किये सुरनके काज, धारि चतुर्भुज रूप पुनि ॥
सो द्वारका चरित्र सुहाये ❀ प्रकट पुराणनमें सब गाये ॥
अति विचित्र हरि चरित अपारा ❀ काहू गाय लह्यो नहिं पारा ॥
मति समान बुध जन सब गावैं ❀ गाय गाय तनु पाप नशावैं ॥
हरिपदपंङ्कज प्रीति बढावै ❀ मन चंचलको तहाँ रमावै ॥
ब्रजविलास हरिको अतिपावन ❀ रस माधुर्य चरित्र सुहावन ॥
ताते कछुक कहत हौं गाई ❀ सब सन्तनके पद शिरनाई ॥
यामें कछुक बुद्धि नहिं मेरी ❀ उक्ति युक्ति सब सूरहि केरी ॥
कियो सूररस सिंधु उधारा ❀ तामें प्रेम तरंग अपारा ॥
हरिके चरित रत्न विधि माना ❀ ब्रजविलास सो सुधा समाना ॥
पद रचना करि सूर बखान्यो ❀ कोमल विमल मधुर रस सान्यो ॥
समय समयके राग सुहाये ❀ अति विस्तार भाव मन भाये ॥
ताको स्वाद कह्यो नहिं जाई ❀ कहत सुनत श्रवणन सुखदाई ॥
दो०—अतिशय करि मोहत मनहिं, गँधरवगुणके संग ॥
कहत बनै तामें नहिं, क्रमसों कथा प्रसंग ॥
सो०—मेरे मन अभिलाष, प्रभु प्रेरित ऐसो भयो ॥
कहिहौं यह रस भाष, क्रमसों कथा प्रसंग सब ॥
ताते निजमनकी रुचि जानी ❀ इहि विधि करौं प्रबंध सुबानी ॥

१ देवता । २ चरणकमल । ३ अमृत

द्वादश चौपाई प्रति दोहा ❀ तहँ पुनि एक सोरठा सोहा ॥
कहूं कहूं शुभ छन्द सुहाई ❀ भाषा सरल न अर्थ दुराई ॥
कहत सुनत समुझत मनभाई ❀ ध्यान रूपमय कथा सुहाई ॥
कर्म्म धर्म्म नहिं नीति बखानी ❀ केवल भक्ति प्रेम सुखदानी ॥
जानि कृष्णके चरित पुनीता ❀ कहिहै सुनिहै सन्तसप्रीता ॥
बहुरि कहत दोऊ करजोरी ❀ सुनियो विनय कृपा करिमोरी ॥
चूकपरी जो मोतन होई ❀ सुजन सुधारि लीजिये सोई ॥
मैं नहिं कवि न सुजान कहाऊं ❀ कृष्णबिलास प्रीति करि गाऊं ॥
सो विचारके श्रवणन कीजे ❀ काव्य दोष गुण मन नहिं दीजे ॥
ऐसे सबको विनय सुनाई ❀ कृष्णचरित वरणौं सुखदाई ॥
कृष्णचरित आनँदके रासा ❀ मंगल करण हरण भववासा ॥

दोहा—विघन विनाशन शुभ करण, हरणताप त्रयशूल ॥
चरित ललित नँद नन्दके, सकल सुखनके मूल ॥

सो०—चरण कमल उरधार, श्रीराधा नंदलालके ॥
सुन्दररस आगार, ब्रजविलास अब वरणिहौं ॥

सम्बत शुभ पुराण[2] शत जानौ ❀ तापर और नक्षत्र[3]हि आनौ ॥
माघ सु मास पक्ष उजियारा ❀ तिथि पंचमी सुभग शशि[4]वारा ॥
श्रीबसन्त उत्सव दिन जानी ❀ सकल विश्व मन आनँद दानी ॥
मनमें करि आनन्द हुलासा ❀ ब्रजबिलासको करों प्रकासा ॥
वन्दौं प्रथम कमलपदनीके ❀ श्रीवल्लभ आचारज जीके ॥
श्रीलक्ष्मण भट कुँवर उदारा ❀ जन उद्धारन हित अवतारा ॥
माया व्याधि मिटाय अनेका ❀ कियो प्रेम मारग दृढ़एका ॥
श्रीगोकुलबसि सुख उपजायो ❀ कृष्ण नामको दान चलायो ॥

१ ग्रन्थकार अपने ग्रन्थकेलिये प्रतिज्ञा करताहै । २ अठारह । ३ सत्ताईस अर्थात् १८२७के संवत्में इस ग्रंथको बनायो है । ४ चंद्रवार।

विरहानल[१]में सुभग शरीरा ❀ वाणी प्रेम सिन्धु गम्भीरा ॥
हरिप्रापतिकी रीति बताई ❀ विरह रूप करि प्रकट दिखाई ॥
विरह भऱ्यो जिनको सब नेमा ❀ विरह रूप करि जिनको प्रेमा ॥
विरहे भरी भक्ति विस्तारी ❀ ताते गोकुल गैल निहारी ॥

दोहा—द्वापरतनु धरि सुरनहित, कृष्ण सँहारे दुष्ट ॥
श्रीवल्लभ वपु धरिकियो, प्रेमपंथ कलिपुष्ट ॥

सो०—मन वच क्रमसों चित्त, श्रीवल्लभ चरणनलग्यो ॥
वही आश वहि वित्त[२], वहिसाधन वहि युक्तफल ॥

पुनि श्रीवल्लभ कुलहि मनाऊं ❀ चरणकमल तिनके शिरनाऊं ॥
श्रीगोकुलमें जिनको धामा ❀ विश्व विदित सुन्दर गुणग्रामा ॥
प्रेम भक्तिकी ज्योति विराजे ❀ तेज प्रताप जगतपर राजै ॥
जिनके सदन[३] देखिये ऐसे ❀ नन्द महरिके सुनियत जैसे ॥
तहां कृष्णकी नितनवलीला ❀ बाल विनोद भरी सुख शीला ॥
तिनकी शरण जीव जो आवे ❀ तौ दृढ भक्ति कृष्णकी पावै ॥
देत श्रवण मग अति सुखदाई ❀ कृष्ण नाम रस सुधा[४] पियाई ॥
भक्ति दानको परम उदारा ❀ जगत विदित श्रीगोकुलद्वारा ॥
तामहँ मंगल वंश मझारी ❀ परम कृपालु दीन दुखहारी ॥
श्रीमोहनजी नाम गुसाईं ❀ सुन्दर श्याम श्यामकी नाईं ॥
परम विशाल कमल दल लोचन ❀ दया दृष्टि उरताप[५] विमोचन ॥
मधुर मनोहर शीतल वानी ❀ प्रेम सुधारससों लपटानी ॥

दोहा—तिनतीरथपति[६] माधि दियो, कृष्ण नाम मोहिंदान ॥
दीन जानि राख्यो शरण, लगिके मेरेकान ॥

सो०—तिनके पद उर राख, ब्रजविलास वर्णन करौं ॥

१ विरहरूप अग्नि । २ धन । ३ घर । ४ अमृत । ५ हृदयकोदुःख । ६ मथुरापुरी वा प्रयागराज

मोमनको अभिलाष, पूरण करिहै जानि जन ॥
वन्दतहौं सब सूर सुजानै ❀ जिन्हैं सूर[1] सम सबकोउमानै ॥
प्रेम रूप वाणी परकासा ❀ प्रफुलित अम्बुज[2]सुनि हरिदासा
कृष्ण रूप बिन और नदेख्यो ❀ जगत विषय तृणसम करि लेख्यो
राखे नैन सदा करि ध्याना ❀ दिव्य दृष्टि करि सुयशबखाना ॥
लीला श्याम जन्म भरगाई ❀ रहसकेलि सब प्रगट जनाई ॥
वाणी भांति अनेक बखानी ❀ कृष्ण प्रेम रस सों लपटानी ॥
चढे कठोर मोह वश जेऊ ❀ होत प्रेम वश सुनिकैतेऊ ॥
कीन्हों अति उपकार जगतको ❀ मारगदयो चलाय भगतको ॥
मोहिं बडाई करि नहिं आवै ❀ जिनको गायो सबकोउगावै ॥
चरण शीश धरि तिन्हैं मनाऊं ❀ यह अपराध क्षमा करि पाऊं ॥
मोते यह अति होत ढिठाई ❀ करत विष्णु पदकी चौपाई ॥
सोमम दोष न उरमें धरिये ❀ सफल मनोरथ मेरो करिये ॥

दोहा—अब सन्तनकी मण्डली, वन्दतहौंशिरनाय ॥
बिना कृपा जिनकी भये, हरि यश गाय न जाय ॥
सो०—करिहैं मोहिं सहाय, गुणगाहक परहित करन ॥
तिनको सहज सुभाय, संतत[3] संत कृपालुचित ॥

संत मण्डली को शिर नाऊं ❀ जिनकी कृपा विमल मति पाऊं ॥
जिनकी कृपा विघ्न सबनाशै ❀ जिनकी कृपा कृष्ण गुणभाशै ॥
जिनकी प्रेम भक्ति फल पाई ❀ जिनकी कृपा कुमति मिटिजाई ॥
जिनकी कृपा होंय गुणनाना ❀ जिनकी कृपा सर्व कल्याना ॥
जिनकी कृपा मोहतम[4]नाशै ❀ जिनकी कृपा ज्ञान परकाशै ॥
जिनकी कृपा सकल सुखमूला ❀ होहुसो सन्त मोहिं अनुकूला ॥

१ सूर्य। २ कमल। ३ निरंतर। ४ मोहरूपअंधकार।

जय जय जय श्रीकुंजबिहारी ❀ नँदनंदन वृषभानु दुलारी ॥
मंगल मूरति आनंद कारी ❀ लीला ललित भक्त भयहारी ॥
रूपनिधान प्रेम की रासी ❀ श्रीवृन्दावन धाम निवासी ॥
अखिलनामगुण सुखके धामा ❀ पूरण काम श्याम अरु श्यामा॥
युगुल किशोर ध्यान उर धरिकै ❀ सुभग कमल पद वन्दन करिकै॥
ब्रजविलास रस परम हुलासा ❀ गावतहै ब्रजबासी दासा ॥

अथ कथाप्रसङ्गवर्णनम् ॥

दोहा—तत्त्व नाम पद परम गुरु, पुरुषोत्तम जगदीश ॥
कृष्ण कमल लोचन सुखद, सकल देव मणिशीश ॥
सो०—वन्दौं नन्दकिशोर, वृन्दावनबासी सदा ॥
श्रीराधा चित चोर, आनँद घन भव भय हरण ॥

कहौं कथा सुन्दर सुखदेनी ❀ अघ[1] हरणी वैकुण्ठ निशेनी ॥
कृष्णचरण पंकज रति देनी ❀ जन पावन करती जिमिवेनी[2] ॥
श्रीकलिन्दतनया[3] तट पावन ❀ बसत मधुपुरी परम सुहावन ॥
जाकी महिमा सुर मुनि गावैं ❀ तीनिलोक पर वेद बतावैं ॥
दरशन ते नर पावन होई ❀ कृष्ण कृपा बिन सुलभ न सोई॥
उग्रसेन तहँ बसैं नरेशा[4] ❀ नीति निपुण सह धर्म सुवेशा ॥
ताको सुवन[5] कंस अतिपापी ❀ असुर बुद्धि भो विश्व संतापी ॥
कियो तात[6] गहि बन्दीशाला[7] ❀ आपन भयो कंस भूपाला ॥
तात[8] अनुज तहँ देवक नामा ❀ सुता तासु देवकी ललामा ॥
दई कंस वसुदेवहि ताही ❀ लोक वेदकी रीति विवाही ॥
दायज दियो अनेक विधाना ❀ हय गज रथ पट भूषण नाना॥
दासी दास बहुत संगदीनो ❀ दान मान परिपूरण कीनो ॥

१ पाप । २ त्रिवेणी । ३ यमुना । ४ राजा । ५ पुत्र । ६ पिता । ७ कैदखाना । ८ पिताकोछोटोभाई ।

दोहा–तब चढ़ाइ रथदेवकी,आप भयो रथवान ॥
पहुचावन अति हेतसों,चल्यो सहित अभिमान ॥
सो०–तेहि क्षण गिरा विशाल,होत भई आकाशते ॥[1]
होय कंसको काल,देवकिके सुत आठवें ॥
कंसासुर सुनि वचन अकाशा * भयो चकित मन मिट्यो हुलाशा
शत्रु समान देवकी मानी * रथते उतरि पर्यो अभिमानी ॥
खड्ग[2] निकासि हाथमें लीन्हों * यह विचार अपने मन कीन्हों ॥
अब हीं याहि मारि दुख मेटों * पुनि कलेश काहेको भेटों ॥
केश पकरि देवकि गहि लीन्ही * नहिं कछु कानि बहिनकी कीन्ही
तब वसुदेव दीन ह्वै कहहीं * तिय बध नहीं भूप यश लहहीं ॥
बहुरो यह पुनि स्वसा[3] तिहारी * राजन कीजे काज विचारी ॥
सुन वसुदेव भई नभ बानी * तुमहुं सुनी कछु नाहिं छिपानी
ताते उग्र शोच किन करिये * पाछे काहेको दुख भरिये ॥
वृक्ष फले जो विषफल आगे * ताहि बनै पाहिलेही त्यागे ॥
जो नहिं हतौं आज यह बाला * मिटै न उरसों शोच विशाला ॥
कन्या और व्याहि तोहिं देहौं * याहि मारि उर शोच नशैहौं ॥
दोहा–मुनिजन गुरुजन संगजे, तिन्हहि कह्यो तिहिकाल ॥
वृथा होत है यज्ञफल, यह न उचित महिपाल[4] ॥
सो०–यहै तुम्हारे मान, आनक दुन्दुभि देवकी ॥
इन्हैं न हतिये जान, वेद विरोध न कीजिये ॥
पुनि वसुदेव कह्यो करजोरी * राजन सुनिय विनय कछु मोरी
वृथा देवकीको जिन मारो * याको सुतहै शत्रु तुम्हारो ॥
सब सुत याके हमसों लीजे * जीवदान याको प्रभु दीजे ॥

१ आकाशवाणी । २ तरवार । ३ बहिन । ४ हेराजन् ।

यह वाचा हम तुमसों भाखैं * चन्द्र सूर साखी दै राखैं ॥
भली बात यह सब दिन जानी * भावी[1] बिवश कंसहू मानी ॥
हरि कीनो चाहैं सो होई * ताहि मिटावन हार न कोई ॥
तिन्हैं सहित नृप घर फिरि आये * करि अगोट दोऊ रखवाये ॥
प्रथम पुत्र जब देवकी जायो * लै वसुदेव कंस पहँ आयो ॥
बालक देखि कंस हँसि दीनो * इन तो कछु अपराध न कीनो ॥
अठवों गर्भ शत्रु है मेरो * सो दीजो तुम मोहिं सबेरो ॥
यह कहि अपनो पाप क्षमायो * तब वसुदेव हर्षको पायो ॥
ऐसे बाल फेरि जब दीनो * तब वसुदेव गमन हँसकीनो ॥

दोहा—तब ऋषि नारद कंस पहँ, लिये हस्त[2]तल बीण ॥
गुण गावत गोविन्दके, आये परम प्रवीण ॥

सो०—उठ्यो देखिके कंस, शीशनाइ पद वन्दिकै ॥
बैठाये परशंस, शुभ आसन ऋषि नारदहि ॥

समाचार जो कछु है आये * सो सब ऋषिको कंस सुनाये ॥
सुनि नृप वचव बिहँसि ऋषिबोले * तुमकत रहत शत्रुसों भोले
जाके भय तुम अति भय मानो * अठवौं कौन सु तुम कछु जानो
जो वह प्रथमहि आयो होई * दैव चरित्र जान कछु कोई ॥
आठलकीर खैंचि दिखराई * गिनतीमें सब आठों आई ॥
यह समझाय गये ऋषि ज्ञानी * कंसासुर उर अति भयमानी ॥
तेहि क्षण बालक फेरि मँगायो * लै वसुदेव तुरतही आयो ॥
लियो मूढगहि कर[3]मेंताई * पटकत भयो शिलापर वाही ॥
याही विधि षट[4] बालक मारे * मात पिता अति भये दुखारे ॥
कहत अहो श्रीपति असुरारी * तुम बिन कासों करहिं पुकारी

१ होनहार । २ कर । ३ हाथमें । ४ छः बालक ।

यह सन्ताप मिटै कब भारी * बेगिलेहु प्रभु सुरति हमारी ॥
केहि विधि नाथ राखिये प्राना * करत कंस निरवंश निदाना ॥

दोहा—विपति विनाशन दुख दमन, जन रंजन सुरराय ॥
अब हमको कोऊ नहीं, तुम बिन और सहाय ॥

सो०—विनतीप्रभुहिसुनाय, मनमहँ दम्पति दुखितअति ॥
होन न प्रकट जनाय, कंस असुरके त्रासते ॥

भई भूमि जब अधिक दुखारी * बढ्यो पाप असुरनको भारी ॥
सहि न सकी तब गोतनुधारी[1] * शिवविरंञ्चि[2] पै जायपुकारी ॥
सकलसुरनमिलिकियोविचारा * हमते नहिं उतरै भुवि भारा ॥
विनयकरियचलिश्रीपति[3]पाहीं * कृपा करैं तब सब दुख जाईं ॥
भूमि[4] सहित सुर सकल सिधारे * क्षीर सिंधु तट जाइ पुकारे ॥
जहँ श्रीपति श्रीसहित निवासी * पुरुषोत्तम अविगतिअविनासी
धेनु अग्र करि विनय सुनाईं * जय जय जय त्रिभुवनकेसाईं ॥
जय सुखकन्द संत हितकारी * जय जग वन्द्य भूमि भयहारी ॥
जयजयअसुरसमूहनिकन्दन * जय जय भक्तनके उर चंदन ॥
जयजयजयप्रणतारत मोचन * दैत्य दलन सुर शोच विमोचन ॥
जयजयजय प्रभु अंतर्य्यामी * सुनियविनयसचराचरस्वामी ॥
करिये प्रभु सोवेग उपाई * हरिये नाथ भूमि गरुवाई[5] ॥

दोहा—धरिय मनुजतनु[6] दनुजहति, करियधरणिउद्धार ॥
परशत पदपंकज मिटहिं, सकल भूमि अघ भार ॥

सो०—पाहि पाहि भगवंत, शरणागत वत्सल हरे ॥
क्षमा करहु अबकंत, दीन दुखित जन जानि हरि ॥

दीन वचन जब धेनु पुकारी * भई गिरा[7]नभ मंगलकारी ॥

१ गौ । २ ब्रह्मा । ३ भगवान् । ४ पृथ्वी । ५ बोझ । ६ मनुष्यदेह । ७ आकाशवाणी ।

जाहु सकल सुर घर भय त्यागी * धरिहौं नर तनु तुम हित लागी॥
प्रथम जन्म देवकी वसुदेवा * मोसन मांगलियो करि सेवा ॥
तुम सम पुत्र हमारे होई * मैं तिनको वर दीनो सोई ॥
ऐसे नन्द यशोदा जानौं * दूधपियावन उनहिनमानौं ॥
गर्भ देवकीके अवतरिहौं * बाल चरित गोकुलमें करिहौं॥
तुमहूं गोप वेष ब्रजहोऊ * मम सँग सुखपावो सब कोऊ॥
यह कहि सुरनबिदा हरि कीन्हों * आयसुयोग शक्ति कहँ दीन्हों॥
सप्तम गर्भ देवकी केरा * तहाँ शेष मम अंश बसेरा ॥
सो आकर्षणके क्षण माहीं * राखो गर्भ रोहिणी पाहीं ॥
शक्ति जबहिं हरि आयसुपायो * ततक्षण ताहि वहीं पहुँचायो ॥
हरि चरित्र कछु जान न कोई * जो कछु करन चहैं सो होई ॥

दोहा—तब कृपालु जनके सुखद, अविगति कमलाकन्त ॥
निज आगम देवकि उदर, दिय जनाय भगवन्त ॥
सो०—तनु द्युति बढी अपार, परम प्रकाशित भवन सब ॥
आनन मुकुर निहार, अति प्रसन्न मन देवकी ॥

निजमुख मुकुर देवकी देख्यो * शरद चन्द्र पूरण सम लेख्यो ॥
मिट्योतिमिर भ्रम अति सुखपायो॥जान्यो कंस कालहरि आयो
प्रभु आगमन जानकर देवा * आये सकल जनावन सेवा ॥
नभसे गर्भ स्तुति सब करहीं * जय जय जय जय जय उच्चरहीं
जय ब्रह्मा शिव सेव्य सदाई * जय वेदान्त वेद सुरसाईं ॥
जयतीरथ पद भवनिधि वोहित * प्रणतपाल जय दीननके हित॥
जय संकल्प सत्य गुणधामा * जय मन बांछित पूरण कामा॥
जय गो द्विजहित नरतनु धारी * जय सन्तन पतिगति अपहारी।

१ देवतानको । २ योगमाया । ३ खींचकर । ४ दर्पण । ५ अंधकार-भ्रम । ६ आकाशमेंठाढेह्वैकर ।

जय कृपालु आनन्द बरूथा[1] ❀ वन्दत चरण सकल सुर यूथा ॥
जय पुरुषारथ अमित अनूपा ❀ महापुरुष सचराचर भूपा ॥
जय अहीश[2] नित नव गुण गावैं ❀ तदपि नाथ गुण अन्त न पावैं ॥
जो मुनि जन मन ध्यान न आवैं ❀ भक्ताधीन वेद यश गावैं ॥

दोहा—अलख अरूप अनीह अज, प्रभु अद्वैत अनादि ॥
गर्भवास सो देवकी, कौतुकनिधि सर्वादि ॥

सो०—किनहुँ न पायो भेव, शेष महेश गणेश विधि ॥
नमोनमो तिहि देव, परम विचित्र चरित्र शुभ ॥

करि विनती सुरसदन[3] सिधारे ❀ परमानंद मगन मन भारे ।
तब देवकिपति पास बखाने ❀ कोमल वचन प्रेमते साने ।
हो पिय सो उपाय कछु कीजे ❀ अबके यह बालक रखलीजे ।
बुधि बल छल पिय कीजे सोई ❀ जामें कुलको नाश न होई ।
मैं मन वच अबकै यह जाना ❀ हैं मम उदर देव भगवाना ।
कहा करौं कछु यत्न न पाऊं ❀ कौन भांति यह गर्भ दुराऊं ।
सत्य धर्म बरु जाय तौ जाऊ ❀ पति यहि सुतहित करिय उपाउ ।
कर्म धर्म सब हरि हित भाखें ❀ सो हरितजि कहुँ धर्महिं राखें ।
सुनहु पिया असको हितकारी ❀ जो यह बालक लेहि उबारी ।
शिर ऊपर बैठे रखवारे ❀ पाँयन पडे निगड[4] अति भारे ।
कंस असुर अपवंश विनाशन ❀ केहि विधिसों उबरे तियतासन ।
ऐसोको समरथ जग पाई ❀ जो इहि अवसर होय सहाई ।

दोहा—षट बालक बध सुरतिकरि, दम्पति दुखित बिचार ॥
अति आकुल भय कंसके, दृगन[5] चली बहि धार ॥

सो०—करुणासिन्धु दयाल, तात मात अति दुखित लखि ॥

१ समूह । २ शेष । ३ नेस्थानको । ४ बेडी । ५ नेत्रनते ।

प्रकट भये तिहि काल,दुख मोचन[1] लोचन सुखद॥
योग शक्ति हरि आयसु पाई ❀ प्रगटी नन्द भवन सो जाई ॥
ताके प्रकटतही नरनारी ❀ भये नींदवश देह बिसारी ॥
भादों कारी निशि अति पावन ❀ आठैं बुध रोहिणी सुहावन ॥
अखिललोकपति जन सुखदायक ❀ आये जन्मलियो सुरनायक
शीशमुकुट कल कुण्डल कानन ❀ शरदमयंक[2] सरस शुभ आनन॥
चारु[3] चरण पंकज[4]दल लोचन ❀ चितवन सुखद तापत्रय मोचन॥
कुटिल अलक भ्रूमेचकताई[5] ❀ जन मन हरण परम सुखदाई ॥
पीतबसनतनु श्यामतमाला ❀ उरश्रीवत्स चारु मणिमाला ॥
भुजा विशाल मनोहर चारी ❀ शंख चक्र गद अम्बुज[6] धारी ॥
अंग अंग सब भूषणनीके ❀ परम विचित्र भावतेजीके ॥
चरण सरोज उदित नख जोती ❀ कमल दलन राखे जनुमोती ॥
परम प्रताप शुभग शिशु वेषा ❀ अद्भुत रूप देवकी देखा ॥
दो०—देखिअमितछबिचाकितमति,पतिढिगलियेबुलाय॥
दम्पति परमानन्द मन,परे हर्ष सुत पाय ॥
सो०—भरे प्रेम जल नयन, अति सनेह आकुल शिथिल॥
बोले गदगद बैन,जोरि पाणि[7] विनती करत ॥
प्रभुकिहि विधि तुम गुणन बखानो ❀ तुम मायावश तुमहि न जानो॥
सहसानन[8] जाके गुण गावैं ❀ नेति नेति जेहि निगम[9] बतावैं ॥
जाकी भ्रूविलास अनयासा ❀ अखिललोक उपजै अरु नासा॥
जो स्वरूप मुनि ध्यान लगावैं ❀ कृपा करहु तब दरशन पावैं ॥
जो सबतेपर अज अविनाशी ❀ सो किमिकहिय उदर ममबासी॥
परम विचित्र चरित्र तुम्हारे ❀ मोहतहैं प्रभु मनहिं हमारे ॥

१ नाशकरता। २ शरदकाचंद्र। ३ श्रेष्ठ। ४ कमल। ५ श्यामताई। ६ कमल। ७ हाथ। ८ शेष। ९ वेद।

तात मातके वचन सुहाये ❀ सुने प्रेम वश प्रभु मन भाये ॥
बोले तात मात सुखदानी ❀ मधुर मनोहर अमृतबानी ॥
सुनहु मात मैं तुमहिं सुनाऊं ❀ प्रथम जन्मकी कथा बताऊं ॥
तुम जांच्यो मोहिं कर तप भारे ❀ तुम समान सुत होय हमारे ॥
जन हित विरद मोर श्रुति गायो ❀ सो कैसे करि जात लजायो ॥
ताते मैं बर तुमको दीन्हों ❀ सो हम आय सत्य अब कीन्हों ॥

दोहा—शिव ब्रह्मा सनकादिमुनि, ध्यानसकत नहिंपाय ॥
सो मैं तुम्हरे प्रेम वश, दियों दरश निज आय ॥

सो०—कौतुक निधि सुरराय, करत चरित मुनि मनहरण ॥
महा मोह उरझाय, दियो बहुरि पितु मात मन ॥

करहु तात अब वेग उपाई ❀ हमहिं कंस ते लेहु बचाई ॥
गोकुल हमहिं देहु पहुँचाई ❀ तहां यशोदा कन्या जाई ॥
मोहिं राखि कै यशुदा पासा ❀ कन्या लै आवहु अनयासा ॥
सो कन्या लै कंसहिदीजे ❀ तात हमारो नाम नलीजे ॥
ऐसहि मात पिता समुझाई ❀ भये तुरत शिशु[1] यदुकुलराई ॥
देखि चरित सुनि प्रभुकी बाता ❀ विषमय हर्ष विवश पितुमाता ॥
सुतउठाय उरसों लपटायो ❀ प्रेम विवश लोचन जलछायो ॥
कहति देवकी पति सुनि लीजे ❀ गमन वेग गोकुलको कीजे ॥
जबलगि सुनहि न वह हत्यारो ❀ मन वच क्रम नृप कोन पत्यारो ॥
बनै नाथ उर धीरजधारे ❀ नाहिन इतने भाग्य हमारे ॥
जो यह सुख नयनन पुट पीजे ❀ ऐसे सुतको यश सुनि लीजे ॥
दरशन सुखित दुखित महतारी ❀ शोचत विकल कंस भयभारी ॥

दोहा—अति अँधियारि अर्द्ध निशि[2], भटघेरे चहुँ ओर ॥

[1] बालक । [2] आधीरात

कौन भाँति जैहैं दई, पाँय निगड़ अति घोर ॥
सो०—बरषत अति जल जोर, घनगरजत चमकतचपल ॥
बीच यमुन अति घोर, पार कवन विधि पाइहैं ॥
कहाकरौं अब काहि पुकारौं * कौन भांति धीरज उर धारौं ॥
कंस सरोष तबहिं किनमारी * विनती करि पति वृथा उबारी ॥
ऐसो सुत बिछुरत महतारी * कौन भांति जीवे दुखभारी ॥
कृपा समुद्र भक्त सुखदानी * सुनत मातुकी आरतबानी ॥
कृपाकरी सब भ्रम भय टारे * गिरे निगड पाँयनते भारे ॥
तब वसुदेव हरष तिहि ठाहीं * लक्ष धेनु मनसी मन माहीं ॥
पुत्र गोदलै तुरत सिधाये * द्वार कपाट[२] खुले सबपाये ॥
रखवारे सब सोवत देखे * संपदि[३] चले उर हरष विशेखे ॥
तबहीं मघवा[४] वृष्टि[५] निवारी * मन्द समीर[६] भई श्रमहारी ॥
हरिमुख चन्द्रप्रभा तमनाशै * क्षण क्षण तडित[७] पंथ[८] परकाशै ॥
प्रभु पर शेष छांह फनछाई * आगे सिंह दहाड़त जाई ॥
सो वसुदेव न जानत भेवा * पहुँचे जाय यमुनतट देवा ॥
दोहा—सरित[९] देखि गम्भीर अति, मनमें शोच विचार ॥
गोकुलके सम्मुख धँस्यो, प्रभु प्रताप उरधार ॥
सो०—यमुनापति पहिचानि, मन अनंद हुलस्यो हियो ॥
परसन हित पदपानि, अति प्रवाह ऊंचो उठ्यो ॥
गुल्फ[१०] जंघ[११] कटि[१२]लौं जल आयो * तब हरिको कछु ऊर्ध्व[१३] उठायो ॥
ज्यों ज्यों वसुदेव सुतहि उठावे * त्यों त्यों जल ऊपरको आवे ॥
नाक प्रयन्त नीर जब आयो * तब हरिपद अंघ[१४]को लटकायो ॥
परशि नीर हुंकारहि दीनो * तुरतहिं भयो गुल्फते हीनो ॥

१ वेरी । २ किवाँर । ३ जलदी । ४ इन्द्र । ५ वर्षा । ६ पवन । ७ बिजुरी । ८ मारग । ९ यमुना ।
१० टिहना । ११ पीडरी । १२ कमर । १३ ऊपर । १४ नीचेको ।

भयो पार लैके घनश्यामहि[१] * गये वसुदेव नन्दके धामहिं ॥
तहां सकल जन सोवत पाये * सुत लै यशुमति पास सिधाये ॥
कन्या तहां पुनीत निहारी * लई उठाय राखि दैत्यारी ॥
फिरि फिरि सुतको वदन निहारी * चले तुरत भय कंस विचारी ॥
जो सम्पति निगमागम[२] गाई * योगी जनन जानि नहिं पाई ॥
सनकादिक सरबस विधि[३] प्राना * शंकर जासु धरतहैं ध्याना ॥
शारद नारदादि यश गावैं * सहस[४] बदनहू पार न पावैं ॥
अहो विलोकहु भाग्य बडाई * सोई सोवत यशुमति माई ॥

दोहा—वहां देवकी प्रेम वश, अति व्याकुल अकुलात ॥
बालक अरु वसुदेव कहँ, पठै बहुत पछितात ॥
सो०—बैठत उठत अधीर, व्याकुल सोई सेजपर ॥
पोंछत नयनन नीर, बोलि सकत नहिं कंस भय ॥

मनमन सुर[५] मनाय सनमानै * मत यह भेद दई कोउ जानै ॥
रखवारे कहुँ जान न जाहीं * मत कोउ दुष्ट मिलै मग माहीं ॥
याते अधिक शोच मोहिं भारी * क्यों दुरिहै शशिमुख[६] उजियारी
मग महँ यमुना अति गम्भीरा * केहि विधि पहुँचैंगे वहितीरा ॥
गोकुल पहुँचे धौं मग माहीं * भई बेर पति आयो नाहीं ॥
यहि विधि शोच विवश अकुलाई * इकक्षण कल्प समान विहाई ।
पहुँचे वसुदेव तिहि क्षण जाई * बूझत उठी पुत्र कुशलाई ॥
केहि विधि पुत्र राखि पति आये * समाचार वसुदेव सुनाये ॥
कन्या दई देवकी जबहीं * द्वार कपाट[७] गये लगि तबहीं ॥
बेडी व्हैगईं पग ततकाला * कन्या रोय उठी तिहि काला ॥
चहुँ दिशि जागि परे रखवारे * तुरत कंस पहँ जाय पुकारे ॥

१ भगवान् । २ वेद-पुराण । ३ ब्रह्मा । ४ शेष । ५ अपनेइष्टदेवको मनाय । ६ कृष्णकोचंद्रसमानमुख । ७ किवाँर ।

सुनतहि उठि अति आतुर धायो ❀ लीन्हें खड्ग[1] तहां चलि आयो

दोहा—कन्याले तब देवकी, आगे राखी आय ॥
दीन वचन आधीनह्वै, कंसहि कही सुनाय ॥

सो०—अहो भ्रात यह दान, तुम हम कहँ अब दीजिये ॥
है कन्या जिय जान, याते भय तुमको नहीं ॥

सुनत कंस भगिनी[2]की बानी ❀ मृत्यु त्रासते शठ रिसमानी ॥
यामें कछू होय छल कोई ❀ को जानै विधना[3]गति गोई ॥
यह विचार कन्या गहिलीनी ❀ पटकनकी मनसातिहि कीनी ॥
करते छूटिगई आकाशा ❀ दिव्यरूप तहँ कियो प्रकाशा ॥
बोलति भई गगनते[4] बानी ❀ अरे मन्दमति अधम अज्ञानी ॥
ममहत्या तैं लई वृथाहीं ❀ तेरो रिपु[5] प्रगट्यो ब्रजमाहीं ॥
सर्प ग्रसित जिमि दादुर[6] होई ❀ माखी खान चहत शठ सोई ॥
तस तू चह मारन मोहीं ❀ आयो काल निकट शठ तोहीं ।
ऐसे कहिकै स्वर्ग सिधारी ❀ कंसहि शोच भयो सुनि भारी ॥
पर्‍यो देवकी चरणनमाहीं ❀ मैं मारे तुवपुत्र वृथाहीं ॥
क्षमा करौ मेरे अपराधा ❀ है विधिकीगति अलख अगाधा
वसुदेवहुसन क्षमा कराई ❀ निगड[7]दिये पगते कटवाई ॥

दोहा—गयो शोच व्याकुल सदन[8], पर्‍यो सेजपर जाय ॥
जागतही बीती निशा[9], नींदपरी नहिं ताय ॥

सो०—हरिके चरित अनूप, असुर विमोहन सुर सुखद ॥
नर न परत भवकूप, सहज प्रेम गावहिं सुनहिं ॥

यशुदा जब सोवतते जागी ❀ सुत मुख देखतही अनुरागी ॥
पुलक अंग उर आनँद भारी ❀ देखिरही मुखशशि[10] उजियारी ।

१ तरवार । २ बहिन । ३ विधाता । ४ आकाश । ५ वैरी । ६ मेढक । ७ बेरी । ८ घर । ९ रात्रि । १० मुखचंद्र

गद्‌गद्‌ कण्ठ न कछु कहि आयो ❀ हर्ष वन्त है नन्द बुलायो ॥
आवहु कन्त पुत्र मुख देखो ❀ बड़ो भाग्य अपनो करि लेखो ॥
भये प्रसन्न आजु सब देवा ❀ सफल भई सबहिनकी सेवा ॥
सुनत नन्द प्रिय तिय[1]की बानी ❀ प्रेम मगन तनुदशा भुलानी ॥
हर्षित है उठि आतुर धायो ❀ यशुमति सुतको बदन दिखायो ॥
देखत मुख उर सुख भयो जैसो ❀ कहि न सकहिं श्रुति शारद[2] तैसो
कहा कहौं तिहि क्षणकी शोभा ❀ मनहुं महा छबितरुके गोभा ॥
आनँद मगन नन्द मनमाहीं ❀ जानत नहिं हमको केहि ठाहीं
रोय उठे तब नन्दके लाला ❀ जागि परे सब ग्वालिन ग्वाला ॥
जित तितते हर्षित[3] उठ धाये ❀ मनहुं रंक[4] धन लूटन आये ॥

दोहा—देहिं बधाई[5] नन्दको, परैं यशोदा पाव ॥
कहैं पियारे लालको, नेक हमहिं दिखराव ॥

सो०—अति हर्षित नँदराय, कह्यो बजावनसोहिलो ॥
नारि उठीं सब गाय, लाग्यो बजन बधावनो ॥

छं०सुरसिद्धमुनिन्दा परम अनन्दा सुनिगोकुलहारि आये
दुन्दुभी[6] बजावत मंगल गावत तियन[7] सहितउठि धाये ॥
विद्याधर किन्नर सुघर कण्ठबर करत गान सचुपाये ॥
गरजत तिहिकाला मधुररसाला घनगति जनन जनाये ॥
बाजत करताला बरषत माला सुरतरु[8]सुमन सुहाये ॥
सब करैं किलोलैं हर्षित बोलैं जय जय जय सुखपाये ॥
नभ महँ धुनि होई सुन सब कोई भये सबन मन भाये ॥
संतन हितकारी असुर सँहारी आवत क्षिति[9]सुखछाये ॥
शिव ब्रह्मादिक मुनि सनकादिक परम प्रफुल्लित गाता ॥

१ यशोदाकी। २ सरस्वती। ३ प्रसन्न। ४ दरिद्री। ५ जन्मबधाई। ६ नगारे-धौंसा। ७ देवांगनासहित। ८ कल्पवृक्षकेपुष्प। ९ पृथ्वीमें।

गुणि गण सब गावैं प्रभुहि सुनावैं आनँद उर न समाता ॥
भए मन चीते सब भय बीते प्रगटे दनुज[1] निपाता ॥
अतिमनमें हर्षै पुनि पुनि वर्षै सुमन[2] जो सुरतरु[3] जाता ॥
सुरतिय[4] मनमाहीं निरखि सिहाहीं यशुमतिके बड़ भागा ॥
इनसम हम नाहीं पुण्यन माहीं कहैं सहित अनुरागा ॥
योगीजेहि ध्यावैं ध्यान न पावैं करि करि योग विरागा ॥
जो वेद न जानै नेति बखानै सो सुत व्है उर लागा ॥
दोहा—भरे परम आनन्द सुर, उपजावत अनुराग ॥
बार बार वरणन करैं, नन्द यशोमति भाग ॥
सो०—रहे सदन[5] सुर भूल, गोकुलको उत्सव निरखि ॥
जन्मे मंगल मूल, ब्रजवासी हर्षित सबै ॥
ब्रजबासिन सबहिन सुनि पायो ❋ नन्दमहरघर ढोटा जायो ॥
परमानन्द लोग सब धाये ❋ नन्दराय तब विप्रबुलाये ॥
काढि लग्न ग्रह योग सुधायो ❋ अति विचित्र सब द्विजन सुनायो
करत वेद ध्वनि अति सुखपाई ❋ देहिं नन्दको सकल बधाई ॥
तब स्नान महरि उठि कीन्हो ❋ भाल तिलक चन्दन लैलीन्हो ॥
जाति[6] कर्म करि पितर पुजाये ❋ भूषण बसन द्विजन पहिराये ॥
गैया लक्ष[7] सबत्स[8] सुहाई ❋ बाढी दूध नवीन मँगाई ॥
सब विधि सकल अलंकृतकीनी ❋ करि संकल्प द्विजन[10] को दीनी ॥
मुदित विप्र सब देइँ अशीसा ❋ चिरजीवहु सुत कोटि बरीसा ॥
हँसि हँसि बहुरि महरि नँदराई ❋ हित कुटुम्ब सब निकट बुलाई ॥
बहु सुगंधि माथि तिलक बनाये ❋ भूषण बसन विविध पहिराये ॥
हुते जु कुलमें बृद्ध[11] जिठेरे ❋ हित सों पाँय परे सब केरे ॥

१ दैत्यकेमारनवारे । २ पुष्प । ३ कल्पवृक्ष । ४ देवांगना । ५ स्वर्गमें-घर । ६ नांदीश्राद्धकरा । ७ एकलाख । ८ बाछरासहित । ९ शृंगारी । १० ब्राह्मणनको । ११ बूढेबडे ।

दोहा—वंदी[1] मागध[2] सूत[3] गण, भरे भवन बहु आय ॥
लैलैनाम बुलाय सब, परितोषे[4] नँदराय ॥
सो०—मन बांछित सबलेहिं, जोजाके भावे मनहिं ॥
नन्द भरे रस देहिं, किये अयाचीयाचकनि[5] ॥
सुनि सुनि धाईं ब्रजकी नारी ❀ लेकर कमलन कंचन[6] थारी ॥
मंगल साज साज सब लीन्हें ❀ सहजशृंगार सुभग तनु कीन्हें ॥
चारु[7] चीर[8] तनु दृग[9] कजरारे ❀ भाल[10] तिलककुच शिथिलसँवारे ॥
मांग सिंदूर तरोना कानन ❀ रोरी रंग किये कछु आनन ॥
अँगिया अंगकसे छबिछाजे ❀ विविध भांति उर हार बिराजे ॥
अति आनन्द मगन मनफूलीं ❀ अंचल उडत सँभारन भूलीं ॥
निज निज मेल मिलीं सब गावैं ❀ विहरत नन्द धामको आवैं ॥
इक भीतर इक आंगन माहीं ❀ इक द्वारे मग[11] पावत नाहीं ॥
सबको यशुमति निकट बुलावैं ❀ मुख उघार सुत[12] को दिखरावैं ॥
देहिं अशीश परे शिशुपायन ❀ जीवहु जबलग नभ[13] तारागन ॥
पूरण काम भयो ब्रजसारो ❀ धन्य यशोदा भाग्य तिहारो ॥
धन्यसो कोखि जहां सुत राख्यो ❀ पुण्य तिहारो जात न भाख्यो
दोहा—धन्य दिवस धनि राति यह, धन्य लग्न तिथिवार ॥
जहँजायो ऐसो सुवन[14], थिरथाप्यो परिवार ॥
सो०—पुनि पुनि शीशनवाय, देहिं अशीश मनाय सुर ॥
जियहु सुवन नँदराय, रूप अचल कुलकी थुनी ॥
परमानंद नंद अनुरागे ❀ चित्र विचित्र वस्त्र बहु मांगे ॥
सारी सुरंग कसबके लहँगे ❀ अति चटकीले मोल न महँगे ॥
सिगरी बधू बोल पहिराई ❀ जो जैसी जाके मनभाई ॥

१ जोप्रसंगके अनुसारबोलैं । २ भाट । ३ पौराणिक । ४ प्रसन्नकरे । ५ भिखारीन्कोधनाढचकारिदिये । ६ सुवणकी । ७ उत्तम । ८ वस्त्र । ९ नेत्र । १० मस्तक । ११ मार्ग । १२ कृष्णको । १३ आकाश । १४ पुत्र ।

देहिं अशीश मुदित ब्रजनारी ❀ फूलीं कमल कलीसी न्यारी ॥
एक रहसि निज निज गृह जाहीं ❀ इक हुलसी आवैं गृह माहीं ॥
एक कहैं एकनसों धाई ❀ हौं यह बात भली सुनि आई ॥
महरि यशोदा ढोटा जायो ❀ नंदद्वार सखि बजत बधायो ॥
चलो वेग सखि देखिये सोई ❀ विधना चाहतहींहे जोई ॥
इक नाचै इक ढोल बजावें ❀ एक नन्दको गारीगावें ॥
एक साथिये द्वार बनावें ❀ एकै वंदनवार बँधावें ॥
ध्वज पताक तोरण छबिछाई ❀ घर घर होत अनंद बधाई ॥
पुनि पुनि सुमन[2] देव वर्षावें ❀ फूलनसों सब गोकुल छावें ॥

दोहा—ध्वज पताक तोरण कलश, बंदनवार दुवार ॥
गोपनके घरघर बँधे, तोरन मंगलचार ॥

सो०—नंद सदन[3]सविचार, वरणिसकैसो कौन कवि ॥
लियो जहाँ अवतार, छबिसागर त्रिभुवन धनी ॥

ग्वाल वृंद सब सुनि उठि धाये ❀ बाल वृंद सब निकट बुलाये ॥
घसि बन धातु[4] चित्र सब कीन्हें ❀ गुंजा भूषित भूषण लीन्हें ॥
यद्यपि अरु भूषण तन माहीं ❀ तद्यपि अहिरन गुंज सुहाहीं ॥
एक कहैं एकन समुझाई ❀ आज वनहिं कोऊ नहिं जाई ॥
गैया लेपन[5] सहित बनावो ❀ चित्र विचित्र वेगि लै आवो ॥
पूत नन्दके घर है जायो ❀ भयो सबनके मनको भायो ॥
कितनो गहर[6] करत बिन काजा ❀ वेगि चलो सब सहित समाजा ॥
दधि माखनके माट भराये ❀ कछु इक हरदो रंग मिलाये ॥
लिये शीशपर केतिक गावें ❀ केतिक ताल मृदंग बजावें ॥
मिलमिल निजनिज यूथन माहीं ❀ नंद सदन[7] निरखत सब जाहीं ॥

१ प्रसन्नहैं । २ पुष्प । ३ नंदकेघरको । ४ खरिया । ५ मनसिलपेवरीआदि । ६ अबेर । ७ घर ।

देखि नन्द अति आनँद पावैं ❀हँसि हँसि सबको निकट बुलावैं॥
छुइ छुइ चरण भेंट धरिआगे ❀ देहिं बधाई अति अनुरागे ॥

दोहा—नाचत गावत मगन मन, भई सदन अति भीर ॥
मनु आये उत्साह सब, धरि धरि गोप शरीर ॥

सो०—देहधरे आ*नन्द, मनहुँ नंद तिन मधिलसै ॥
जन्मे आनँद कन्द, कहि नकसहिं सुख सहसमुख॥

इक नाचत इक गावत ठाढे ❀ इक कूदत अति आनँद बाढे ॥
छिरकत एक दूध दधि डोलैं ❀ एक कुलाहल करत कलोलैं ॥
मचो नंद घर दधिको कांदौं ❀ बरसत दूध दही जनु भादौं ॥
एक धाय एकन पैं जाहीं ❀ एकै मिलत डारि गलबाहीं ॥
एक एकके पायँन परहीं ❀ इकदधि दूर्वाक्षत शिरधरहीं ॥
अति उछाह सबके मन माहीं ❀ राजा राव गनत कछु नाहीं ॥
गोकुल मध्य देखिये जितहीं ❀ करत गोप कौतूहल तितहीं ॥
एकै लूटि नंदको लेहीं ❀ एकै एकन को धन देहीं ॥
एकन हित करि नंद बुलावैं ❀ पट भूषण तिन कोप हिरावैं ॥
एक कहैं हम तब कछु लेहैं ❀ जब लालन मुख देखनदेहैं ॥
एक जो एकन ते कछु लेहीं ❀ ते निशंक एकन को देहीं ॥
अति आनंद मगन पशु पालक[३] ❀नाचत तरुण[४] वृद्ध[५] अरु बालक॥

दोहा—गोकुलको आनंद सब, कापै वर्ण्यो जाय॥
जहां परम आनंद मय, लियो जन्म हरि आय ॥

सो०—नितनव होत विलास, हरि मुकुंदके जन्मते ॥
ब्रज संपदा सुपास, सुर[६] भूलहिं कौतुक निरखि॥

जबते जन्मलियो हरि आई ❀ सुख संपति ब्रज घर घर छाई॥

* मानो यावत् गोपहै सोई उत्साहरूपहै और नंदराय नहीं है मानो देहधारणकरे मूर्तिमान उनमें उत्साहहै। १ कीच। २ चावल। ३ ग्वारिया। ४ ज्वान। ५ बूढे। ६ देवता।

सब उदार सब परम प्रवीना ❀ सब सुंदर सब रोग विहीना ॥
मुदित जहां तहँ सब ब्रजबासी ❀ सब यशुमतिसुत प्रेम उपासी ॥
नंद सदन वर्ण्यो किमिजाही ❀ शतसुरेश[१]लखि विभ्रमजाही ॥
अति प्रकाश मन्दिरके माहीं ❀ फैलिरही हरि छबिकी छाहीं ॥
ग्वाल गाय गोपनकी भीरा ❀ कहुँ दधि कहुँ माखन कहुँक्षीरा ॥
भूमि बाग बन गिरि[२] रमणीया ❀ खग मृग[३] सर[४] सरिता[५] कमनीया[६] ॥
विटप[७]वेलि सब सहित फूलफल ❀ दिशा प्रकाशित निर्मल जलथल
सुरभी सुर सुरभी सम तूला ❀ भयो सकल ब्रज मंगल मूला ॥
विभव भेद यह कोउ न जाने ❀ आदिहिंते हम ऐसे माने ॥
कृष्णजन्म आनंद बधाई ❀ सुर पुर नाग तिहूं पुर भाई ॥
ब्रज बासिन गण अधिक उछाहू ❀ करि नहिं सकहिं सहस मुख काहू

दोहा—ब्रजको सुख को कहिसके, सुखमा बढी अपार ॥
सुखनिधान भगवान जहँ, लियो मनुज अवतार ॥

सो०—प्रकटे गोकुल चंद, संत कुमुद वन मोदकर ॥
तम कुल असुर निकंद, ब्रज जन चारु चकोरहित ॥

नित नव भीर नंदके द्वारे ❀ याचक जन सब होंय सुखारे ॥
गाँव गाँवते सुनि सुनि आवैं ❀ मन भायो सब कोऊ पावैं ॥
पांचदिवस इहिविधि सुख पायो ❀ छठयोंदिवस छठीको आयो ॥
मन्दिर सकल सुबास लिपायो ❀ जहांतहाँ चित्रित करवायो ॥
बीथी चारु सुगंधि सिंचाई ❀ द्वारन बँदनवार बधाई ॥
जानि कुटुम्ब मित्र हित जेते ❀ नंदराय न्योते सब तेते ॥
ठौर ठौर बहु व्यंजन* होई ❀ भोजन कहँ आये सब कोई ॥
गोप बधू सब बनि बनि आवैं ❀ लालन को पहिरावन ल्यावैं ॥

१ सौइन्द्र । २ पर्वत । ३ पखेरू । ४ सरोवर । ५ नदी । ६ सुंदर । ७ वृक्ष । * रोहिणिआदि करे रसोई ।

जरिकस कुरता भूषण टोपी ❀ रत्न समेत प्रेम रँग ओपी ॥
रोरी अक्षत पान मिठाई ❀ धरि धरि कंचन थारिन लाई ॥
गावहिं मंगल कोकिल बानी ❀ नंद भवन आवहिं हर्षानी ॥
करि आदर यशुदा बैठावैं ❀ देखि श्याम घन सब सुखपावैं ॥

दोहा—वृषभानादिक गोपवर, ब्रजवासी समुदाय ॥
आये सब नँदराय गृह, भूषण बसन बनाय ॥

सो०—अति आदर करि नंद, शुभ आसन दीने सबन ॥
सबके मन आनंद, बजत दुंदुभी नचत नट ॥

कहू ग्वाल गावतहैं हेरी ❀ कहूं खिलावत गाय घनेरी ॥
वंश प्रशंसा भाट सुनावैं ❀ कितहूं ढाढी ढाढिनिगावैं ॥
देहिं गोपगण तिनको दाना ❀ भूषण बसन धेनु मणि नाना ॥
परजा सकल खिलौंनाल्यावैं ❀ अति अद्भुत कापै कहि आवैं ॥
धरहिं नंदके आगे आनी ❀ राखहिं सब अतिशय सुखमानी ॥
तिनहीं देहिं निछावरि हरिकी ❀ कोमल श्यामल सुन्दर बरकी ॥
विश्वकर्मा पलना गढिलायो ❀ रत्न जटित शुभरंग सुहायो ॥
लालन हितसो नंद रखायो ❀ विश्वकर्मा सब बांछित पायो ॥
ऐसे दिवस यामयुग आयो ❀ तब सब गोपननंद जिमायो ॥
छिरकि सुगंध पान कर दीन्हों ❀ तब सब गोपन भोजन कीन्हों ॥
मंगल[1] मय रजनी जब आई ❀ गाय उठीं सब नारि सुहाई ॥

अथ कुरताटोपीवर्णनम् ॥

दोहा—कुरता टोपी पीतरँग, लालनको पहिराय ॥
लैउछंग[2] पूजन छठी, बैठीं हर्षित माय ॥

सो०—करि कुलको व्यवहार, करी आरती श्यामकी ॥

१ मंगलकी रात्री । २ गोद ।

करति निछावरि नार, तन मन धन शशिमुख[१] निरखि ॥
नेग जोग सब नेगिन पायो ❀ दियो सबनि यशुदा मनभायो ॥
प्रातहि उठि लालन अन्हवायो ❀ सुदिन शोधि पलना पहुढायो ॥
निरखि निरखि यशुदा बलिजाई ❀ अरुण चरण कर कोमल ताई ॥
ब्रजबासी जीवन नँदलाला ❀ मातु सुकृत फल मदन गोपाला ॥
नितनव मंगल होहिं सुहाये ❀ मंगल निधि जबते हरि आये ॥
*नन्द सुकृत वर्षाऋतु सोई ❀ यशुमति सुकृत अकाश बनोई ॥
तहँ घनश्याम श्याम तनु उनये ❀ मंदहँसनि दामिनि द्युति जुनये ॥
गरजन मंद मधुर किलकारी ❀ ब्रजजन मोरन आनँद कारी ॥
दादुर गुणगण गावहिं दासा ❀ परम प्रीति मन परम हुलासा ॥
पलना पचरंग मणि छबिछाई ❀ इन्द्र धनुष उपमा तिन पाई ॥
गज मुक्तनकी लर लटकाई ❀ सोइ मानों बगपांति सुहाई ॥
ब्रज घर घर सुख संपति छाई ❀ सोई मनहुँ भूमि हरिआई ॥
दोहा—वर्षत परमानंद जल, नंद सदन जगमाहिं ॥
ध्यान भूमि दृग सरित मग, जन उर सिंधु समाहिं ॥
सो०—पूरण होत सुनाहिं, यद्यपि निशि बासर भरन ॥
बढत लहरि पुलकाहिं, हरि मुख शशिराका निरखि ॥
कंसहि वहां नींद निशि नाहीं ❀ अति चिंता व्याकुल मन माहीं ॥
बैठ्यो निकसि सभा उठि प्राता ❀ मंत्री बोलि कहहि सब बाता ॥
मेरो रिपु प्रगट्यो ब्रजमाहीं ❀ कौन भांति पहिंचानों ताहीं ॥
जाते जाय वेगि वह मारो ❀ ऐसो तुम कछु मंत्र विचारो ॥
दिन दिन बडो होय अबसोई ❀ कोजाने फिरि कैसी होई ॥
बोल्यो एक असुर सुनु राजा ❀ क्यों डरपत इतनेके काजा ॥

१ चंद्रमुख । ❀ याचौपाईमें नंदराय और वर्षाकी ऐक्यताकरिके दिखाई है जैसे नंदको सुकृत सोई वर्षाऋतु और यशुदाको सुकृत आकाश तामें श्यामसुंदर सामरी घटाउठी तामें कृष्णकी मंदहँसनसोई वीजुरी किलकारीरूप गरजन ब्रजवासीरूप मोर आदि जानने ।

मोपै एक मंत्र सुनिलीजै ❀ धर्म काज कछु होन न दीजै ॥
जप तप होम होन नहिं पावैं ❀ विप्रन साधुन असुर सतावैं ॥
जो यह देव होयगो कोऊ ❀ सहिनहिं सकै प्रकट ह्वै सोऊ ॥
तब तेहिं असुर जाय संहारै ❀ याविधि शत्रु तुम्हारो मारै ॥
बोलो एक बात यहनीकी ❀ औरो सुनो हमारेजीकी ॥
देश देशको असुर पठावो ❀ बालक मासकके[1] जे पावो ॥
दोहा—तिन सबहिनको बधकरैं, वचन न पावै कोय ॥
इनहीं में वह होयगो, मार्यो जै है सोय ॥
सो०—कह्यो कंस हर्षाय, कहे मंत्र दोऊ भले ॥
पठवहु असुर निकाय[2], जायकरैं कारज सँभारि ॥
याविधि असुर बिदा बहुकीन्हों ❀ बाल बंधनकी[3] आयसु दीन्हों ॥
कह्यो जाय ब्रज वेगहि कोई ❀ तहँके बालक मारै सोई ॥
कह्यो पूतना आयसुपाऊं ❀ तो यह कारज मैं करिल्याऊं ॥
सकल घोष[4] शिशु जाय नशाऊं ❀ जो कहिये तो जीवत ल्याऊं ॥
क्षणमेंरूप मोहिनी धारौं ❀ वशीकरण पढि सब परडारौं ॥
घिसि कंकोल उरोजन लाऊं ❀ ब्रजबासिनके बाल पियाऊं ॥
तो पूतना नाम कहवाऊं ❀ जो नृपको कारजकरि आऊं ॥
तुरत कंसतेहि आयसु[5]दीन्हों ❀ सुनतहि वचन गवन तिन कीन्हों
तादिन नंद मधुपुरी[6] आयो ❀ राज अंश[7] कछु नृप कहँ ल्यायो
नृप दरबार ताहि पहुँचायो ❀ समाचार वसुदेव को पायो ॥
छोडि बंदितें[8] नृपने राखे ❀ हते मित्र सुनिके अभिलाषे ॥
मिलनगये तिनको नँदराई ❀ उठि वसुदेव मिले हर्षाई ॥
दोहा—कुशल पूछि करि परस्पर, बारम्बारसप्रीति ॥

१ महीनाभरके । २ समूह । ३ मारनकी । ४ ब्रजकेबालक । ५ आज्ञा । ६ मथुरा । ७ राजाकोकर । ८ कैदखानेते ।

बैठारे नँदराय ढिग, करिके आदर रीति ॥
सो०—तब बोले नँदराय, सुनिय देव भावी प्रबल ॥
तासों कछु न बसाय, जगत भ्रमत जाके बिवस ॥
तुम अति कष्ट कंसते पायो ❀ सुनि सुनि भयो बहुत पछतायो॥
आजुदेखिके चरण तिहारे ❀ भये हमारे नैन सुखारे ॥
तब बसुदेव कही मृदुबानी ❀ अहो नन्द तुम सत्यबखानी ॥
कर्मरेख नहिं जात मिटाई ❀ विधि की गति कछु जात न पाई॥
सुन्यो नंद सुत भयो तुम्हारे ❀ तब ते अति सुख भयो हमारे॥
तुमको जरा³ आय नियराई⁴ ❀ बड़ी बैस⁵विधि भयो सहाई॥
तबनँदहल⁶धर जन्म सुनायो ❀ प्रथमहिं तिन्हैं रोहिणी जायो॥
तिनको उत्सव प्रगट न कीनों ❀ कंस त्रास⁷ अपने उरलीनों ॥
सुनि वसुदेव बहुत सुखपायो ❀ तब ऐसे कहि वचन सुनायो ॥
सुनहु नंद तुमनीके जानो ❀ कंस नृपति कृत नाहिं छिपानो
ताते अब वे दोऊ बालक ❀ अपने मानि करो प्रतिपालक॥
अब तुम वेगि गोकुलहि जाहू ❀ बालक हित पतियाहु न काहू॥

अथ पूतनावधलीला ॥

दोहा—जित तित भेजे कंसके, करत असुर अनरीति ॥
प्रजा लोगके बालकन, ताते है अति भीति ॥
सो०—गई पूतना आज, ब्रजके बालक घातिनी ॥
करि है कछू अकाज, वेग धाम सुधि लीजिये ॥
सुनि वसुदेव वचन नँदराई ❀ भये बिदा तुरतै भय पाई ॥
निकसत शकुन अशुभ मग पायो ❀ ताते अधिक शोच उर छायो
क्षिप्र चले कछु सुधि तन नाहीं ❀ बालककी चिन्ता मनमाहीं ॥

१ पास । २ विधाता । ३ बुढापो । ४ नगीच । ५ उमर । ६ श्रीदाऊजीको । ७ भय । ८ घरकी । ९ जल्दी ।

इहां पूतना ब्रजमें आई ❀ रूप मोहनी प्रगट बनाई ॥
गरल[1] बांटि कुच सों लपटायो ❀ ऊपर शुभग शृंगार बनायो ॥
अतिही कपट छबीली सोहै ❀ जो देखै ताको मन मोहै ॥
इत उतह्वै नन्द धामहिं आई ❀ देखि रूप यशुदा मन भाई ॥
देखि रही मुख सुन्दर ताई ❀ के यह नरके सुरकी[2] जाई ॥
काकी वधू कौनकी बेटी ❀ अबलौं ब्रजमें कबहुं न भेटी ॥
बिन पहिंचाने आदर कीन्हो ❀ बैठनको शुभ आसन दीन्हो ॥
अहो महरि पालागन मेरो ❀ हौं आई सुत देखन तेरो ॥
हरिपलनापर मन मुसुकाई ❀ यशुमति कछु गृहकाज सिधाई॥

दोहा—तबहिं राक्षसी दुष्टमति, पलनाके ढिग जाय ॥
निरखि बदन मुख चूमिकै, लीन्ह उछंग[3] उठाय ॥
सो०—दियोकमल मुख माहिं, विषलपट्योअस्तन[4] तुरत ॥
पकर दुहूं कर माहिं, लगे करन पय[5] पान हरि ॥

पय संग प्राण खिंचे जब वाके ❀ ह्वै गये अंग शिथिल सब ताके॥
तब सो लगी छुडावन बालक ❀ सो क्यों छुटै दुष्ट कुलघालक॥
पय सँग प्राण खींचि हरि लीन्हा ❀ पठै स्वर्ग जननी[6] गति दीन्हा ॥
परी मृतक[7] ह्वै असुर सुनारी ❀ योजनलों[8] निजतनु विस्तारी ॥
यशुमति धाय देखि गुहरायो ❀ पलना पर बालक नहिं पायो ॥
त्राहि त्राहि करि ब्रज जन धाये ❀ व्याकुल विपुल नन्द गृह आये॥
अति व्याकुल यशुमति महतारी ❀ ढूढहिं श्यामहिं रोवत भारी ॥
हरि ताकी छाती लपटाने ❀ करत चरित जो अचरजसाने॥
ढूंढत ढूंढत उर पर पाये ❀ लै उठाय माता उर लाये ॥
दुख सुख ताको कह्यो न जाई ❀ जिमि मणि गई भुवंगन[9] पाई ॥

१ जहर। २ देवताकी बेटीहै। ३ गोद। ४ आँचर। ५ दूध। ६ माता। ७ मरी। ८ चारकोशमें देह फैलायके। ९ सर्प।

सुखित भईं सब ब्रजकी बाला ❀ कहति बच्यो अति नँदको लाला
नन्द यशोमति भाग बडेरी ❀ सुतकी करवरटरी करेरी ॥
दोहा–आई अद्भुत रूप धरि, अति विपरीत कुमारि ॥
कपट हेतु नहिं सहिसक्यो, तेहि माऱ्यो करतारि ॥
सो०–कहत यशोमति माय, पुनि पुनि सबके पांयपरि ॥
उबऱ्यो आजु कन्हाय, तुम पंचनके पुण्यते ॥
बडो कष्ट यह सुतने पायो ❀ आजुविधाता बहुत बचायो ॥
कोउ कह भागवन्त नँदराई ❀ कुलके देवन करी सहाई ॥
कोउ कहै नेक मोहिं सुत देरी ❀ देखहुं मुख मैं पुनि तू लेरी ॥
कोउ मुख चूमि बलैया लेई ❀ लै उछंग पुनि यशुदहि देई ॥
बच्यो कान्ह सब ब्रज सुधिपाई ❀ घर घर बजी आनंद बधाई ॥
तबहिं नंद गोकुलमें आयो ❀ देखि पूतनहिं अति भय पायो ॥
जो वसुदेव कही ही बानी ❀ सो सब मनमें सांची जानी ॥
तहँ सब ब्रजवासी जुरि आये ❀ समाचार सब प्रकट सुनाये ॥
तब सुखपाय गये नँद धामहिं ❀ देख्यो जाय सुवन घनश्यामहिं
बदनविलोकि हर्षि उरलाये ❀ बहुत दानदै देव मनाये ॥
तब ब्रजबासी सकल बुलाये ❀ अंग पूतनाके कटवाये ॥
बाहर एक ठौर सब कीन्हें ❀ अग्नि लगाय फूंकि सब दीन्हें ॥
दोहा–अति सुगंध ता अंगमें, कीन्ही अग्नि प्रकाश ॥
हरि अस्पर्श प्रतापते, ब्रज सब भयो सुबाश ॥
सो०–रहे अचम्भो पाय, ब्रजबासी चकितसबै ॥
चरण कमल चित लाय, नंदसुवनमहिमा सुनत ॥
हरि रोये माताकी कनियां ❀ दूध पियायो तब नँदरनियां ॥

१ भगवान् । २ श्यामसुंदरपुत्र । ३ मुखदेख ।

पुनि पलना पौढाय झुलावै ❀ हुलरावै दुलराय मल्हावै ॥
लालनके हित नींद बुलावै ❀ मधुरे सुर जोइ सोई गावै ॥
रेलालनको आव निदरिया ❀ तोहिं बुलावत श्याम सुंदरिया॥
जो करि कपट लालको आवै ❀ तौ अबकीलौं विधि विनशावै॥
अहो देवता या कुलकेरे ❀ मैं पूजिहौं कमलपद तेरे ॥
बेगि बडो करदे यह बालक ❀ ब्रज जन प्राण पूतना घालक॥
दुतियाके शशि[1] लौं शिशु[2] बाढै ❀ आँवा लौ अरि उर नितडाढै ॥
सोवै मेरो बाल कन्हाई ❀ माता मुखकी बलि बलि जाई॥
सोवत देखि मौन गहि रहई ❀ जागत देखि बहुरि कछु कहई॥
अँग फरकाय अल्प[3] मुसुकाने ❀ ता छबिकी उपमा को जाने ॥
बार बार शिशु वदन निहारैं ❀ यशुमति अपनो भाग्य विचारैं॥

दोहा—हुलरावत गावत मधुर, हरिके बाल विनोद ॥
जो सुख सुर मुनिको अगम, सो सुखलेत यशोद ॥

सो०—कबहूं लेत उछंग, उर लगाय चूमत मुखहिं ॥
निरखि मनोहर अंग, कबहुं झूलावत पालने ॥

दर्शनको नित सुर मुनि आवैं ❀ बाल विनोद निरखि सुख पावैं॥
कहैं परस्पर सुर नर नारी ❀ हरिके अद्भुत चरित निहारी ॥
अलख[4] अगोचर[5] अज[6] अविनासी[7] ❀ पुरुष पुरातन[8] विश्व[9] निवासी॥
जाको भेद न शिव मुनि जानैं ❀ ब्रह्मा पढि पढि वेद बखानैं ॥
सो हलरावत नँदकी घरणी ❀ पुरण भई पुरातन करणी ॥
मन अभिलाष बढावत भारी ❀ हुलसत हँसत देत किलकारी॥
वर्षि प्रसून[10] हर्षि मनमाहीं ❀ धन्य २ कहि ब्रज घर जाहीं॥
नित नव कौतुक होहिं अकासा ❀ ब्रजवासिनमन अमित हुलासा

१ द्वितियाकेचंद्रसमान । २ बालक । ३ मंदमुसकाए । ४ जोंदेखवेमेंनआवे । ५ कहिवेमेंनआवे । ६ अजन्मा । ७ जाकोनाश न होय । ८ प्राचीनपुरुष । ९ विश्वमेंरहनेवारो । १० फल ।

यशुदा नवनित लाड लडावैं ❀ निरखि २ ब्रज जन सुख पावैं ॥
नित नव मंगल नंदके धामा ❀ नित नव रूप श्याम अभिरामा॥
भक्तबछल भक्तन हितकारी ❀ भक्तन हित नाना तनुधारी ॥
भजत संत यह हृदय विचारी ❀ जन ब्रजवासी हैं बलिहारी ॥
दोहा—जब हरि मारी पूतना,सुनि डरप्यो नृप कंस ॥
प्रगट भयो ब्रज शत्रु मम, यह जानी निःशंस ॥
सो०—बसो तासु उरमाहिं, ताही क्षणते अचल हरि ॥
भूलत इक छिन नाहिं, शत्रु भाव लाग्यो भजन ॥

अथ कागासुरवध लीला ॥

कागासुर नृप निकट बुलायो ❀ ताहि मतो सब कहि समुझायो
आवहु वेगि नंद सुत मारी ❀ करियहु कारज बुद्धि विचारी॥
आयसु धरि शिर गर्व बढ़ायो ❀ काग रूप तिहि असुर बनायो॥
वेगवन्त उठि गोकुल आयो ❀ प्रेरितकाल अवधि नियरायो॥
बैठ्यो नंद धामपर आई ❀ पलना पौढे बाल कन्हाई ॥
ताको आवतही हरि जान्यो ❀ काग न होय असुरपहिचान्यो॥
यशुदा हरिको सोवत जानी ❀ कछु गृह कारजमें लपटानी ॥
तबहिं असुर पलनापर आयो ❀ चाहत हरिको चोंच चलायो ॥
कंठ पकरि हरि करसों लीन्हो ❀ चोंच मरोरि फेंकि तिहिं दीन्हो
पर्‍यो जाय नृपपास[1] उतान्यो ❀ यह ब्रजवासीकाहु न जान्यो॥
तुरत कंस तिहि बूझन धायो ❀ बीते याम[2] बोल तब आयो ॥
सुनहु कंस वह बाल न होई ❀ है अवतार महाबल कोई ॥
दोहा—एक हाथसों पकरि मोहिं, फेंकि दियो तुम पास ॥
है हैं तुम्हरो काल वह, मैं कीन्हो विश्वास ॥

१ कंसकेपास । २ पहर ।

सो०—अति डरप्यो महिपाल[1], कागासुरके वचन सुनि ॥
बढ सो गयो विशाल, जम्यो जु उरमें शोच[2] तरु ॥

सभा मध्य सब असुर सुनाई ❀ बार बार शिरधुनि पछिताई ॥
ब्रजमें उपज्यो मेरो काला ❀ ताको अबहीं ते यह हाला ॥
दनुज सुता पूतना पठाई ❀ ताको इकक्षण माँझ नशाई ॥
कागासुरके ऐसे हाला ❀ सोतो दिन दिन होत विशाला ॥
है कोउ बीर जुताहि नशावे ❀ मम कारज करि आप बचावे ॥

शकटासुर वधलीला ॥

ऐसो कौन कहौं मैं जासों ❀ अब के जाय भिरे जो तासों ॥
असुरनको ये नृपति सुनायो ❀ शकटासुर मन गर्व बढायो ॥
उठि के पान नृपति सों मांगे ❀ कहा काम यह मेरे आगे ॥
तव प्रताप तेहि पलमें मारौं ❀ कहौ तो सब ब्रजको संहारौं ॥
कंस हर्ष तेहि बीरा दीन्हों ❀ शूर सराहि बिदा तेहि कीन्हों ॥
यहां श्याम पलना पर खेलैं ❀ करगहि पद अँगुठा मुख मेलैं ॥
अपने मन यह करत विचारा ❀ इह मम* पद संतन आधारा ॥

दोहा—ये पद पंकज राखि उर, निरखत शम्भु सुजान ॥
इनको रस मन मधुप करि, करत निरंतर पान ॥

सो०—पुनि इनपदको ध्यान, करतब्रह्मसनकादिमुनि ॥
लक्ष्मी अति सुख मान, उरते क्षण टारत नहीं ॥

इन पद पंकज रस अनुरागा ❀ मगन सकल सुर नर मुनि नागा
ऐसोधौं का रस इन माहीं ❀ सोतो मोहिं विदित कछु नाहीं।
मोको यह रस दुर्लभ भारी ❀ देखौं धौं मैं ताहि विचारी ॥
ताते पद अँगुठा मुख मेलैं ❀ लैलै स्वाद मगन रस खेलैं ॥

१ कंसराज । २ शोकरूपवृक्ष कागासुरकी बाणी सुनके अत्यंत बढगयो । * सबऋषिमुनि शिव ब्रह्मादि अपनेहृदयमें धारणकरआनंदलेयहैं सो भगवान्ने बिचारिकिमैंहूंतोमुखमें लेकर देखों मेरेचरणमें ऐसोकहाबडोस्वादहै ।

ताअन्तर शकटासुर आयो ❀ पवन रूप काहु न लखि पायो ॥
भारे शकट[1] नन्द घर केरे ❀ पलनाके ढिग हते घनेरे ॥
तिनमें सो शठ[2] आय समान्यो[3] ❀ नन्दसुवन[4] तबहीं यह जान्यो ॥
ताको हरि यक लात चलाई ❀ गिर्‌यो शकट तब अति हहराई॥
दनुज निधन[5] काहू नहिं जान्यो॥ गिऱ्यो शकट यह सबहिन मान्यो
सुनत शब्द सब व्याकुल धाये ❀ नन्द आदि सब जुरि तहँ आये
यशुमति दौरि श्यामको लयऊ ❀ सबके मन अति विस्मय भयऊ
कारण कहा कहैं नर नारी ❀ गिऱ्यो शकट आपुहिते भारी ॥

दोहा—पलनाढिग खेलत हुते, कछुक गोपके बाल ॥
तिनन कह्यो डार्‌यो शकट, पलनाते नँदलाल ॥

सो०—सोनहिं करी प्रतीति, काहू बालनकी कही ॥
यह तौ कछु विपरीति, भई कुशल अति श्यामकी ॥

यशुमति अति मन मन पछिताई ❀ भये आज कुलदेव सहाई ॥
बार बार उरसों सुत लाई ❀ निरखि नंद पुनि पुनि बलि जाई
मेरे निधनी के धन छैया ❀ लगै मोहिं तेरी रोग बलैया ॥
ऐसे बहु विधि लाड लडाये ❀ पय[6] पियाय पलना पौढाये ॥
मन्द मन्द कर ठोंकि सुनावैं ❀ कछु इक मधुर मधुर सुर गावैं॥
सोवत श्याम शुभग सुंदर बर[7] ❀ चौंकि चौंकि शिशुदशा[8] प्रगटकर
लिये मातु छतियां लपटाई ❀ जनु फणि मणि[9] उर माँझ दुराइ
प्रात निरखि मुख आनँद कीनो ❀ चूमि बदन सुत को पय दीना ॥
कोमल घाम अजिर[10] जब आयो ❀ तब सुत पलना पर पौढायो ॥
आप मथन दधि भवन सिधारी ❀ नंदहि सुतके ढिग बैठारी ॥
निरखि नन्द सुत आनँद भारी ❀ कमल बदन छबि रहे निहारी॥

१ छकडा। २ दुष्ट। ३ छिपगये। ४ कृष्ण। ५ शकटासुरदैत्यकोमरण। ६ दूध। ७ श्रेष्ठ। ८ बालचरित्र। ९ सर्पकीमणि। १० अंगन।

चुटकी दैदै सुतहिं खिलावैं ❋ निरखि निरखि मुख अति सुखपावैं
दोहा—किलकिउठेलखितात मुख, करपदद्दग अतुराय ॥
झपट झटकि उलटे परे, सुखनिधि त्रिभुवनराय ॥
सो०—सो छबि कहिय न जाय, निरखिनन्द टेरत महरि ॥
आपन सकत उठाय, अति कोमल मम सकुचमन ॥
नंदहिं टेरत सुनि नंदरानी ❋ तजी तुरत दधि मथन मथानी ॥
जाने महरि गिरे सुखदाई ❋ ताते अति आतुर उठिधाई ॥
नंदहि देखि हँसतिहैं पासा ❋ तब धीरज धरि कियो हुलासा ॥
उलटि पर्‍यो सुत देख्यों आई ❋ उठि न सकत करसेजलगाई ॥
सोछबि निरखि मातु सुखपायो ❋ तुरत मुदित उलटाय उठायो ॥
उर लगाय मुख चुम्बन लागी ❋ कहत आज मैं भई सभागी ॥
पेटकॅरियन हरि उलटनलागे ❋ डेढ मासके भये सभागे ॥
चिरजीवहु मेरे कुँवर कन्हाई ❋ आज करों मैं अनँद बधाई ॥
नँदरानी ब्रज नारि बुलाईं ❋ यहसुनि सब आनँद कर धाईं ॥
हरिको निरखि परम सुख पायो ❋ हरषित सबहिन मंगल गायो ॥
बाँटी घर घर पान मिठाई ❋ नन्दसुवन ब्रजजन सुखदाई ॥
धनि धनि ब्रजकी बालसभागी ❋ हरिके बाल चरित अनुरागी ॥
दोहा—जननी अति आनँद भरी, निरखत श्यामलगात ॥
जैसे निर्धनी पाय धन, मुदित रहत दिन रात ॥
सो०—धनि धनि ब्रजकोवास, धन्य यशोदा धन्यनँद ॥
धनि ब्रजबासी दास, जिनको मन या रस मगन ॥

अथ तृणावर्त्त वध लीला ॥

धनि धनि ब्रजकी भूमि सुहाई ❋ बाल चरित लीला सुखदाई ॥

१ हाथ पाँय आँख । २ पेटकेबल । ३ दरिद्री

यशुदा भाग्य न जात बखाने ❁ त्रिभुवन पतिको सुतकर माने ॥
हरिको गोदलिये पयप्यावै ❁ विविध भांतिकरि लाड़ लड़ावै ॥
कबहूं हरि मुखसों मुखलावे ❁ कबहूं हर्षित कंठ लगावै ॥
मोनिधनीको धन सुतनान्हा ❁ खेलतहँसतरहौ नित कान्हा ॥
कबधौं मधुर वचन कछु कैहैं ❁ कब जननी कहि मोहिं बुलैहैं ॥
कब नन्दहि कहि बाबाबोलैं ❁ खेलत इत उत आँगन डोलैं ॥
कबधौं तनक तनक कछुखैहैं ❁ अपने करले मुख में नैहैं ॥
कब विधि यह अभिलाष पुरावै ❁ मनहीं मन कुलदेव मनावै ॥
किलकतहरिजननीकी कनियां ❁ करतचरित्रमातु सुखदनियां ॥
तृणावर्त हरि आवत जाना ❁ पठयो कंस सहित अभिमाना ॥
भयो गरुव जननी भरपायो ❁ सहि न सकी तब भुव बैठायो ॥

दोहा—आपलगी गृहकाज कछु, राखि अजिर गोपाल ॥
अति प्रचंड वह डर उठ्यो, गोकुलपुर तिहकाल ॥

सो०—बात चक्रमिस आय, तृणावर्त्त पापी असुर ॥
हरिको लियो उठाय, अन्धधुंध गोकुल कियो ॥

हरिको लैके गयो अकाशा ❁ धूरि धुन्ध गोकुल चहुँपासा ॥
जहां तहां नर नारि छिपाने ❁ प्रलय काल सम करि सब माने
यशुमति दौरि अजिरमें आई ❁ तहाँ नपायो कुँवर कन्हाई ॥
नन्द नन्द करि शोर लगावो ❁ तेरोसुत अँधवायु उड़ायो ॥
दौरो वेगि गुहार लगावो ❁ व्रजबासिनको टेरि बुलावो ॥
अति व्याकुल खोजत नँदरानी ❁ जिततित फिरत भुवन बिलखानी
तृणावर्त्तको हरि यों कीन्हो ❁ ग्रीव लिपट तिहि नीचे लीन्हो ॥
कठिन शिलापर ताहि गिरायो ❁ ताके ऊपर आपुन आयो ॥

१ दूध। २ विधाता। ३ भारी। ४ आँगन। ५ भभूरेकेरूप।

चूर चूर करि ताके गाता ❀ कीन्हे भुक्ति मुक्तिके दाता ॥
धूरि धुन्ध सब तुरत विनाशी ❀ खोजत हरिहिं विकल ब्रजबासी ॥
ब्रजवनितन उपबनमें पाये ❀ लिये उठाय कण्ठ लपटाये ॥
अति आतुर यशुमति पै लाई ❀ ह्वैगइ घर घर अनँद बधाई ॥

दोहा—लिये धायकै मायने, छतियां रही लगाय ॥
नन्द निरखि सुख पायकै, मनसौं बहुतिक गाय ॥

सो०—बार बार ब्रजनारि, देहिं बसन भूषण मगन ॥
जित तित कहैं विचारि, नयो जन्म हरिको भयो ॥

उबरे श्याम महरि बडभागी ❀ देखहु धौं कहु चोट न लागी ॥
रोग लेउँ बलि जाउँ कन्हाई ❀ हरि हैं ब्रजके जीवन माई ॥
भली न प्रकृति यशोदा तेरी ❀ इकलो हरिको छाँड़त[1] हेरी ॥
घरको काज इनहु ते प्यारो ❀ बौरी[2] अजहूँ सुरति सँभारो ॥
बहुत बच्योरी आज कन्हाई ❀ भयो पुरबलो पुण्य सहाई ॥
यशुमति सब सौं कहत लजानी ❀ अबमैं सीख तिहारी मानी ॥
मोहिं कहा हो यह सुखमाई ❀ मैं तो रंक[3] परी निधिपाई ॥
अबमैं अपनो लालचितैहौं ❀ एकौ क्षण काहु न पत्यैहौं ॥
ऐसे कहि सब सो नँदरानी ❀ कीन्ही बिदा सकल सनमानी ॥
यशुमति हरिको गोद खिलावै ❀ देखि देखि मुख नयन सिरावै ॥
अति कोमल श्यामल तनु देखी ❀ बार बार पछितात विशेषी ॥
कैसे बच्यो जाउँ बलिहारी ❀ तृणावर्तकी घात निवारी ॥

दोहा—नाजानौं किहि पुण्यते, को करिलेत सहाय ॥
कियो काम सब पूतना, तृणावर्त यह आय ॥

सो०—मातु दुखित जियजानि, कृपासिन्धु वत्सलभगत ॥

१ हानकरी । २ बावरी । ३ दरिद्री ।

बाल चरित सुखदानि, करन लगे सुन्दर परम ॥

खेलत मातु उछंग कन्हाई * करत बाल लीला सुखदाई॥
जननी बेसर लटकत देखी * चितवत ताहि बिसारि निमेषी॥
ताहि गहनको पाणि[1] चलायो * तब जननी कछु बदन उचायो॥
नहिं पहुँचे तब अति उकताई * सो छबि निरखि मातु बलि जाई॥
जननीवदननिकटकरिलीन्हों * तबहरिहुलसिकिलकिहँसिदीन्हो
बिहँसत चमकि परीं दुइदतियाँ * जनु युग बिज्जु बीजकी पतियां॥
प्रमुदित निरखि यशोदा फूली * प्रेम मगन तनुकी सुधि भूली ॥
बाहरते तब नंद बुलाये * परमानन्द सहित उठि धाये ॥
हो पति सफल करो दृग[2] आई * देखिहु सुत मुख दतुलि सुहाई॥
हर्षित हरिहिं गोद नँद लीन्हो * निरखि तात मुख हरि हँसि दीन्हो॥
देखत बदन नयन सियराने * दूध दांत किधौं छबिके दाने ॥
अहो महरि बड भाग्य तुम्हारे * सफल फले मनकाज हमारे ॥

दोहा—कछु दिन घट षट[3] मासके, भये श्याम सुखदान॥
अन्न पराशनके दिवस, बूझहु विप्र बिहान ॥

सो०—सुनि पुलके नँदराय, भये पराशन योग हरि॥
प्रेमरह्यो उरछाय, सो सुख कापै जाय कहि ॥

अथ अन्नप्राशनलीला ॥

प्रातकाल उठि विप्र बुलायो * राशि बूझि शुभ दिवस धरायो॥
यशुमति सो दिन आछो पायो * सखिन बोलि शुभगान करायो॥
युवतिमहरिको[4] गारी गावैं * और महरको नाम सुनावैं ॥
मणि कंचनको थार मँगायो * भांति भांतिके बासन आयो॥

१ . . . २ नेत्र। ३ छःमहीना। ४ नंदराय।

नन्दघरनि ब्रजबधू बुलाई ❀ जे सब अपनी जाति सुहाई ॥
कोउ जिवनार कोऊपकवाना ❀ षट्रस[१]के बहु करत विधाना ॥
बहु प्रकारके व्यंजन ठाने ❀ जिनके स्वाद न जायँ बखाने ॥
अतिउज्ज्वलकोमलशुभनीके ❀ कियो बिविध विधिमनहुअमी[२]के
यशुमती नन्दहि बोलि कह्या तब ❀ बोला महर जाति अपनी सब
आय गये नँद सकल महर घर ❀ ल्याये बोलि सबन आदरकर ॥
बैठारे सब आनि अथाई ❀ भीतर गये आप नँदराई ॥
यशुमति हरिको उबटि न्हवाये ❀ सुन्दरपट भूषण पहिराये ॥

दोहा—तन झँगुली शिर चौतनी, कर चूरा दुहुँ पाँय ॥
बार बार मुख निरखिकै, यशुमतिलेतिबलाय ॥
सो०—लै बैठे नँदराय, जानि शुभ घरी गोद हरि ॥
लीने सदन बुलाय, गोप सकल आनँद भरे ॥

बैठे सकल गोपगण[३] आई ❀ अति आनन्द मगन नँदराई ॥
कनक[४]थार भरि खीर धराई ❀ मिसिरी घृत मधु[५] डारि मिलाई ॥
लगेनन्दहरि मुख जुठरावन ❀ गोप बधू लागीं सब गावन ॥
आंगन बाजी विविध बधाई ❀ शंख निशान भेरि सहनाई ॥
षटरसके व्यंजनहैं जेते ❀ हरिके अधर छुवाये तेते ॥
तनक अधर जल पोंछि सुहाये ❀ हरिको यशुमति पै पहुँचाये ॥
हर्षवन्त युवती सचुपायो ❀ लैलै मुख चुम्बति उरलायो ॥
विप्रन बोलि दक्षिणा दीन्ही ❀ नाना वस्तु निछावरि कीन्ही ॥
गोपन संग महरि नँदराई ❀ बैठे पनवारे पर जाई ॥
अति रुचि सबहिन भोजन कीनो ❀ बीरा बहुरि सबनको दीनो ॥
गोप बधू सब महरि जिमाई ❀ दैके पान सुगंधि सिचाँई ॥

१ मीठे-खारे-चरपरेआदि । २ अमृतके । ३ गोपसमुदाय । ४ सोनेकोथार । ५ सहत ।

इहि विधि सुख बिलसैं ब्रजबासी ❋ निरखैं श्याम शुभग शुभराशी

दोहा—सुरसिहाहिं ललचाहिं मुनि, लखि ब्रजजनके भाग ॥
धन्य धन्य कहि सुमनझरि, करहिं सहित अनुराग ॥

सो०—नितनवमंगलचार, नितनवलीला श्यामकी ॥
कोकवि वरणै पार, शेष न पावैं पार जिहिं ॥

नेति नेति जिनकों श्रुति[1] गावैं ❋ तिनको ब्रज जन गोद खिलावैं ॥
जो सुख नंद भवनके माहीं ❋ तीनि लोक महँ सो कहुँ नाहीं ॥
नित्य नयो सुख यशुमति पावैं ❋ नये नये नित लाड लड़ावैं ॥
नयन ओट हरि करत न कैसे ❋ जुगवत[2] रहै फणिकमणि[3] जैसे ॥
निंदति निमिष[4] होत पल ओटा ❋ निरखतही सुखपावति ढोटा ॥
तनक कपोल अधर अरुणारे ❋ तनक तनक कच[5] घूंघरवारे ॥
कुटिल भृकुटि की रेख सुहाई ❋ मसिविन्दुक[6] तापर सुखदाई ॥
नयन नाशिका भाल विशाला ❋ कलबल बोलन परमरसाला ॥
अल्प[7] दशन चिबु[8] कंदर ग्रीवा ❋ तनघन श्याम मृदुल छबि सींवा
मातु निरखि नयनन सुखपावैं ❋ प्रेम विवश मति गति बिसरावैं ॥
निरखिरूप यशुमति अनुरागे ❋ कहत कहूं मम दीठि न लागे ॥
तब अँचरातर लेत छिपाई ❋ डारत बार लोन अरु राई ॥

दोहा—कबहुँ झुलावति पालने, कबहुँ खिलावति गोद ॥
कबहुं सुवावति पलँगपर, यशुदासहित विनोद ॥

सो०—नित प्रति ब्रजकी बाम, आवैं यशुमतिके सदन ॥
मुदित निरखि घनश्याम, लैलै गोद खिलावहीं ॥

इहि विधि विहरत बाल कन्हाई ❋ कछु दिनमें संतन सुखदाई ॥
लागे चलन घुटुरुवनि आँगन ❋ लगे मातु सों माखन माँगन ॥

१ वेद । २ देखतरहै । ३ सर्पमणिको । ४ निमिराजाको । ५ बार । ६ श्यामबिंदु । ७ छोटे छोटे दांत । ८ ठोडी । ९ मजर ।

खेलत मणिमय आँगन माहीं ❀ देखि रहत लखि निज परछाहीं ॥
कबहुँ तात कहि पकरन धावैं ❀ जानु[1] पाणि[2] बिचरत छबि पावैं ॥
कबहुं किलकि तात मुख पेखैं ❀ कबहुं हँसि जननी तन देखैं ॥
कबहुँ बुलाय लेत नँदराई ❀ कबहुँ जननि ढिग आवत धाई ॥
कबहुं किलकि अनत उठि भाजैं ❀ गिरत परत घुटुवन छबि छाजैं
कबहुँ कि जात जहाँ बलभाई ❀ खेलत गोप बाल समुदाई ॥
कबहुँ कहत कछु खंडित बाता ❀ सुनत होत सुख पूरण गाता ॥
कहन चहत कछु प्रगट न आवै ❀ माखन माँगत सैन बतावै ॥
मात समझ मथनीते लेई ❀ कछु खवाय कछु करं धर देई ॥
खेलत खात कान्ह मणि अँगना ❀ इत उत करत घुटुरुवन रिंगना ॥

दोहा—करचूरा पगपैंजनी, तन रंजित रजपीत ॥
उर हरि नख[4] कटि[5] किंकिणी, मुखमंडित नवनीत[6] ॥
सो०—होत चकित चितवाय, बजत पैंजनी शब्दसुनि ॥
सुर मुनि रहत लुभाय, बालदशाके चरित लखि ॥

खेलत आँगन बाल गोविन्दा ❀ तात मात उर करत अनन्दा ॥
चलत पाणि पदकी परछाहीं ❀ प्रतिबिम्बत मणि आँगन माहीं
मनहुँ शुभग छबि महितटपाई ❀ जल भाजन जल लेत भराई ॥
किधौं जानि पद कोमलतासन ❀ धरि धरि देत कमलके आसन ॥
निरखि शुभग शोभा सुखदनियाँ ❀ लिये हरषि सादर नँदकनियाँ
नीलजलजतनु[8] सुन्दरश्यामा ❀ शुभग अंग सब छबिके धामा ।
अरुण तरुण नख ज्योति सुहाई ❀ कोमल कमल चरण सुखदाई ।
रुनु झुनु पैजनि पाँयन बाजैं ❀ मनसिजयंत्र सुनत सुरलाजैं ।
कटि किंकिणी जटित खनकारी ❀ पीत झँगुलिया सुभग सवाँरी ।

१ घोटू । २-३ हाथ । ४ बघनखा (वाघके) ५ कमरमे कौंधनी । ६ माखन । ७ देखत । ८ नीलकमल । ९कामदेवकेयंत्र ।

कर कमलनि चूरा छबिछाजै ❀ रुचिर बाहु भूषण अतिराजै ॥
कठुला हार जो अंग सुहाए ❀ बिच बिच पदिक प्रबाल पुहाए॥
चारु चिबुक द्युति वरणि न जाई ❀ गोलकपोल परम छबि छाई ॥

दोहा—अरुण[1] अधर[2]मधि दशन[3] द्युति, प्रकट हँसनमें होति ॥
मानहु सुन्दरता सदन[4], रूप रत्नकी ज्योति ॥

सो०—मधुरतोतरे बैन, श्रवण सुखद मुनि मन हरण ॥
सुनत होत चित चैन, समुझत कछुक बनै नहीं ॥

नाशा सुभग कमल दल लोचन ❀ भाल[5] विशाल तिलक गोरोचन
भ्रुकुटि निकट मसि[6]विन्दुकलाग्यो।मनो अलि[7] शावकसोयन जाग्यो
लाल चौतनी शीश सुहाई ❀ विविध रंग मणि गण लटकाई॥
बाल दशाके कच[8]घुँघरारे ❀ छिटकिरहे कछु घूमघुमारे ॥
मंजुल तारन की चपलाई ❀ बाल दशा की ललित सुहाई ॥
चन्द्र बदन सुख सदन कन्हाई ❀ निरखिनन्द आँनद अधिकाई॥
वदन चूमि उर सों लपटायो ❀ सोसुख कापै जात बतायो ॥
ब्रज युवती सब चितवत ठाढीं ❀ मनहुँ चित्र पुतरी लिखि काढीं॥
प्रेम मगन नँद सुवन निहारैं ❀ गृह कारजकी सुरति बिसारैं ॥
ब्रज युवती हरि सों मन लावैं ❀ नन्द सुवन सबके मन भावैं ॥
ब्रज बासी प्रभु सबके नायक ❀ प्रेम विवश जनके सुखदायक॥
बाल चरित लखि सुर सुख पावैं ❀ योग दशा सनकादि भुलावैं ॥

दोहा—करत बाललीला ललित, परम पुनीत उदार ॥
सुन्दर श्याम सुजान हरि, सन्तनके आधार ॥

सो०—कापै वरण्यो जाय, बालचरित नँदलालको ॥
कल्पनसकहि न गाय, शेषकोटि शारद सहस ॥

१ लाल । २ होंठ । ३ दांत । ४ सुंदरताकोघर । ५ मस्तक । ६ श्यामबिंदु । ७ भौंराको बाल । ८ लटुरियां (जुल्फ)

अथ नामकरण लीला ॥

इकदिन श्रीवसुदेव विज्ञानी ❀ पठये बोलि गर्गमुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा विधिवत बैठायो ❀ युग[1] पद कमल शीशतबनायो॥
बहुरि कह्यो सुनिये ऋषिराई ❀ जबते भयो कंस दुखदाई ॥
तबते गोकुल नन्द अबासा[2] ❀ जाय रोहिणी कियो निवासा॥
जाके गर्भ जन्म सुतलीन्हों ❀ कंस त्रासते प्रगट न कीन्हों ॥
नाम करण ताको अबताईं ❀ भयो नाहिं तुम बिना गुसाईं ॥
करिकै कृपा तहां प्रभु जइये ❀ ताको नाम राखिकै अइये ॥
सुनि वसुदेव वचन सुखपायो ❀ हर्ष सहित मुनि गोकुल आयो।
नन्दराय ऋषि[3] आगम जान्यो ❀ अपनो बडो भाग्य करि मान्यो
चरण धोय चरणोदक लीन्हों ❀ अर्घासन अतिहित करि दीन्हों
बडी कृपा कीन्ही ऋषिराजू ❀ मोसम धन्य आन नहिं आजू।
अति पुनीत[4] भोजन बनवायो ❀ विविध भाँति ऋषिराय जिमायो

दोहा—बहुरि महरि ऋषि रायसों, कह्यो जोरि कर[5] दोय ॥
किहिकारज प्रभु आगमन, कहो कृपा करिसोय ॥

सो०—तब बोले ऋषिराज, पठयोहै वसुदेव मोहिं ॥
नामकरणके काज, सुभग रोहिणी सुवनको[6] ॥

सुनत नन्द अति भये सुखारे ❀ लै आये कनियां दोउ बारे॥
मुनि चरणन मेले दोउ भाई ❀ दई अशीष मुदित ऋषिराई ॥
हरिकी छबि अति आनँदकारी ❀ देखिरहे मुनि पलक बिसारी॥
प्रथम नन्द बल[7]हाथ दिखायो ❀ जन्म दिवस मुनि पास सुनायो॥
देखि गर्ग उठि कियो विचारा ❀ है यह शिशु सब जगत अधारा॥
अतिशुभ लक्षण बलको[8] धामा ❀ धर्यो नाम तिनको बलरामा॥

१ दोनोंचरणोंमें । २ नंदरायकेघरमें । ३ गर्गाचार्यको । ४ पवित्र । ५ दोनोंहाथ । ६ रोहिणीकेपुत्रको । ७ दाऊजीको । ८बालक।

बहुरि नन्द चरणन शिर नायो ❀ कह्योकि ऋषि मम भागन आयो
तुम सर्वज्ञ अहो मुनि नाथा ❀ देखिये यह बालकको हाथा ॥
मुनिवर देखत चिह्न भुलान्यो ❀ प्रेम मगन सब तनुपुलकान्यो ॥
पुनि पुनि हरिको वदन निहारी ❀ बोल्यो मुनिवर सुरत सँभारी ॥
धन्य नन्द धनिमहरि यशोदा ❀ धनि धनि धन्य खिलावत गोदा
सुनहु नन्द मैं सत्य बखानों ❀ इनको तुमसुत करिमतजानों ॥

दोहा—रूपरेख जाके नहीं, अलख अनादि अनूप ॥
सोभक्तनहित अवतर्‍यो, निज इच्छा अनुरूप ॥

सोरठा—इनते बड़ो न कोय, येकर्ता सब जगतके ॥
जोये करैं सो होय, तुम सों हम सांची कहैं ॥

इनके[1] नाम अमित[2] जगमाहीं ❀ तदपि कहो मैं कछु तुम पाहीं ॥
इन कबहू वसुदेवके धामा ❀ लियो जन्म सुन्दर वर श्यामा ॥
ताते वासुदेव इक नामा ❀ सो सुमिरत पावहिं नर कामा ॥
कहिहैं कृष्ण बहुरि जगमाहीं ❀ जाके सुमिरत पाप नशाहीं ॥
अरुये जैसे कर्मनि करिहैं ❀ तैसे नाम जगत विस्तरिहैं ॥
दुष्टदलन[3] सन्तन सुखदाई ❀ भूमिभार हरिहै दोउ भाई ॥
तुम कबहूं तपकरि यह माँगा ❀ तुमहिं खिलावैं अति अनुरागा ॥
ताते सुत करि तुम इनपायो ❀ मतजानो इनको निज जायो[4] ॥
येअति सुखदायक ब्रजकेरे ❀ करिहैं अति आनन्द घनेरे ॥
सुनि ऋषिमुख हरि यश सुखराशी ❀ आनंदे सब ब्रजके बाशी ॥
सुनत नन्द यशुमति सुखपायो ❀ मुनि चरणनकोशीशनवायो ॥
बहुत भेंटलै आगे राखी ❀ अस्तुति बहुत भांति सोंभाखी ॥

दोहा—बिदा भये ऋषिराजतब, नन्दभाग्यबड़ भाखि ॥

१ कृष्णको। २ अनेक। ३ दुष्टनकोमारनवारो। ४ अपनोपुत्र

चले मधुपुरीको हरषि, हरि मूरति उरराखि ॥
सो०–कह्यो हर्षि ऋषिराय, सब वृतान्त वसुदेवको ॥
सुनत बहुत सुखपाय, ऋषिहि पूजि कीन्हे बिदा ॥
यशुमति समुझि गर्गकी बानी ❀ आपुनि अतिबड़भागिनजानी॥
हरिको लै उरसो लपटायो ❀ प्रमुदित अस्तनपान करायो॥
श्याम राम मुख निरखत मोदा ❀ मातु रोहिणी और यशोदा ॥
खँकि खँकि हरि बैठत गोदा ❀ भावत हरिके बाल विनोदा ॥
हरिको गोदलिये दुलरावैं ❀ पुनि पुनि तुतरे बोल बुलावैं ॥
कबहुँक गावत दैकर तारी ❀ कबहुँ सिखावत चलन मुरारी॥
तनक तनक भुज टेक उठावैं ❀ क्रम क्रम ठाढे होन सिखावैं ॥
पुनि गहि भुज पद द्वैक चलावैं ❀ लरखरातलखि मनसुख पावैं॥
मनहीं मन यो विधिहि मनावैं ❀ कबधौं अपने पांयन धावैं ॥
कबहुँक छोंड देत अँनैया ❀ खेलत मुदित तहांदोउ भैया॥
गौरश्याम बलराम कन्हैया ❀ संगहि संग फिरत दोउ भैया ॥
जिमि बछराके पाछे गैया ❀ ब्रजबासी जनलेत बलैया ॥
दोहा–धवल[1] धूरि धूसरिततनु, बाल विभूषण अंग ॥
अंजन रंजितदृग[2]चपल, निरखत लजत अनंग[3] ॥
सो०–विहरत आनँद कन्द, मणिमय आंगन नन्दके ॥
यदुकुल कैरव[4] चन्द, दहन दनुज कुल[5] बन अनल ॥
कबहूं ठाढि होति गहि मैया ❀ कबहूं डोलत चलत कन्हैया ॥
कुलही चित्र विचित्र झँगुलिया। दमकि उठत द्वैललित दँतुलिया
मुनि मन हरणमंजुमासि बिंदा ❀ सुखद चारु लोचन अरबिंदा ॥
कलबल बचन तोतरे बोलैं ❀ गहिमणि खंभडगत डगडोलैं ॥

१ सपेद । २ नेत्र । ३ कामदेव । ४ यदुकुल कमोद[illegible]काशितकरनवारेचंद्र ।
५ दैत्यकुल वन रूपके नाशकरवेको अग्नि[illegible]।

निरखत झुक झांकत प्रतिबिम्बै * देत परम सुख पितु अरु अम्बै[1]॥
मथति जहां दधिनँदकी रानी * होतखरे तहँ टेकिमथानी ॥
मात तनिकदधि देति खवाई * लेत प्रीति सों सो सुखदाई ॥
क्षीर समुद्र जासु रजधानी * तनकदही सों तिन रुचि मानी॥
तनिकसो बदन तनिकसी दँतियां। तनिकसो अधर तनिकसीबतियां
तनकबदन दधि तनक कपोलन * तनक हँसन मन हरण अमोलन
तनक तनक कर तनकै माखन * तनक अँगुरिया तनकै चाखन
तनक तनक भुज चरण सुहाये * तनक स्वरूप मनोज[2] लजाये॥

दोहा—तनक विलोकनजासुकी, सकल भुवन विस्तार ॥
तनक सुने यश होतहै, तनक सिन्धु संसार ॥
सो०—तनकरहत नहिं पाप, तनक नाम जाके लिये ॥
मिटत सकल भवताप[3], तनक कृपा जापै करहिं ॥

अथ बरसगांठलीला ॥

बरसगांठ लालनकी आई * द्विषट मासके[4] भये कन्हाई ॥
फूली फिरत यशोमति माई * घरघर ते सब बधू बुलाई ॥
प्रमुदित मंगल गान करायो * आनँदउमगे तूर बजायो ॥
आंगन सकल सुगंधि लिपायो * रचिरचि मोतिन चौक पुरायो
फूले फिरत नन्द सुख भारी * लिये गोप गण सकल हँकारी॥
द्वारन बन्दनवार बँधाये * ध्वज पताक रचि विविध बनाये
पान फूल फल डार रसाला * हरदिदूब दधि अक्षत माला ॥
मंगल द्रव्य सकल मँग वाई * बहुमेवा बहुभांति मिठाई ॥
यशुमति कीन्ह उबटि अन्हवाये * अंग पोंछि भूषण पहिराये ॥
टोपी जरकस पीत झंगुलिया * दमकत द्वै द्वै चार दँतुलिया ॥

१ माता। २ कामदेव। ३ संसारक्लेश। ४ वर्षदिनके।

कठुला कंठ बघनखानीको ❀ किये भाल केसरको टीको ॥
लटकत ललित ललाट लटूरी ❀ वरणि न जाय वदन छबिरूरी।
दोहा—नैन आँज भ्रुकुटी निकट, कियोमातुमसि बिन्द ॥
करि शृंगार हरि मुख निरखि, चूम्यो मुख अरबिन्द ॥
सो०—लिये गोद सुखकन्द, नन्द बोलि यशुमति कह्यो ॥
बोलहु भूसुर वृन्द, लग्न घरी आवत चली ॥
काहेको अब गहरु लगावत ❀ विप्र वेगि काहे न बुलावत ॥
नन्द क्षिप्र वर विप्र बुलाये ❀ पदपखारि आसन बैठाये ॥
लै उछंग लालन नँदराई ❀ बैठे हर्षि चौकपर जाई ॥
वेद मंत्र विधि सहित पढावत ❀ बरसगांठि सुख सहित जुडावत
ब्रजनारी सब बनिबनि आवैं ❀ मंगल तिलक श्यामको लावैं ॥
गावत मंगल कोकिल बैनी ❀ हरि दर्शन प्यासी मृगनैनी ॥
तिलक सबनि मोहनके दीन्हों ❀ देखि देखि मुख अति सुखलीन्हों
विप्रन बहुत दक्षिणा पाई ❀ बाँटी सबको पान मिठाई ॥
धन मणि चीर निछावरि कीन्हे ❀ बार बार नेगिनको दीन्हे ॥
तब सारी पचरंग मंगाः हर्षित महरि वधुन पहिराई ॥
देत अशीष सकल अतिमोदा ❀ लेत यशोमति भरि भरि गोदा ॥
नित नव गोकुल होत बधाई ❀ सदा श्याम जनके सुखदाई ॥
दोहा—धन्य यशोमति धन्य नँद, धन २ बाल विनोद ॥
धन्य सुमन जिन जननके, रहत सुधारस ओद ॥
सो०—धनि धनि ब्रजकी बाल, कहि २ सुर वर्षहिं सुमन ॥
धन्य धन्य नँदलाल, दैत्यदलन सज्जन सुखद ॥
कान्ह चलत पग द्वै द्वै धरनी ❀ होत मुदितलखिनँदकी घरनी॥

१ कारीबिंदी (भोमटकना वा डिठोना) । २ दर । ३ जल्दी । ४ चरणधोय । ५ गोद

करत हुती अभिलाषा जोई ❁ निरखत अपने नयनन सोई ॥
रुनुकु झुनुकु नूपुर पग बाजे ❁ डगमगात डोलत छबिछाजे ॥
बैठ जात पुनि उठत तुरतहीं ❁ देहरिलों चलिजात फुरतहीं ॥
धाम अवधि राखत अटकाई ❁ गिरि २ परत नांघि नहिं जाई ॥
कीन्हीं तीन पडे जिन बसुधा[1] ❁ देहरिताहि नँघावत यशुदा ॥
पकरि पाणि क्रम २ उतरावै ❁ लखि सुर मुनि मनविस्मयपावै ॥
कोटिन अंड रचै पल माहीं ❁ पलमें बहुरि मिटावै ताहीं ॥
ताहि खिलावत यशुमति ग्वारी ❁ नाना विधि सुख करि २ भारी ॥
कबहूं दै करतारि नचावै ❁ कबहू मधुर २[2] सुर गावै ॥
देखि श्याम जननीके ताँई ❁ आपुन गावत तारि बजाई ॥
पग नूपर कटि किंकिनि कूजे ❁ लखि छबि मन अभिलाष हिपूजे

दोहा—शोभित कठुला कंठकल, उरहरिनख[3] छबिराश ॥
मनहुँ श्याम घनमें कियो, नवशशिविमल प्रकाश ॥

सो०—जननि कहत बलिजाउँ, नचहु लेहु नवनीतसद ॥
धरत रुनक झुन पाँउँ, त्रिभुवनपति नवनीत हित ॥

बोलन लगे श्याम कलबानी ❁ कछुकतोतरी कछुक सयानी ॥
नंदहि तात यशोदा मैया ❁ बलसों दाऊ कहत कन्हैया ॥
प्रातहि उठि मांगत दोउ भैया ❁ माखन रोटी देरी मैया ॥
अँचरागहैं न मानत बाता ❁ अति आतुर ठुनकत[4] दोउ भ्राता ॥
सुनि २ मधुर वचन सुख पावैं ❁ ताते जननी गहरु[5] लगावैं ॥
जननि मध्य सन्मुख संकर्षण ❁ पाछे ठाढे सुभग श्यामतन ॥
मनौ सरस्वति सँग युगपक्षी ❁ राजहंस अरु मोर विपक्षी ॥
कबरी[6] गही श्याम खिझलाई ❁ मुक्ता माँग गही बल भाई ॥

१ पृथ्वी । २ श्रेष्ठ । ३ नाहरको नख । ४ रुदन । ५ देरी । ६ चुटिया (वेणी)

मनहुँदुहुन निज २ भखं लीनो ॥ जननी सों झगरो यह कीनों ॥
नंददेखि हँसि हँसि गएलोटी ॥ यशुमति मुदित कर्मकी मोटी ॥
कतहो आँरि करत गहि चोटी ॥ यहैं बात मोहन तेरी खोटी ॥
जो चाहो सो लेउ दोउ भैया ॥ करहु कलेवा मैं बलि जैया ॥

दोहा—दियो कलेऊ मात उठि, माखन रोटी हाथ ॥
खात खवावत बालकन, सकल विश्वके नाथ ॥
सो०—जेहि ध्यावैं योगीश, सनकसनंदन आदि मुनि ॥
कौतुकनिधि जगदीश, करत चरित संतन सुखद ॥

अथ ब्राह्मणलीला ॥

चलत लाल पैंजनिके चायन ॥ पुनि २ हर्षितलखि २ पायन ॥
विविध ग्वाल बालन संगलीने ॥ डगमगात डोलत रंगभीने ॥
कबहूं दौरी द्वार लौ जाहीं ॥ कबहूं भजि आवैं घर माहीं ॥
ब्राह्मण एक नन्दके आयो ॥ महाभाग्य हरिभक्त सुहायो ॥
गोपनको सो पूज्य कहायो ॥ पुत्रजन्मसुनिके उठिधायो ॥
यशुमति देखि अनन्द बढायो ॥ आदर करि भीतर बैठायो ॥
पाँय धोय जल शीश चढायो ॥ पाँक करनको भवन लिपायो॥
अहो विप्र विनती सुनि लीजै ॥ जो भावे सो भोजन कीजै ॥
धेनु दुहाय दूधले आई ॥ पांडे रुचि करि खीर बनाई ॥
घृत मिष्टान्न खीर मिश्रितकर ॥ कृष्ण भोग हित थार परसिधर॥
वेद मंत्र पढिकै हरि ध्यायो ॥ नयन मूंदिके ध्यान लगायो ॥
नैन उघारि विप्र जब देख्यो ॥ श्यामहि आगे जेंवत पेख्यो ॥

दोहा—अहो यशोदा आपने, सुतंकृत देखौ आय ॥
सिद्धपाक सब आयके, डार्यो कान्ह जुठाय ॥

१ भक्षण । २ झगरो । ३ रसोईकरवेको । ४ पुत्रकेकौतिक । ५ करीकराईरसोई ।

सो०—महरि जोरि युगपान, विनय करी द्विज राजसन ॥
बालक अति अज्ञान, बहुरि पाक विधि कीजिये ॥
बहुरि दूध मिष्टान्न मँगायो ❀ ब्राह्मण फिरकर पाकबनायो ॥
जबहीं ध्यान धर्‌यो मन लाई ❀ तबहीं लागे खान कन्हाई ॥
ऐसेहि विप्र न जेंवन पावै ❀ बार बार हरि छूछू आवै ॥
तब यशुमति हरि सों रिसि आई ❀ कतहि अचकरी करत कन्हाई
मैं इच्छाकरि विप्र जिमाऊं ❀ बार २ भोजन बनवाऊं ॥
यह अपने ठाकुरहि जिमावै ❀ ताको तू गोपाल खिझावै ॥
मैया मुहि जिनि दोष लगावै ❀ बार बार यह मोहिं बुलावै ॥
नयन मूंदि कर जोरि मनावै ❀ बहुत भाँति कर विनय सुनावै॥
लैलै नाम कहत प्रभु ऐये ❀ खीर खांड यह भोग लगैये॥
तब मैं रहि नसकौं उठि धाऊं ❀ याको दीनो भोजन पाऊं ॥
प्रेम सहित जब मोहिं बुलावै ❀ तब नहिं रहत मोहिं बनि आवै।
सुनत गूढ़[3] मृदुहरिके बयना[4] ❀ खुलिगये विप्र हृदयके नयना।
दोहा—धनि धनि गोकुल नंदधनि, धन्य यशोदा माय ॥
धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज, जहँ प्रगटे हरि आय ॥
सो०—सफलजन्म प्रभु आज, प्रगटभयो सब सुकृतफल ॥
दीनबन्धु ब्रजराज, दियो दरश मोहिं कृपा करि ॥
बार बार कहि नंदके आँगन ❀ लोटत द्विज आनंद मगनमन॥
मैं अपराध कियो बिन जाने ❀ को जाने किहि भेष समाने ॥
भक्तहेतु वश रहत सदाई ❀ यहै नाथ तुम्हरी बड़याई ॥
जेजे शरण तुम्हारी आये ❀ तेते भये पुनीत सुहाये ॥
पतित[5] उधारन यश विस्तारा ❀ अघ जारन इकनाम तुम्हारा॥

१ दोनोंहाथ। २ ब्राह्मण। ३ छिपेभये। ४ वचन। ५ दीन।

देह धरत गो द्विज हित लागी ॥ पायो दरश भयो बडभागी ॥
हितकी चितकी मानन हारे ॥ सबके जियकी जानन हारे ॥
शरण २ प्रभु शरण तुम्हारी ॥ दीनदयालु कृपालु मुरारी ॥
हँसत श्याम यशुमति ढिग ठाढे ॥ प्रेम मगन मन आनँद बाढे ॥
निजजन जानि कृपा अति कीनी ॥ प्रेम भक्ति हरिताको दीनी ॥
प्रेम मगन द्विज बारहिं बारा ॥ कहि जै जै जै नन्दकुमारा ॥
पुनि २ पुलकत देत अशीशा ॥ विदा भयो घरको द्विज ईशा ॥

दोहा—देख चरित यशुमति चकित, परी विप्रके पांय ॥
दिये रत्न बहु दक्षिणा, चले हर्ष द्विजराय ॥

सो०—यशुमति लिये उठाय, गोद खिलावत कान्हको ॥
चितै वदन बलिजाय, आनंद निधि सुखको सदन ॥

अथ चंद्रप्रस्तावलीला ॥

शोभा मेरे हरिपे सोहै ॥ मैं बलि बलि पटतरको कोहै ॥
मेरो श्याम मनोहर जीवन ॥ बिहँसि श्याम लागे पयपीवन ॥
ठाढी अजिर[3] यशोदा रानी ॥ गोदी लिये श्याम सुखदानी ॥
उदय भयो शशि शरद सुहावन ॥ लागी सुतको मात दिखावन ॥
देखहु श्याम चन्द्र यह आवत ॥ अति शीतल हग ताप नशावत
चितै रहे हरि इकटक ताही ॥ करते निकट बुलावत वाही ॥
मैया यह मीठो कैखारो ॥ देखत लगत मोहिं यह प्यारो ॥
देहि मँगाय निकट मैं लैहों ॥ लागी भूख चन्द्रमैं खैहों ॥
देहि वेग मैं बहुत भुखानो ॥ मांगतही मांगत बिरुझानो ॥
यशुमति हँसत करत पछतायो ॥ काहे को मैं चन्द्र दिखायो ॥
रोवत है हरि विनहीं जाने ॥ अवधौंकैसे करिके माने ॥

१ मुख। २ अनुसार। ३ आंगन।

विविध भांति कर हरिहि भुलावै ❀ आन बतावै आन दिखावै ॥
दोहा—कहति यशोदा कौन विधि, समझाऊं अब कान्ह ॥
भूलि दिखायो चन्द्रमैं, ताहि कहत हरिखान ॥
सो०—अनहोनी क्यों होय, तात सुनी यह बात कहुं ॥
याहि खात नहिं कोय, चन्द्र खिलौना जगत को ॥
यहै देत नित माखन मोको ❀ क्षण क्षण तात देत सो तोको ॥
जो तुम श्यामचन्द्रको खैहो ❀ बहुरो फिर माखन कहांपैहो ॥
देखत रहौ खिलौना चन्दा ❀ हठ नहिं कीजै बाल गोविन्दा ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई ❀ जो भावै सो लेहु कन्हाई ॥
पालागों हठ अधिक न कीजे ❀ मैंबलि रिसही रिस तनु छीजे ॥
खसि २ कान्ह परत कनियांते ❀ देशशि[1] कहत नंदरनियांते ॥
यशुमति कहति कहा धौं कीजे ❀ मांगत चन्द्र कहांते दीजे ॥
तब यशुमति इक जलपुटलीनो ❀ करमें लै तिहिऊंचोकीनो ॥
ऐसे कहि श्यामहिं बहकावै ❀ आव चन्द्र तोहिं लाल बुलावै ॥
याहीमें तू तनु[2] धरि आवै ❀ तोहिं देखि लालन सुखपावै ॥
हाथ लिये तोहि खेलत रहिहै ❀ नेक नहीं धरणी पर धरिहै ॥
जलपुटआनिधरणिपरराख्यो ❀ गहिआन्योशशिजननीभाख्यो ॥
दोहा—लेहु लाल यह चन्द्रमैं, लीनो निकट बुलाय ॥
रोवै इतनेके लिये, तेरी श्याम बलाय ॥
सो०—देखहु श्याम निहारि, या भाजन[3]मे निकटशशि ॥
करी इती तुम आरि, जाकारण सुन्दर सुवन ॥
ताहि देखि मुसिक्याय मनोहर ❀ बार बार डारत दोऊ कर ॥
चन्द्रापकरत जलके माहीं ❀ आवत कछू हाथमें नाहीं ॥

१ चन्द्र । २ शरीर । ३ बर्त्तन ।

तब जलपुटके नीचे देखै * तहां चन्द्र प्रतिबिंब नपेखै ॥
देखत हँसी सकल ब्रजनारी * मगन बाल छबि लखि महतारी
तबहिश्याम कछु हँसि मुसकानें * बहुरो मातासो विरुझानें ॥
ल्यौं गो री मा चन्दा ल्यौं गो * वाही अपने हाथ गहौंगो ॥
यह तौ कलमलात जल माहीं * मेरे करमें आवत नाहीं ॥
बाहर निकट देखियत वाही * कहौ तौ मैं गहिल्यावों ताही ॥
कहति यशोमति सुनहु कन्हाई * तव मुख लखि सकुचत उडराई
तुम तिहि पकरन चहत गुपाला * ताते शशि भजि गयो पताला॥
अब तुमते शशि डरपत भारी * कहत अहो हरि शरण तुम्हारी॥
विरुझाने सोये दैतारी * लिय लगाय छतियां महतारी॥

दोहा—लैपौढाये सेजपर, हरिको यशुमतिमाय ॥
अति विरुझाने आज हरि, यह कहि २ पछताय ॥

सो०—कर सों ठोकि सुनाय, मधुरेसुर गावत कछुक ॥
उठि बैठे अतुराय, चटपटायहरि चौंकिकै ॥

अथ पुरातन कथालीला ॥

पौढो लाल कहत महतारी * कहो कथा इक श्रवणन प्यारी॥
हर्षे यह सुनि मन वनवारी * पौढि गये हँसि देत हुँकारी ॥
नगर एक रमणीय सुहावन * नाम अवध अति सुंदर पावन॥
बडे महल तहँ अगम अटारी * सुंदर विशद चारु गचढारी ॥
बहुत गली पुर बीच सुहाई * रहें सदा सब सुगंधि सिंचाई ॥
भांति भांति बहु हाट बजारू अति शृंगार जनु विश्व शृंगारू॥
तहां नृपति दशरथ रजधानी तिनके नारि तीन पटरानी ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा तिन जन्मे सुत चार पवित्रा ॥

१ छाया २ विधु ३ उज्ज्वल ।

राम भरत लक्ष्मण रिपुहन्ता ❀ चारो अति सुन्दर गुणवन्ता ॥
तिनमें राम एक व्रतधारी ❀ अति सुन्दर जनके हितकारी ॥
विश्वामित्र एक ऋषिराई ❀ तिनहिं सतावें निशिचर[1] आई॥
तिन नृप सों द्वैसुत लै माँगे ❀ अपनी रक्षाके हित लागे ॥
दोहा—राम लषण ऋषिलै गये, दनुज हते तिनजाय॥
ऋषिदीनी विद्या[2] बहुत, तिनको अति सुख पाय॥
सो०—तहां जनक इकभूप, धनुषयज्ञतानेरच्यो ॥
कन्यातासु अनूप, जुरे तहां भूपति अमित ॥
ऋषि लैगये कुँवर तहँ दोऊ ❀ जनकराय सनमाने सोऊ ॥
धनुष तोरि भूपन मुखमारी ❀ राम विवाही जनक कुमारी ॥
चारहु कुँवर ब्याह तहँ आये ❀ भये अवध पुर अनँद बधाये ॥
रामहिं देन लगे नृपराजू ❀ सज्योसकल अभिषेक समाजू॥
ताही समय कैकयी रानी ❀ चेरीकी मतिसों बौरानी ॥
वचन मांगि राजा सोंलीनो ❀ वनको वास राम को दीनो ॥
सुनि पितु वचन धर्म हितकारी ❀ नारी सहित भये वनचारी ॥
तिन्हैं चलत भ्राता सँगलाग्यो ❀ उनके जात पिता तनुत्यागो॥
चित्रकूट गये भरत मिलनजब ❀ दैपद पाँवर[3] कृपा करीतब ॥
युवती हेत कपट मृग मारा ❀ राजिव लोचन राम उदारा ॥
रावण हरण कियो तब नारी ❀ सुनतश्याम घन नींद बिसारी॥
चौंकि कह्यो लक्ष्मण धनुदेहू ❀ देख भयो यशुदहि सन्देहू ॥

अथ कर्णछेदनलीला॥

छं०—सन्देह जननीमनभयो हरि चौंक धौं काहेपरयो ॥
कहूँदीठखेलतमें लगी धौं स्वप्नमें कान्हर डरयो ॥

१ राक्षस। २ बला-अबला। ३ खड़ाऊं।

बहुँ भाँति देव मनाय पढि २ मंत्र दोष निवारही ॥
लैपियति पानी वारि पुनि २ राई लोन उतारही ॥
दोहा—सांझहिते बिरुझाय हरि, करी चन्द्रहित आरि ॥
झिझकिउठ्यो धौं ताहि ते, रह्यो सुरत उरधारि ॥
सो०—बडभागी नंदनारि, महिमा वेद न कहिसकैं ॥
हरिको बदन निहारि, बिसरावत त्रय ताप दुख ॥
प्रात नन्द उठि हरिपै आये ❀ मुखछबि देखनको अतुराये ॥
निशिके द्वंद्व नैन अति आरत ❀ हरुवे करि मुखते पटटारत ॥
स्वच्छ सेजते बदन प्रकाश्यो ❀ द्वंद्वतिमिर नयननिको नाश्यो ॥
मनहुँ मथनपै निधि उडराई ❀ फेणु फोरि कै दई दिखाई ॥
धाये ब्रज जन चतुर चकोरा ❀ इकटकरहे बदन शशि ओरा ॥
फूली कुमुदनिसी महतारी ❀ कहत उठहू सुतमैं बलिहारी ॥
माखन रोटी अरु मधु मेवा ❀ जो भावे सो करहुकलेवा ॥
सद माखन मिसरी तब आनी ❀ कछु खवाय धोयो मुखपानी ॥
देखि बदन छबि महरिसिहानी ❀ कहति नन्दसों यशुमति रानी ॥
कनछेदन अब हरिका कीजे ❀ कुंडल सहित देख मुखलीजे ॥
बोलि विप्र शुभ दिवस गनायो ❀ जाति कुटुंब सबन्योत बुलायो ॥
कुल ब्योहार कियो सब साजा ❀ विविध भांति बहु बाजन बाजा
छंद—बाजी बधाई विविध आंगन नारि मंगल गावहीं ॥
सुर निरखि अतिहर्षि सों सुमननिवर्ष गोकुल छावहीं ॥
करिप्रथम मुंडन श्यामको पुनि कर्ण वेधन विधलई ॥
धरिकै सुपारी पान ऊपर बहुरि गुरु भेली दई ॥
हँसत सुरगण सहितविधि हरि मात उरअतिधुकधुकी ॥

१ रात।

अतिहि कोमल श्रवण वेधत सकत नहिं सन्मुख तकी॥
भरिसींकरोचन देत श्रवणनि निकट करि अतिचातुरी ॥
द्वैदुर मँगाये कनक के कह कहौं छेदन आतुरी॥
देख रोवत जननि लीन्हे बिहँसि तबहीं झुकि अली॥
हँसत नंद सबयुवति गावत झमकि भीतर लेचली॥
कहति सुर वनिता परस्पर धन्य धन ब्रजभामिनी॥
नहिंनइनकी किंकिरी सम हम सकल सुर कामिनी॥
दोहा—करति निछावरि ब्रज वधू, धन मणि भूषण चीर॥
सकल अशीशत नंद सुत, जहँ तहँ याचक भीर॥
सो०—पहिरावत नंदराय, ब्रज युवतिन भूषण वसन॥
आनँद उर न समाय, मनहुँ उमँग चहुँ दिश चल्यौ॥
नितही नवमुद मंगल ताके ❀ मंगल मूरति हरि सुत जाके॥
जेहि विधि तात मात सुखपावैं ❀ सुखनिधान सोइ चरित उपावैं॥
जाको भेद वेद नहिं पावैं ❀ नंद भवनसो कान छिदावैं॥
निज भक्तन हित नरतनु धारी ❀ करत बाललीला सुखकारी॥
हरि अपने रंगनि कछु गावैं ❀ नंद भवन भूषण मनभावैं॥
तनक तनक चरणनसों नाचैं ❀ मन २ रीझ विविध विधिराचैं॥
मन्द मन्द पग नूपुर बाजैं ❀ बाल विभूषण अंगविराजैं॥
कबहूं भुज उठाय गुहरावैं ❀ धौरी धूमरि गाय बुलावैं॥
कबहूं माखनलै मुख नावैं ❀ कबहूं खंभ प्रति बीच खवावैं॥
माखन मांग दुहूं करलेई ❀ एक भाग प्रतिबिंबहिं देई॥
तासों कहत लेत क्यों नाहीं ❀ डारदेत काहे महिमाहीं॥
दुर देखत यशुमति महतारी ❀ उर आनंद करति अतिभारी॥

दोहा—हरषि जननि मुख चूमके, लीनो गोद उठाय ॥
परमानंद रस मगन मन, सो सुख किमि कहि जाय ॥
सो०—कौतुक निधि भगवान, करत चरित नित २ नये ॥
सुन्दर श्याम सुजान, ब्रज वासिनके प्रेमवश ॥

अथ माटीखानलीला ॥

खेलत श्याम धामके द्वारे ※ सोहत ब्रज लरिका संगवारे ॥
अति अज्ञान सबनिमति भोरी ※ सबकी प्रीति श्याम सँग जोरी
एक वैस सब परम सुहाये ※ करत बाल लीला सुखपाये ॥
गावत हँसत देत किलकारी ※ लखि २ सुखपावत महतारी ॥
निरखि रूप सब ब्रजजन मोहै ※ कोटि काम नहिं पटतरसोहै ॥
तनु पुलकित अति गद २ बानी ※ निरखि मनहिंमनमहरि सिहानी
तबहिं श्याम घन माटी खाई ※ यशुमति देखि सांटिलै धाई ॥
पकरी भुजा श्यामकी जाई ※ कहति कहा यह करत कन्हाई ॥
उगलहुवेगि वदन ते माटी ※ नाहीं तो मारतहौं सांटी ॥
सबदिन झूठवतहै सब ग्वालन ※ मोसों अब कहा कहिहौलालन ॥
तब मोहन कीनी लँगराई[1] ※ कहति किमैं माटी नहिं खाई ॥
झूठहि मोको लोग लगावै ※ माटी मोको नेकनभावै ॥
दोहा—झूंठ कहत तोसों सबै, माटी मोहिं न सुहाय ॥
नहिं माने जो मातत्, दिखराऊं मुँह वाय ॥
सो०—दीनो मुखहि उघारि, नयन मूँदि माता निकट ॥
देखि चकित नँदनारि, तनुकी सुरत रही नहीं ॥
दिखरायो त्रिभुवन मुखमाहीं ※ नभ शशि रवि तारा इकठाहीं ॥
सुर सागर सरिता गिरि कानन ※ सुर सुर नायक शिव चतुरानन ॥

[1] धूर्तता।

सकल लोक लौं लय यम काला ❀ महि मंडलसब अग जग जाला
देखि चरित यशुमति अकुलानी ❀ करते सांटि गिरति नहिं जानी॥
बदन मूँदि तब दृग[1] हरिखेले ❀ डरसमेत माता सों बोले ॥
मैया मैं माटी नहिंखाई ❀ यशुमति चकित रही अरगाई ॥
कहत नंद सों यशुदारानी ❀ हरिकी कथा नजात बखानी॥
माटीके मिसकरि मुखबायो ❀ तीन लोक तामहि दिखरायो ॥
स्वर्ग पताल धरणि बन बागा ❀ सुर नरअसुर विपुल खग[2] नागा[3]॥
अपरसृष्टिकहि जाति सुनाहीं ❀ देखो सकल बदनके माहीं ॥
मोको परत सांच सबजानी ❀ जो कछु कही गर्ग ऋषिवानी ॥
चकित नंदसुनि अचरजवानी ❀ मन मन करत विचारविनानी॥

दोहा—नन्द कहत सुनि बावरी, हरि अति कोमल गात ॥
अचरज तेरी बातको, पुनि पाछे पछतात ॥
सो०—अचरज तेरी बात, को जाने देख्यो कहा ॥
कुशल रहो दोउ भ्रात, रामश्याम खेलत हँसत ॥

कहति श्याम सों यशुमति मैया ❀ मैं तेरी बलिहारि कन्हैया ॥
मैं अजान रिस बीच न जानी ❀ वृथाश्याम तुम पर रिस यानी ॥
जरहु हाथ जिन सांटि उठाई ❀ बरहु आंखि जिन दीठ दिखाई ॥
मधु मेवा दधि माखन मांटी[4] ❀ खात लाल तुम काहे माटी ॥
सिगरोइ दूध पियो तुमन्यारे ❀ बलको बांट न देहु पियारे ॥
कहत नंद सों यशुमति मैया ❀ दुहा लाल की ठाडी गैया ॥
कजरीको पय पियो गुपाला ❀ जो तेरी चोटी बढे विशाला ॥
सब लरकनमें तो तनु माही ❀ वेग वैश बल श्री अधिकाही ॥
मात वचन सुनिके अनुरागे ❀ ज्यों त्यों करि पय पीवन लागे॥

१ आँखें । २ पक्षी । ३ हाथी । ४ मट्टुकिया ।

खिन पीवत खिन २ कचटोवै ❀ देखि २ मुखहँसति यशोवै ॥
मैया कब बाँढेगी चोटी ❀ यह तौ है अबही लौं छोटी ॥
तू जो कहतहि बललौं ह्वैहै ❀ छोडत गुहत गोडलौं जैहै ॥
दोहा—कितीबार भइ पयपियत, चोटी बडी न होहि ॥
कहि कहि झूठी बात नित, दूध पियावत मोहि ॥
सो०—सुनि सुनि भोरी बात, सुन्दर श्याम सुजानकी ॥
यशुमति मन न अघात, हँसि लीने उरलाय हरि ॥
भोरहिं महर यमुनतट धाये ❀ दरशन करि अतिही सुख पाये ॥

अथ शालिग्रामलीला ॥

करि स्नान नन्द घर आये ❀ पूजा हित यमुनाजल लाये ॥
तुलसीदल अरु कमल पुनीता ❀ प्रभु निमित्त आने अति प्रीता ॥
पाँय धोय प्रभु मन्दिर आये ❀ करी दण्डवत प्रेम बढाये ॥
स्थल लीप पात्र सब धोये ❀ पूजाके सब साज सँजोये ॥
छाप तिलक सब अंग सँवारे ❀ प्रभु पूजा विधि करन सँवारे ॥
कुँवरकान्ह खेलत ते आये ❀ देखत पूजा विधि चितलाये ॥
विधिवत देव नन्द अन्हवाये ❀ चन्दन तुलसी फूल चढाये ॥
भूषण वसन अलंकृत कीन्हें ❀ धूप दीप अतिहित कर दीन्हें ॥
पट अन्तरदे भोग लगायो ❀ आरति चरणनि शीश नवायो ॥
तबहीं श्याम बिहँसि उठि बोले ❀ कहत तात सों वचन अमोले ॥
बाबा तुम जो भोग लगायो ❀ सोतौ देव कछू नहिं खायो ॥
सुनि हरि वचन श्रवण सुखदाई ❀ चितैरहे मुख हँसि नँदराई ॥
दोहा—कहत नंद सुख पायकै, यों नहिं कहिये तात ॥
देवनको कर जोरिये, कुशल रहो जिहि गात ॥

१ पग । २ दूध । ३ छाती । ४ शालिग्राम ।

सो०–हँसत श्याम सुखदानि, नंद स्वरूप न जानहीं ॥
रह्योतिनहिं सुत मानि, करत ब्रह्म लीला सगुण ॥
देखत जननि तहां दुरि ठाढी ❀ मगन प्रेमरस आनँद बाढी ॥
बैठे नंद समाधि लगाई ❀ तब यह लीला रची कन्हाई ॥
शालग्राम मेलि मुख माहीं ❀ बैठि रहे हरि बोलत नाहीं ॥
ध्यान विसर्जन करि नँद जागे ❀ शालग्राम न देखे आगे ॥
खोजत चकित चित्त नँदराई ❀ इष्टदेव किन लिये चुराई ॥
इतउत खोजत पावत नाहीं ❀ भयो बडो अचरज मन माहीं ॥
बिहँसत हरिके मुखमें जाने ❀ देखत महरि महर मुसकाने ॥
सुनहु तात जननी बलिजाई ❀ उगिलहु शालग्राम कन्हाई ॥
मुखते तबहिं काढि ब्रजनाथा ❀ दियो देवता नँदके हाथा ॥
हरिके चरित कहत नहिं आवैं ❀ बालविनोद मोद उपजावैं ॥
लखि लखि मात पिता पुलकाहीं ❀ देखि देखि सुर सिद्ध भुलाहीं ॥
धन्य धन्य सब ब्रजके बासी ❀ बिहरत जहाँ ब्रह्म अविनाशी ॥
दोहा–परते पर परब्रह्म जो, निर्गुण अलख अनूप ॥
सो ब्रज भक्तन प्रेम वश, विहरत बालक रूप ॥
सो०–प्रेम मगन पितु मातु, निशिदिन जात न जानहीं ॥
क्योंहूं मन न अघात, सुनत वचन देखत दरश ॥

अथ अन्हवावनलीला ॥

यशुमति श्यामहिं कह्यो न्हवावन ❀ सुनतहि मचलि परे मनभावन
उबटनलै आगे गहिबाहीं ❀ लोटिगये हरि मानत नाहीं ॥
तब यशुमति बहुभांति दुलारे ❀ मैं बलि उठहु न्हवाऊं प्यारे ॥
उबटन पाछे धरयो चुराई ❀ फुसलावत सुत श्याम कन्हाई ॥

१ छिपी । २ छोडके । ३ रात्रि ।

मैं बलि ऐसी आरि नकीजै ❀ जोचाहौ सो मोपै लीजै ॥
कहत लाल रोवै दुख पावै ❀ ऐसो को जो तोहिं खिझावै ॥
अतिरिसते मैं बलि तनु छीजै ❀ सुन्दर कोमल अंग पसीजै ॥
बरजतही बरजत बिरुझाने ❀ करिकरि क्रोध मनहिं अकुलाने
धरत धरत धरणी पर लोटे ❀ गहि माताके चीर निझोटे ॥
गहि गहि अँगकेभूषण तोरैं ❀ दधि माखनके भाजन फोरैं ॥
धर्यो तपत जल जननी पासै ❀ मानत नाहिं ताहि लखि त्रासै ॥
महरि बाँह धरिकै तब आने ❀ जबहीं तेल उबटने साने ॥
दोहा—तब दुचती करिमातुको, गिरत परत गये भाज ॥
नेक निकट लागैं नहिं, मन मोहन ब्रजराज ॥
सो०—तब पुजकारे मात, साम भेद कहि कहि वचन ॥
मैं बलि आवहु तात, नहिं आवहु तो जानिहौ ॥
तुम मेरी रिसको हरी जानौं ❀ मोको नीकी विधि पहिंचानौ॥
जोनहिं आवहु मदनगोपाला ❀ आज तुम्हैं तौ बांधौं लाला ॥
तबहिं नन्द उतते चलि आये ❀ कहत हरिहि किनअतिहिखिझाये
लै कनियाँ उरसों लपटाये ❀ बदन चूमि यशुमति पहँ ल्याये ॥
कत खिझवत मोहनहिं अयानी ❀ लै हियलाय लिये नँदरानी ॥
क्योंहुँ यत्न करिकै जब पायो ❀ तब उबटन हरिके अंग लायो ॥
पुनि तातो जल न्हान समोयो ❀ दियो न्हवाय बदनशशि धोयो ॥
सरस बसन लैकै तनु पोछ्यो ❀ बहुरो बदनसरोज अँगोछ्यो ॥
अंजन दोऊ दृग भरि दीनों ❀ भ्रूपर चारु चखोडा कीनों ॥
सब अँगके भूषण मँगवाये ❀ क्रम क्रम लालनको पहिराये ॥
ऐसी रिस नाहिं कीजे कान्हा ❀ अब कछु खाउ जाउँ बलिनान्हा

१ रारि । २ देखिकै । ३ नंदराय । ४ धमकायकर । ५ मुखचंद्र । ६ नेत्र ।

तब तुतरात कह्यो का हेरी ❀ जो मोको भावे सो देरी ॥
दोहा—कहत जननि या वचन पर, मैया बलि बलि जाय ॥
जोइ जोइ भावे लालको, सोइ सोइ ल्यावे माय ॥
सो०—किये अमितपकवान, मैं अपने सुतके लिये ॥
सो सब कहौं बखान, जो भावे सो लीजिये ॥
सदमाखन अरु दही सजायो ❀ तुम्हरे हित पय औटि जमायो ॥
खोवा औट्यो मधुर मलाई ❀ तापर मिसिरी पीसि मिलाई ॥
अरप्यौसार अति सरस सवाँरी ❀ तामहिं सोंठि मिरच रुचि कारी
खीर बरा करिकै दधि बोरे ❀ मानहुँ चंद्र अमी मधु खोरे ॥
खुरमा और जलेबी बोरी ❀ जेहि जेंवत रुचि होत नथोरी ॥
अरु लडुआ बहुभांति सँवारे ❀ जे मुख मेलत कोमल प्यारे ॥
अरु गूझा बहु पूरिन पूरे ❀ अति सुवास उज्ज्वल अति रूरे ॥
पापर घेवर घीउ चभोरे ❀ मिश्री पीस तल ऊपर बोरे ॥
सुन्दर मालपुआ मधु साने ❀ तत्त तुरत करि रोहिणि आने ॥
अतिहीं सुन्दर सरस अँदरसे ❀ घृत दधि मधु मिलि स्वादन सरसे
सरस सवाँरी दाल मसूरी ❀ अरु कीन्हो सीरा घन पूरी ॥
पूरी सुनिके हिय हरि हरषे ❀ तब जेंवन पर मनकरि करषे ॥
दोहा—सुनत यशोदा तुरतही, ले आई हरषाय ॥
बलदाऊको टेरिके, लीन्हे नन्द बुलाय ॥
सो०—षटरसके परकार, जे वरणे यशुदा प्रथम ॥
परसि धरे सब थार, जेंवत हरि बलवीर दोउ ॥
जेंवत एक थार दोउ बीरा ❀ हरषिश्याम रुचि राख्यो सीरा ॥
तब शीतल जल लियो मँगाई ❀ भरि झारी यशुमति लेआई ॥

१ अमृत ।

जल अँचवावत नैन जुड़ाने ❀ दोऊ हर्षि हर्षि मुसकाने ॥
तब जननी हँसि चुरू[1] भराये ❀ तनक तनक कछु मुख परवराये ॥
रचि रचि उजरे पान खवाये ❀ अतिही अधर अरुण ह्वै आये ॥
ठाढे तहाँ सकल ब्रजदासा ❀ लागिरहे जूठनि की आशा ॥
तनक तनक कछु मोहन खायो ❀ उबर्‍यो सो ब्रजदासन पायो ॥
सखावृन्द[2] प्रिय द्वार पुकारे ❀ खेलन आवहु कान्ह पियारे ॥
तृषित दरश रस चातकदासा ❀ हरि अब बरषि नवघन छबिपासा ॥
विनय वचन सुनि हर्ष कृपाला ❀ चले मनोहर चाल रसाला ॥
लघु[3] लघु ललित चरण कर लाला ❀ कमलनैन उर बाहु विशाला ॥
चन्द्रबदन तनु छबि घनश्यामा ❀ अंग अंग भूषण अभिरामा ॥

दोहा—निरखत छबि नँदलालकी, थकित सकल सुरवृन्द ॥
निहचल चखन[4] चकोरजनु, तकत शरदको चन्द ॥

सो०—अति आनन्द उमंग, मिले सखनको जाय हरि ॥
ब्रीडत[5] कोटि अनंग[6], क्रीडत बालक वृन्द सब ॥

खेलत दूरिगये कहु कान्हा ❀ सखन संग धावतहे नान्हा ॥
बहुत अबेरभई घनश्यामहिं ❀ खेलतते आये नहिं धामहिं ॥
नंदहि तात मातु मोहि कानन ❀ योहीं सुनत सुहात जु आनन ॥
मन अवसेर[7] करत महतारी ❀ पलक ओट रहि सकत नऱ्यारी
देखत द्वार गलीमें ठाढी ❀ सुतमुख दरश लालसा बाढी ॥
ततक्षण हरि खेलनते आये ❀ दौरि मातु लै कण्ठ लगाये ॥
खेलत दूरि जातकिन कान्हा ❀ मैं बलि तुम अबहीं अति नान्हा ॥
आज एक बन हाऊ आयो ❀ तुम नाहिं जानत मैं सुनि पायो ॥
इक लरिका भजि आयो तबहीं ❀ सो वह मोसों कहिगयो अबहीं

१ मूंदे २ प्यारेसखानके समूह । ३ छोटेछोटे । ४ नेत्र । ५ लज्जित । ६ कामदेव । ७ फिकर ।

वहतो पकरि लेतहै तिनको ❋ लरिका करि जानतहै जिनको ॥
चलहू भाजि चलिये निज धामहिं ❋ यह सुनि टेर लिये बलरामहिं ॥
कनियाँ[1] करि ले आई धामहिं ❋ बडभागिनि यशुमति सुतश्यामहिं
दोहा—रूपरेख जाके नहीं, विधिहर[2] अन्त न पाय ॥
हाऊ सों डरपाय तिहिं, यशुमति राखत स्वाय ॥
सो०—भाव वश्य भगवान, भावइ करिके पाइये ॥
भक्तनके सुखदान, तिहि तैसे जैसे भजे ॥
ब्रज वीथिन[3] खेलत मनमोहन ❋ हलधर सुबल सुदामा गोहन ॥
और गोप बालक बहुबारे ❋ एक[4] वयस सब हरिके प्यारे ॥
बाल विनोद मोदमन दीने ❋ नानारंग करत रस भीने ॥
तारी हाथ मारि सब भाजें ❋ धावत धरत होड कर बाजें ॥
बरजत बलि हरि तुमति दौरे ❋ लागिहै चोट गोड[5] कहु तोरे ॥
तब हरि कह्यो दौरि मैं जानो ❋ मेरो गात बहुत बलवानों ॥
है श्रीदामा जोड हमारी ❋ तासों मारि भजो मैं तारी ॥
बोलि उठ्यो तबहीं श्रीदामा ❋ तारी मारि भजो तुम श्यामा ॥
तबहीं श्याम भजे दैतारी ❋ धर्‍यो जाय श्रीदाम हँकारी ॥
तबहरि कह्यो वदौं नहिं तोहीं ❋ ठाढो भयो छियो तब मोहीं ॥
ऐसे कहि हरि ताहि रिसाने ❋ कहतसखा सब श्याम खिझाने
तबतो कह्यो दौर मैं जानो ❋ हारे श्याम बुरो अब मानों ॥
दोहा—बोलि उठे बलराम तब, इनके माय न बाप ॥
हारिजीति जाने नहीं, लरकन लावत पाप ॥
सो०—येहैतनुके श्याम, झूठहिं झगरत सखन सँग ॥
रूठि चले हरि धाम, लखि उदास पूंछति जननि[6] ॥

१ गोदमेंबैठार । २ ब्रह्मा शिव । ३ ब्रजकी गली । ४ एकहीअवस्थाके । ५ पाँय । ६ मैय्या ।

मैं बलि क्यों उदास हरि आयो ※ कौने मेरो लाल खिझायो ॥
मैया मोहिं दाऊ दुख दीन्हों ※ मोसों कहत मोलको लीन्हों ॥
कहाकरौं या रिसके मारे ※ मैंनहिं खेलन जात दूआरे ॥
पुनि पुनिकहत कोन तेरि माता ※ कोतेरो तात[१] कोन तेरो भ्राता॥
गोरे नन्द यशोदा गोरी ※ तुमतो कारे आये चोरी ॥
मोसो कहत देवकी जाये ※ ले वसुदेव यहां निशि[२] आये॥
मोल कछू वसुदेवहिं दीन्हो ※ ताके पलटे तुमको लीन्हो ॥
ऐसे कहि कहि मोहिं खिझावै ※ अरु सब लरकन यहै सिखावै॥
मोहीं कोतू मारत धावै ※ दाउहि कबहुं न खीज डरावै ॥
रोष सहित सुनि बतियां भोरी ※ बढ़त मातु उर प्रीति नथोरी ॥
सुनहु श्याम बलराम चवाई ※ झूठहिं तोहि खिझावत जाई ॥
मोहिं गोधनकी सोह कन्हैया ※ मेरो सुततू मैंतेरि मैया ॥

दोहा—पाछे ठाढे सुनत सब, नन्द श्यामकी बात ॥
लीन्हें गोद उठाय हँसि, सुन्दर श्यामलगात ॥
सो०—बलको धरियो नंद, सुनि मनहर्षे श्याम तब ॥
लीला नटवर चन्द, करत चरित जनमन हरन ॥

अथ भोजनकरनलीला ॥

भोजनके समये नँदराई ※ करे सुरति बलराम कन्हाई ॥
कह्यो बुलाय लेहु दोउ भैया ※ मोसँग जेवैं आय कन्हैया ॥
खेलत बहुत बेर भइ आजा ※ उनबिन भोजन कौने काजा ॥
यशुमति सुनत चली अतुराई ※ ब्रज घर घर टेरत दोउ भाई ॥
कहत बोल लेहु कोऊ श्यामहिं ※ खेलत हैं धौं काके धामहिं ॥
जेंवन[३] सिद्ध सिरात धरोई ※ उनबिन नंद नजेंवत सोई ॥

१ पिता । २ रात । ३ भोजनकरची करायी ।

ऐसे जननीके सुनि बैना ❋ आये खेलतते सुख दैना ॥
चलहु तात मैया बलि जाई ❋ जेंवन को बैठे नँदराई ॥
परस्यौ थार धर्‍यो मग हेरति ❋ मैं तबहीं सों तुमको टेरति ॥
दौरि चलहु आगे गोपाला ❋ छांडि देहु गति मन्दमराला[1] ॥
चलहु वेगि दौरो दोउ भाई[2] ❋ सो राजा जो आगे जाई ॥
जो जैहे पहिले बलि भाई ❋ तौहँसिहैं तोहिं ग्वाल कन्हाई॥

दोहा—आये दौरे श्याम तब, तुरतहिं पांय पखार[3] ॥
बैठे जेंवन नंदके, सँग दोऊ सुकुमार ॥

सो०—कछु डारत कछु खात, कछु लपटानो पाणि दुहुँ ॥
शुभगसांवरे गात, बालकेलि रस वशखरे ॥

बडोकौर मेलत मुख भीतर ❋ आय गई तब मिरचि दशन तर[4]
तीक्षण लगी नैन भरि आये ❋ रोवत बाहरको उठि धाये ॥
रोहिणि फूंकिदेत मुख माहीं ❋ लिय लगाय उरसों गहि बाहीं।
मधुर ग्रास[5] लैतात निहोरे ❋ लै बैठे फुसलाय अँकोरे ॥
जेंवत कान्ह नंदकी कनियां ❋ छबि निरखत ठाढी नँदरानियां
बेसनके व्यंजन विधि नाना ❋ बराबरी बहु शाक विधाना ॥
मूंग ठरहरी हींग लगाई ❋ दाल चनाकी पीत सुहाई ॥
राज भोगको भात पसायो ❋ उज्ज्वल कोमल सुगँध सुहायो
बेसन मिली कनककी रोटी ❋ सदघृत बोरी पतरी छोटी ॥
आंब आदि बहुभांति सँधाने ❋ दोउ भैया जेंवत रुचि माने ॥
मिश्री दधि ओदन[6] मिश्रित कर ❋ लेत श्याम सुन्दर अपने कर ॥
आपुन खात नंद मुख नावैं ❋ सोछबि कहत कौनपै आवैं ॥

दोहा—भोजन कर अचमन कियो, लैझारी नँदराय ॥

❋ वाढ । १ हंसकीसी मंदचाल । २ दोऊभैया । ३ पाँयधोय । ४ दाँतनके नीचे । ५ मीठोकौर । ६ भात ।

अपने करसों श्यामको, दीनो बदन धुवाय ॥
सो०—कोकरि सकै बखान, भाग्य यशोमति नंदके ॥
ब्रह्म रह्यो रुचिमान, बाल रूप जिनके सदन ॥

अथ पयछुडावन लीला ॥

बैठे श्याम मातकी कनियां[1] ❀ पियत दूध सुन्दर सुखदनियां ॥
बार बार यशुमति समुझावे ❀ हरिसों अस्तन पान छुडावे ॥
कहति श्याम तूभयो सयानो ❀ मेरो कह्यो लाल अब मानो ॥
दूध पियत देखत लरिका सब ❀ हँसत तोहिं नहिं लाज लगत अब
जैहैं दांत बिगरि सब तेरे ❀ अजहूं छांडि कह्यो करि मेरे ॥
सुनत वचन मुसकाय कन्हाई ❀ अचरा[2]तरमुख लियो छिपाई॥
आये तबहीं सखा बुलावन ❀ मात कह्यो खेलहु मनभावन ॥
यह सुनि हर्ष[3] उठे बनवारी ❀ मांगतदे चौगान[4] कहांरी ॥
मथनीके पाछे कहि दीन्हों ❀ हर्षित श्याम तहांते लीन्हों ॥
लै चौगान बढाकर आगे ❀ चले सखन देखत अनुरागे ॥
कहत सखनसों हरि हरषाई ❀ खेलहु गे किहिं ठोहर भाई ॥
खेलत बनिहै घोष निकासू ❀ हरषि चले सब सहित हुलासू॥
दोहा—कान्हर हलधर बीर दोउ, भये भुजा बर[5] जोर ॥
श्रीदामा अरु सुबल मिलि, जुरे सखा इकठोर॥
सो०—और सखनके वृन्द[6], बांटि लिये जुरि जोट[7] जुट॥
अति आँनद नँदनन्द, दियो बटा[8] ढरकाय महि ॥

अथ चौगानखेलनलीला ॥

अय अपनी बातन लैजाहीं ❀ एक एक सन पावत नाहीं ॥
इतते उत उतते इत घेरैं ❀ बटा मारि चौगाननि फेरैं ॥

१ गोद। २ अंचल। ३ आनंद। ४ गेंद। ५ बराबरएक ओर श्रीकृष्ण और दाऊजी और सुबल सखा एकओर ६ समूह। ७ जोडी। ८ गेंद।

दौरत हँसत खसत उठि मारैं ❀ आप आपनी जीत विचारैं ॥
जम्यो खेल अति मगन कन्हाई ❀ देखत सुर मुनि रहे लुभाई ॥
जीतत सखा श्याम जब जाने ❀ करो खेल कछु तब मचलाने ॥
कहत सखा सब सुनहु गोपाला ❀ रुंगटैयां[1]को कौन खियाला ॥
श्रीदामासों हौ तुम हारे ❀ झूठी सोहैं खाउ ललारे ॥
खेलतमें को काको सैयां[2] ❀ कहा भयो जो नंदगुसैयां[3] ॥
तातें तुम गर्वित मन महियां ❀ तनक वसत हम तुम्हरी छहियां ॥
अति अधिकार जनावत तातें ❀ तुम्हरे अधिक गाय कछु जातें ॥
अब नहिं खेलहिं संग तुम्हारे ❀ भये सखा सब रिस करि न्यारे ॥
खेल्यो चाहत त्रिभुवन राई ❀ दियो दांव तब पीठ चढाई ॥

दोहा—जाके गुणगण अगम अति, निगम[4] न पावत ओर[5] ॥
सोप्रभु खेलत ग्वाल सँग, बँधे प्रेमकी डोर ॥

सो०—खेलत भई अबेर, जननी टेरत श्यामको ॥
आवहु धाम सबेर, सांझ समय नहिं खेलिये ॥

सांझ भई घर आवहु प्यारे ❀ बहुरि खेलियो होंत सबारे ॥
आपुहि जाय बाँह गहि आने ❀ शुभग श्याम तनु रज लपटाने ॥
बोलि लिये यशुमति बलरामहिं ❀ लैआई दोऊ सुत धामहिं ॥
धूरि झारि तातो जल ल्याई ❀ तेल परशि दीन्हे अन्हवाई ॥
सरस बसन तनु पोंछि सँवारे ❀ लै गोदी भीतर पगु धारे ॥
करहु बियारू कछु दोउ भाई ❀ पुनि तुमको राखौं पौढाई ॥
सीरा पूरी सरस सँवारी ❀ और धरी मेवा बहु न्यारी ॥
दीन्हीं परसि कनक[6]की थारी ❀ बलमोहन दोउ करत बियारी ॥
मिसिरी मिलै दूध औटाई ❀ लैआई तब रोहिणि माई ॥

१ हक्करोमटी । २ मालिक । ३ मालिकपन्यो । ४ वेद । ५ पुराण । ६ सोंनेकी थार

प्रेमसहित दोउ जननि जिमावत ❀ देखि देखि छबि नैन जुडावत ॥
खात खात मोहन अलसाने ❀ बारहि बार श्याम जमुहाने ॥
आरससों कर कौर उठावत ❀ नैनन नींद झमकि झुकि आवत ॥
दोहा—उठहु लाल तब मातु कहि, धोये मुख[1] अरविन्द ॥
पौढाये लै सेजपर, बल[2] अरु बाल गोविन्द ॥
सो०—सोये बाल मुकुंद, दोउ भैया सुख सेजपर ॥
जननी अति आनन्द, शोचत गुण गोपालके ॥
माखन मोहनको प्रियलागे ❀ भूखो छिन न रहत जब जागे ॥
ताहि बदों जो गहरु लगावै ❀ नहिं मानै जो इन्द्र मनावै ॥
मैं इहि जानत बात श्यामकी ❀ दृगमींचेनवनीत खानकी ॥
लै मथनी दधि धर्‍यो बिलोई ❀ जबलगि लालन उठहिं न सोई ॥
भोरभयो जागहु नँदनंदन ❀ संग सखा ठाढे जगवंदन ॥
सुरभी पैहित[3] बच्छ पियाये ❀ पंछी तरुताजि चहुँदिशि धाये ॥
चन्द्रमलिन उडगण[4] द्युतिनाशी ❀ निशि[5] निघटी रवि[6] किरणिप्रकाशी
कुमुदिनि[7] सकुची बारिज[8] फूले ❀ गुंजत मधुप[9] लता लगि झूले ॥
दरशन देहु मुदित नर नारी ❀ ब्रजबासी प्रभु जन सुखकारी ॥
सुनि जननीके वचन रसाला ❀ खोले दृगराजीव[10] विशाला ॥
हँसत उठे संतन सुखदाई ❀ मुखछबि देखि मातु बलिजाई ॥
हरि कछु करहु कलेऊ प्यारे ❀ मैं माखन मथि धरेउ सवारे ॥
दोहा—रोटी अरु माखनतनक, देरीमा मोहिं हाथ ॥
लै आई जननी तुरत, कछु मेवा धरि साथ ॥
सो०—करत कलेऊ श्याम, माखन रोटी मानि रुचि ॥
त्रिभुवन पति सुख धाम, चार पदारथ हाथ जेहि ॥

१ मुखकमल । २ बलराम । ३ दूध ४ तारे । ५ रात्रि । ६ सूर्य । ७ कमोदनी । ८ कमल । ९ भौंरा । १० नेत्रकमल ।

अथ माखनचोरीलीला॥

मैयारी मोहिं माखन भावै ❀ और कछु आनि रुचि नाहिं आवै॥
मधु मेवा पकवान मिठाई ❀ सोमोको नेकहु न सुहाई ॥
ब्रजयुवती इक पाछे ठाढ़ी ❀ हरिके वचन सुनतरतिबाढ़ी ॥
मन मन कहत कबहु अपने घर ❀ माखन खात लखौं सुंदर बर ॥
बैठे जाय मथनियां पाहीं ❀ अपने करनि काढ़िकै खाहीं ॥
मैं बरु देखहुँ कहँ छिपाई ❀ कैसे मोघर जाहिं कन्हाई ॥
हरि अन्तर्यामी सब जानें ❀ ग्वालिनि मनकी प्रीति पिछानें॥
गये श्याम ता ग्वालिनिके घर ❀ ठाढ़े भये जाय द्वारे पर ॥
इत उत देखत कोऊ नाहीं ❀ तब पैठे ताके घर माहीं ॥
हरिको आवत ग्वालिनि जान्यो ❀ परममुदित अतिही सुख मान्यो
रही दबकि दुरि डीठि लगाई ❀ हरिबैठे मथनी ढिग जाई ॥
देखी माखन भरी कमोरी ❀ खान लगे करि अति मतिभोरी॥

दोहा—चिते रहे मणि खम्भमें, हरि अपनी प्रति छाँहँ॥
जानि दूसरो ग्वाल तिहि, प्रभु सकुचे मनमाहँ॥
सो०—तासों करत सयान, कहतलेहु आधो तुमहुँ॥
हम तुम एक समान, भलो बन्यो है संग अब॥

प्रथम आज मैं चोरी आयो ❀ तुमको देखि बहुत सुख पायो॥
अब तुम मेरे सँग नित आवो ❀ यह काहूको मतिहि जनावो॥
सुनि सुनि हरिके मुखकी बानी ❀ उमँगि हँसी ब्रजयुवति सयानी॥
श्याम चौंकि मुख तासु निहारी ❀ भाजि चले ब्रज खोरि मुरारी॥
अति आनँद ग्वालिन मनमाहीं ❀ पूंछत सखी परस्पर ताहीं ॥
पायो आज परो कछु तैंरी ❀ कहा तोहिं अति आनँद हैरी॥

१ प्रीति। २ अपने हाथ। ३ घुसे। ४ दृष्टि। ५ प्रतिबिंब।

गद्गद कंठ पुलक तनुतेरो ❀ सो किन कहै कहा सुखहेरो॥
तनु न्यारो जिय एक हमारो ❀ हनैं तुम्हें कछु भेद न न्यारो ॥
सनहु सखी मैं तोहिं बताऊं ❀ जो सुख भयो सो तोहिं सुनाऊं॥
यशुमति सुत सुन्दर सुनु गोरी ❀ आयो आजु हमारे चोरी ॥
खम्भ निकट मथनीको माखन ❀ लियो निकासि लग्यो सो चाखन
मैंदुरि भीतर देखन लागी ❀ वा मोहन छबि पर अनुरागी ॥
दोहा–देखि खम्भ प्रतिबिंबको, मन कछु सकुचे श्याम॥
अर्द्ध भाग तेहि देन कहि, प्रगट करो जिन नाम॥
सो०–तब न रह्यो मोहिं धीर, हँसी मनोहर वचन सुनि॥
कहा कहौं तुम बीर, मन हरि लीन्हों सांवरे॥
मोहिं देखि तब गयो पराई[1] ❀ सखि सो छबि कछु वरणि न जाई॥
सुनि हरि चरित सखी अनुरागी ❀ अति सुख पाय प्रेम रसपागी॥
कहत कि मैं देखन नहिं पायो ❀ सोइ अभिलाष[3] जासु उर छायो
हरि अन्तर्यामी सब जानैं ❀ सबके मनकी रुचि पहिचानैं॥
इहिविधि माखन प्रथम चुरायो ❀ कीन्हों ग्वालिनिको मनभायो
भक्त बछल संतन सुखकारी ❀ पुनि मनमहँ यह बात विचारी॥
अब सब ब्रज घर माखन खाऊं ❀ माखन चोर नाम कहवाऊं॥
बालरूप मोहिं यशुमति जानैं ❀ ग्वालिनि प्रेम भक्ति करि मानैं॥
मित्रभाव करि ग्वाल बखानैं ❀ प्रीति रीति सब मोसों मानैं ॥
इनहींके हित गोकुल आयो ❀ करों सबनके मनको भायो ॥
यह विचार हरि निज उर ठाना ❀ भक्ति कृपा[4] अम्बुधि भगवाना॥
बाल सखा सब निकट बुलाई ❀ तिनसों हँसि हँसि कहत कन्हाई॥
दोहा–माखन खइये चोरिके, सब ब्रज घर घर जाय॥

१ छिपीभई। २ भाजगयो। ३ आनंद। ४ भक्ति और कृपाके समुद्र।

कीजे बाल विहारयों, मेरे मन यह आय ॥
सो०—सुनि हरषे सब ग्वाल, देत परस्पर तारि सब ॥
भली कही नँदलाल, तुम विन यह बुधिको करे ॥
चले सखन लै माखन चोरी * एक बयस सबहिन मति भोरी॥
देख्यो झांकि झरोखा ओरी * मथति एक ग्वालिनि दधि गोरी॥
धर्यो मठा मथनीमें जानो * ऊपर माखनहै लपटानो ॥
ग्वालिनि गई कमोरी मांगन * पाई घात तबहिं सुन्दर घन ॥
सखन समेत ताहि घर आये * दधिमाखन सबहिन मिलि खाये
छूँछी मटुकी छाँडि सिधाये * हँसत हँसत सब बाहर आये ॥
आयगई द्वारे सोइ बाला * घरसो निकसत देखे ग्वाला ॥
माखन कर मुखदधि लपटानो * ग्वालिनि यह कछु भेद नजानो॥
देखिरही हँसि मुखकी शोभा * निरखि रूप लाग्यो मन लोभा॥
चमकि गये हरि सखन समेता * तबहीं ग्वालिनि गई निकेता ॥
देखी जाय मथनियां खाली * चकित विलोकत इत उत ग्वाली॥
मन हरि लीन्हों मदनगोपाला * जान्यो ग्वालिनि हरिके ख्याला॥
दोहा—घर घर प्रगटी बात यह, सखावृन्द लै साथ ॥
चोरी माखन खातहैं, नन्द सुवन ब्रजनाथ ॥
सो०—सबके मन अभिलाष, चोरी पकरन पाइये ॥
धरियो माखन राख, यहै ध्यान सबके हिये ॥
कहत परस्पर ग्वालि सयानी * सब मोहनके रूप लुभानी ॥
माखन खान देहु गोपालहि * मत बरजो कोउ श्यामतमालहि॥
तुम जानत हरि कछू नजाने * वे मोहनहैं परम सयाने ॥
कोऊ कहत पकर जो पाऊं * तो अपने गहि कंठ लगाऊं॥

१ भाजगए। २ सखासमूह

एक कहत जो मेरे आवैं ❀ तौ माखन हम हरिहि खवावैं ॥
कहत एक जो मैं गहिपाऊं ❀ तौ हरिकौ बहु नाच नचाऊं ॥
कोउ कहत जो हरिको पैये ❀ तौ गहि यशुमतिपै लै जैये ॥
इक कह आजु हमारे आये ❀ द्वारहिते मोहिं देखि पराये[1] ॥
इहि विधि प्रेम मगन सब बाला ❀ सबके हृदय ध्यान नँदलाला ॥
निशिबासर[2] नहिं नेक बिसारैं ❀ मिलिबे कारण बुद्धि विचारैं ॥
गये श्याम सूने ग्वालिनि घर ❀ सखा सबै ठाढे द्वारे पर ॥
देख्यो भीतर जाय कन्हाई ❀ दधि अरु माखन धरयो मलाई ॥

दोहा—सदमाखन देख्यो धर्‍यो, हरषे श्यामसुजान ॥
सखा बुलाये सैनदे, लै लै लागे खान ॥

सो०—इत उत चितवत जात, कछु संशय मनमें किये ॥
बाँटत दधि अरु खात, उठि उठि झांकत द्वारतन ॥

देखतसोग्वालिनि अंतरकरि ❀ मगनभई अति उर आनँद भरि ॥
लीन्ही बोलि सखी ढिग बासी ❀ तिन्है दिखावत हरि सुखरासी ॥
देखि सखी शोभा अति बाढी ❀ उठि अवलोकि ओटके ठाढी ॥
किहिविधिसों दधि लेत कन्हाई ❀ सखन देत अरु आपन खाई ॥
बदन समीप पाणि[3] अति राजे ❀ माखन सहित महाछबि छाजे ॥
लै उपहार जलज[4] मनुजाई ❀ मिलत चन्द्रसो बैर बिहाई ॥
गिरि गिरि परत बदनते ऊपर ❀ दुइ दधिसुत[5]के बुन्द सुभगतर ॥
मनौ प्रलयजल आगम हरषत ❀ इन्दु[6]सुधाके कणका बरषत ॥
मुखछबि देखि थकित ब्रजनारी ❀ कहत नबनै रही उरधारी ॥
बालविनोद मोद मन फुलीं ❀ भईं शिथिलसब तनु सुधि भूलीं ॥
बरजनको अस्फुरत नबानी ❀ रही विचारि विचारि सयानी ॥

१ भाजगए । २ दिन रात । ३ हाथ । ४ कमल । ५ माखन । ६ मानो चंद्रअमृतकी बूंद वर्षेहै ।

गये ठगोरी लाय कन्हाई ❀ रहीं ठगीसी सब सुखपाई ॥
दोहा–विश्व भरण पोषण करण, कल्प तरोवर नाम ॥
सो प्रभु दधि चोरी करत, प्रेम विवश सुख धाम ॥
सो०–नित उठि करत विहार, ब्रजमें घरघर सांवरो ॥
ब्रजजन प्राण अधार, माखन चोरी[1] व्याजकरि ॥
श्याम एक ग्वालिनि घर आये ❀ चोरी करत पकरि तिन पाये ॥
कहत करी तुम बहुत ढिठाई ❀ अबतौ घात परेहौ आई ॥
निशिबासर मोहिं बहुत खिझायो ❀ दधि माखन सब मेरो खायो ॥
दोउ भुज पकरि कह्यो कित जैहौ ❀ दधि माखन दे छूटन पैहौ ॥
तकि मुखतन चितै कन्हाई ❀ बोलेवचन मधुर मुसुकाई ॥
तेरीसौं मैं छुयो नराई ❀ सखा खाय सब गये पराई ॥
चारु चितौनि चित्त उरझानो ❀ उरते रोष जात नहिं जानो ॥
सुनत मनोहर हरिकी बतियां ❀ लिये लगाय ग्वालिनी छतियां ॥
बैठो श्याम जाउँ बलिहारी ❀ मैं लाऊं दधि खाउँ विहारी ॥
हरिको लेन चली दधि गोरी ❀ हरिहँसि निकसि गये ब्रजखोरी ॥
रही ठगीसी ग्वालिनि भोरी ❀ मन लैगयो सांवरो चोरी ॥
हरिगये और ग्वालिनीके घर ❀ देख्यो जाय नकोऊ भीतर ॥
दोहा–माखन काढि निशंक है, लागे खान कन्हाय ॥
ग्वालिनि आवत जानिघर, तब उठि रहे छिपाय ॥
सो०–ग्वालिनि घरमें आय, मथनीढिग ठाढी भई ॥
भाजन रीतो पाय, चकित विलोकति चहूंदिशि ॥
अबहिं गई आई इन पावन ❀ आयो माखन कौन चुरावन ॥
भीतर गई तहां हरि पाये ❀ पकरी भुजा भये मन भाये ॥

१ माखनचोरीके मिसकरके ।

तब हरि कहि निज नाम लजाये ❀ नयन¹सरोज कछुक भरि आये
देखि बदन छबि आनंदहीके ❀ दीन्हें जान भावते जीके ॥
भयो ग्वालिमन परमहुलासा ❀ कहनि चली यशुमतिके पासा ॥
जो तुम सुनहु यशोमति माई ❀ हँसिहौ सुनि हरिकी लरिकाई ॥
आजगये हरि मो घर चोरी ❀ देखी माखन भरी कमोरी ॥
मैंगइ आन अचानक जबहीं ❀ रहे छिपाय सकुचिके तबहीं ॥
जब मैं कह्यों भवनमें कोरी ❀ तब मोहिं कहि निज नाम निहोरी ॥
लगे लेन लोचन³ भरि आंसू ❀ तबमैं कानन तोरी सांसू ॥
सुनत श्याम सब रोहिणि कनियां ❀ सकुचत हँसत मंदमुसुकनियां
ग्वालि विहँसि हरितन डरपायो ❀ माखनचोर पकरि मैं पायो ॥

दोहा—करौ नोयकी दामरी, बांधो अपने धाम ॥
लाय लिये उर रोहिणी, बाँधि सकैको श्याम ॥
सो०—यशुमति उर आनन्द, बाल चरित सुनिश्यामके ॥
कहत सुनो नँदनन्द, ऐसो काम नकरहुसुत ॥

पुनि इक गृह⁴ गए नन्ददुलारे ❀ देखि फिरे तहँ ग्वाल दुआरे ॥
तब हरि ऐसी बुद्धि उपाई ❀ फांदि परे पिछवारे जाई ॥
सूनो भवन कहू कोउ नाहीं ❀ मानहु इनको राज सदाहीं ॥
भांडे मूंदत धरत उतारत ❀ दधिअरु माखन दूध निहारत ॥
रैनि⁵जमायो गोरस पायो ❀ लगे खान मनु आप जमायो ॥
आहट सुनि युवती घर आई ❀ झलकत देखे कुँवर कन्हाई ॥
अँधियारे घर श्याम गये दुरि⁶ ❀ दधि मटुकी ढिग बैठि रहे मुरि ॥
सकल जीव उर अंतरवासी ❀ तहां कछुक चेटक परकासी ॥
ग्वालिनि हरिको इत उत हेरे ❀ पावत नाहीं धाम अँधेरे ॥

१ नेत्रकमल । २ आनंद । ३ नेत्र । ४ एकघरमें । ५ रातको जम्यो । ६ छिपगए

कहति अबहिं देख्यो नँदनंदन ❀ कितहि गयोपछतात मनहिंमन॥
परिगये दीठिं ओट मथनीके ❀ सुन्दर श्याम प्राण गथनीके ॥
तबहीं ग्वालिनि भुजगहि लीन्हों ❀ कहत तुम्हैं अबतो मैं चीन्हों॥
दोहा—कहौ कहा चाहत फिरत, धाम अँधेरे माहिं ॥
बूझे बदन दुरावते, सूधे चितवत नाहिं ॥
सो०—दधि मथनी में हाथ, अबका उतर बनाई हौ ॥
सखा नहीं कोउ साथ, कहिये अब कैसी बनै ॥
मैं जान्यो यह घरहै मेरो ❀ ता धोखे इत ह्वैगयो फेरो ॥
दृष्टिपरी चींटी दधि माहीं ❀ काढनिलग्यो तिन्है इहिं ठाहीं॥
सुनि मृदुवचनग्वालि मुसकानी ❀ तुमहौ रतिनागर हम जानी ॥
उरलगाय मुख चुंबन कीन्हो ❀ विधिहिमनायबिदा करिदीन्हो॥
हरि दरशन बिन क्षण नसुहाई ❀ उरहन मिस यशुमतिपहँ आई॥
सुनहुमहरि निजसुतकी करणी ❀ करत अचगरी जात नवरणी॥
नितप्रति करत दूध दधि हानी ❀ कहँलगि करैं कान नँदरानी ॥
मैं अपने मन्दिर अँधियारे ❀ माखन धर्‍यो दुराय सँवारे ॥
सोई ढूंढि लियो हरि जाई ❀ अति निशंक नाहिं नेक डराई ॥
बूझे उत्तर तुरत बनावै ❀ चींटी काढनको करनावै ॥
सुनि ग्वालिनिके वचन सयानी ❀ हँसिकै बोध कियो नँदरानी ॥
यशुमति कहत श्यामसों प्यारे ❀ परघर काहे जात ललारे ॥
दोहा—मम लोचन आगे सदा, खेलहु सखन बुलाय ॥
तुम्हरे बाल विनोद लखि, मेरोहियो सिराय॥
सो०—मोपै लीजै श्याम, दधि माखनमेवामधुर ॥
सब कछु तेरे धाम, परघर जाय बलाय तुव ॥

१ दृष्टि । २ दुबका ओहो । ३ नम्र । ४ छिपाय । ५ मेरी आंखिनके आगे

माखन मांग्यो कुँवरकन्हाई ❀ मुदित मातु तुरतहि लै आई ॥
लगी खवावन हिय हरषानी ❀ श्याम कह्यो खैहौं निजपानी ॥
दियो हाथ धरि भरिकै दोना ❀ चले खात खेलत हरि लोना ॥
सखन संग खेलत वनमाली ❀ यमुना जाति सखी इक ग्वाली ॥
आपचले ताके घर माहीं ❀ पूंछत बात कौनहै काहीं ॥
लखे[2] तहां शिशु[3] दोय अयाने ❀ भोर देखते रोय डराने ॥
इत उत देख्यो गोरस नाहीं ❀ ऊंचे धर्यो सिकहरन[4] माहीं ॥
तब मनमोहन रच्यो उपाई ❀ आनितहां ऊखल औंधाई ॥
तापर एक सखा बैठारी ❀ ताके कंध चढे बनवारी ॥
ऐसी विधि करि गोरस पायो ❀ दधिमाखन सबही मिलिखायो ॥
दूध डारि बछरू सब छोरे ❀ दिये निकासि बनहिंकी ओरे ॥
मही[5] छिरक लरकन डरपाई ❀ चले अग्रकरि सखा कन्हाई ॥

दोहा—ग्वालिन आवत देखिके, सखागये सब दौरि ॥
फँसि भीतर मोहन परे, रोंकि लई तिन पौरि ॥
सो०—रोष भरी मुख बात, प्रेम भर्यो अन्तरहियो ॥
कहत महरके तात, जात कहां दधि चोर अब ॥

तब हरि ताके मुखतन देखी ❀ कीन्हे उरनख[6] घात विशेखी ॥
अति रिस ग्वालिनि मन उपजाई ❀ दोउ भुज पकरि महरिपै लाई ॥
मानो महरि कह्यो तुम मेरो ❀ अति उतपात करत सुत तेरो ॥
राख्यो गोरस छिके चढाई ❀ ग्वाल कन्ध चढि लिये कन्हाई ॥
माखन खाय दूध ढरकायो ❀ मही छिरक बालकन रुवायो ॥
और कहत सकुचतहौं बाता ❀ कहा दिखाऊं तुमको गाता ॥
हैं गुण बड़े श्यामके माई ❀ इहां सकुचि लरिका ह्वैजाई ॥

अपने हाथते । २ देखे । ३ दोबालक । ४ छीकेपर । ५ दूधकी छींटा देके । ६ छातीमें नखनके चिह्न ।

बरजत क्योंनहिं सुतहि अनेरो ❀ कहा कहौं नितप्रतिको झेरो ॥
जोकछु राखै दूरि दुराई ❀ तहीं तहीं ते लेत चुराई ॥
तापर देत बछरुवन छोरी ❀ वन वन फिरत वही चहुँ ओरी॥
चोरी अधिक चतुर बनवारी ❀ सुनहु महरि हम इनते हारी ॥
कहँलगि इनके गुणन बखानौं ❀ तुम इनको सूधो मति जानौं ॥

दोहा—सुनत ग्वालिनीके वचन, यशुमति हरि तन देखि ॥
भये सकुच युत मुख निरखि, कोमल ललित बिशेखि ॥

सो०—कहत लगावत लोग, झूंठहि सब मेरे सुतहि ॥
कब भये चोरी योग, पांच वरषके तनिकसे ॥

इहिमिसि देखनको सब आवैं ❀ चोरी मेरे सुतहि लगावैं ॥
ऐसो तो मेरो न अन्याई ❀ अतिही बालक कुँवर कन्हाई ॥
छीके बँधे भवन अति ऊँचे ❀ तहँ इनकी कैसे भुज पहुँचे ॥
कौनवेग इतनो है आयो ❀ तेरो गोरस कैसे खायो ॥
हाथ नचावत आवत दौरी ❀ जोमन करहि समुझिके बौरी ॥
घरही माखन भरी कमोरी ❀ कबहूं लेत नअँगुरिन बोरी ॥
इतनी सुनतनिरखिघनश्यामैं ❀ बिहँसि चलीग्वालिनि निज धामैं
हरिसों कहति महरि समुझाई ❀ मैंबलि कहुँ जिन जाहु कन्हाई॥
तुम्हरे कारण षटरस[1] नाना ❀ करिकरि राखैं विविध विधाना॥
इतो उपाय करत कितजाई ❀ परघर दधि माखनहिं लगाई ॥
ब्रजकी बाढी ग्वालि गँवारी ❀ हाट बाट[2] दधिबेचनहारी ॥
नहिंकछु लाज नकान विचारैं ❀ बोलत वचन कटुक[3] मुँह फारैं ॥

दोहा—झूंठो दोष लगायके, नित उठ आवत प्रात ॥
सन्मुख वादिति शंक तजि, विकट बनावत बात ॥

१ छः प्रकारके व्यंजन । २ बजारमें । ३ खोटो

सो०—नौलख दुहियत गाय, दूध दही तेरे घनो ॥
तू कित चोरी जाय, बुरो मानिहैं नन्दसुनि ॥
हरिमाखन चोरी रस गीधे ❀ कैसे रहैं प्रेमके बीधे ॥
एक ग्वालि घर माँझ अँधेरे ❀ अति श्यामल तनपर तनहेरे ॥
कछुकधरो गोरस तहँ पायो ❀ प्रथम सुरुचिकर भोगलगायो ॥
कियो प्रगट दीपक गृह ग्वाली ❀ तहँ देखे भीतर वनमाली ॥
भुजा चार धरि दरश दिखायो ॥ ग्वालिनि लखि अति अचरज पायो
दधि माखनके बूंद सुहाये ❀ सुभग श्याम उर अति छबिछाये ॥
मानहु यमुना जलके माहीं ❀ देखि परत उडगण[2] परछाहीं ॥
इहि छबि निरखि रही छकि[1] ग्वाली ❀ बहुरों भये द्विभुज वनमाली
देखि चरित हरषीं ब्रजबाला ❀ चकित विलोकति हर्ष विशाला ॥
मन मन कहति कहा मैं देख्यो ❀ यह जाग्रतके स्वप्न विशेष्यो ॥
प्रेम मगन तनुकी सुधि भूली ❀ गदगद कंठ रोमावलि फूली ॥
मन हरि लीनो रूप दिखाई ❀ चले वहांते कुँवर कन्हाई ॥
दोहा—देखि श्यामके चरित तब, ब्रज नारी सुख पाय ॥
होहिं हमारे पुरुष हरि, माँगत बिधिहि[3] मनाय ॥
सो०—घर घर करत बिलास, नाना भेष दिखाय हरि ॥
ब्रज जन परमहुलास, देखि चरित गोपालके ॥
देखी श्याम ग्वालि इक ठाढी ❀ गोरस मथति प्रात छबिबाढी ॥
डोलत तनु उघर्यो शिर अंचल ❀ वेणी चलत पीठपर चंचल ॥
जौवन मदमाती इठिलानी ❀ करषत रजु दुहुँ करन मथानी ॥
इत उत अंग मोर झकझोरी ❀ गोरे अंग दिननकी थोरी ॥
मढी उरोजन अँगिया गाढी ❀ मनहुं काम साँचे भरि काढी ॥

१ प्रेमपगे । २ तारागण । ३ विधाता

रीझि रहे लखि नन्ददुलारे ❀ लागे खेलन तासु दुआरे ॥
फिरि चितई ग्वालिनि द्वारेतन ❀ परि गये दृष्टि श्याम सुन्दर घन॥
बोलि लिये हरुवे सूने घर ❀ लिय लगाय उरसों सुन्दर बर ॥
उमँग अंग अँगिया उर दरकी ❀ तिहिं अवसर सुधि[1] रही न घरकी॥
तबहीं सुन्दर श्याम सुजाना ❀ भये बरस द्वादश[2] अनुमाना ॥
सो छबि देखि छकी ब्रजनारी ❀ बहुरि भये शिशुरूप[3] निहारी ॥
हरिके कौतुक[4] अति सुखदाई ❀ देखि रही मति गति बिसराई ॥

दोहा—माखन लै तब श्याम मुख, धरत आपने पान ॥
अति आनंद उमंग उर, बिसरी ग्वालि सुजान ॥
सो०—रसिक शिरोमणि श्याम, माखन खाय रिझायतिय॥
आये अपने धाम, छबि सागर नागर नवल ॥

मन हरि लीन्हों कुँवर कन्हाई ❀ बिन देखे क्षण रह्यो न जाई ॥
उरहनके मिस ग्वालिसयानी ❀ आई देखन हरि सुखदानी ॥
सुनहु महरि सुतके गुण जैसे ❀ कहा कहौं कहि जात न तैसे॥
माखन खाय मही ढरकायो ❀ चोली फारि अबहिं भजि आयो॥
गोरस हानि सही लै माई ❀ अब कैसे सहिजात खुटाई ॥
बीचहिं बोलि उठे बनवारी ❀ झूंठहिं मोहिं लगावत ग्वारी ॥
खेलत ते मोहिं लियो बुलाई ❀ दोउ भुज भरि लीनो उरलाई॥
मेरे कर अपने उर धारी ❀ आपु नहीं चोली पुनि फारी॥
माखन आपहिं मोहिं खवायो ❀ मैं कब दही मही ढरकायो ॥
अति भोरी[5] सुनि हरिकी बानी ❀ यशुमति ग्वालिन सों रिसियानी
जानति हूं जु कटाक्ष तिहारो ❀ अति भोरो सुत मेरो बारो ॥
दै दै दगा बुलावति ताही ❀ सोइ सोइ करत जो भावत जाही॥

। २ बारहवर्षके । ३ बालकरूप । ४ चरित्र । ५ बावरीसी ।

दोहा—बोलि बोलि निज निज भवन, भेंटति भरि भरि अंक ॥
मोरे भोरे बालको, ग्वालिनि निलज निशंक ॥
सो०—तापर उरनखलाय[1], फिरत दिखावति लाजतजि ॥
कान्हहिं दोष लगाय, आपुन अति भोरी भई ॥
नित उठि उरहन लै उठि धावैं ❀ बिना भीतहीं[2] चित्र बनावैं ॥
मिस करि करि मेरे गृह आई ❀ रहत श्याम तनु दीठि[3] लगाई ॥
मेरो पाँच वर्षको कान्हा ❀ अजहुँ रोय पय माँगत नान्हा ॥
कहँ तू यौबनकी मदमाती ❀ हरिके संग फिरत अठिलाती ॥
ग्वालिनि सुनत यशोमति बैना ❀ मनहरि लीन्हो राजिव[4] नैना ॥
आवत रोष प्रीति मनमाहीं ❀ उत्तर देत बनत कछु नाहीं ॥
कछुअ न उत्तर कहि रिसियाई ❀ चली भवन उर राखि कन्हाई ॥
यशुमति यहै सिखावति श्यामहिं ❀ कितहो जात पराये धामहिं ॥
ये सब गोरसकी मदमाती ❀ फिरतढीठ ग्वालिनि इतराती ॥
नित उठि उरहन देत बिहाने[5] ❀ मुख सँभारि नहिं बात बखाने ॥
रुचि उपजै तुम्हरे मन जोई ❀ मोपै माँगिलेहु किन सोई ॥
कहिकहि मधुर वचन निज ताता ❀ सुख उपजावत मेरे गाता ॥
दोहा—अपनेहिं आँगन खेलिये, सखन सहित दोउभाय ॥
मोहिं सुख दीजै आपने, बाल विनोद दिखाय ॥
सो०—सुन्दर घन ब्रजनाथ, कोटि काम शोभा हरण ॥
गोप बाल लै साथ, करत बाल लीला ललित ॥
मथुरा जात लखी इक ग्वाली ❀ चराँचि[6] लई ताको बनमाली ॥
बैठि रहे ताके पिछवारे ❀ सखा संगलै नंददुलारे ॥
कहति परोसिन सों समुझाई ❀ सुनि लीन्हों सो कुँवर कन्हाई ॥

१ छातीमें नौह मारिके । २ विनाभीतके चित्र बननो असंभवहै ऐसेही मेरे लालाने तेरीछातीमें नौह मारनो असंभव है। ३ ढिकिढिकी लगाय देखैहैं । ४ कमलनेत्र । ५ प्रातःकाल । ६ जानलीनि ।

बेंचन जाति सखी हौं दहियो ❀ तौलौ मेरे घर तन चहियो ॥
सद माखन हैमाट धरोई ❀ सौंपि जाति हौं तोको सोई ॥
डरतो और कछू ब्रज नाहीं ❀ नंद सुवन सखि आय न जाहीं॥
योंकहि चली ग्वालिनी जबहीं ❀ सखन सहित हरि पैठे तबहीं ॥
कछु ग्वालनकी आहट पाई ❀ सोपुनि फरि घरहि फिरि आई॥
देखि सखा सब चले पराई ❀ पकरे ग्वालिनि धाय कन्हाई ॥
औरन जानि जान मैं दीन्हें ❀ तुम कित जात अचकरी कीन्हें॥
बाँह पकरि लै चली लिवाई ❀ कहत यशोमति देखहु आई ॥
उरहन देत सदा रिसमानों ❀ अब अपनो सुत आय पिछानो॥
दोहा—वहै उरहनो नित्यको, सत्य करनके काज ॥
मैं गहिल्याई श्यामको, बाँह पकरिकै आज ॥
सो०—हरि बैठे निज धाम, खेलत जननीके निकट ॥
कौतुक निधि घनश्याम, करत चरित संतन सुखद ॥
यशुमति सुनि ग्वालिनिकी बानी ❀ देखन चली सुतहि अकुलानी
गये तहां है सुता पराई ❀ देखि यशोमति अतिरिसि याई॥
तेरे आँखिन मतिहिय नाहीं ❀ बदन देखि पहिचानत नाहीं ॥
देखहुरी याकी गति माई ❀ या कन्याको कहत कन्हाई ॥
तैं जो मेरे सुतको नामा ❀ सूधो करि पायो है श्यामा ॥
तूगहि बाँह कौनको ल्याई ❀ खेलत मेरे धाम कन्हाई ॥
रही बाल हरिको मुख चाही ❀ समुझि समुझि मनमें पछिताही॥
बाँह पकरि मैं घरते ल्याई ❀ कीन्हें कैसे चरित कन्हाई ॥
जात बनै ना कछु कहि जाई ❀ रही ग्वालि ठगिसी सकुचाई॥
महरि कहत चलि जाहि इहांतें ❀ मैं जानत सब तुम्हरी बातें ॥

१ घुसे। २ पराई बेटी। ३ तेरी हियेकी आंखि नहीं रही। ४ देखत।

हरिके चरित कहा कोउ जाने * ग्वालिनि तन दृरि मुरि मुसकाने ॥
हरिते हारि चली गृह ग्वाली * बुधि करि जीते श्याम तमाली ॥

दोहा—बहुरि गये इक ग्वालिघर, मनमोहन घनश्याम ॥
सखन सहित हरषित भये, सूनो पायो धाम ॥

सो०—सब घर लियो ढँढोरि, माखन खायो चोरि हरि ॥
भाजन डारे फोरि, गोरस दियो लुढाय माहि ॥

सोवति लरिकन चुटकि जगाये * मही छिरकि डरपाय रुवाये ॥
बडो माट इक घीको पोखो * बहुत दिननको चिकनो चोखो ॥
सोऊ फोरि कियो बहु टूका * चले हँसत सब मिलि दै कूका ॥
आइ गई ग्वालिनि तिहि काला * निकसत घरि पाये नँदलाला ॥
देख्यो घर बासन सब फोरे * रोवत बाल मही सों बोरे ॥
दोऊ भुज गाढेही लीन्हे * जाय महरि ढिग ठाढे कीन्हे ॥
कहति सरोस यशोमति आगे * अब पति रहिहै या ब्रज त्यागे ॥
ऐसे हाल किये गृह मेरे * सुनो महरि लक्षण सुत केरे ॥
माखन खाय दही ढरकायो * मही छिरकि बालकन रुवायो ॥
बासन फोरि धरे सब घरके * उपज्यो पूत सपूत महरिके ॥
घीको माट युगनको राख्यो * सोऊ फोरि टूक करि नाख्यो ॥
चलौ दिखाऊं घरको हाला * राखहु बांधि आपनो लाला ॥

दोहा—जननी खीजति कान्हको, करत फिरत उतपात ॥
नित उठि उरहन सहतिहौं, तू नाहिं मानत तात ॥

सो०—बडे बापके पूत, चोर नाम प्रगट्यो जगत ॥
उपज्यो पूत सपूत, नाम धरावत तातको ॥

जननीके खीझत हरि रोये * भरि आये नैननिके कोये ॥

१ नोचकर । २ दही । ३ यशोदाके ।

झूंठहिं मोहिं लगावत धगरी * मेरे ख्याल परी हैं सिगरी ॥
यशुमति रोवति देखि कन्हाई * बदन पोंछि लीनो उरलाई ॥
कहति सबै युवतिन यह भावै * नितही नित उठि भोरहि आवै॥
मेरे बारहिं दोष लगावैं * झूठहि उरहन मोहिं सुनावैं॥
कबहिं गयो तेरे दरवाजे * दूध दही माखनके काजे ॥
धन माती इतराती डोलैं * सकुचति नाहिं सँभारि न बोलैं॥
मेरो कान्ह तनक सोमाई * ताहि रुवावत झूंठ लगाई ॥
कब हरि तेरो माखन लीनो * मेरे बहुत दईका दीनो ॥
कहा भयो घर गयो तिहारे * छियो तनक दधि बालकबारे॥
ग्वालिन सुनि यशुमति की बानी * कहति महिरि तुम उलटिरिसानी
तिन उठि होय जासु की हानी * सो क्यों कहे आन नँदरानी॥

दोहा—तुम कछु लावत औरही, लेहु आपनो गाउँ ॥
जहां बसे नाहिं पति रहै, तजानि कह्यो सो ठाँउँ ॥

सो०—पूतहि देत पठाय, भडहाई घर घर करन ॥
उरहन देत रिसाय, को बसिहै ऐसे नगर ॥

सखा भीरलै पैठत धाई * आप खाइ तो सहिये माई ॥
जो कछु गोरस घरमें पावै * कछु डारे कछु सखन लुटावै ॥
कहँलौं सहैं नित्यकी हानी * कबलौं करैं नंदकी कानी ॥
इकदिन मेरे मन्दिर आयो * मोको देखत बदन बिरायो ॥
जब मैं सन्मुख पकरन धाई * तबके गुण कहा कहौं सुनाई ॥
भाजि रह्यौ दुरि देखत जाई * मैं पौढी अपने गृह आई ॥
हरैं हरैं आये शिरहाने * चोटी पाटी बांधि पराने ॥
सुनि मैया याके गुण मोसों * ये सब झूठ कहतिहैं तोसों ॥

१ मेरे बालकको । २ भगवानको दीना । ३ लाज । ४ ठौर । ५ भाजगए ।

खेलतते मोहिं लियो बुलाई ❋ मोपै दधिकी चोंटि कढाई ॥
टहल करौं मैं याके घरकी ❋ यह सोवै पतिसंग निःधरकी ॥
सुनतबचनयशुमति मुसुकानी ❋ ग्वालिनि हँसिमुख मोरिलजानी
सुनहु महरि सुतके गुण काने ❋ समुझहु हैं भोरेके स्याने ॥

दोहा—करत फिरत उतपात अति, सबब्रज घर घर जाय ॥
नित उठि खेलत फागसी, गरियावत[1] न लजाय ॥
सो०—बाहर तरुण किशोर, बोलत वचन विचित्र बर ॥
इहां होत शिशु[2] भोर, तुम अचरज मानतनहीं ॥

यों कहिगई ग्वालिनी धामहिं ❋ यशुमति पुनि पुनि सिखवत श्यामहिं
घर गोरस जिनजाहु पराये ❋ तातें[3]रिसात उरहनो लाये ॥
लघु दीरघता कछु नहिं जानै ❋ झगरो आय झूंठ तब ठानै ॥
नौ लख धेनु दूधकी तेरे ❋ और बहुत बन चरैं अनेरे ॥
तू कित माखन खात चुराई ❋ छांडि देहु अब यह लरिकाई ॥
यों कहि जननी कंठ लगायो ❋ सुन्दर श्याम हरष तब पायो ॥
खेलन गये बहुरि नँदलाला ❋ किये जाय पुनि सोई ख्याला ॥
अपर ग्वालि उरहनलै आई ❋ आई यशुमति पै रिसयाई ॥
तेरो कान्ह मेरो माखन खायो ❋ सखनसहित अबहीं भजिआयो॥
मैं गइ यमुन भरनको पानी ❋ दुपहर द्योस सून घर जानी ॥
गयो भवनमें खोल किवारी ❋ छीकनतें दधि लियो उतारी ॥
खाय लुटाय बहाय परानैं ❋ वारक द्वै बरजौ नहिं मानैं ॥

दोहा—कीन्हो अतिही लाडलो, लाड लडाय बहूत ॥
अबहिं ते ये ढँग करत, जायो नोखो पूत ॥
सो०—सुनि ग्वालिनिके बैन, कहत यशोमति कान्हसों ॥

१ गारि देवेमें नेकलाज नहींकरे । २ बालक । ३ नन्दबाबा ।

सिखयो मानत नैन, लै साँटिया डाटति भई ॥
माखन खात पराये घरको ❀ मेरे रहत जहाँ तहँ ढरको ॥
नितप्रति मथियत सहसमथानी ❀ तेरे कौन वस्तुकी हानी ॥
कितने अहिर जियत घर मेरे ❀ बेंचत खात मही बहु तेरे ॥
पूत कहावत नन्द महरिको ❀ चोरी करत उघारत फरको ॥
मैया मैं नहिं माखन खायो ❀ मेरे बदन सखन लपटायो ॥
भाजन ऊंचे छिकन चढायो ❀ समुझ देखि मैं कैसे पायो ॥
मैं ये नान्हें हाथ पसारी ❀ किहिविधि माखन लियो उतारी ॥
मुख दधि पोंछत कहत कन्हाई ❀ दोना पाछे पीठि दुराई ॥
डारि सांटि यशुमति मुसुकानी ❀ गहि उरलाय लिये सुखदानी ॥
बाल विनोद मोद मन मोह्यो ❀ निरखत वदन त्रास युत सोह्यो ॥
भक्ताधीन वेद यश गावै ❀ सो हरि भक्ति प्रताप दिखावै ॥
यशुमतिको मुख निरखि अगाधा ❀ बिसरी शिव मुनि ब्रह्म समाधा

दोहा—धन ब्रजवासी धन्य ब्रज, धनि धनि ब्रजकी गाय ॥
जिनको माखन चोरि हरि, नित उठि घर घर खाय ॥
सो०—रहे सकल सुरभूल, ब्रजबिलास हरिको निरखि ॥
हरषहिं बरषहिं फूल, धन्य धन्य ब्रज धन्य कहि ॥

आई कहत और इक ग्वाली ❀ सुनहु यशोमति सुतकी चाली ॥
भाज गये मेरे भाजन फोरी ❀ माखन खाय मही महि ढोरी ॥
हाँक देत पैठत घरमाहीं ❀ काहू विधि कर मानत नाहीं ॥
सखासंग कीन्हें इक ठोरी ❀ नाचत फिरत साँकरी खोरी ॥
बाट घाट कोउ चलन न पावै ❀ गारी दै दै सवन बुलावै ॥
गोरस हानि करतहै सिगरौ ❀ कहँ लागि कीजे नित उठि झगरो ॥

घर घर करत फिरत सुत चोरी ❀ ऐसीविधि बसिहै ब्रजकोरी ॥
सुनत गोपिकाकी रिसबानी ❀ कहत श्यामसों नंदकि रानी ॥
तू नहिं मोहिं डरात मुरारी ❀ बकत बकत तोसों पचिहारी ॥
षटरस भरे धरे घरमाहीं ❀ सो तू खात पियत क्यों नाहीं ॥
परघर चोरीको नित जाई ❀ देत उरहनो ग्वालि सदाई ॥
मोको कृपण कहत सब आई ❀ तेरे घर होटहु न अघाई ॥

दोहा—सुनि सुनि लाजनि मरति मैं, तू नहिं मानत बात ॥
अब तोहिं राखों बांधिकै, जानी तेरी घात ॥

सो०—सुनिरी ग्वालिनि बात, कहेदेत अब तोहिं मैं ॥
जबहीं पावहु घात, मेरी सौं याहे मारियो ॥

अबते मोको बहुत खिजाई ❀ साँटिन मारि करौ पहुनाई ॥
अजहूं मानि कह्यौ करि मेरो ❀ तू घरघर भ्रमति फिरै अनेरो ॥
जननी रिस लखि श्याम डराने ❀ अब नहिं जैहौं धाम बिराने ॥
यों कहि निकरि गये हरिद्वारे ❀ खेलत सखन संग गलियारे ॥
तबहीं ग्वालि और इकआई ❀ सो यशुमति सों कहत सुनाई ॥
नंदमहरिसुत भलो पठायो ❀ ब्रजघर बीथि निसोर मचायो ॥
मारि भजत काहूके लरिका ❀ खोलतहैं काहूको फरका ॥
काहूको दधि माखन खाई ❀ काहूके घर करत भँडाई ॥
गारी देत सकुच नहिं मानै ❀ गैल चलत हठ झगरो ठानै ॥
कहा कहा हरिके गुणनि बतैयै ❀ तो सों उरहन देत लजैयै ॥
कछु टोना सों पढिकरि आई ❀ जोइ भावत सोइ करत कन्हाई ॥
पीताम्बर ओढत शिरनाई ❀ अंचल दै दै मुरि मुसुकाई ॥

दोहा—तेरीसौं तोसों कहति, मैं सकुचाति यह बा १ ॥

१ सूम ।

तेरो मुख हरि लखतिहीं, सकुचि तनिक ह्वै जात ॥
सो०—नेक दिखावहु आँखि, नाहिं अब ते यह ढँग भले ॥
कब लगि कहिये राखि, करत अचकरी श्याम अति ॥

॥ अथ दावरीबंधनलीला ॥

यशुमति सुनि हरिके गुणगाथा ❀ रिस करि उठी साँटि लै हाथा ॥
कहति जो ऐसी रिसमें पाऊं ❀ तो हरिकी गति तुमहिं दिखाऊं ॥
कैसे हाल करौं हरि केरे ❀ लागे तातें आज है मेरे ॥
छांडों नहीं आज बिन मारे ❀ भये श्याम अब बहुत दुलारे ॥
इहि अन्तर आई इक गोपी ❀ बांह गहे हरिकी मुख कोपी ॥
भलो महरि सूधो सुत जायो ❀ चोली हार खोलि दिखरायो ॥
किन नाहिं सुतको लाड लडायो ❀ कौने नहीं कठिन करि जायो ॥
तेरो कछुक अधिकरी माई ❀ बरजत नाहिं न नेक कन्हाई ॥
यशुमतिहरिको भुज गहि लीन्हो ❀ कहति बहुरि अपनो ढँग कीन्हो
हरुवै साँटिया द्वैक लगाई ❀ आज बांधि मेटौं लँगराई ॥
गहे भुजा सुतकी बिततानी ❀ इत उत रजु[2] खोजत नँदरानी ॥
हरिजननी उर कोप निहारी ❀ मन मन बिहँसत कौतुक कारी ॥
दोहा—अग्नि प्रेरि त्रिभुवन धनी, दियो क्षीर उफनाय ॥
यशुमति लखि तजि हरि भुजा, लगि सँभारन जाय ॥
सो०—इहि विधि भुजा छुडाय, दधि भाजन फोरन लगे ॥
माखन मुंहि लपटाय, गोरस दियो लुढाय सब ॥
रिसमें रिस औरै उपजाई ❀ जानि जननि अभिलाष कन्हाई ॥
देखि यशोमति अतिरिसि पागी ❀ पकरि श्यामकों बाँधन लागी ॥
गर्व जानि नहिं दाम समाई ❀ सब रजु द्वै आंगुरि घटिजाई ॥

१ पिता । २ रस्सी ।

पुनि पुनि यशुमति और मँगावै * हरिके तनु सब ओछी आवै ॥
देखि यशोमति अति रिस बाढी * मन पछितात ग्वालिनी ठाढी ॥
देखि सखी यशुमति बौरानी * हरिको बांधन चहत सयानी ॥
हरिको त्रिभुवनपति नहिं जानै * जिनते सकल कलेश नशानै ॥
अखिल ब्रह्मांड उदरमें जाके * बांधति महिर उदर रजु ताके ॥
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी * इनहूं जिनकी गति नहिं जानी ॥
जलथल जिनकी ज्योति समानी * कही गर्ग सब प्रकट बखानी ॥
मुखमें त्रिभुवन दियो दिखाई * ताहूपर परतीति न आई ॥
तिनहिं देख बांधति नँदरानी * अचरज कथा न जाति बखानी ॥

दोहा–आप बँधावत प्रेम वश, भक्तन छोरत फंद ॥
वदत वेद वाणी विदित, भक्तवछल नँदनंद ॥
सो०–जननिहिं अतिरिस जान, यमला अर्जुन सुरति करि ॥
दीनबंधु भगवान, जनहित गये बँधाय प्रभु ॥

जननीके मनकी रुचि जानी * आप बँधायो शारँगपानी ॥
कहत यशोमति लै कर डोरी * बांधों तोहिं सकै को छोरी ॥
लै लै रजु ऊखलसों जोरै * हरि लखि वदन नैन जल ढोरै ॥
यह सुनि ब्रजयुवती उठि धाईं * देखि श्यामको सब मुसुकाईं ॥
कहति इन्हें कोऊ मत छोरो * बहुरि श्याम अब माखन चोरो ॥
ऊखल बांधि यशोमति डोरी * मारनको सँटिया करतोरी ॥
सांटी देखि ग्वालि पछितानी * विकल भई मन अति अकुलानी ॥
कहति यशोमतिसों सब गोपी * ऐसी कहा पूतपै कोपी ॥
कहा भयो जो बालक पाहीं * ढरक गई मथनी महि माहीं ॥
घर घर गोकुल दई दिवारी * तू बांधत हरिकी भुजकारी ॥

१ बावरी ह्वैगईहै । २ पैरमें रस्सी । ३ इच्छा ।

ऐसी तोहिं बूझियत नाहीं * गोरस लगि बांधत सुत बाहीं ॥
चूक परी हमते इहि भोरें * उरहन दियो बकस कर[1]जोरें ॥
दोहा—बार बार जोवत वदन, हुचकिन रोवत श्याम ॥
वज्रहुते तेरो हियो, कठिन अहो नँद वाम ॥
सो०—कित रिस करति अचेत, छोर उदरते दाँवरी ॥
डार कठिन करबेत, लोचन भरि भरि लेत हरि ॥
जाहु चली अपने अपने घर * तुमहिं सबै मिल ढीठ कियो बर॥
बन्धन छोरनको अब आई * मोको मतिबरजो कोउ माई ॥
मोहिं आपने बाबाकी सों * अब न पत्याउँ श्यामको बीसों[2]॥
देखि चुकी मैं इनके ख्याला * उपजे बडे नंदके लाला ॥
मैंदेव[3]न हित पय औटायौ * कोरी मटुकी दही जमायौ ॥
जावन दियो न पूजन पायौ * सो सब फोरि भूमि ढरिकायौ ॥
तिहि घर देव पितर कहु काके * भयो कान्हसों सुत घर जाके ॥
कहत एक सुन यशुमति बौरी * दधि कारण सुत बांधत दौरी ॥
तैं यह सीख कौनपै लीन्ही * इतनी रिस बालकपै कीन्ही ॥
जो अतिही अचकरो कन्हाई * तऊ कोखको जायो माई ॥
नेक देखि धौं हरिहि निहारी * कैसे डरत लकुटि डरभारी ॥
शोभित सजल सांवरे लोचन * नीर[4]जदल अति ओस भरेजन॥
दोहा—नमित वदन सूखत अधर, कछुक सकुचमें रोस॥
सांझ होत जिमि बात वश, शोभित पंकज[5] कोस ॥
सो०—निरखि नयन सुख देत, हरिपै सर्वसवारिये ॥
प्रकटे नंदनिकेत, को जानै किहि पुण्य वश ॥
एक कहति जो आयसु पाऊं * तौ माखन निज घरते लाऊं ॥

१ हाथ जोरे । २ बीसो विश्वे नहींपत्याउँ । ३ देवतोंकेलिये । ४ जैसे कमलकेपत्रनपर ओसकी बूंद । ५ जैसे सायंकालमें पवनकेमारे कमल नवि जात्यहै ।

जिहि कारण कीनी रिस हरिते * अजहुं न डारत सँटिया करते॥
देखि डरात तोहिं हरि कैसे * सकुचत जलजशीत भय जैसे॥
वेगि छोरि बंधनपट त्यागी * ले लगाय उर श्याम सभागी ॥
कहन लगीं अब बढ़ि बढ़ि बानी * माखन मोहिं देतिहैं आनी ॥
मानों मेरे घर कछु नाहीं * तब नहिं उरहन देत लजाहीं ॥
ढोटा मेरो तुमहिं बँधायो * उरहन दै दै मूड़ पिरायो ॥
रिसहीमें मोको गहि दीनो[1] * सबको ज्ञान जानि मैं लीनो ॥
बोली अपर[2] एक ब्रजनारी * देखहु यशुमति सुतहि निहारी॥
मुख छबि कोटि चन्द्र बलिहारी * यह हैं साह कि चोर विहारी ॥
नाहिन तरुण किशोर कन्हाई * कितहिं करत इनसों रिस माई॥
कहा भयो जो उरहन आने * बालक हरि अबहीं कहा जाने ॥

दोहा—श्रमित त्रासित जो त्रासते, चपल सजल[3] दृग कोर ॥
मनहुँ मीन वंसी विधे, करत सलिल झकझोर ॥

सो०—लैउठाय उरधारि, छोरि उदरते दांवरी ॥
प्राण दीजिये वारि, मोहन मदन गोपालपर ॥

तेरो कठिन हियो है माई * कहत एक ग्वालिनि समुझाई॥
ऐसो माखन दधि बहि जाई * बांधे कमलनयन जेहिलाई ॥
जो मूरति शिव ध्यान लगावें * सपनेहुँ सुर नहिं देखन पावें ॥
निगमनहूं खोजत नहिं पाई * सोतैं दे करतार नचाई ॥
याही ते तू गर्व भुलाई * घर बैठे तेरे निधि आई ॥
काहूको सुत रोवत देषी * लेत धाय उरलाय विशेषी ॥
अब यह कित सीखी चतुराई * निज सुतसों इतनी कठिनाई ॥
कहत एक देखहु नँदनारी * कबके ऊखल बँधे मुरारी ॥

१ पकरकर मोको दीनो। २ दूसरी। ३ जैसे वंसी (लोहकी बनी मच्छी पकरनेके काटेमें) फँसकर जलमछरी तड़फे है ऐसे श्रम और त्रासतें सजल चपल कृष्णके नेत्रकोर प्रतीतहोयहैं।

गयो क्षुधाते मुख कुम्हिलाई * अतिकोमल तनु श्याम कन्हाई॥
भई बेर बीते युग[1] यामा * हरिके निकट आय गई धामा॥
तू लागी गृहकारज माहीं * है निरदयी दया कछु नाहीं॥
घरको काज इनहुँते प्यारो * यशुमति नेक न हृदय बिचारो॥

दोहा–जलजलोल[2][3] लोचन सजल, भये त्रास ते दीन॥
चितवत तेरे बदन तन, मन मोहन आधीन॥

सो०–केतिक गोरस हान, जाको तोरत कान तू॥
वारि दीजिये प्रान, रोम रोम पर श्यामके॥

हरिको देखि सखा इक धायो * तिन हलधरसों[4] जाय सुनायो॥
अहो राम तुम्हरो लघु भैया * बांध्यो आज यशोदा मैया॥
काहूके लरिकहिं हरि मार्‍यो * यशुमति पै तिन जाय पुकार्‍यो॥
तबते हरिहि बांधि बैठायो * छोडति नाहिंन सबहिं छुडायो॥
सो हम तुमहिं जनावन आये * हलधर सुनत तुरत उठि धाये॥
माता डरतन अतिहि त्रसाये * हरिहि देखि लोचन भरि आये॥
कहत भले दोउ भुजा बँधाये * ऊखलसों बांधे हरि पाये॥
मैं बरजे कइ बार कन्हाई * आजहु छोडि देहु लँगराई॥
दोउ कर जोरि कहतरी मैया * काहेको बांध्यो मेरो भैया॥
श्यामहिं छोडि बांधि बरमोहीं * और कहा कहिये अब तोहीं॥
मेरो प्राण अधार कन्हाई * ताकी भुज मोहिं बँधी दिखाई॥
कौन काज गोरस धन धामा * जिहि कारण बांध्यो घनश्यामा॥

दोहा–छुवतो और जो तन कोऊ, आज देखतो सोय॥
तू जननी कछु वश नहीं, जो कछु करे सो होय॥

सो०–तेरे वश हरि आहिं, को जानै किहि पुण्यते॥

१ दोप्रहर । २ कमल । ३ चंचल । ४ दाऊजीसों

तू पहिचानत नाहिं, गोरस हित बांधत हरिहि ॥
सुनहु बात हलधर तुम मेरी ❀ करन देहु सेवा इनकेरी ॥
माखन खात परायो जाई ❀ प्रगटत चोरी नाम कन्हाई ॥
तुमहीं कहो कमी किहि केरी ❀ नवविधिकी मेरे घरढेरी ॥
हौं हारी बरजत दिनराता ❀ मानत नाहिंन मेरी बाता ॥
कहा करौं हरि अतिहि खिझाई ❀ भयो बहुतही ढीठ कन्हाई ॥
मेरो कह्यो तनक नहिं मानै ❀ नित उठि टेक आपनी ठानै ॥
भोर होत उरहन लै आवै ❀ ब्रजयुवतिनते मोहिं लजावै ॥
जहँतहँ धूम मचावत जाई ❀ घर नहिं रहते क्षणक कन्हाई ॥
तुमहूं दोष देत हो मोहीं ❀ कान्हरते प्यारो दधितोहीं ॥
तोहिं तजि और कहो किहि मैया ❀ औरको मेरो मान रखैया ॥
तेरी सौं जननी सुन मोहीं ❀ उरहन देत झूंठ सब तोहीं ॥
है सब ब्रजको श्याम पियारो ❀ श्याम सकल ब्रजको रखवारो ॥
दोहा—दधि माखन पय कान्हको, कान्हाकी सब गाय ॥
मोहूंको बल कान्हको, तू नहिं जानत माय ॥
सो०—बलदाऊकी बात, सुनि हँसिकै यशुमति कह्यो ॥
तुम यकमति[1] दोउ भ्रात, जानत मैं तुम्हरे चरित ॥
हरिहि देखि हलधर मुसकाने ❀ यह तुम गति तुम विनको जाने ॥
को तुम छोरत बांधन हारा ❀ तुम छोरत बांधत संसारा ॥
कारन करन करत मन माने ❀ अति हित यशुमति हाथ बिकाने ॥
असुर सँहारन जन दुखमोचन ❀ कमलापति[2] राजीवविलोचन[3] ॥
भक्तनके वश रहत सदाई ❀ ताहीते कछुओ न बसाई ॥
हरि यमलार्जुन तरुतन हेरे ❀ मनमें कहत दास ये मेरे ॥

१ एकबुद्धि । २ लक्ष्मीपति ३ । कमलनेत्र

अबहीं आजु इन्हैं उद्धारौं * दुसह शाप मुनिवरको टारौं ॥
इनहींके हित भुजा बँधाई * परसि विटप अब देहुं गिराई ॥
दारुण दुख इनको सब टारौं * इहि मिसिकरि बंधन निरवारौं ॥
भक्तवछल हरि दीनदयाला * करुणासिन्धु अगाध कृपाला ॥
भक्ताधीन वेद यश गावैं * पावन पतितनाम कहवावैं ॥
भक्तहेतु नाना तनुधारी * करत चरित भक्तन सुखकारी ॥

दोहा—ब्रजबासी प्रभु भक्ति हित, आप बँधायो दाम ॥
ताही दिन ते प्रकटहै, दामोदर सो नाम ॥

सो०—नँदनंदन घनश्याम, जनरंजन भंजन बिपति ॥
मेटति जिनको नाम, पाप शाप त्रय ताप दुख ॥

यशुदा बाहेर छांडि कन्हाई * लगी मथन दधि भीतर जाई ॥
कहत वचन रसरिस लपटाने * खात फिरत दधि धाम बिराने ॥
षटरस छांडि आपने धामा * चोरी प्रकट करतहैं श्यामा ॥
मारि भजत ब्रजलरिकन जाई * जहां तहां ब्रज धूम मचाई ॥
रहौ तुमहुं हलधर चुपसाधी * इनकी मेटन देहु उपाधी ॥
ऊखलसों बांधे वनवारी * कहत यशोमति सों ब्रजनारी ॥
कान्हहुं ते तोहिं माखन प्यारो * अरी देखि तरसत हरिबारो ॥
डारिदेहि मथनी नँदरानी * ह्वैहैं हरिकी भुजा[3] पिरानी ॥
दूध दही हरिपै सब वारौं * मोहन जीवन प्राण हमारौं ॥
हरुवे बोलि उठी नँदरानी * जाहु सबै तुम युवति सयानी ॥
मैं खीझत लरिकहि गुण काजे * तुम कित झुरत दई बिनकाजे ॥
लरिकहि त्रास दिखावत रहिये * अबहींते अवगुण नहिं चहिये ॥

दोहा—युवति चलीं बिरुझाय[4] सब, कहत यशोदाहिं पोच ॥

१ नारद । २ वृक्ष । ३ बांह दूखआई होयगी । ४ खिसयानी ह्वैकै ।

मूरखसों कहिये कहा, करत प्रेम वश शोच ॥
सो०—कहा करैं बलिजाउँ, कहत चलीं सब श्यामसों ॥
धरत यशोदहिनाउँ, अति कठोर मानत नहीं ॥
तबहिं श्यामसुंदर यह ठानी ❀ युवती धाम गईं सब जानी ॥
गृहकारज जननी अटकायो ❀ आप यमलअर्जुन पहँ आयो॥
परसत पात उठे झहराई ❀ परे शब्द आघात सुहाई ॥
उखरे मूल सहित अरराई ❀ दिये धरणि दोउ तरुन गिराई॥
भये चकित सब ब्रजके बासी ❀ रहे सकुचि तन सुधि बुधि नासी॥
कोइ भूमि कोइ तकत अकासा ❀ रहे घड़ी इक लौं जकि त्रासा ॥
याही अन्तर युगल[1] कुमारा ❀ प्रगटे धनद तनय[2] सुकुमारा ॥
नारद शाप पाय दोउ भाई ❀ भये हुते ब्रजमें तरुआई ॥
हरिके परशत निजगति पाई ❀ भये पुनीत मिटी जडताई ॥
तिन्हैं कृपालु अनुग्रह कीन्हों ❀ चारि भुजाकरि दरशन दीन्हों॥
देखि दरश अति पुलक शरीरा ❀ परे चरण दोउ बंधु अधीरा ॥
बारबार पदरज शिरधारी ❀ जोरि पाणि अस्तुति अनुसारी॥
छं०—अनुसारि अस्तुति युगुल प्रेमानँद मगनसन्मुखखरे ॥
जै जै भगत हित सगुण सुंदर देह धरि ध्यावत हरे ॥
जो रूप निगमन नेति गायो बुद्धि मन वाणी परे ॥
सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उरधरे ॥
धनि धन्य ब्रज धन गोप गोपी गाय दधि माखनमही॥
धन्य गोविंद बाल लीला करत माखन चोरही ॥
धनि धनि उरहनो देत नित उठि धन्य अनख बढ़ावही॥
धन्य जननी बाँधि राखति जाहि बेद न पावही ॥

१ दो बालक। २ कुबेरके पुत्र।

धन्य सो तरुजासुकोरेंजु श्याम भुजन बँधाइयौ ॥
धन्यसो तृण जासु ऊखल धनि सुजन गाढ़ि लाइयौ ॥
धन्य ऋषि धनि शाप दीन्ह्यो अतिअनुग्रहसो कियो॥
जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दरशन दियो ॥
अब कृपा करि देहु बर प्रभु चरणपंकज[2] मति रहै ॥
जहां जन्महिं कर्म्म वश तहँ एक तुम्हरी रति रहै ॥
दीनबन्धु कृपालु सुन्दर श्याम श्रीब्रजनाथजू ॥
राखिये निज शरण अब प्रभु करिय हमहिं सनाथजू ॥
दोहा—बार बार पद नाय शिर, विनती प्रभुहिं सुनाय ॥
प्रेम मगन निरखत वदन, हर्षसहित दोउ भाय ॥
सो०—साधु साधु कहि नाम, भक्ति दान तिनको दियो ॥
बिदाकिये घनश्याम, हर्षिगये निज पुर[3]युगुल ॥
वृक्ष शब्द सुनि यशुमति धाई ❀ देखे अजिर[4] न कुँवर कन्हाई ॥
परे बिटप महि लखि अकुलानी ❀ श्याम दबे तरुतर यह जानी ॥
आरत महरि पुकारन लागी ❀ बांधे हरि मैं परम अभागी ॥
सुनत शोर ब्रज जन उठि धाये ❀ नन्दद्वार सब आतुर आये ॥
देखि गिरे तरु मनहिं डराने ❀ ढूंढ़त श्यामहिं अतिहि सकाने॥
बारबार सब करहिं विचारा ❀ गिरे कौन विधि विटप अपारा॥
देखे दहुँतर बीच कन्हाई ❀ रहे त्रसित ऊखल लपटाई ॥
धाय लिये भुज छोरि उठाई ❀ ब्रज युवतिन उर लीन्हे लाई ॥
कहत सबै नन्दहि बडभागी ❀ बचे श्याम कहुँ चोट न लागी ॥
कबहूँ बांधत मारत कबहूँ ❀ देत दोष यशुमतिको सबहूं ॥
नयननीर भरि दौरि यशोदा ❀ लियो लगाय कंठ भरि गोदा॥

१ रस्सी । २ चरणकमल । ३ अलकापुरी । ४ आंगन

जरहु सोरिस जिन तुमको बाँध्यो ❀ जरहु हाथ जिन जेवरि साँध्यो

दोहा—नन्द मोहिं कहिहैं कहा, देखत तरुवर आय ॥
कुशल रहो अब भ्रात दोउ, मैं लै मरहुं बलाय ॥

सो०—श्याम रहे लपटाय, अति सभीत उर मातुके[१] ॥
बार बार बलि जाय, यशुमति मन पछितात अति ॥

ब्रज युवती लै लै उर लावैं ❀ निरखि वदन तनमन सुख पावैं ॥
मुख चूमत यह कहि पछिताहीं ❀ कैसे बचे अगम तरु[२]माहीं ॥
बडी आयु हरिकी है माई ❀ जहां तहां विधि होत सहाई ॥
प्रथम पूतना मारन आई ❀ पय पीवत वह तहां नशाई ॥
तृणावर्त्त लै गयो उडाई ❀ आपहि गिर्‌यो शिलापर आई ॥
कागासुर आवत नहिं जान्यो ❀ सुनी कहति जिय लेत परान्यो ॥
शकटासुर पलना ढिग आयो ❀ को जानै तिहि काहि गिरायो ॥
कौन कौन करवर विधि टारी ❀ ऊखलसों बाँधे महतारी ॥
तहँतेउँ उबर्‌यो आजु कन्हाई ❀ ऊपर वृक्ष परे भहराई ॥
सबहिन पेलि करत मनभाई ❀ पुण्य नन्दके बच्यो कन्हाई ॥
भुजपर बन्धन चिह्न निहारी ❀ कहत यशोमति सों ब्रजनारी ॥
ये गुण यशुमति अहहिं तिहारे ❀ सकुची महरि निरखि हरि प्यारे ॥

दोहा—तबहिं नन्द आये घरहिं, दोउ तरु गिरे निहारि ॥
श्याम चपल बाँध सुने, देत महरिको गारि ॥

सो०—बाँधति बिन काज, मेरे हरि बारे सुतहिं ॥
कुशल करि विधि आज, शोचत नँद लखि तरुवरन ॥

तबहिं तात कहि धाय कन्हाई ❀ लिये नंद कनियां सुखपाई ॥
चूमि बदन उरसों लपटाये ❀ प्रेम पुलकि लोचन भरि आये ॥

१ मैयाकी छातीसे । २ दृढवृक्ष

मेरे लाल मैं तुम पर वारी ❀ काहेको बांधे महतारी ॥
कैसे गिरे वृक्ष अति भारी ❀ चली नाहिं कहुँ तनक बयारी॥
बार बार शोचत नँदराई ❀ पूछत तैं कछु लख्यो कन्हाई ॥
श्याम कही मैं कछू न जानो ❀ ऊखल ढिग मैं रह्यो छिपानो ॥
कहत नन्द हरि बदन निहारी ❀ बडी आज विधि करवर टारी॥
बहुत दान हरि हाथ दिवायो ❀ द्विज चरणन लै लै सुत नायो॥
देहिं अशीश विप्र सुखमानी ❀ भये प्रसन्न नन्द सुनि बानी ॥
तबहीं श्याम जननि पहँ आये ❀ हर्षि यशोमति कण्ठ लगाये ॥
भूखो भयो आज मेरो बारो ❀ काको मुखधौं प्रात निहारो ॥
लाई उरहन ग्वालिनि भिनहीं ❀ यह सब कियो पसारो तिनहीं॥

दोहा—पहिले रोहिणि सों कह्यो, तुरत करो जिवनार ॥
ग्वाल बाल सब बोलिकै, बैठ नन्दकुमार ॥
सो०—वेगि लाउरी मात, भूख लगी मोको बहुत ॥
आज न खायों प्रात, सुनत वचन यशुमति हँसी ॥

रोहिणि चितै रही यशुमतितन ❀ शिरधुनि २ पछितानि मनहिंमन
परसहु हरिहि विलम्बन लावहु ❀ भूखे हरि किन बेगि जिमावहु॥
बहु व्यंजन बहु भाँति रसोई ❀ कहँ लगि बरणि कहै कबिकोई ॥
परसत जाति यशोमति मैया ❀ जेंवत श्याम सखा बल भैया॥
जो जो व्यंजन यशुमति राखे ❀ तनक तनक मोहन सब चाखे॥
श्यामकही अब मात अघानो ❀ अब मोको शीतल जल आनो ॥
अँचवन करि अँचय दोउ भैया ❀ अति सुखपायो लखि दोउ मैया
सहित सुगंधि पान कर लीन्हे ❀ बाँटि सकल ग्वालनको दीन्हे॥
भ्राता सहित आप हरि खाये ❀ अधिकै अधर अरुण तू आये ॥

१ देख्यो । २ पेट भरगयो

निरखत बदन मुकुर[1]के माहीं * ब्रजबासी जन बलि बलि जाहीं ॥
भोजन करत भयो सुख जेतो * बरणि सकै नहिं शारद तेतो ॥
जो सुख नन्द भवनके माहीं * सो सुख तीनि लोकमें नाहीं ॥

दोहा—सुख यशुमति अरु नंदको, को करि सकै बखान ॥
सकल सुखनकी खानि हरि, जहाँ रहे सुख मान ॥

सो०—कोटि[2]कोटि ब्रह्मण्ड, इकइक रोम विराटतन ॥
सो अपने भुजदंड, लिये उछंग यशुमति हरषि ॥

यशुमति कहत श्यामसों प्यारे * सुनहु बात मेरि नन्ददुलारे ॥
अपनेही आँगन तुम खेलो * मेरो कह्यो कबहुं नहिं पेलो ॥
कहत चोर ब्रज बनिता[3] तोहीं * सुनि सुनि लाज लगत है मोहीं ॥
ताते रोष होत मन मेरे * तब बाँधत मारत जिमि चेरे ॥
हलधर आज कहत है मोहीं * झूठहिं नाम धरत सब तोहीं ॥
ग्वालिनि हँसत कहत इक ऐसे * चोरी नाम फिरत अब कैसे ॥
चोर कहत युवती सब मोको * झूठहिं आय कहत सब तोको ॥
मैं खेलो बाहर जहँ जाई * चितै रहत सब मेरी घांई[4] ॥
अपने घर सब मोहिं बुलावैं * मुख चूमति गहि गहि उरलावैं[5] ॥
माखनमोहिं निजकरन खवावैं * हाथ जोरिकै विधिहि मनावैं ॥
देखत जबहिं लेत मोहिं टेरी * मैं नहिं जाउँ सौंह मोहिं तेरी ॥
यशुमति निरखि बदन मुसकानी * उनकी बात सबै मैं जानी ॥

॥ अथ आँखमिचौनीलीला ॥

दोहा—टेरि लेहु सब निज सखन, अरु भैया बलराम ॥
सुख दीजे मेरे दृगन, चलहु आपने धाम ॥

सो०—यह सुनि हर्ष बढाय, बोलि लिये हलधर सखा ॥

१ बट्टा (दर्पण)। २ जाके एकएक रोममें किरोड़ ब्रह्मांड हैं ताको यशोदा गोदीमें लियेहैं। ३ ब्रजकी गोपी। ४ मेरी ओर। ५ छातीसों लगावे।

खेलहिं आँख मुँदाय, कहत सबनसों मुदित हरि ॥
हलधर कह्यो आँखको मूँदे ❁ हरषि कह्यो हरिजननि यशोदे[1]॥
हरि अपनी तब आँख मुदाई ❁ जहाँ तहाँ सब रहे लुकाई[2] ॥
कान लागि जननी समुझाये ❁ हैं घरमें बलराम छिपाये ॥
बलदाऊको आवन दैहौं ❁ श्री दामाको चोर बनैहौं ॥
इत उत में सब बालक आई ❁ यशुमति गात छुवन सब धाई॥
श्याम छुवनके कारण धावत ❁ अति अकुलात छुवन नहिं पावत
धाये सुबल छुवत तब श्यामा ❁ गह्यो जाय तिरछे श्रीदामा ॥
कहत नन्दकी सोंह जनाये ❁ जननी ढिग भुजगहि लै आये॥
हँसि हँसि कहत सखासों रामा ❁ अब तो चोर भयो श्रीदामा॥
हर्षित कहत यशोदा मैया ❁ जीत्यो है मेरो पूत कन्हैया ॥
जाकी माया जगत खिलावै ❁ ब्रह्मा जाको अंत न पावै ॥
ताहि यशोदा खेल खिलावै ❁ बालक जिमि बचनन फुसलावै॥

दोहा—जाके उर त्रैलोक[3] थल, पंच तत्त्व चौखान ॥
सो बालक है खेलई, यशुदाके गृह आन ॥

सो०—दुर्लभ जप तप योग, ज्योति रूप जग धाम हरि ॥
धन्य सो ब्रजके लोग, बालक करि मानत तिन्हैं ॥

कहत भई यशुमति महतारी ❁ भई रात अब सुनहु मुरारी ॥
करहु बियारू अब कछु प्यारे ❁ बहुरि खेलिये होत सवारे ॥
मोको तो कछु रुचि नहिं आवै ❁ तू कहि भोजन कहा बतावै ॥
बेसन मिली कनककी[4] पूरी ❁ कोमल उज्ज्वल है अति रूरी॥
अबहीं ताती तुरत बनाई ❁ रोहिणि तुम्हरे हेत कन्हाई ॥
निबुआ आम करील[5] सँधानो ❁ जासों तुम अतिही रुचि मानो॥

१ यशोदा मैया मीचेगी । २ दुबकगए । ३ स्वेदज, उद्भिज, अंडज और जरायुज । ४ गेहूंकी । ५ टैंटीको अचार ।

बलके संग बियारू कीजे ❀ मेरे नयननको सुख दीजे ॥
तनक तनक धरि कंचन थारी ❀ लै आई रोहिणी महतारी ॥
श्याम राम मिलि करत बियारी ❀ अति अनंद दोउ जननि निहारी॥
खात खात दोऊ अलसाने ❀ मुख जँभात जननी पहिचाने॥
जल अँचवाय कमल मुख धोये ❀ बांह पकरि पलका पौढाये ॥
सोवत राम श्याम दोउ भैया ❀ हरुवे[1] पाँय पलोटति मैया ॥

दोहा—सोये श्याम सुजान हरि, सुखसों बीती रात ॥
बहुरि कलेऊके लिये, जननि जगाये प्रात ॥
सो०—दियो कलेऊ प्रात, माखन प्यारे श्यामको ॥
मुदित निरखि दिन रात, यशुमति हरिके चरितको ॥

॥ अथ वृन्दावनगमनलीला ॥

महर महरि यह मनहिं विचारी ❀ गोकुल होत उपद्रव भारी ॥
जब ते जन्म भयो हरि केरो ❀ नितहिं होत उतपात घनेरो ॥
आकस्मात[2] गिरे तरु भारी ❀ बच्यो बडनके पुण्य मुरारी ॥
ताते अब तजिये यह गाऊं ❀ बसिये चलि कहुं उत्तम ठाऊं ॥
नन्दराय तब गोप बुलाये ❀ समाचार ये सबनि सुनाये ॥
सबहिनके मनमें यह आई ❀ वसिये अनत कहूं अब जाई ॥
नितहिं उपाधि नई जिहि ठाहीं ❀ बसिबो भलो तहांको नाहीं॥
नंद कही मैं मनहिं विचारी ❀ है इकठाउँ बहुत सुखकारी ॥
वृन्दावन गोवर्द्धन पासा ❀ तहँ सबको सब भांति सुवासा॥
तहां गोपगण सब सुखपैहैं ❀ बनमें गोधन वृन्द चरैहैं ॥
यह बिचार सबके मन भायो ❀ चलिबेको शुभ दिवस धरायो॥
वृन्दावन सब चले गुवाला ❀ पांच बरषके मदन गोपाला ॥

१ धीरे धीरे। २ विना कारण।

दोहा—शकट[1] सौंज सब साजिके, गोधन दिये हँकाय ॥
चले गोप गोपी हरषि, वृन्दावन समुदाय ॥
सो०—निरखि अनूपम[2] ठाम, शकट दिये सब छोरिके ॥
सबके मन वश श्याम, बसे सकल वृन्दा विपिन ॥

बसे सकल वृन्दावन माहीं ❀ अति आनंद गोप मनमाहीं ॥
गाय वच्छ सबही सुखपायो ❀ चरत निकट तृण हरित सुहायो॥
हलधर धेनु चरावन जाहीं ❀ मन मोहन लखि मनहिं सिहाहीं॥
प्रात चले सब गाय चरावन ❀ जननी सों बोले मन भावन ॥
मैं हूं गाय चरावन जैं हौं ❀ बडो भयो अब नाहिं डरैहौं ॥
संग सखा अरु हलधर भैया ❀ इनके संग चरैहौं गैया ॥
बालन संग यमुन तट माहीं ❀ खेलहिंगे सब वट[3]की छाहीं ॥
अपनी रुचि मनके फल खैहों ❀ तेरी सों यमुना नहिं न्हैहों ॥
ऐसी अबहिं कहौ जिनबारे ❀ देखहु अपनी भांति ललारे ॥
तनक पायँ चलिहौ किहि भांती ❀ गैयन आवत ह्वैहै राती ॥
प्रात जात गैयन ले चारन ❀ आवत सांझ लखौ सब ग्वालन॥
तुम्हरो कमल वदन मुरझैहै ❀ रेंगत[4] घाम मांझ दुखपैहै ॥

दोहा—तेरी सों मोहिं घाम नहिं, लागत भूख ननेक ॥
कह्यो कान्ह मानत नहीं, करै आपनी टेक ॥
सो०—चले चरावन गाय, ग्वाल बाल बलदेव बन ॥
हेरी टेर सुनाय, गोधन करि आगे लिये ॥

हरी टेर सुनत लरिकनकी ❀ गये दौरि हरि अति रुचि मनकी॥
इत उत यशुमति जबहिं निहारी ❀ दृष्टि न परे श्याम बनवारी ॥
बनतन जान्यो जात कन्हाई ❀ टेरति यशुमति पीछे धाई ॥

१ छकड़ा। २ परम अद्भुत। ३ वंशीवट। ४ डोलत।

जात चले गैयन सँग धावत * बलदाऊ को टेरि बुलावत ॥
पीछे जननी आवत जानी * फेरि फेरि चितवत भय मानी॥
हलधर आवत देखि कन्हाई * ठाढे किये सखा समुदाई ॥
पहुँची जननी भये सब ठाढे * रिस करि दोउ भुज पकरे गाढे ॥
बल कहै जान देहु सँग मेरे * बनते ऐहैं आज सबेरे ॥
कह्यो यशोमति बलहि निहारी * देखत रहियो मैं बलिहारी ॥
भ्राता सँग गये बनहिं कन्हाई * यशुमति यहै कहत घर आई ॥
देखो हरि कैसो ढँग लीन्हों * अपनी टेक पर्‍यो सोइ कीन्हों॥
आज जाय देखहु बनमाहीं * कहां परोस धर्‍यो तिहि ठाहीं ॥

दोहा–माखन रोटी और जल, शीतल छाक बनाय ॥
दई वेगही ग्वाल सँग, यशुमति बनहिं पठाय ॥

सो०–चिन्तामणि सुर धेनु[1], पंच सुधारस कल्पतरु ॥
अनुदिन जाके एक, खात छाक सो ग्वाल सँग ॥

वृन्दावन खेलत नँदलाला * भयो हिये आनन्द बिशाला ॥
जहँजहँ ग्वाल गाय संग जाहीं * तहँ तहँ आप फिरत बनमाहीं॥
बलदाऊ सो कहत कन्हाई * नित ल्यावहु मोहिं संग लिवाई॥
आज मरू करि आवन पायो * जननी तुम्हरे कहे पठायो ॥
कालिह कौनिविधि करी बन ऐहों * यशुमति पै आवन नहिं पैहों॥
सोवत बोलि लीजियो मोकों * सौंहैं नंदबबाकी तोकों ॥
पुनि पुनि विनय करत सुखदाई * बलसों सखन समेत सुनाई॥
संध्या समय निकट जब आई * घर कहँ चलौ कह्यो बलभाई॥
गैयन घेरि करी यकठौरी * चले सदन सब गावत गौरी ॥
आवत बनते धेनु चराई * ग्वालन मध्य श्याम सुखदाई॥

१ घरकों

जिहि जिहि भांति ग्वाल मुख भाखैं ❀ सुनि सुनि मनमोहन उर राखैं
नान्हैं सुर[1] पुनि आपुनि गावैं ❀ तारी देत हँसत सुख पावैं ॥
दोहा—मोर मुकुट बनमाल उर, पीताम्बर पहराय ॥
गोपदरज छबि बदन पर, आवत गाय चराय ॥
सो०—छुटी अलकछबि देत, जलज[2] वदनपर मधुप[3] जनु ॥
आवत सखन समेत, नंदसुवन ब्रज प्राण धनु ॥
देखत नन्द यशोदा ठाढे ❀ रोहिणि अरु ब्रजजन सुखबाढे ॥
गायन संग श्याम जब आये ❀ लैवलाय जननी उर लाये ॥
आज गयो हरि गाय चरावन ❀ मैं बलि जाउँ तनकसे पावन ॥
मो कारण कछु बनते लाये ❀ तुमको मिलि मैं अति सुखपाये ॥
आचर सों सब अंग अंग झारे ❀ बदन पोंछि मुख चूमि दुलारे ॥
खाउ कछुक जो भावे मोहन ❀ देरी माखन रोटी सोहन ॥
दिये जिमाय तुरत दोउ भैया ❀ अति आनन्द मगन मन मैया ॥
कहत जननिसों श्रीब्रजनाथा ❀ प्रात नितहि जैहों बलसाथा ॥
मैं अपनी अब गाय चरैहों ❀ तेरे कहे घरहि नहिंरैहों ॥
ग्वाल बाल गायनके माहीं ❀ नेकहु डर लागत मोहिं नाहीं ॥
आज न सोवों नन्द दुहाई ❀ रहिहौं जागत कहत कन्हाई ॥
सब मिलि गाय जरावन जाहीं ❀ मैं क्यों रहौं बैठि घर माहीं ॥
दोहा—सोय रहो अब श्याम तुम, जननी कहै चुचकारि ॥
प्रात जान कहिहों तुम्हें, वनको मैं बलिहारि ॥
सो०—ज्यों त्यों राखे स्वाय, प्रात देन वन जान कहि ॥
जननी दाबत पांय, श्रमित[4] जानि वन गमनके ॥
बहुते दुख हरि सोय गयो है ❀ ज्यों त्यों करि मन बोध लयो है ॥

१ मंदस्वरसों । २ कमलमुखपर जानो । ३ भौंरा । ४ थकेभए

सांझहि ते लाग्यो इहि बातै * जान कहत बन उठि पुनि प्रातै ॥
यह तो संग लागि बलरामहिं * गये लिवाय आज वन श्यामहिं॥
अब तो सोयरह्यो करिऐसे * प्रात विचार करै धौंकेसे ॥
कहत नंद बलके सँगजाई * इतउत आवन दे फिरि धाई ॥
भोर भयो यशुमति कहप्यारे * जागहु मोहन नन्ददुलारे ॥
बीतीनिशि[१] रबि किरण प्रकाशी * शशि[२] मलीन उडगण[३] द्युतिनाशी
सुनहु शब्द बोलत खगमाला * खोलहुअम्बुजनयन[४] बिशाला॥
सुनत श्याम जननीकी बानी * जागि उठे सन्तन सुखदानी ॥
लाई तुरत कलेऊ मैया * माखन रोटी खान कन्हैया ॥
टेरत ग्वाल सखा सब द्वारे * आये तबके होत सकारे ॥
खेलहु ब्रज भीतरही प्यारे * दूरकहूं मतिजाहु ललारे ॥

दोहा—टेरि उठे बलराम तब, आवहु धाय कन्हाय ॥
जात ग्वाल बनको सबै, चलहु चरावन गाय ॥
सो०—श्याम जोरि दोउ हात, जननी सों हाहाकरत ॥
जै हौं ग्वालन साथ, गोचारन वृन्दा विपिन ॥

टेरत मोहिं दाऊरी मैया * जैहौं बनहिं चरावन गैया ॥
बन फल तोरी देत मोहिजाई * आपुन घेरत गैयन धाई ॥
जैहौं अरुग्वालन सँगनाहीं * मोहिं खिझावत वे बनमाहीं ॥
मैं अपने दाऊ सँग रैहौं * देखत वृंदावन सुख पैहौं ॥
आगे दै लावत मगमाहीं * तू क्यों जानदेत मोहिंनाहीं ॥
लीन्हो यशुमति बलहि बुलाई * सुनहु लाल हरिके गुणआई ॥
कहत यशोमति सों बल भैया * जान देहु मोसंग कन्हैया ॥
अपने ढिग ते नेकु नटारौं * जियपरतीत नेक नहिं धारौं ॥

१ रात । २ चंद्र । ३ तारागण । ४ कमलनयन ।

तू काहे डरपति मन माहीं ❀ जानदेत हरिको क्यों नाहीं ॥
हँसी महरि सुनि बल की बानी ❀ जाहु लिवाय कहत नँदरानी ॥
मैं बलिहारी तुम्हरे मुखकी ❀ तुमहूं कहत श्यामके रुखकी॥
अति आनंद भयो हरिधाये ❀ दोऊ संग खरकमें आये ॥
दोहा—धाय धाय भेंटन सखन, उर अति हर्ष बढाय ॥
पठयो मैया मोहि बन, चलहिं चरावन गाय ॥
सो०—कहत सखा सुख पाय, चलहु श्याम देखौ बनहिं ॥
बनमाला पहिराय, करत चित्र बन धातु[1] तन ॥
चले बनहिं सब गाय चरावन ❀ सखा संग सोहत मनभावन ॥
ग्वाल बाल सब कछुक सयान्हे ❀ नंदसुवन तिनमें कछु नान्हे ॥
गाय गोप गोसुत बन जाईं ❀ तिनके मध्य श्याम सुखदाई ॥
हरिसों सखा कहत समझाई ❀ छोडि कहूँ जिन जाहु कन्हाई॥
वृंदावन अति सघन बिशाला ❀ जैहौ भूलि कहूं नँदलाला ॥
सुनत श्याम घन तिनकी बाता ❀ मनमन हँसत कहत जगत्राता॥
तुम्हरो संग न छांडतराई ❀ बनहिं डरात बहुत मैं भाई ॥
जात चले सब हर्ष बढाये ❀ खेलत श्याम संग सुखपाये ॥
कोउगावत कोउ वेणु बजावै ❀ कोउ नाचत कोउ कूदत आवै ॥
देखि देखि हरि अति हर्षाहीं ❀ हँसत सखन सों दै गलबाहीं ॥
भली करी तुम मोको लाये ❀ आज यशोमति हर्ष बढाये॥
इहि विधि गोधन लै सब ग्वाला ❀ यमुना तट पहुँचे नँदलाला ॥
दोहा—दई धेनु बगराय सब, चरन आपने रंग ॥
गाय चरावत नंदसुत, मिलि ग्वालनके संग ॥
सो०—उर मुक्तन[2]की माल, शीश मुकुट कटि पीत पट ॥

१ गेरू (सिलखरीआदि वनधातु) २ छातीपर मोतिनका हार

हाथ लकुटिया लाल, डोलत ग्वालन संग प्रभु ॥

॥ अथ वत्सासुरवधलीला ॥

खेलत श्याम सखनके माहीं ❀ यमुनाके तट तरु[1]की छाहीं ॥
वत्सासुर तिहिं अवसर आयो ❀ पठयो कंस काल नियरायो ॥
वत्स रूप धरि आय समान्यो ❀ कृष्ण ताहि आवतही जान्यो ॥
बल[2] तन चितै कह्यो मुसकाई ❀ तुम याको जानत हौ भाई ॥
यह तो असुर वत्स ह्वै आयो ❀ हमको मारन कंस पठायो ॥
हलधरहू देख्यो धरि ध्याना ❀ कहत सांच तुम श्याम सुजाना ॥
ग्वालनहू सों कहत कन्हाई ❀ बछरा घेरि करो इकठाई ॥
लाये घेरि वत्स सब ग्वाला ❀ वह नाहिं घिरहि चपल विकराला ॥
बारबार हरि ओर निहारै ❀ दांव घात मन माहिं विचारै ॥
तब हरि कह्यो याहि मैं ल्यावत ❀ तुम तो याको छुवन न पावत ॥
हाथ लकुटिया लै हरि धाये ❀ वत्सासुरके सन्मुख आये ॥
हरिको जबहिं जुदो करि पायो ❀ असुर कोप करि मारन आयो ॥

छंद–धायो असुर करि क्रोध मारन श्यामकेसन्मुख गयो ॥
ह्वै गयो निष्पाप तबहीं योग्य सुरपुरके भयो ॥
धायके हरिचपरिताको पकरि पाँय फिराइयो ॥
पटक्यो धरणि तनु असुर प्रगट्यो फेरि श्वास न आइयो ॥

दोहा–वत्सासुर सुर[3]पुर गयो, अधम असुर तनु त्याग ॥
सुर हर्षत वर्षत सुमन, गगन[4] सहित अनुराग ॥

सो०–धाय परे सब ग्वाल, चकित कृष्ण बल देखिकै ॥
धन्य धन्य नँदलाल, कहत परम आनंदभरे ॥

असुर देखि सब अचरज पायो ❀ कहत हमैं हरि आज बचायो ॥

१ वृक्ष । २ दाऊजी । ३ स्वर्ग । ४ आकाश

बछरा करि हम जान्यो याही ❋ यहतो असुर भयानक आही ॥
आज सबनि धरिके यह खातो ❋ और कौन पै जात निपातो ॥
हरषि हरषि हरिको उर लायो ❋ असुर निकन्दन नाम सुनायो ॥
कहत ग्वाल धनि धन्य कन्हाई ❋ धन्य धन्य ब्रज प्रगटे आई ॥
यह ऐसो तुम अति सुकुमारा ❋ किहि विधि भुजन फिराय पछारा
सबहीके देखत पलमाहीं ❋ मार्‌यो असुर डरे तुम नाहीं ॥
अबलौं हम न तुमहिं पहिचान्यों ❋ हौ तुम बडे सबनते जान्यों ॥
कोउ वनमाल आनि पहिरावैं ❋ कोउ वन धातु रगरि तनुलावैं ॥
कोउ कुण्डल शिर मुकुट सँवारैं ❋ अलिकावलिकोउ तिलक सुधारैं
जात भुजनपर कोउ बलिहारैं ❋ तनु देखत कोउ वदन निहारैं॥
वनफल तोरि धरत कोउ आगे ❋ कहत खाउ मीठे अति लागे ॥

दोहा—इहि विधि हरिको पूजिके, ग्वाल बाल हरषाय ॥
साँझ निकट आवत चले, घरको धेनु चराय ॥

सो०—परम मुदित सब ग्वाल, असुर मारि आवत घरहिं ॥
गावैं शब्द रसाल, ब्रजबासी प्रभुके गुणन ॥

सखन मध्य सोहत नँदनंदन ❋ जलद श्यामतनु चित्रित चंदन॥
मोर मुकुट पट पीत सुहावन ❋ इंद्र धनुष दामिनिहि लजावन॥
मुक्तमाल वनमाल विराजै ❋ बक[१] शुक[२] अवलि[३] मनहुँ छबिछाजै॥
हाथ लकुट कल कुण्डल कानन ❋ कोटि काम छबि शोभित आनन[४]
कुटिल अलक भ्रुव नैन विशाला ❋ गोपदरज कन द्युति छबिजाला
बल मोहन वनतेवनि आवैं ❋ निरखि निरखि ब्रजजन सुखपावैं॥
सखन सहित हरि धामहिं आये ❋ हरषि यशोमति कण्ठ लगाये॥
कहत ग्वाल सुनु यशुमति मैया ❋ है तेरो रणबीर कन्हैया ॥

१ बगला। २ तोता। ३ पंक्ति। ४ मुख।

वत्सरूप एक दानव वनमें ❀ आय समान्यो बछरागनमें ॥
हम ताको कछु जानि न पायो ❀ सो वह हरिको मारन धायो ॥
क्षणहीं माहिं ताहि हरि मान्यो ❀ हम देखत महिपटकि पछान्यो ॥
यह कोउ बडो पूत तैं जायो ❀ भाग हमारे ब्रजमें आयो ॥
दोहा—सुनि ग्वालनके वचन ते, वत्सासुर को घात ॥
यशुमति सबके पांय परि, बार बार पछितात ॥
सो०—भयो महरि उर त्रास, बचे आज हरि असुरते ॥
मैं न बिगान्यो कासु, भयो सहायक आनि हरि ॥
यशुदा शोच करत तू जाये ❀ यह तो ख्याल कान्हके भाये ॥
परबत तुल्य विकट तनु जाहीं ❀ कियो प्राण बिन क्षणमें ताही ॥
तुम्हरी रक्षाको यह नाहीं ❀ हम सबको रक्षक यह आहीं ॥
याके चरणकमल चित लैये ❀ बारबार याकी बलि जैये ॥
ग्वालन यों हरिके गुण गाने ❀ ब्रजजन सब आश्चर्य भुलाने ॥
लीलासागर हरि सुखदानी ❀ मोहे सब नरनारि सुबानी ॥
हँसि जननी सों कहत कन्हाई ❀ देख्यों मैं वृन्दावन जाई ॥
अति रमणीक भूमि द्रुम नीके ❀ कुंज सघन निरखत सुख जीके ॥
अति कोमल तृण हरित सुहाये ❀ यमुनाके तट बच्छ चराये ॥
वनफल मधुर मिष्ट अति नीके ❀ भूख मिटी खाये तिनहींके ॥
सखन संग खेलत वटछाहीं ❀ वनमें मोहिं लगत डर नाहीं ॥
रोहिणि सहित यशोदा माता ❀ मुदित सुनत हरिकी मृदु बाता ॥
दोहा—मोहि लियो मन जननिको, मधुरे वचन सुनाय ॥
बत्सासुरको शोच उर, क्षणमें दियो मिटाय ॥
सो०—लगे दुहन सब गाय, जहँ तहँ हर्षित गोप गण ॥

१ यशोदा ।

गये तहां हरि धाय, गाय दुहन चाहत सिखन ॥

॥ अथ धेनुदुहनकी लीला ॥

धेनु दुहत हरि देखत ग्वालन ❀ कहत मोहिं सिखवो गोपालन ॥
मैं दुहिहौं मोहिं देहु सिखाई ❀ बैठि गये तिनसङ्ग कन्हाई ॥
कैसे गैया थनहिं लगावत ❀ कैसे नोय पगन अटकावत ॥
घुटरुन गहत दोहनी कैसे ❀ मोहिं बताय देउ तुम तैसे ॥
कैसे धार दूधकी होई ❀ देहु दिखाय मोहिं सब कोई ॥
कहत ग्वाल तुम सुनो कन्हाई ❀ भई अवार आज अति भाई ॥
तुमको सिखवैं दुहन सबारे ❀ अबकहुं लगिहै चोट तुम्हारे ॥
श्याम कह्यो सबही समुझाई ❀ भोर दुहौं निजनन्द दुहाई ॥
मेरी सों मोहिं लीजो टेरी ❀ मैं दुहिहौं निज गाय सबेरी ॥
दुष्ट दलन सन्तन सुखदाई ❀ ठाढे गैयन मांझ कन्हाई ॥
आवहु कान्ह सांझकी बेरिया ❀ कहत जननि यह बडी कुबिरिया ॥
लरिकाई कछु छांडत नाहीं ❀ सोवहु लाल आय घर माहीं ॥
दोहा—आये हरि यह सुनतही, जननि लिये अँकवार ॥
लै पौढाये सेजपर, अजिर चांदनी चार ॥
सो०—कहत कहत कछु बात, सोय गये वश नींदके ॥
कहत यशोमति मात, सोय गयो हरि अजिरहीं ॥
दोउ जननी हरुवैके हरिको ❀ सेज सहित लीन्हे भीतरको ॥
बहुत आज हरि सोय गयो है ❀ अतिहि नींदके वशहि भयोहै ॥
नेक न बैठत थिर घर माहीं ❀ खेलनमें मन रहत सदाहीं ॥
रोहिणि कहत देउ किन सोवन ❀ खेलत हारि गयो मनमोहन ॥
माता हरुवै पवन दुरावति ❀ निरखि वदन सुंदर सुखपावति ॥

१ दूहतीबार जो रस्सी बांधतेहैं। २ आंगन। ३ धीरेसे

प्रात जगावत नंदकी रानी ❀ उठहु श्याम सुन्दर सुखदानी ॥
नाहिनइतो सोइयत लाला❀सुनु सुत प्रात समय शुचि[1] काला ॥
उग्योतरणि[2] कुमुदिनि सकुचानी❀घरघरग्वालिनि मथत मथानी
बारबार टेरत सब ग्वाला ❀सांझ कह्यो तुम दुहन गोपाला ॥
होत अबार गाय सब ठाढी ❀ भरि भरि क्षीर भारथनबाढी ॥
वत्सपुकारत आरत ताई ❀ दुहत नाहिं तुम सोंह दिवाई ॥
तुम्हरे लिये ग्वाल सब ठाढे ❀ देखत वाट प्रेम उरबाढे ॥

दोहा—यह सुनतहि तुरतहि उठे, शशि मुख ते पटटार ॥
धेनु दुहन सीखन चले, मोहन नन्दकुमार ॥
सो०—लाउ रोहिणी मात, वेगि तनकसी दोहनी ॥
कह्यो सिखावन तात, आज मोहिं गैया दुहन ॥

रोहिणि तुरत दोहनी लाई ❀ घर घरते देखन सब आई ॥
अटपट आसन बैठि कन्हाई ❀ गोथन[3] कर लीन्हो सुखदाई ॥
धार अनतहीं जात निहारी ❀ हँसे नन्द यशुमति महतारी ॥
चितै चोर चित हरि हँसिदीन्हो❀ब्रजवासी जनबलिबलिकीन्हो
किये यशोमति आनँद भारी ❀ दियो दान विप्रनहिं हँकारी ॥
गावत मङ्गल ब्रजकी नारी ❀दुही गाय सन्तन हितकारी ॥
अति आनंद मगन नँदराई ❀ बैठे प्रमुदित गोप अथाई ॥
लिये गोप सुन्दर घनश्यामहिं❀ब्रजके जीवन जन सुख धामहिं॥
आयो तहाँ एक बनजारो ❀ मूंगा मोती बेचन हारो ॥
तिहिं लखि[4] अटके नंदकुमारा ❀ देहि देहि कहि बारम्बारा ॥
दीरघ[5] मोल कह्यो व्यापारी ❀ रहे ठगे सब गोपनिहारी ॥
करपर राखि रहे हरि मोती ❀ देत नहीं लखि सुन्दर जोती ॥

१ पवित्र । २ सूर्य । ३ गोके थन । ४ देखि । बडो ।

॥ अथ मोतीबोनेकी लीला ॥

दोहा—मुक्ताले हरि घर गये, बये आजिर[1] बलबीर ॥
आल[2] बाल थल रोपिकै, पुनि पुनि सींचत नीर[3] ॥
सो०—हँसत यशोमति मात, कहत करत मोहन कहा ॥
यह नहिं जानत बात, ये करता सब जगतके ॥

भये तुरत शाखा[4] दल तामें ❀ यशुमति अजिर मुक्त फल[5] जामें[6]॥
फूलत फलत न लागी वारा ❀ ब्रह्मादिक नित करत विचारा ॥
सुर नर मुनि कोउ मरम न जानैं ❀ देखि देखि अति अचरज मानैं॥
नन्द भवन हरि मुक्त जमाये ❀ ब्रजवनितन गुहिहार बनाये ॥
ब्रजवासी यह प्रभुकी लीला ❀ सब गुण समरथ सब गुणशीला॥
क्षणमहँ जासु रजायसुमाया ❀ प्रकट करत ब्रह्मांड निकाया॥
ब्रह्मादिक जेहि पार न पावैं ❀ नंद अजिर सो ख्याल बनावैं॥
जाकी महिमा लखै न कोई ❀ निरगुण सगुण धरे वपुसोई ॥
लोक रचै नाशै प्रतिपारैं ❀ सो ग्वाल संग लीला धारैं ॥
शिव विरंचि मुनि ध्यान न आवैं ❀ ताहि यशोमति गोद खिलावैं ॥
अगम अगोचर लीलाधारी ❀ सो वृन्दावन कुंज विहारी॥
बड़े भाग्य सब ब्रजके बासी ❀ जिनके सँग विहरत अविनासी॥

दोहा—धनि धनि ब्रजके नारि नर, धनि यशुदा धनि नँद ॥
विहरत जिनके सदनमें, ब्रह्म सच्चिदानंद ॥
सो०—कहि कहि देवासिहांय, धन्य धन्य ब्रजबाग बन॥
जहां चरावत गाय, सकल सुरन शिर मुकुटमणि ॥

॥ अथ बकासुरवधलीला ॥

प्रात चले उठि गाय चरावन ❀ हलधर सुंदर श्याम सुहावन ॥

१ आंगन । २ थामरी । ३ जल । ४ डाली । ५ मोतीरूप फल । ६ घरमें ।

देखत छबि ब्रज सुन्दरि ठाढ़ी ❀ करत परस्पर आनँद बाढ़ी ॥
देखु सखी ब्रज ते बन जाहीं ❀ बल मोहन ग्वालनके माहीं ॥
रोहिणिसुत छबि गौर सुहाई ❀ यशुमति सुवन श्याम सुखदाई॥
ओढे नील पीतपट सोहैं ❀ सो छबि निरखि वदन मन मोहैं॥
युगल जलद[1] घन दामिनि जानौं ❀ जो रति नाथ परस्पर मानौं ॥
शीश मुकुट कल[2] कुंडल कानन ❀ झलकैं बिम्बकपोलन आनन ॥
सखन मध्य सोहत नँदलाला ❀ मंद हँसनि दृग कमल विशाला ॥
कटि[3] किंकिणि कर लकुट सुहाये ❀ जात चले बन मनहिं चुराये ॥
रहीं थकित लखि सब ब्रजनारी ❀ गये बनहिं विहरत बनवारी ॥
बन बन फिरत चरावत गैया ❀ हलधर श्यामसखाइकठैया ॥
करत विहर विविध बनमाहीं ❀ बाल केलि रस बरणि न जाहीं ॥

दोहा—कबहुं गावत सखन सँग, कबहुँ बजावत बेनु ॥
धौरी धूमरि नामलै, कबहुँ बुलावत धेनु ॥

सो०—कबहुँ नचावत मोर, सुन्दर श्यामलजलदजन ॥
गरज मुरलि घन घोर, बरषत परमानंदतन ॥

खेलत विविध खेल मनभावन ❀ श्रीवृन्दावन परम सुहावन ॥
तृषित जानि गैयन नँदलाला ❀ कह्यो चलहु जन देन गुपाला ॥
लेहु बुलाय सुरभिगण टेरी ❀ सुनत ग्वाल सब लाये घेरी ॥
गोधन वृंद हांकि सब लीन्हो ❀ ग्वालन गमन यमुनतट कीन्हो ॥
तहां बकासुर छलकरि आयो ❀ माया रचित स्वरूप बनायो ॥
एक चोंच भूतल[4] महँ लाई ❀ एकरही आकाश समाई ॥
मग[5]में बैठ्यो वदन पसारी ❀ ग्वालन देखि भयो भय भारी॥
बालक जातहते जे आगे ❀ ताहि देखि सो पाछे भागे ॥

१ बादर । २ सुंदर । ३ कमर । ❀ या सोरठामें बादरकी और कृष्णकी समानता दिखाई है ।
४ पृथ्वी । ५ रस्ता ।

कहत भये सब हरिसों आई ❋ आगे एक बलाय कन्हाई ॥
आवत नितहि ग्वाल इहिठाहीं ❋ ऐसो कबहुं लख्यो हम नाहीं॥
तबहिं कृष्ण ताको पहिचान्यों ❋ यहै बकासुर मैं यह जान्यों॥
पलमें आज याहि मैं मारौं ❋ असुर चोंच धरि वदन बिदारौं॥

दोहा–निडर श्याम आगे भये, चले बकासुर पास ॥
कहत सखा सब श्याम सों, नहिं जीवनकीआस ॥

सो०–अबहूं नहीं डरात, बचे किते उतपातते ॥
चले कहां हरि जात, हम बरजत मानत नहीं ॥

तब हरि कह्यो चलहु तेहि पासा ❋ सब मिलि मारि करहिं बकनाशा
जबहरि संग चले सब ग्वाला ❋ देख्यो[1] जाय बकहि विकराला॥
ताके निकट गये सब जबहीं ❋ लियो लीलि[2] हरिको बक तबहीं॥
जान्यो असुर काज मैं कीन्हों ❋ तबहीं वदन मूंदि कै लीन्ह्यों॥
ग्वाल पुकारत आरत भागे ❋ बलसों आय कहन सब लागे ॥
हम बरजत हठि गये कन्हाई ❋ लीन्हे लीलि असुर बकधाई ॥
हरि चरित्र कछु जानि न जाहीं ❋ उपजी आगि असुर तनुमाहीं ॥
लाग्यो जरन भयो अति व्याकुल ❋ हरिको उगिलदियो अति आकुल
बहुरो पकरनको मुख बायो ❋ चोंच पकरि हरि चीरि बहायो ॥
मरत चिकार असुर अति भारी ❋ व्याकुल भये ग्वाल भय भारी ॥
ग्वालन विकल देखि बलरामा ❋ कहत असुर मार्‍यो घनश्यामा॥
टेरि उठे उत कुँवर कन्हाई ❋ आवहु सखा वृन्द सब धाई ॥

दोहा–बक विदारि हरि सखनको, टेरत आवहु धाय ॥
चोंच फारि मारेउँ असुर, तुमहूं करौ सहाय ॥

सो०–गये सखा सब धाय, सुनत श्यामके वचन वर ॥

१ देख्यो । २ निगलगयो ।

निरखि नयन सुख पाय, पुनि पुनि भेंटत पुलकतन ॥
कहत परस्पर सखा सयाने * ये कोउ ब्रज प्रगटे हम जाने ॥
इन्हें नाहिं कोउ घात करैया * ये हैं असुरनके[1] दलवैया ॥
जब ते इन्हें यशोमति जाये * तबते असुर कितेकउ आये ॥
तृणा पूतना शकटा मारे * तब वे रहे बहुत ही बारे ॥
हम देखत वत्सासुर मार्‍यो * कितक बात यह बका बिदार्‍यो ॥
इनके गुण कछु जानि न जाहीं * हम अपने जिय डरे वृथाहीं ॥
धनि यशुमति जिन इनको जाये * धनि हम इनके सखा कहाये ॥
बकहि मारि सुन्दर घनश्यामा * यमुना तट आये सुखधामा ॥
सुरभीगण[2] सब नीर पियाये * सखन समेत आप प्रभु आये ॥
घसि बन धातु चित्र तन कीन्हो * मोरमुकुट माथे धरि लीन्हो ॥
वनमाला रचि सखन बनाई * प्रेम सहित हरिको पहिराई ॥
वनफल मधुर गोप लै आये * सखन सहित हरि भोग लगाये ॥

दोहा—बल मोहन घरको चले, जानि साँझ की बेर ॥
लीनी गैया घेरि सब, मुरली की धुनि टेर ॥
सो०—चले बजावत बेन, ग्वाल वृन्दके मध्य हरि ॥
अँग अँग छबिको ऐन, ब्रज जन मोहन साँवरो ॥

सुनि मुरली की टेर रसाला * देखन को धाईं ब्रजबाला ॥
कहत परस्पर अति सुख पावत * देखु सखी बनते हरि आवत ॥
नाना रंग सुमनकी[3] माला * श्यामहिये छबि देत विशाला ॥
मोरपक्ष शिर मुकुट विराजै * मधुर मधुर मुख मुरली बाजै ॥
भ्रुकुटी बिकट निकट सुखदाई * तिलक रेख छबि वरणि न जाई ॥
कुण्डल लोल अलक घुंघरारी * निरखु सखी लागत अति प्यारी

१ दैत्यनके मारवेवारे। २ सब गौसमूह। ३ फूलनकी।

नाशानिकट अधर[1] अरुणाई ❀ जनु शुक बिम्बहिं[2] चोंच चलाई ॥
मन्दहँसनि घन दामिनि जैसे ❀ दुरि दुरि प्रगट होत हैं तैसे ॥
तनु घनश्याम कमल दलनैना ❀ बोलत मधुर मनोहर बैना ॥
मुख अरविन्द[3] मन्द सुर गावत ❀ नटवर रूप सखनमनभावत ॥
सब अँग चन्दन खौरि बनाये ❀ गुंजमाल मन लेत चुराये ॥
या मोहन छबि पर वलि जैये ❀ नन्द नँदन देखत सुखपैये ॥

दोहा—ग्वाल बाल गोधन लिये, हरि हलधर दोउ भाय ॥
साँझ समय बनते चले, आये धेनु चराय ॥

सो०—राँभति धाईं गाय, बत्स सुरति कर पय[4] श्रवत ॥
हरषि यशोदा माय, कहति श्याम आवत घरहि

इतनी कहत श्याम घर आये ❀ जननी दौरि हरषि उरलाये ॥
ब्रज लरिका सब तुरतहि धाये ❀ महरि महर पद शीश नवाये ॥
ऐसो पूत धन्य तुम जायो ❀ इनको गुण कछु जात न गायो ॥
आज गये वनगाय चरावन ❀ चले यमुनतट जलहि पियावन ॥
तहां असुर इक खग[5] तनुधारी ❀ रह्यो यमुनतट बदन पसारी ॥
एक चोंच महि सों लपटाई ❀ एक रह्यो आकाश लगाई ॥
हम बरजत पहिले हरि धायो ❀ ताके मुख में जाय समायो ॥
हम सब डरपि भजे बल पासा ❀ अति व्याकुल तनु भयो निरासा ॥
कैसे धौं हरि बाहर आयो ❀ चोंच फारि तेहि मारि गिरायो ॥
सुनत नन्द यशुमति ब्रजनारी ❀ चकित चित्त रहे हरिहि निहारी ॥
यशुदा कहति कहा कोउ जानै ❀ नित प्रति होत आनकी आनै ॥
भयो आज कोउ सुकृत सुहाई ❀ विधिकी गति कछु जानि न जाई

दोहा—जन्म भयो है श्यामको, तबते यहै उपाधि ॥

१ होठनकी ललौंही। २ यहां ब्रजवासी दास उपमा देयहैं कि जैसे तोता लालकदूरीके फलपर चोंच चलावे ऐसे श्रीकृष्णकी नासिका होठनके ऊपर शोभा देयहै। ३ कमल। ४ दूध। ५ बगलाको रूप।

कह्यो सन्यो हमरे यतन, विधि गति अगम अगाधि ॥
सो०–किन धौं करी सहाय, कोजानै भावी प्रबल ॥
को मेरे पछिताय, करी अयानी बूझविन ॥
लै बलाय छतियाँ हरि लाये * प्रेम सलिल[1] लोचन भरिआये॥
मैं बलि जाउँ कहत कछु खाहू * तुम कितगाय चरावन जाहू ॥
नन्द महर सों पिता तुम्हारे * मोसी मात जाय बलिहारे ॥
खेलत खात रहौ अपने घर * दधि माखन पकवान विविधबर॥
निरखिवदनसुनिवचनतुम्हारे * लोचन श्रवण सिरात हमारे ॥
दुष्टदलन भक्तन सुखदानी * बोले मधुर मातु सों बानी ॥
मैया मैं न चरैहौं गैया * अब वन मेरि जात बलैया ॥
मोसों सबै ग्वाल वन जाई * गाय घिरावत हैं बरिआई ॥
दौरत मेरे पाँय पिराहीं * जब मैं बैठि रहौं तरुछांहीं ॥
जो न पत्याय बूझ बल भाई * देहिं आपनी सौंह दिवाई ॥
यह सुनतहि यशुमति रिसियानी * गारि देत ग्वालन दुखमानी ॥
मैं पठवत लरिकहि वन जाई * आवहिं तनिक मनहिं बहलाई ॥
दोहा–जानहिं कहा चरायकै, अबहीं मोहन गाय ॥
अति बारो मेरो सुवन[2], मारत ताहि रिंगाय[3] ॥
सो०–हरि जनके सुखदाय, को जानै हरिके चरित ॥
मधुरे वचन सुनाय, मोहि लियो मन मातको ॥

॥ अथ चकई भवँराखेलनलीला ॥

कछुकखायहरि निशिको[4] सोये * प्रातजगाय जननि मुख धोये ॥
कियो कलेऊ कछु सुखदाई * जननी सों बोले हर्षाई ॥
दे मैया भँवरा चक डोरी * खेलत रहिहौं ब्रजकी खोरी ॥

१ प्रेमके अश्रुपात । २ मेरो पुत्र । ३ डुलाय । ४ रात्रि ।

हर्षि जननी आरे पर भाखे ❀ तुमहि तनये मोल लै राखे ॥
लै आये हरि तुरत निकारी ❀ भये मगन अति रङ्ग निहारी ॥
बार बार हर्षित मुख भाखै ❀ मैया विन अरुको लै राखै ॥
बिहँसि चले फेरत चक डोरी ❀ खेलन सखन संग ब्रज खोरी॥
जैसे आप सखा सब तैसे ❀ सुन्दर कोटि मनोभव जैसे ॥
निरखि २ छबि गोप किशोरी ❀ बार बार डारत तृण तोरी ॥
सबहिन को मन मोहन भावैं ❀ सब ब्रजतिय हरिसों मनलावैं ॥
यह वासना करैं ब्रजबाला ❀ होहिं हमारे पति नँदलाला ॥
हरि अन्तर्य्यामी सब जानैं ❀ सबके मनकी रुचि पहिचानैं ॥

दोहा—चित दै जो हरिको भजै, कोऊ कौनहु भाव ॥
ताको तैसेई सदा, प्रकटत त्रिभुवन राव ॥

सो०—भक्तनके सुखदान, भक्त बछल भगवान हरि ॥
नारि पुरुष नहिं मान, प्रेम भावके वश सदा ॥

गोपिनके यह ध्यान सदाई ❀ नेक न अन्तर होहिं कन्हाई ॥
हरि उनके मनकी रुचि जानी ❀ करहिं बात उनके मनमानी ॥
मारग चलत तिन्हैं हठि रोके ❀ खेलत माँझ जहाँ तहँ टोके ॥
चकई भँवरा डोरि फिरावैं ❀ तिनके भूषण सों अरुझावैं ॥
काहू सों हरि वदन सकोरैं ❀ काहू सों दृग वदन मरोरैं ॥
काहू सों अँखियां मटकावैं ❀ आप हँसैं अरु उन्हैं हँसावैं ॥
युवतिनके मन बसैं कन्हाई ❀ देखे विन इक पल न सुहाई॥
हरिको खेलत मांझ खिझावैं ❀ खट कौरी दै गारी गावैं ॥
गेंद उरोजन माहिं दुरावैं ❀ इहि विधि हरिसों अंग छुआवैं॥
कंचुकि फारि आपुही लेहीं ❀ यशुदहि जाय उरहनो देहीं ॥

१ स्तन । २ आंगी ।

अन्तर भुज गहि हरिहि दुरावैं * कहैं चलो नँदरानि बुलावैं ॥
यशुमति पै तुमको लै जैहैं * कुटिल भौंह किय हम न डरैहैं॥
दोहा—यों ब्रज बनितन नेहवश, आनँद छबि घनरास ॥
रसिक पुरंदर सांवरो, ब्रजमें करत विलास ॥
सो०—अब वरणौं सुखखानि,हरि वृषभानु कुमारिको ॥
प्राण एकही जानि, प्रथम मिलन दोउ देहको ॥

॥ अथ राधाजूके प्रथममिलनकी लीला ॥

खेलन हरि निकसे ब्रजखोरी * मेघश्याम तनु पीत पिछोरी ॥
श्रवणन कुण्डलकी छबि छाजै * मोर पँखन को मुकुट बिराजै ॥
दशन[2] दमक दामिनि[3] द्युतिथोरी * हाथ लिये फेरैं चकडोरी ॥
गये यमुनके तट मनमोहन * नाहीं तहां सखा कोउ गोहन[4] ॥
औचक दृष्टि परी तहँ राधा * प्रेम राशि गुण रूप अगाधा ॥
नयन विशाल भाल दिय रोरी * नील बसन तनुकी छबि गोरी ॥
वेनी पीठ करत झक झोरी * अति छबि पुंज दिनानिकी थोरी॥
संग लरिकिनी आवत देखी * चितै रहे मुख रोक निमेखी ॥
रीझि रहे घनश्याम कन्हाई * अनुपम छबि लखि रहे लुभाई ॥
नयन वयन मिलि परी ठगोरी * बूझत श्याम कौन तैं गोरी ॥
रहत कहाँ काकीहै बेटी * अबलौं नहीं कहूं ब्रजभेटी ॥
काहेको हम ब्रजतन आवैं * खेलत रहत आपने गावैं ॥
दोहा—सुनत रहत श्रवणनसदा, नँदढोटा ब्रज माहिं ॥
घर घरते नित चोरिकै,माखन दधिलै खाहिं ॥
सो०—विहँसि कह्यो घनश्याम, तुम्हरो कहा चुराय हैं ॥
आवहु किन ब्रज धाम, नितहि खेलिये संग मिलि ॥

१ टेढी । २ दांत । ३ बीजुरीकी चमक । ४ संग

रसिक शिरोमणि नागर दोऊ ❀ प्रीति पुरातन जान न कोऊ ॥
ब्रजवासी प्रभु कुंजविहारी ❀ बातन भुरै लई हरिप्यारी ॥
प्रथम सनेह दुहुन मन जान्यो ❀ गुप्त प्रेम शिशुता प्रकटान्यो ॥
कहत श्याम मन कत सकुचावहु ❀ खेलन कबहुँ हमारे आवहु ॥
दूर नहीं कछु सदन हमारो ❀ श्रवणन सुनियत बोल पुकारो ॥
लीजो मोहिं टेरि नँदपोरी ❀ कान्ह नाम मेरो सुनु गोरी ॥
सूधी बहुत देखियत तुमहूं ❀ ताते साथ कीजियत हमहूं ॥
तुम्हें बबा वृषभानु दुहाई ❀ घरी पहर खेलहु इतआई ॥
गैयां गिनन नंद जब जैहें ❀ तिनके संग हमहुँ उतऐहें ॥
जो तुम गाय दुहावन ऐहौ ❀ खरक माँझ तौ मोको पैहौ ॥
रसिक शिरोमणि जान न राई ❀ इमि प्यारी संकेत बुलाई ॥
सुनत गूढ हरिकी मृदुबानी ❀ मनहीं मन प्यारी मुसुकानी ॥

दोहा—गुप्त प्रीति प्रकटी नहीं, दोउ अन ह्रदय छिपाय ॥
मनमोहन प्यारी चली, घरको नयन चलाय[3] ॥

सो०—चली सदन सुकुमारि, मनमें उरझो साँवरो ॥
जानी बडी अबारि, मात त्रास उर आनिकै ॥

कहत सखिन सों चली कुँवरिबर ❀ को जैहै खेलन इनके घर ॥
चलो बेग अपने घर जाहीं ❀ भई अबार यमुनतट माहीं ॥
वचन कहत ऊपर मुख माहीं ❀ ह्रदय प्रेम दुख मन हरिपाहीं ॥
गई भवन वृषभानु कुमारी ❀ जननी[4] कहति कहां हुतिप्यारी ॥
अबलौं कहां अबार लगाई ❀ गैया खरक देख मैं आई ॥
ऐसे कहि मातहिं बहराई ❀ अन्तरगति वश रहे कन्हाई ॥
विरह विकल तनु गृह न सुहाई ❀ सुंदर श्याम मोहनी लाई ॥

१ मोहिलीनी । २ घर । ३ सैन चलाय । ४ कीरति ।

खान पान कछु नेक न भावै ❀ चंचल चित्त पुलकिततु आवै ॥
मात पिताको मानत त्रासा[1] ❀ नयनन हरिदर्शनकी आसा ॥
कहत दोहनी दै मोहिं मैया ❀ जैहौं खरक दुहावन गैया ॥
अहिर दुहत तब गाय हमारी ❀ जब अपनी दुहिलेत सवारी ॥
घरी एक मोहिं लगि तहँ जाई ❀ तूमाति आउ खरक अतुराई ॥

दोहा—लई मात सों दोहनी, चली दुहावन गाय ॥
मन अटक्यो नँदलालसों, गई खरक समुहाय ॥
सो०—मग[2] मग शोचत जाय, कब देखों वह सांवरो ॥
जिन मन लियो चुराय, खरक मिलन मोसों कह्यो ॥

देखे जाय तहां हरि नाहीं ❀ भई चकित प्यारी मन माहीं ॥
कबहूँ इत कबहूं उत डोलै ❀ प्रेम बिकल कछु मुख नहिं बोलै ॥
देखे नन्द सङ्ग हरि आवत ❀ ललकि लगे लोचन सुख पावत ॥
देखी श्याम राधिका ठाढी ❀ लई बुलाय प्रीति अति बाढी ॥
कह्यो महर लखि[3] खेलहु दोऊ ❀ दूरि कहूं मति जैयो कोऊ ॥
सुनि वृषभानु सुता इत आई ❀ अपने साथ खेलाउ कन्हाई ॥
हरि तन रहियो नेक निहारे ❀ कोई कहूं गाय जिनमारे ॥
नन्द बबाकी बात सुनो हरि ❀ जाहु न मोढिगते कतहूंटरि ॥
महर सौंपि हमको तुम दीन्हों ❀ राधे हरिहवाँहगाहि लीन्हों ॥
तुमको कहूं जान नहिं देहौं ❀ जोजैहौतो पकरि लै ऐहौं ॥
मेरी बाहँ छोड़दे राधा ❀ कहत श्याम ऊपर मन साधा ॥
तुम्हरी बाँह न तजौं कन्हाई ❀ महर खीझिहैं हमको आई ॥

दोहा—परम नागरी राधिका, अति नागर ब्रजचन्द ॥
करत आपनी घात दोउ, बँधे प्रेमके फन्द ॥

१ डर। २ रास्तामें। ३ देखिके।

सो०–समुझि पुरातन नेह, ब्रजबिलास हित तनु धरे ॥
चलन चहत वन गेह, युगुल विहारी कुंजके ॥
तबहिं श्याम घन घटा उठाई ❀ गरज मेघ महिचहुँ दिशि छाई॥
पवन झकोर चली झकझोरी ❀ चपला[1] चपल चमक चहुँ ओरी
ह्वैगइ भुमि सकल अँधियारी ❀ तैसिय तरु तमाल[2] द्युतिकारी ॥
डरे देखिकै कुँवर कन्हाई ❀ कह्यो राधिका सों नँदराई ॥
कान्है संगलिये घरजारी ❀ भई अकाश घटा अति भारी॥
लिये बाँहगहि कुँवर कन्हाई ❀ चले युगल बन घर हरषाई ॥
नवल राधिका नवल विहारी ❀ पुलक अंग मन आनँद भारी ॥
नवलनेह नवरँग मन भायो ❀ नवल कुंजबन शुभग सुहायो ॥
नवल सुगन्ध नवल तरु फूले ❀ गुंजत भ्रमर मत्तरस भूले ॥
शुभगयमुन जल पवन झकोरे ❀ उठत श्याम छबि कुंज हिंडोरे ॥
बनज[3] विपुल बहुरंग सुहावन ❀ चारु विचित्र पुलिन अति पावन॥
गये युगल तहँ रासिक रसीले ❀ नागर नवल प्रेम रसगीले ॥
दोहा–विहरत विविध विलास वन, युगल रूपकी रास ॥
गुणगावत मुनि वेद विधि, अहिपति पति[4] कैलास ॥
सो०–अति रहस्य सुखदाय, वनविहार नँदलालको ॥
क्यों सुकहै कवि गाय, वेद भेद पावै नहीं ॥

॥ श्लोक गीतगोविन्द ॥

मेघैर्मेदुरमम्बरंवनभुवःश्यामास्तमालद्रुमैर्नक्तम्भी
रुरयंत्वमेवनदिमंराधेगृहम्प्रापय ॥ इत्थंनन्दनिदेशत
श्चलितयोःप्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामाधवयोर्ज्जयंतियमु-
नाकूलेरहः केलयः ॥ १ ॥

१ बीजुरी । २ श्यामतमालवृक्ष । ३ कमल । ४ शेष और श्रीमहादेवजी ।

चले सदन[1] प्रभु कुंजविहारी ❀ गृह पठई अंकमदै[2] प्यारी ॥
प्यारीकी सारी हरि लीन्ही ❀ पीत पिछौरी प्यारिहि दीन्ही ॥
बादर जहँ तहँ दिये उडाई ❀ आये सदन श्याम सुखदाई ॥
रही यशोमति हरिहि निहारी ❀ ओढे देखि शीशपर सारी ॥
मन धौं कहत कहां यह पाई ❀ पीत पिछौरी कहाँ गँवाई ॥
यशुमति तुरत आँखि पहिचानी ❀ व्रजयुवतिन भुरये यह जानी ॥
पूछत हरिहि बिहँसि नँदरानी ❀ तरुणिनकी सिखई बुधि ठानी ॥
पीत पिछौरी कितहिं बिसारी ❀ यह तौ लाल तियनकी सारी ॥
जानि लई जननी हरि जानी ❀ तब इक बुद्धि तुरत उर आनी ॥
मैं लै गाय गयो यमुनारी ❀ तहँ वह भरति हती पनिहारी ॥
बिडरी गाय भजीं सब नारी ❀ बची बँसुरिया बहुत सवारी ॥
हौंले भजो औरकी सारी ❀ सो लै चादर गई हमारी ॥

दोहा—पीत पिछौरी लैभजी, मैं पहिँचानत वाहि ॥
मैयारी मैं जायकै, घर लै आवत ताहि ॥

सो०—हरि माया को जानि, पीताम्बर ताको कियो ॥
जननि देखायो आनि, कहत लै आयो ताहिसों ॥

राधा गई सदन समुहाई ❀ हाथ दोहनी दूध भराई ॥
परम प्रीति हरि वसन दुरायो ❀ जननी द्वारहिते गुहरायो[3] ॥
औरकी और कहत मुख बानी ❀ जननी दौरि देखि भय मानी ॥
कहत दीठि लागी कहु बारी ❀ उर लगाय पछितात निहारी ॥
बूझत नेह विकल महतारी ❀ कहा भयो राधा तोहिं प्यारी ॥
अबहीं खरक गई तूनीके ❀ आवत कौन व्यथा भइ जीके ॥
इक लरिकिनी संगही मेरे ❀ कारेडसी आय तिहि नेरे ॥

१ घर। २ आलिंगनकरके। ३ पहचानलिये।

मूर्छि परी वह धरणि मझारी ❀ मैं डरपी अपने जिय भारी ॥
श्याम बरन इक ढोटा आयो ❀ कहत सुनो वह नंदको जायो ॥
कछु पढिके उन तुरतहि झारी ❀ जानत नहीं कौनकी बारी ॥
मेरे मन भरि त्रास गयोरी ❀ अब कछु नीको नेक भयोरी ॥
अति प्रवीण वृषभानु दुलारी ❀ यह कहि समुझाई महतारी ॥
दोहा—सुनि जननी राधावचन, उरसों लीन्हीं लाय ॥
कहत टरी करिवर बड़ी, बार बार पछिताय ॥
सो०—एक सुता है तात, पायो देवन द्वारपरि ॥
भई आज कुशलात, बची सर्प्पते लाडिली ॥
खीझी कछुक कुँवरि पै जननी ❀ घर नाहिं रहत फिरत भई हरनी॥
कितनो कहत ताहि मैं हारी ❀ दूरकहूं बाहर जिनजारी ॥
हैं लरिकिनी सबन घरमाहीं ❀ तोसी निडर कहूं कोउ नाहीं ॥
कबहूँ खरिक कबहुँ बन जाई ❀ कबहूँ फिरत यमुनतट धाई ॥
चितै अकाश धरत पग धरनी ❀ बात कहत लागत तोहिं जरनी॥
सात बरषकी भई कुमारी ❀ बहुत महर वृषभानु दुलारी ॥
आज कुशल कुलदेवनकीन्ही ❀ विधि बचाय विषधरते लीन्ही॥
शीतल जल लै तुरत न्हवाई ❀ अङ्ग अँगोछ बसन पहिराई ॥
बारहि बार कहत कछु खारी ❀ अब कहुँ खेलन दूरि न जारी ॥
यह सुनि हँसी मनहि मन प्यारी ❀ हृदय ध्यान हरि कुंजविहारी॥
कहत दूर अब कतहुँ न जैहौं ❀ गाँम घरहि खेलत नित रहिहौं ॥
जिनके गुणन विरंचि भुलाने ❀ तिनके चरित कहा कोउ जाने ॥
दोहा—जनरञ्जन भञ्जन कलुष[3], राधा नन्दकुमार ॥
गुप्त प्रकट लीला करत, ब्रजमें युगुल[4] विहार ॥

१ भय । २ सर्प । ३ पाप । ४ दोनो ।

सो०–देखि अनूपम बाल, मात पिता गुरु जन हारहि ॥
असुर लखत बिकराल, नव किशोर चित चोर तिय ॥
सर्व रूप सब घटके बासी * सब विधि करन सकल सुखरासी ॥
सर्व भाव सब फलके दायक * सर्वोपरि सब गुणके लायक ॥
सर्व आदि सब अन्तर्यामी * सबते पर सकलके स्वामी ॥
माया ब्रह्म कृष्ण अरु राधा * प्रेम प्रीति दोउ परम अगाधा ॥
छबि शृंगार मनहुँ इक जोरी * करत विहार श्याम अरुगोरी ॥
वसे श्याम श्यामा उर माहीं * देखे विन आवत क्षण नाहीं ॥
खेलन मिसु वृषभानु किशोरी * आई नन्द महरिकी पौरी ॥
टेरत मधुर वचन सकुचाई * घर भीतर हैं कुँवर कन्हाई ॥
सुनत श्यामकोकिल समबानी * अति आतुर राधा पहिचानी ॥
मातासों कछु कलह करत धरि * तुरतहिसो बिसराय दियोहरि ॥
तू पहिंचानति इनको मैया * कहत बारही बार कन्हैया ॥
मैं यमुना तट काल्हि भुलान्यों * बांहपकरि मोको इन आन्यों ॥
दोहा–तूसकुचति आवति इहां, मैं दै सोंह बुलाय ॥
अति नागर जननी हृदय, दियो प्रेम उपजाय ॥
सो०–भीतर लेहु बुलाय, कहत मात हरिसों निरखि ॥
चले श्याम सुखदाय, लखि प्यारी आनँद भयो ॥
नैन सैन लखि दोउ सुखपायो * विरह ताप दुख द्वंद्व नशायो ॥
मनहीं मन आनँद अति भारी * भये मगन दोउ रूप निहारी ॥
कहत श्याम राधा किन आवै * तुमको यशुमति माय बुलावै ॥
बाँह पकरि लाये बनवारी * यशुमति बोलि निकट बैठारी ॥
देखि रूप मनमाँझ सिहानी * बूझत नन्द महरकी रानी ॥

१ अद्भुत । २ मानो छबि और शृंगारहीकी जोड़ी है । ३ हृदय ।

ब्रजमें तोहिं न कबहुँ निहारी * कौन गाँव है तेरो प्यारी ॥
को तेरो तात कौन महतारी * कहा नाम तेरो है प्यारी ॥
भूलि गयो है काल्हि कन्हाई * भली करी तू कर गहि ल्याई ॥
धन्यकोखि जिन तोकहँ धारी * धन्य घरी तूजिहि अवतारी ॥
देखि रूप यशुदा अभिलाषी * सबितासों विनती करिभाषी ॥
नयन विशाल वदन शुभ छोटी * भली बनी है सुन्दर जोटी ॥
बार बार बूझत हरषाई * है तू कौन महरकी जाई ॥

दोहा—मैं बेटी वृषभानुकी, तुमको जानत माय ॥
बहुत बार मिलनो भयो, यमुनाके तट आय ॥
सो०—अब मैं लीन्ही जान, वेतो कुलटा[1] हैं बडी ॥
हैं लाँगर[2] वृषभान, गारि देत हँसि नँद घराणि ॥

राधा बोलि उठी इत आई * करी कछू बाबा लँगराई ॥
ऐसो समरथ कबउ न पायो * हँसि यशुमति राधा उरलायो ॥
कहति महरि कीरति हम जोटी * अब कीजत है तेरी चोटी ॥
यशुमति राधा कुँवरि सँवारी * प्रेम सहित बारनि निरवारी ॥
बडे बार कोमल अतिकारे * लै सुमनासुत[4] औंछ सँवारे ॥
माँग पारि वेनी रचि गूथी * मानहुँ सुन्दर छबिकी यूथी ॥
गोरे बदन बिन्दु करि वन्दन * मानो इन्दु मध्य भुवनन्दन ॥
सारी नई सुरंग निकारी * यशुमति अपने हाथ सँवारी ॥
वदन पोंछि अम्बर सो दीन्हो * उर आनन्द निरखि छबि कीन्हो ॥
तिल चावरी बतासे मेवा * कुँवरि गोदभरि विनवति देवा ॥
कह्यो कान्ह सँग खेलहु जाई * यह सुनि कुँवरि मनहिं हरषाई ॥
सुन्दर श्याम सुन्दरी राधा * खेलतदोउछबिसिन्धु अगाधा ॥

१ जन्मालियो । २ छिनार । ३ लगर । ४ फुलेल ।

छं०—छबि सिंधु परम अगाध दोऊ नंद सदन बिराजहीं ॥
लखि रूपकोटिककामरति घनदामिनीद्युति लाजहीं ॥
यशुमति बिलोकति चकित देखति रूप मन आनँदभरी ॥
सोइ भाव[1] देख्यो दुहुनके उर जोइ अभिलाषा करी ॥
दोहा—खेलत दोउ झगरनलगे, भरे परम अहलाद ॥
मानो घन अरु दामिनी[2], करत परस्पर वाद ॥
सो०—अमिय वचन रसमूल, अकथनीयछबि अमितगुण ॥
रही यशोमति भूल, युगुलकिशोर विहार लखि ॥
चली महरि सों कहि सुकुमारी * सदन आपने जानि अवारी ॥
यशुमति निरखि कह्यो हरषाई * खेल्यो करि हरि सँग नित आई ॥
बोलि उठे मोहन सुनराधा * तूकत सकुच करै जियबाधा ॥
मैं बोलत तू आवत नाहीं * जननी सों डरपति मनमाहीं ॥
तोको लखि मैया सुख पावै * देखि कितौ करि छोह बुलावै ॥
सुनि मोहनके वचन सयानी * चितै रही मुखमन मुसकानी ॥
बिहँसि चली वृषभानु दुलारी * हरि मूरति उर टरत नटारी ॥
गई सदन बूझत महतारी * कहांहुती अबलौंरी प्यारी ॥
बेनी गूँथि माँग किन कीन्ही * बेंदी भाल लाल किन दीन्ही ॥
खेलत रही नंदके द्वारी * यशुमति बोलि निकट बैठारी ॥
बूझन नाम लगीपुनि मेरो * बाबाको पूछेउ अरु तेरो ॥
मोहिं चितै पुनि सुतहि निहारी * कछु सवितासों[3] गोदपसारी ॥
दोहा—मेरी शिर वेनी गुही, बेंदी लाल बनाय ॥
पहिराई निज हाथसों, सारी नई मँगाय ॥
सो०—तिल चावरि दै गोद, विधना सों विनती करी ॥

१ स्त्रीपुरुषको भाव । २ जैसे मेघ और बीजरीकी शोभा होयहै । ३ सूर्यनारायणसों ।

उर करिके अति मोद, तोहिं विहँसि गारी दई ॥
विहँसि कह्यो तोको नँदरानी ❀ वह जैसी तैसी हमजानी ॥
तोहि नाम धरि धर्यो बबाको ❀ कह्यो धूत वृषभानु सदाको ॥
तबमैं कह्यो ठग्यो कब तुमहीं ❀ हँसिलपटानि लगी तबहमहीं ॥
सुनि कीरति राधाकी बातें ❀ सरल स्वभाव भरी शिशुताते ॥
कहत ज्वाब तैं नीको दीन्हो ❀ बेटी दाँव आपनो लीन्हो ॥
जो कछु मोहिं कह्यो नँद घरणी ❀ सो सबहै उनही की करणी ॥
हँसि हँसि कीरति कहत सुभाये ❀ मनमें अति आनंद बढाये ॥
फेरि फेरि यशुदाकी बातैं ❀ बूझत है जननी राधातैं ॥
सुनि सुनि बरसाने की नारी ❀ गावत यशुमति को हितगारी ॥
सुनि बातैं कीरति मुसकानी ❀ नँदरानीके जियकी जानी ॥
मेरी सुता विमल चपलासी[2] ❀ वेहरि मेघ श्याम छबिरासी ॥
बाढ्यो उर आनंद हुलासी ❀ कीरति गई समुझि पति पासी ॥
छंद—समुझि पतिके पास कीरति गई अति आनँदभरी ॥
प्रीति रीति जनाय हित सों बात सब परघट करी ॥
भयो अति उत्साह दंपति हरषि मन आनँद भरे ॥
नित्य दूलह श्याम श्यामा वेद गुण गावत खरे ॥
दोहा—युगल किशोर स्वरूप वर, वृन्दाबन रसखान ॥
नव दुलहिन दूलह सदा, राधाश्याम सुजान ॥
सो०—दूलह दुलहिन चार, मांडव वृन्दा विपिनके ॥
गावत नित्य विहार, शेष महेश गणेश विधि ॥
कहत यशोमति सों हरि प्यारे ❀ जहँतहँ रहत खिलौना डारे ॥
राधा जिन लै जाय चुराई ❀ आवत सांझ सकार सदाई ॥

१ ठग । २ वीजरीसी । ३ ।

चितै रहत मुरलीकी घाहीं ❀ मेरो प्राण बसत इहि माहीं ॥
तेरे भाये नेक न माता ❀ राखु उठाय मान मों बाता ॥
बलहूको पतियाय न राई ❀ राखु खिलौना सबहिं छिपाई ॥
कहत जननि हँसि लालन मेरे ❀ कोले जाय खेलौना तेरे ॥
नेक सुनत ताको जो पाऊं ❀ वाको ब्रजते बास नशाऊं[1] ॥
बिन देखे तू काको कहिहै ❀ सो कहु कैसेके प्रगटैहै ॥
आवतही राधा लै जैहै ❀ फिरतू पाछेते पछितैहै ॥
अजहूं राखु उठाय सबारी ❀ माँगेते पुनि दैहै गारी ॥
जननी हरिकी बतियां भोरी ❀ श्रवण सुनत रुचि होत न थोरी ॥
टेव आपने सुतकी जानै ❀ बिरझाने क्योंहूं नहिं मानै ॥

दोहा—सैंतति है हरिके हरषि, महरि खिलौना जान ॥
भौंरा चकई मुरलिका, गेंद बटा चौगान ॥
सो०—यशुमति सुखकी रास, नंद भवन भूषणपरम ॥
ब्रजमें करत बिलास, ब्रजबासी जन जाहिं बलि ॥

कहत श्यामसों यशुमति मैया ❀ पियहु दूध कछु लेहुं बलैया ॥
आज सबार दुही मैं गैया ❀ सोई दूध प्याव मोहिं मैया ॥
और दूध रुचि मोहिं न आवै ❀ जो तू कोटि यतन करि प्यावै ॥
जननी तबहिं सौंह करि ल्याई ❀ यह धौरीको दूध कन्हाई ॥
तुमते और कौन मोहिं प्यारो ❀ औट धर्यो तुम्हरे हित न्यारो ॥
तातो जानि वदन नहिं ल्यावै ❀ फूंकि फूंकि जननी पय[2] प्यावै ॥
पय पीवत मोहन अलसाये ❀ सुन्दरसेज जननि पौढाये ॥
प्रात जगावत नन्दकिरानी ❀ उठहु लाडिले शारँगपानी ॥
भोर भयो जागहु मेरे प्यारे ❀ ठाढे ग्वाल बाल सब द्वारे ॥

१ निकासदेऊं । २ दूध ।

हरहुताप मुख कमल दिखाई ❋ करौ कलेऊ मिलि दोउ भाई ॥
सदमाखन दधि रैनि[1]जमायो ❋ माँगिलेहु अरु जो मन भायो ॥
सखा वृन्द सब लेहु बुलाई ❋ उठहुलाल जननी बलिजाई ॥
दोहा—तब हँसि चितये सेजते, उठे श्याम सुखदान ॥
यशुमति जल झारी लिये, मुख धोयो निजपान ॥
सो०—बोलि उठे बलराम, उठे सबारे आज हरि ॥
हरषि मिले घनश्याम, दाऊजू कहि भ्रातसों ॥
द्वारे सों सब सखन बुलायो ❋ देखि वदन सबहिन सुख पायो ॥
सखन सहित सुन्दर सुखदाई ❋ कियो कलेऊ कछु दोउ भाई ॥
गैयन लै वन चले गुवाला ❋ संग चले मोहन नँदलाला ॥
टेर सुनत बालक सब धाये ❋ घर घरके बछरनलै आये ॥
सखा कहत सब सुनहु कन्हैया ❋ चलहु आज वृन्दावन भैया ॥
यमुना तट सब बच्छ चरैहैं ❋ वंशीवट खेलत सुख पैहैं ॥
भली कही हँसि कह्यो गोपाला ❋ चले सकल वृन्दावन ग्वाला ॥
कोउटेरतकोउ घेरलै आवैं ❋ कोउसुरभीगण जोर चलावैं ॥
कोउ शृंगी[2] कोउ वेणु बजावैं ❋ कोउ परस्पर होरी गावैं ॥
हेरीटेर सुनत मनमोहन ❋ कहत मोहिं सिखवहु निज गोहन ॥
हरि ग्वालन सँग टेर उठाई ❋ हँसे सकल पूरी नहिं आई ॥
कहतश्यामअबकेफिरिलीजो ❋ अबके जाय तबै हँसिदीजो ॥
दोहा—गावत खेलत हँसत सब, सखा वृन्द गोसाथ ॥
पहुँचे वृन्दाबन सघन, वृन्दावनके नाथ ॥
सो०—फिरत चरावत धेन, दीनबंधु दुष्टनदलन ॥
कृष्ण कमल दल नैन, सबै अंग सुन्दर सुखद ॥

१ रातिका जमाया । २ सींग ।

॥ अथ अघासुरवधलीला ॥

तहां अघासुर वनमें आयो * कंस राज करि कोप पठायो ॥
ताके एक बहिन है भैया * मारे प्रथमहिं कुँवर कन्हैया ॥
एक पूतना जो ब्रज आई * बत्सासुर अरु बक दोउ भाई ॥
तिनको बैर असुर उर धारी * कियो गर्व मनमें अति भारी ॥
आज राजको कारज कीजे * और बैर भाइनको लीजे ॥
गिरि समान अजगर[1]तनु धारी * पर्यो असुर मग[2] बदन पसारी ॥
बन घन नदी रची मुख माहीं * मायाकृत पहिचानत नाहीं ॥
वाही मग निकसे नँदलाला * गाय बच्छ लीन्हे सब ग्वाला ॥
हरि अंतर्य्यामी जिय जानी * कपट रूप यह लखि अभिमानी ॥
याको आज तुरत संहारों * असुर मारि भूभार उतारों ॥
ग्वालन अहि[3] पर्वत करि जान्यो * तासु बदन गिरि कंदर मान्यो ॥
देखि सुहावन तृण हरियाई * गाय बच्छ बैठे सब धाई ॥
दोहा—गाय बच्छ ग्वालन सहित, सब मुख गये समाय ॥
कहत परस्पर आज वन, सुरभी चरहिं अघाय ॥
सो०—सब मुख गये समाय, असुर सकोर्‌यो वदन तब ॥
अंधकार गयो छाय, मानों घन घेरो निशा ॥
अति अकुलाय उठे तहँ ग्वाला * गाय बच्छ सब विकल विहाला
कहत परे धों हम कहँ आई * त्राहि त्राहि घनश्याम कन्हाई ॥
सबके प्राण गये इहि बारा * तुमबिन कौन उबारन हारा ॥
श्रवण सुनत प्रभु आरत[4] बानी * भये दुखित चिन्ता उर आनी ॥
दीनबंधु भक्तन सुखदाई * पैठे आप अघा मुख आई ॥
अघा असुर उर अति हरषाई * लियो ओंठसों ओंठ लगाई ॥

१ अजगर-सर्प । २ मार्गमें । ३ सर्प । ४ दुःखितवाणी ।

विद्याधर मुनिवर गंधर्वा ❁ अति भय विकल मगन सुर सर्वा ॥
तबहिं कृष्ण मन बुद्धि उपाई ❁ अविगत गति भक्तन सुखदाई ॥
मुखते देह दुगुण विस्तारी ❁ रुँधी श्वास भौत्रास देवारी ॥
सक्यो नहीं तब असुर सँहारी ❁ कियो शब्द आघात पुकारी ॥
फूटि गये शिर दशन दुवारी ❁ निकसी प्राण ज्योति उजियारी ॥
सो वह ज्योति स्वर्ग्गको धाई ❁ बहुरि आय हरि मांझ समाई ॥

दोहा—वाही मग अघ वदनते, निकसे गोकुलराय ॥
कहत सखन आवहु निकसि, मैं करि लई सहाय ॥

सो०—अतिहिसकाने ग्वाल, गाय वच्छव्याकुल सकल ॥
मिट्यो तिमिर तिहि काल, जहँ तहँ हर्षे वचन सुनि ॥

वच्छ सहित बाहर सब आये ❁ हरिको देखि परम सुख पाये ॥
हम अज्ञान वृथा भय भाई ❁ श्याम हमारे साथ सहाई ॥
धन्यकाह्न धनिधनि पितु माता ❁ जिन जायो सुतको ब्रजत्राता ॥
गिरिसम असुर सर्प्प तनुधारी ❁ ताहि हन्यो तुमहो असुरारी ॥
कहत काह्न तुम करी सहाई ❁ तब मार्‍यो मैं असुर अन्याई ॥
जो तुम मेरे संग न होते ❁ तौ यह मार्‍यो जात न मोते ॥
देखि अघासुर वध सुर ज्ञानी ❁ वर्षि सुमन[3] कहि जै जै बानी ॥
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा ❁ अति आनँद गुण गावत सर्वा ॥
अघा असुरकी करत बडाई ❁ हरि मधि जाकी ज्योति समाई ॥
करत अनेक यत्न मुनि ग्रामा ❁ अंतकाल दुर्लभ हरिनामा ॥
सोहरि अंतकाल जगपावन ❁ बसे आप अघमुख दुखदावन ॥
इहि सम और कौनके भागा ❁ कहत देव सब अति अनुरागा[4] ॥

दोहा—जै जै जै प्रभु जगत हित, जगत्राता जगदीश ॥

१ दैत्य । २ कृष्ण । ३ फूल । ४ प्रेम ।

जाको मारन हूं प्रगट, तारन विश्वा बीश ॥
सो०—हरषि सुमन बरषाय, जय जय धुनि नभ[1] करत सुर[2] ॥
गाय ग्वाल सुख पाय, अति आनँद निरखत हरिहि ॥
तबहिं सखन सों बिहँसि कृपाला ❀ बोले करुणासिंधु गोपाला ॥
चलहु सकल बंशीवट छाहीं ❀ आई है है छाक तहांहीं ॥
भोजन करिये सब मिलिजाई ❀ बछरा हांकि लेहु अगुवाई ॥
हर्षि चले तहँते बलबीरा ❀ आये सब बंशीवटतीरा ॥
बंशीबट अति सुभग सुहावन ❀ और चहूं दिशि बहु द्रुम[3] पावन ॥
चरत बच्छ सब वनके माहीं ❀ बैठे आय श्याम वटछाहीं ॥
आस पास गोपनके बालक ❀ मध्य श्याम सुंदर जगपालक ॥
मोर मुकुट कल कुण्डल कानन ❀ कोटि काम छबि मोहन आनन ॥
गेरुकादि चित्रित तनु श्यामा ❀ पीतबसन वन मालललामा[4] ॥
बहुविशाल[5] लकुटीकर लीन्हें ❀ गुंजनके आभूषण कीन्हें ॥
सखा वृन्द सब सुन्दर सोहैं ❀ निरखत रूप मदन मन मोहैं ॥
प्रेम मगन मन परम हुलासा ❀ करत परस्पर हास विलासा ॥
दोहा—तहां छाक घर घरनते, आई भरि भरि भार ॥
यशुमति पठये कान्हको, व्यंजन बहुत प्रकार ॥
सो०—छाक पठाई मात, हरषि कहत हरि सखनसों ॥
दधिलवनी बहुभांत, सब मिलि भोजन कीजिये ॥
बन भोजन विधि करत कन्हाई ❀ छाक सबै इकठावँ रखाई ॥
जलते पुरइन पात मँगायो ❀ दोना बहु पलाशके लायो ॥
कछु फल वृन्दावनके नीके ❀ लिये मँगाय भावते जीके ॥
बैठे मंडल जोरि गोपाला ❀ मध्य श्याम सुंदर नँदलाला ॥

१ आकाश । २ देवता । ३ वृक्ष । ४ सुन्दर । ५ बहुतसुघर ।

भांति भांति व्यंजन रस पागे * परसि धरे सबहिनके आगे ॥
कछुकहथेरिन पर धरि लीन्हो, शाक खोलि अँगुरिन बिच कीन्हो
मुरली मुकुट कांख तर लीने * भोजन करन लगे रस भीने ॥
मधु मंगल पर सैन्य सुदामा * सुबल सुखमना अरु श्रीदामा ॥
अपर अनेक गोप सुत लीने * जेंवत सब मिलि श्याम प्रबीने ॥
लेत परस्पर कौर छुडाई * कबहुं कितनको देत कन्हाई ॥
कबहूं काहू देन बुलावैं * इहाँकि ताहि अपने मुखनावैं ॥
मीठे खाटे स्वाद बखानैं * हास बिलास करत सुखसानैं ॥

दोहा—देखत सुरगण सिद्ध मुनि, चढ़े विमान अकाश ॥
लखि कौतुक चकित सबै, गये कमलभव[1] पास ॥

सो०—कह्यो ब्रह्मसों जाय, कहत जाहि बर ब्रह्म तुम ॥
सो ग्वालन सँग खाय, छोरि छोरि करते कवर ॥

॥ अथ ब्रह्माके मोहकी लीला ॥

हरि माया मोहे सब प्रानी * कह ब्रह्मा कह सुर मुनि ज्ञानी ॥
सुनि विरंचि सुरगणकी बानी * भयो मोह उरमें यह आनी ॥
गोकुल जन्म कौन यह आयो * मैं कछु वाको भेव न पायो ॥
परचौले देखौं प्रभुताई * बाल बच्छ हरि ल्यावों जाई ॥
जो सर्वज्ञ ईश भगवाना * लैहैं तुरत मँगाय सुजाना ॥
यह विचार विधिमन ठहरायो * चल्यो तुरत वृन्दाबन आयो ॥
देखि सरित[2] वनमें अतिपावन * पुहुप[3] लता द्रुम परम सुहावन ॥
अति रमणीक कदम चहुँपासा * वंशीबट मधि सुखद निवासा ॥
गोप मण्डली मण्डन मोहन * भोजन करत सखन सँग गोहन ॥
देखि विरंचि चकित भ्रम भारी * बछरा हरि लीन्हे बनझारी ॥

१ ब्रम्हा । २ सरोवर । ३ फूल ।

हरि अन्तर्य्यामी सब जानी * विधिके मनकी रुचि पहिचानी ॥
तब पठये द्वै ग्वाल कन्हाई * लावहु वत्स घेरि सब जाई ॥
दोहा—ग्वाल सकल वन ढूंढिके, फिरि आये हरि पाहिं ॥
कहत बच्छगे दूरि कहुँ, खोज पाइयत नाहिं ॥
सो०—तब हँसि कह्यो कन्हाय, तुम सब यहँ बैठे रहो ॥
मैं धौं देखौं जाय, चले आप बहराय तब ॥
जबगे दूर बनहीं जनत्राता * तबहीं बालक हरे विधाता ॥
प्रभुलीलाकी गम कछु नाहीं * गर्वित गयो लोक निजपाहीं ॥
निजमाया सों करि मति भोरी * राखे बाल बच्छ इकठोरी ॥
गुणसागर नागर नँदनन्दन * बंशीबट आये जगबन्दन ॥
दीनबन्धु भक्तन हितकारी * यह अपने मन मांझ विचारी ॥
बाल बच्छ जो ब्रज नहिं जैहैं * मात पिता इनके दुख पैहैं ॥
ताते रूप सबनको धारों * या विधि तिनको दुःख निवारों ॥
बाल बच्छ विधि लै गये जेते * भये श्याम तब आपुन तेते ॥
वैसोइ रूप वैसगुणशीला * वैसिय बुद्धि पराक्रम लीला ॥
रङ्ग रेख जैसो जिहि माहीं * अंग चिह्न अंतर कछु नाहीं ॥
बोलन हँसन चलन चतुराई * हेरन टेरन फेरन राई ॥
भूषण बसन लकुटकर जैसे * भये श्माम तब आपुन तैसे ॥
दोहा—मारन उद्धारन यदपि, हैं समर्थ भगवान ॥
तदपि जान निज दास विधि, करी तासुकी कान ॥
सो०—अपनो करि विधि जान, अनजानत ढीठो करी ॥
ताते कीन्हे आन, मन भायो विधिको कियो ॥
कह्यो श्याम सब सखन बुलाई * लावहु घेरि वत्स सब जाई ॥

१ ब्रह्म । २ बछरा । ३ ब्रह्मलोक ।

ब्रजको चलहु सांझ नियराई ❀ हर्षि चले बालक समुदाई ॥
चहूंपास सब सखा सुहाये ❀ मध्य श्याम बछरन अगुवाये ॥
वेणु विशाल रसाल बजावत ❀ अपने अपने रँग सब गावत ॥
राँभति गाय बच्छ हित लागीं ❀ देखत ब्रज युवती अनुरागीं ॥
मोर मुकुट कुंडल बनमाला ❀ हँसन मनोहर नयन विशाला ॥
गोपदरज मुखपर छबिछाई ❀ मनहुँ चंदकन अमिय निकाई॥
ब्रज वनिता सब तन मन वारत ❀ निरखि रूप भेंटत चित वारत॥
पहुंचे ब्रजहिं श्यामसुंदर वर ❀ गये बच्छ बालक निज निजघर
गोसुत ग्वाल बाल हर्षाई ❀ लीन्हे तात मात उरलाई ॥
परम प्रीति करि भोजन दीन्हों ❀ कृष्ण चरित काहू नहिं चीन्हों॥
यशुमति कहत सुतहि मिलि प्यारे ❀ बनाहिरातकत करत ललारे॥

दोहा—मैं सबेर घरको चल्यो, सखा करत सब रात ॥
देखि अगम बनमें डर्यो, वे डरपावत जात ॥

सो०—बारबार पछिताय, लै बलाय यशुमति कहत ॥
ल्यावहिं गाय चराय, काल्हि जायँ वेई सबै ॥

यह सुनिकैहँसि कहत कन्हाई ❀ काल्हि चरावन जात बलाई॥
लागी भूख बहुत मोहिं हेरी ❀ भोजनको तुरतहिं कछु देरी ॥
सुनत तुरत माखन लै आई ❀ तब लौं खाहु जननि बलि जाई
है जल तप्त घामको प्यारे ❀ तेलपरस तन न्हाहु ललारे ॥
जाते बनको श्रम मिटि जाई ❀ भोजन करहु बहुरि दोउ भाई॥
तब जननी गहि बांह न्हवाये ❀ जेवनको बलराम बुलाये॥
अति रुचिसों जेंवतदोउ भाई ❀ परम प्रीति परसतहैं माई ॥
जेइँ उठे अचमन तब कीन्हों ❀ बीरा दुहुँन रोहिणी दीन्हों ॥

१ नगीच आय पहुची । ❀ जैसें चंद्रके ऊपर अमृतकी बूंद हो याप्रकार कृष्णके मुखारविंद पर गोरज शोभा देयहै । २ तेलगायके ।

जानि उनींदे सेज बिछाई ※ जननी पौढाये दोउ भाई ॥
श्याम राम सोवत दोउ भैया ※सुख पावत निरखत दोउ मैया॥
अधम रह्यो विधि गर्व नवायो※ ब्रज बासिन कछु भेद न पायो ॥
बाल वत्स हरि नये उपाये ※ सब जानत वेईहैं आये ॥
दोहा—बाल वत्स नव कृत तिन्हैं, ब्रज बनिता अरु धेन ॥
पूरब प्रीति हुते अधिक, करत रहत उर चैन ॥
सो०—ब्रज मंगल भगवान, ब्रह्म सच्चिदानंद प्रभु ॥
भक्तनके सुखदान, लगे देन सुख घरन घर ॥
तब विरंचिके मन यह आई ※ ब्रजके लोगन देखौं जाई ॥
ह्वैहैं करत विलाप कलापा ※ बिन बच्छन गैयन सन्तापा ॥
आय बिरंचि तुरत तहँ देख्यो ※ घरही घर सब कौतुक पेख्यो ॥
जहँ तहँ दुहत गाय पशुपालक※खेलत निज निज घर सबबालक॥
देखि विरंचि चकित मनमाहीं ※ हैं यह ब्रज कै धौं वहनाहीं ॥
मैं बिधना सब सृष्टि उपाई ※ यह रचना धौं किनहिं बनाई ॥
कैधौंहौं यहि भ्रमहि भुलाना※हैं हरि अबिनाशी नहिं जाना ॥
अन्तर्य्यामी जानत सबहीं ※ बालबच्छ धौं ल्याये तबहीं ॥
अति संभ्रम विधिज्ञान भुलायो※गयो फेरि निजलोकहिधायो।
देखे वत्स बाल जहँ राखे ※चकित बहुरि ब्रजको अभिलाखे॥
क्षण भूतल क्षण लोक सिधारो※ बालवत्स दुहुँ ठौर निहारो ॥
वर्ष दिवस इहि भांति बिताई ※भयो थकित अति उर भ्रमछाई॥
दोहा—मोहविकल अति देखिकै, सुंदर श्याम सुजान ॥
प्रकट कियो जन जानि निज, विधिके उरमें ज्ञान ॥
सो०—हृदय भयो तब शुद्धि, ये पूरण अवतार प्रभु ॥

१ उत्पन्नकिये । २ ब्रह्मा ।

धिक धिक मेरी बुद्धि, बैर बढायो कृष्णसों ॥
मैं मतिहीन भेव नहिं जान्यो * मोह विवश प्रभुसों छल ठान्यो॥
यह अपराध बहुत मैं कीन्ह्यों * निज अज्ञान न प्रभुको चीन्ह्यों॥
भई गिलानि बहुत मनमाहीं * सन्मुखहोय सकत विधि नाहीं॥
भयो शोच उरमांझ विशेषा * प्रभु प्रभाव तब परघट देशा ॥
बालक वत्स सहित सब साजू * कृष्णरूप सब लख्यो समाजू॥
शिव ब्रह्मादिक देव अनेका * देखे अधिक एकते एका ॥
चरण कमल वन्दन प्रभु केरे * गावत गुण गन्धर्व घनेरे ॥
देखि चकित चित भर्म नशान्यो * पूरण ब्रह्म कृष्ण पहिंचान्यो॥
शरण शरण कहि अति अतुराई * पर्‍यो चरण कमलन परजाई॥
अनजानत मैं करी ढिठाई * क्षमा करहु त्रिभुवनके राई ॥
मैं प्रभु तुम प्रताप नहिं जान्यों * तुम्हरी माया मांझ भुलान्यो॥
चूक परी मोते निज भोरे * नाथ न बनै तुम्हैं मुख मोरे ॥
दोहा—मैं अपराधी हीनमति, पर्‍यो मोहके जाल ॥
ममकृत दोष न मानिये, तुम प्रभु दीनदयाल ॥
सो०—कह जानो तुव भेव[1], मैं ब्रह्मा तुम्हरो कियो ॥
तुम देवनके देव, आदि सनातन अजित[2] अज[3] ॥
जो जनते बिगरै बिनजाने * सो अपराध न प्रभु कछुमाने ॥
जो शिशु[4] अज्ञ दोष उरमाहीं * माता कबहूं मानत नाहीं ॥
तोष पोष ताको वह करई * बिकसत चित्त अंकले भरई ॥
रदरसना[5]दल जौरिस होई * कहौ कौन परकीजे सोई ॥
निज तनु व्याधि पीर जन पावै * यदपि यत्न करि नहीं बचावै॥
तैसेही प्रभु मोको कीजे * क्षमि मम दोष शरण गहि लीजे॥

१ भेद। २ जीतनेमें न आवे। ३ अजन्मा। ४ बालक मूर्ख। ५ दांत जीभ।

तुम जाने बिन जीव सदाहीं ❀ उत्पति परलय मांझ समाहीं ॥
तुम करि कृपा जनावहु जाको ❀ सो जानै तुम्हरी प्रभुताको ॥
मैं विधि एक लोकको साईं ❀ जिमि कृमि गूलर मांझ गोसाईं॥
तुम्हरे रोम रोम प्रति गाता ❀ कोटि कोटि ब्रह्माण्ड विधाता ॥
कोटि खद्योत प्रकाश कराहीं ❀ रवि सम क्योंहूं होहिं सुनाहीं ॥
अब प्रभु बनै सँभारे तोहीं ❀ राखिय चरण शरण निज मोहीं॥

दोहा—अतिही अगम अगाध हरि, अविगति गतिको जान ॥
तासु पार चाहौं लख्यो, मैं विधि अति अज्ञान ॥

सो०—करिय विरदकी लाज, मम कृत दोष न मानिये ॥
दीनबन्धु ब्रजराज, शरणागत पालन हरे ॥

जब विधि कही दीन बहु बानी ❀ शरण शरण कहि अति भयमानी
तब नहिं बाल बच्छ कछु देखे ❀ एकै रूप कृष्ण विधि पेखे ॥
कृपा करी तब श्रीब्रजनाथा ❀ हस्त कमल परस्यो विधिमाथा॥
अभय कियो विधि शोच मिटायो ❀ चरण कमलते शीश उठायो
बार बार पद कमल निहारी ❀ अस्तुति करत दुहूं कर जोरी ॥
जो जग धाम श्याम सुखराशी ❀ ज्योति स्वरूप सबै उरबासी ॥
गुणगण अगम निगम नहिं पावैं ❀ ताहि यशोदा गोद खिलावैं ॥
धर जल अनल अनिल नभ छाया ❀ पाँच तत्त्व मिलि जगत उपाया
काल डरै जाके भय भारी ❀ सो ऊखल बांधे महतारी ॥
जग करता पालन संहरता ❀ विश्वम्भर सब जगके भरता ॥
ते गैयन सँग ग्वालन माहीं ❀ ब्रजमें हँसि हँसि जूठनि खाहीं॥
बड़ भाग्य ब्रजवासिन केरे ❀ तिनके प्रेम रहत तुम घेरे ॥

छंद०—रहत जिनके प्रेम घेरे, धन्य ब्रज वासी सबै ॥

१ गूलरके भुनगा । २ पटवीजना (सुनकेहरवा) । ३ वेद । ४ पृथ्वी । ५ अग्नि । ६ पवन । ७ आकाश ।

ब्रह्म एक अनीह अविगति, घरन घर जिनके फबै ॥
धन्य श्रीवसुदेव देवकि, पुत्र करि जिन पाइयो ॥
धन्य यशुमति नन्दजिन, पय प्याय गोद खिलाइयो ॥
धन्य ब्रजके गोप जिन सँग, धन्य गाय चरावहीं ॥
चार मुख मैं कहा वरणों, सहस[1] मुख नित गावहीं ॥
धन्य बालक बच्छ तिनते, नाथ यह दरशन लियो॥
परसि चरण सरोज मस्तक, पाप तजि पावन भयो॥
अब देहु ब्रजको बास मुहिं, प्रभु आश यह मेरे हिये॥
रेणु तृण द्रुम[2] लता खग[3] मृग, होहिं जो तुम्हरे किये ॥
यह नित्य ब्रज लीला तुम्हारी, तुम अनुग्रह ते लही॥
महत श्रीवृन्दाविपिनको, अमित मित सकको कही ॥
लोक मोहिं न सुहात अब प्रभु, आन विधि कोउ कीजिये ॥
मोहिं ग्वालनको करौ भृत[4], खाय जूठनि दीजिये ॥
बार बार मनाय युग पद, नाथ पद बर मांगहूं ॥
ह्वैरहौं वृन्दा विपिन रज, चरण पंकज लागहूं ॥
दोहा—करि अस्तुति गद्गद वचन, दृगजल[5] पुलक शरीर ॥
परयो चरण पंकज बहुरि, विधि अति प्रेम अधीर ॥
सो०—तब हँसि बोले श्याम, गर्व प्रहारी भक्त हित ॥
जाहु आपने धाम, वचन हमारो मानि अब ॥
और काहि अब करौं विधाता❀ तुमहौ कर्म धर्म्मके दाता ॥
तुमते है यह सब संसारा ❀ मम मायाको नाहिंन पारा ॥
ताते अब मम आयसु कीजे❀ ब्रजकी जाय प्रदक्षिण दीजे ॥
जाते तनुके पाप नशाहीं ❀बहुरि जाहु लोकहि सुख माहीं॥

१ शेष । २ वृक्ष । ३ पक्षी । ४ चाकर । ५ नेत्रजल ।

हरि उरहार विविधपहिरायो ❀ बिदाकियो सब शोच नशायो॥
प्रभु आयसु माथेपर धारी ❀ पाय प्रसाद हरषि सुखचारी॥
ब्रज दाँहिन[1] फिर पाप नशाये ❀ बाल वत्स प्रभु पहँ पहुँचाये॥
बार बार चरणन शिर नाई ❀ विधि निज लोक गये सुखपाई॥
ग्वालन यह कछु मर्म न जान्यो ❀ वाहि समय सबहिन मनमान्यो
हरिसों कहत विलंब कहलाई ❀ हम तुम विना छाकनहिं खाई॥
तुम सब भोजन माँझ भुलाने ❀ बच्छ जाय बन दूर हिराने॥
खोजत खोजत क्योंहू पाये ❀ सो मैं लै तुम पहँ पहुँचाये॥

दोहा—अब राखौ सब घेरिकै, दूरि निकसि नहिं जाहिं॥
तब सुचिते ह्वैके सबै, रुचि सों भोजन खाहिं॥

सो०—ऐसे कहि ब्रजराय, सखन सहित भोजन कियो॥
बहुरि यमुन तट जाय, जल अँचेयो[2] धोयो बदन॥

सन्ध्या समय चले घर ग्वाला ❀ मध्यश्याम सुन्दर नँदलाला॥
बच्छ घेरि आगे करिनीके ❀ काँधनपर धर लीन्हे छीके॥
ज़न जन शृङ्ग बजावत गावत ❀ बनते बने ब्रजहि हरि आवत॥
घर आये ब्रज मोहन लाला ❀ कहत यशोमति सों सब ग्वाला
अहो महरि बन आज कन्हाई ❀ महा दुष्ट इक मार्यो जाई॥
उरग रूप निगले शिशु बच्छा ❀ करी आज सबकी हरिरच्छा॥
गिरि कन्दर सम तिन मुखबायो ❀ पैठि[3] श्याम तिहि तुरत नशायो[4]
याके बल हम बदत नकाहू ❀ फिरत सकल बन सहित उछाहू
जीते सबै असुर बन माहीं ❀ यह काहू ते हार्यो नाहीं॥
बीते वर्ष कहत सब ग्वाला ❀ आज अघा मार्यो नँदलाला॥
यह प्रभु लीला अपरम्पारा ❀ कौन कौन को भुरै न पारा॥

१ ब्रजकी प्रदक्षणा करके । २ जलपीयो । ३ भीतर घुसके । ४ मार्यो

यशुमति सुनि चाकित पछिताई ❀ मैं बरजत बन जात कन्हाई ॥

दोहा–केती करवरते बच्यो, तऊ न नेकडरात ॥
अति विचित्र गति ईशकी, जानी जात न बात ॥

सो०–खीझति यशुमति मात, मानत नाहिं मेरो कह्यो ॥
श्याम मनहिं मुसकात, अब बनमें नहिं जाइहौं ॥

हरिकी लीला कहत न आवै ❀ सुरनर असुर सबहिं भरमावै ॥
पय पीवत पूतना नशाई ❀ पटक्यो तृणा शिलापर जाई ॥
तीन लोक मुखमें दिखराये ❀ यमला अर्जुन वृक्ष ढहाये ॥
वत्सासुर बक बहुरि नशायो ❀ अघा मारि विधि गर्व[1] नवायो ॥
यशुमति यह पुरुषारथ देखी ❀ तापर खिझ पछितात विशेखी ॥
अघा मारि आये नँदलाला ❀ घरघर कहत फिरत सब ग्वाला ॥
सुनि सुनि ब्रज युवती उठि धाईं ❀ चकित बिलोकत हरि मुख आईं
मन मन करत यहै अनुमाना ❀ इनकी सर कोऊ नाहिं आना ॥
येई हैं ब्रजके रखवारे ❀ येई हैं पति प्राण हमारे ॥
कहत परस्पर सुनहु सयानी ❀ हैं ये जगपति हम यह जानी ॥
प्रेम मगन ब्रजके नरनारी ❀ लहत परम सुख हरिहि निहारी ॥
ब्रज मोहन सुन्दर सुखरासा ❀ भोजन मांगत यशुमति पासा ॥

दोहा–खाहु लाल जो भावई, रुचि सों सखन समेत ॥
सद माखन व्यंजन सरस, करि राखे तुम हेत ॥

सो०–दे रोटी नवनीत[2], और मोहिं भावै नहीं ॥
दियो मात अति प्रीत, खात हँसत मिलि सखनसँग ॥

॥ गोदोहनलीला ॥

हँसि जननी सों कहत कन्हैया ❀ दोहनि दे दुहिहौं मैं गैया ॥

[1] ब्रह्माको गर्वदूरकर्‌यो । [2] माखन

नंद बबा मोहिं दुहन सिखायो * ग्वालन की सर दुहन चढ़ायो ॥
धौरी धूमरि काजरि गैया * तुरताहि दुहिल्यावों दे मैया ॥
भयो मोहिं बल माखन खाई * अब न डरात बूझ बल भाई ॥
तोहिं नहीं पतियारो आवै * बैठि उठकर भाव बतावै ॥
अँगुरी भाव देखि हँसि माता * उर लगायलिये सांवलगाता ॥
कहत कहाँ इतनी बुधि पाई * हर्षि निरखि मुखबलि बलिजाई ॥
लै दोहनी दई करमाता * हर्षित चले दुहन सुखदाता ॥
बछरा छोरि तुरत थन लायो * मात दुहत लखि हर्ष बढ़ायो ॥
सखा परस्पर कहत कन्हाई * हमहूं ते तुम करत बड़ाई ॥
दुहन देहु कछु दिन मोहिं गैया * तब करियो मेरी सर मैया ॥
जबलगि एक दुहो तबताई * दश न दुहौं तो नन्द दुहाई ॥

दोहा—सखा कहत सब झूठही, नंद दुहाई खात ॥
प्रात साथ हम दुहहिंगे, देखहिंको अधिकात ॥
सो०—कह्यो कान्ह हर्षाय, भली कही तुम बात यह ॥
प्रात दुहहिंगे गाय, हम तुम होड लगायके ॥

श्रीवृषभानु कुँवरि मनमाहीं * श्याम सुरत क्षण विसरतनाहीं ॥
दरश लालसा दृगन न थोरी * देखोइ चहत बहोरि बहोरी ॥
उठे प्रभात दोहनी लीन्ही * सुरत श्याम दर्शनकी कीन्ही ॥
जननी देखि कह्यो दुलराई * जातिकितै राधा अतुराई ॥
खरकहिं जात दुहावन मैया * दुहत सबेर ग्वाल सब गैया ॥
काल्हि तनक मैं बिलंब लगाई * उठे अहिर सब मोहिं रिसाई ॥
गईं गाय सब बच्छ पियाई * रीती दोहनि लै फिरि आई ॥
तुमहूं खीझन लगितब मोहीं * जातसबार आज कहि तोहीं ॥

१ गैया दुहिनेको भाव । २ देरी ।

ऐसे कहि जननी समुझाई ❋ घरते चलि ब्रजहि समुहाई ॥
नंद सदन[1] आई हरिप्यारी ❋ दुहत गाय गृह द्वार बिहारी ॥
दुहत परस्पर अति सुख पायो ❋ निरखि बदन छबि हर्ष बढायो ॥
राधहि देखि महरि नँदरानी ❋ लई बुलाय निकट हर्षानी ॥

दोहा–दंपतिको मुख देखिकै, मुदित यशोमति माय ॥
वार वार लखि युगल छबि, मनहीं मन बलिजाय ॥
सो०–महरिमुदित मुसकाय,मथन कह्यो दधिकुँवरिसों ॥
भान दुहाइ दिवाय, आयसुते ठाढी भई ॥

नेतिपाणि मन अति अनुरागी ❋ रीतोइमाट बिलोवनलागी ॥
तैसइ भई श्याम गति भोरी ❋ मनलाग्यो जहँ कुँवरि किशोरी
वृषभहिंसों लोई लै लैया ❋ बिसरि गई ठाढी कित गैया ॥
दम्पति[2] दशा देखि नँदरानी ❋ रही चकित नहिं जात बखानी ॥
राधा सों कहिं प्रगट जनायो ❋ किन यह तोको मथन सिखायो
निज घर मथति ऐसही जानी ❋ के मेरे घर आय भुलानी ॥
मैं नाहिं मथन कबहुँ दधि कीनी ❋ तुम मोहिं सौंह बबाकी दीनी ॥
ताते मथन करन मैं लागी ❋ तुम्हरो वचन सकी नहिं त्यागी ॥
तब नँद घरनी मथन बतायो ❋ राधे हरि तन ध्यान लगायो ॥
दुहन श्याम गैया बिसराई ❋ लैया वृषभ पाव अटकाई ॥
दोहनी श्याम माँग तब लीन्ही ❋ तुरत सखा इक लै कर दीन्ही ॥
कहत दुहो हरि करो चडाई ❋ हँसत गोप बालक समुदाई ॥

दोहा–हँसत कहत हरि सों सबै, कह तुमरहे लुभाय ॥
सुनत सखनकी बात नहिं, प्यारी सों चितलाय ॥
सो०–प्रिया बदन दृग[3] लाय, रहे श्याम इकटक निरखि ॥

१ नंदरायके घरमें । २ दोनों कृष्णराधिकाकी । ३ नेत्र

देह दशा बिसराय, भूलि गये सब चतुरता ॥
यशुमति कहत राधिकाहिटेरे ❀ ये ढँग हैरी प्यारी तेरे॥
ऐसो हाल मथत दधि तेरो ❀ हरि भयो मानहुं चित्र[1] चितेरो ॥
तेरो मुखसम शशि[2] नाहिं भ्राजै ❀ नयननलखिखंजन गतिलाजै॥
चपलाहूते[3] चमकत हैरी ❀ करिहै कहा श्यामको तैंरी ॥
मेरो कह्यो सुनत कछु नाहीं ❀ है धौं कहा गुणत मनमाहीं ॥
इकटकदीठि तबहिं ते ल्याई ❀ तनकी सुरति सबै बिसराई॥
अबहीं ते ऐसे ढँग योहीं ❀ अबहीं बहुत होनहै तोहीं ॥
ऐसे ढँगहि लगायो श्यामहिं ❀ काज नहीं कछु तेरे धामहिं ॥
चितयो मतिहि करै टकलाई ❀ हिलिमिलि खेलश्याम सँग आई
कैरहो बैठि आपने धामहिं ❀ धेनु दुहनदे मेरे श्यामहिं ॥
देखत तोहिं श्याम सुधि जाई ❀ तू चितवति तनु सुधि बिसराई
सूधेरहि जो इहां तु आवै ❀ ऐसो ढँग मोको नाहिं भावै ॥
दोहा—करत अँचकरी[4] आयतू, यह नाहिं मोहिं सुहाय ॥
सूधे खेलहि श्याम सँग, कैतू इत मति आय ॥
सो०—ऐसे महरि रिसाय, सीख दई हरि भाव तोहिं ॥
तब कछु मन सुधि पाय, बोली अति भोरे वचन ॥
मोहिं खीझति बरजत सुत नाहीं ❀ नित उठि मोहिं बुलावन जाहीं
मोहिं कहत बिन तोहिं निहारे ❀ रहत न मेरे प्राण सुखारे ॥
छोह लगत मोको सुनि बानी ❀ तब आवत मैं ह्यां घरजानी ॥
मुख पावति आवति मैं तातें ❀ तुम कछु लावत औरहिं बाते ॥
यशुमति सुनि प्यारीकी बानी ❀ भोरे भाय समुझि सकुचानी ॥
बांह पकरि उरसों लै लावति ❀ प्यारी मनसों रोष मिटावति ॥

१ चित्रके समान। २ चंद्रमा। ३ वीजुरी। ४ चपलता।

हँसत कहत मैं तोसों प्यारी ❋ मनमें कछू बिलगजनिलारी ॥
सिखवत तोहिं सीख गुणकारी ❋ मैं तेरी जैसे महतारी ॥
सुनियत महरि सुघर अधिकाई ❋ गृह कारज कछु तोहिं सिखाई ॥
सुनि यशुमतिके वचन सप्रीती ❋ बोली अति नागरि शिशुरीती[1] ॥
मैया मोसों टहल करावै ❋ खीझत जात देखि जो पावै ॥
सुनि यशुमति राधाकी बानी ❋ श्री वृषभानु लाडिली जानी ॥

दोहा—अति सप्रेम दुलरायके[2], लई बहुरि उर लाय ॥
श्रीराधाके चित्तते, दीनो क्षोभ[3] मिटाय ॥

सो०—कापै बरणी जाय, हरि प्यारीकी चतुरता ॥
लीनी सहज सुभाय, बातनहीं यशुमति भुरै ॥

कहत सखा हरिसों मुसकाई ❋ दुहत कहा तुम आज कन्हाई ॥
कालिह दुहत रहे होडलगाई ❋ विसर गई सब आज बडाई ॥
गिरति दोहनी कम्पित हाथा ❋ नोवत[4] वृषभ वत्स लै साथा ॥
सुनि ग्वालनके वचन गोपाला ❋ कछुक सकुचि बिहँसे नँदलाला
बच्छ छोरदियो खरिक चलाई ❋ आप जननिसों कहत कन्हाई ॥
मुरली मुकुट देहि पट मेरो ❋ सुनि आऊं दाऊ मोंहिं टेरो ॥
जननी हरषि तुरत सब दीनो ❋ लै हरि मुकुट शीश धरिलीनो ॥
चारु पीत पट[5] कटि लपटाई ❋ कर मुरली लै मधुर बजाई ॥
मुरलीमें कहि प्यारी प्यारी ❋ गये बुलाय खरिक सुखकारी ॥
लखि प्यारी हरिकी चतुराई ❋ कहति यशोमति सों अतुराई ॥
जाति घरहि प्रातहि मैं आई ❋ खरिक दुहावनको निजगाई ॥
पायो ग्वाल खरिक कोउ नाहीं ❋ खोजत मैं आई इत माहीं ॥

दोहा—इहां अजिर गैया दुहत, देखे आय कन्हाय ॥

१ बालपनकी रीतिसों । २ प्यारकर । ३ क्रोध । ४ बैलके पायनमें लोमना डारके दुहोहौ । ५ कमरते पीतांबर कसत

तनेके दोहनि तनक कर, देख रही चित लाय ॥
सो०—सुनि अति सरस सुभाय, सने प्रेम प्यारी वचन ॥
यशुमति मन सुखपाय, कहत कुँवरि सों जान घर ॥
जा प्यारी घर आवत रहियो * हमरो मिलन महरिसों कहियो॥
यह सुनि कुँवरि चली हर्षाई * मन हरि लीन्हो कुँवर कन्हाई ॥
गई खरिक कर दोहनि लीने * चितवत मग जहँ श्याम प्रवीने॥
तहां मिलीं बहु सखी सहेली * बूझति राधहि कहा अकेली ॥
प्रात दुहावन मात पठायो * तहां खरिक कोउ अहिर न पायो॥
इत आई मैं ग्वाल बुलावन * जात खरिक अब गाय दुहावन॥
बोलि उठे हरि तब इत आवो * हम दुहि देइँ दोहनी लावो ॥
दुहन देन कहि श्याम बुलाई * सुनत गई प्यारी सुखपाई ॥
कहति सखी सब मन मुसुकाई * कहां प्रीति इन आय लगाई ॥
बरसाने यह ब्रजहि कन्हैया * आई कहाँ दुहावन गैया ॥
हरि मुख लखि वृषभानुकिशोरी। प्रेम विवश भइ तन सुधि भोरी॥
मोहन लई दोहनी करते * प्रिया प्रीति रस वश भइ वरते ॥
दोहा—धेनु दुहावत लाडिली, दुहत नन्दको लाल ॥
सो सुख कापै जाय कहि, देखत ब्रजकी बाल ॥
सो०—बछरा पद अटकाय, गोथन लीन्हों हाथ हरि॥
प्रिया बदन दृग लाय, दूध धार छांडत छलन ॥
दुहत धेनु अतिही छबि बाढी * प्यारी पास दुहावन ठाढी ॥
एक धार दुहनीमें डारे * प्यारी तन इक धार पखारे ॥
हरि करते पय धार छुटाहीं * लसत छींट प्यारी मुख माहीं ॥
मनहुं मयङ्क कलङ्क पखारी * शोभित जहँ तहँ चन्द्र सुधारी॥

१ छोटी। २ हाथ। ३ मार्ग। ४ चन्द्रमा।

कै धौं पै निधि खोरि मयङ्का * लसत सुधा[१]सह खोय कलङ्का॥
लसत नील[२]पट कनक किनारी * मोरत मुखहिं मुदित मनप्यारी॥
मनहुं शरद[३] शशि सुधा उदारा * घनदामिनि घेऱ्यो इक बारा ॥
इहि बिधि रहसत बिलसत दोऊ * हेत हिये थोरे नहिं कोऊ ॥
मनहुं उभय[४] आनँद सर[५] भारी * मिलत चहत मर्याद बिसारी ॥
हाव भाव रस दम्पति पूरे * निरखत ललितादिक दुर दूरे ॥
इहि बिधि श्रीवृषभानु दुलारी * हरिपै धेनु दुहावत प्यारी ॥
बिलसत ब्रजबिलास ब्रजप्यारे * ये सुख तीन भुवनते न्यारे ॥

दोहा—दुही कुवँर नँद लाडिले, श्रीराधाकी गाय ॥
दोहनि देत न हँसि प्रिया, माँगत हाहाखाय ॥
सो०—त्यों त्यों हँसत कन्हाय, ज्यों ज्यों प्रिय हाहाकरत॥
सो सुख बरणि न जाय, अरझे दोऊ प्रेम रस॥

फिर हाहाकर कहत कन्हाई * अकबैदेहौं नन्द दुहाई ॥
फेरि करी हाहा हँसि प्यारी * दई दोहनी बिहँसि बिहारी ॥
हाव भाव करि मन हरि लीन्हों * कुवँरिहि कान्ह बिदा तब कीन्हों
यह छबि निरखि सखी हर्षानी * चली अग्रह्वै कछुक सयानी ॥
प्यारी निरखि श्याम सुन्दरको * चलन चहत पग चलत न घरको
अंतरनेक न हरिसों भावै * पुरजनसकुच बहुरि सकुचावै॥
धिक यह लाज कहत मन माहीं * निरखन देत श्याम जो नाहीं ॥
कछु दिन ज्यों त्यों और बिताई * दूर करौं पुनि इहि दुखदाई ॥
यह बिचार मनमें ठहराई * चली सदन उर राखि कन्हाई ॥
मुरि मुरि नंदनँदन तन हेरे * आवति बिरह बिथा तन घेरे ॥
आगे धरत परत पग नाहीं * मन फेरत मन मोहन पाहीं ॥

१ अमृत । २ श्रीराधिकाजीके मुखपर सुनेहरी किनारी लगी नीलीसारी अत्यंत सोभा देय उसकी ब्रजवासीदास उपमा देयहैं कि जैसे । ३ मानो शरदऋतुके चन्द्रमाको एककालमेंही मेघ और बीजरीने घेऱ्यो होय । ४ दोनो । ५ सरोवर ।

चितवत श्याम खरिक महँठाढे * प्यारी तन मन आनँद बाढे ॥
दोहा—भये दृगनते ओट दोउ, गये सदन सुखरास ॥
विरह विकल प्यारी गई, ज्यों त्यों सखियन पास ॥
सो०—सखियन आवत देषि, श्रीवृषभानु कुमारिको ॥
उर आनंद विशेषि, हर्षि सबै ठाढी भई ॥
बूझति सबै सखी मुसकानी * कहहु राधिका कुवँरि सयानी ॥
और अहिर तुम्हरे कित प्यारी * हरि दुहि दीन्ही गाय तुम्हारी ॥
यह सुनि चकित भई मति भोरी * गिरी धरणि मुरझाय किशोरी ॥
देखि सखी सब आतुर धाई * लई उठाय कुवँरि उरलाई ॥
क्यों नागरी गिरी मुरझाई * दूध दोहनी दई गिराई ॥
यह वाणी कहि सखिन सुनाई * कारे मोहिं डसीरी माई ॥
भई विकल कछु तनु सुधि नाहीं * कहत सखी सब आपसमाहीं ॥
अबहीं देखत नीके आई * कहा भयो कारे कित खाई ॥
यहतो कारो कुवँर कन्हाई * हमहूं को जिन फूंक लगाई ॥
जाकी मुर मुसकन विष बांको * याके रोम रोम विष ताको ॥
तन मन दृगन सांवरों छायो * देह गेह सब नेह भुलायो ॥
सब सखियन मन यह ठहराई * लैराधिकहिं सदन पहुँचाई ॥
दोहा—लेहु महरि कीरति सुता, अपनी देखहु आय ॥
कहुंकारे याको डसी, गिरी धरणि मुरझाय ॥
सो०—ल्यावहु गुणी बुलाय, वेग यत्न याको करहु ॥
गयो बदन कुम्हिलाय, ज्यों त्यों हमलाई इहां ॥
जननी सुनत उठी अकुलाई * रोवति धाय कंठ लपटाई ॥
प्रात गई नीके उठि घरते * मैं बरजी मान्यो नहिं अरते ॥

१ नेत्रनते । २ घरको । ३ पृथ्वी । ४ कारेसाँपने । ५ कीरतिमैया

अतिहि हठीली कह्यो न मानै ❀ सोई करतिजु मनमें आनै ॥
डरी मात लखि अँग सब जूडे ❀ अतिही शिथिल स्वेदजल बूडे॥
महरि नगर ते गुनी बुलाये ❀ सुनत सकल आतुर उठि धाये ॥
मंत्र यंत्र बहु भांति जगावें ❀ थके सकल कछु भेद न पावें ॥
गारुड हरि जो रहे मन माहीं ❀ महरि बिकल अति मन पछिताहीं ॥
फिर फिर बूझत सखिन बुलाई ❀ कह प्यारी कहि तुमहिं सुनाई ॥
कहत सखी सब परम सयानी ❀ सुनहु महरि इतनी हम जानी ॥
हम आगे यह पाछे आई ❀ गिरी धरणि दुहनी ढरकाई ॥
यही कह्यो कारे मोहिं खाई ❀ तब हम आतुर लई उठाई ॥
सो कारो हमहूं पुनि देष्यो ❀ लग्यो सबन विष याहि विशेष्यो

दोहा—सो अब हम तुम सों कहैं, मानिलेहु यह बात ॥
बडो गारुडू रायहै, नंदमहरको तात ॥

सो०—ल्यावहु ताहि बुलाय, देखतही बिष जायगो ॥
तुरतहि लेहिं जिवाय, हमनीके यह जानहीं ॥

देखहु धौं यह बात हमारी ❀ एकहि मंत्र जियावहिं झारी ॥
त्रिभुवन गुनी और नहिं ऐसो ❀ है वह नंद महरिको जैसो ॥
कीरति महरि सुनी यह बानी ❀ अपने मनहिं सांचकर मानी ॥
इकदिन राधा हू यहबानी ❀ मोसों कही हती यह जानी ॥
कीरति चली नंदके धामहिं ❀ बोलन आतुर गारुड श्यामहिं ॥
महरि यशोदहि जाय पुकारो ❀ अहो गारुडू सुवन तुम्हारो ॥
मेरी सुता लाडिली गोरी ❀ बिह्वल बिकल परीमति भोरी ॥
प्रातहि खरिक दुहावन आई ❀ तहां कहूं कारे डसिखाई ॥
नेक पठै सुत काज विचारे ❀ यह यश ह्वैहै बडो तुम्हारो ॥

सुनि यशुमति की रति की बानी * कहत महरि तुम भई अयानी ॥
मंत्र यंत्र कह जानै मेरो * अतिही बाल वर्ष षट केरो ॥
किन तुमको दीनो बहँकाई * यह तुम बूझो गुणिन बुलाई ॥
दोहा—मैं चकित तुम वचन सुनि, यह अचरजकी बात ॥
श्याम भयो कब गारुडू, तुम आई अतुरात ॥
सो०—अबलों सुनी न कान, भयो श्याम कब गारुडू ॥
बालक अति अज्ञान, यंत्र मंत्र जानै कहा ॥
महरि गारुडू कुवँर कन्हाई * इक दिन राधा मोहिं सुनाई ॥
एक लरकिनी कारे खाई * जाको तुरतहि श्याम जियाई ॥
ताते मैं आई अतुरानी * पठवहु सुतहि नेक नँदरानी ॥
है मम कुवँरि बिकल अधिकाई * प्रात खरिक कारे कहुं खाई ॥
बडो धर्म यशुमति यह लीजै * बेगि बुलाय कान्हको दीजै ॥
यह सुनिकै यशुमति मुसकाई * अबहिं हती मेरे घर आई ॥
है राधा मोहन कछु कारन * चुप ह्वै मनमें लगी विचारन ॥
वहां सखी ललतादि सयानी * प्यारिहि देखि हृदय अनुमानी ॥
याहि डसी बंशीधर कारे * चितवन फण मुसकन बिषधारे ॥
प्रेम प्रीति दौंडारत जारे * लगे न मंत्र गुणी सब हारे ॥
थके सकल करि विविध उपाई * यह बिष मोहन बिन नहिं जाई ॥
सखीएक हरि पास पठाई * तिन मोहन सों जाय जनाई ॥
दोहा—अहो महरिके लाडिले, मोहन श्याम सुजान ॥
कित सीखे यह गोदुहन, हम सों कहो बखान ॥
सो०—दुहि दीनी जिहिगाय, आज भोरही खरिकमें ॥
वेग विलोको जाय, निज नयनन ताकी दशा ॥

१ बावरी । २ छः वर्षको ।

जबते दुहि दीन्ही तुम गैया * अहो अनोखे गाय दुहैया ॥
घर लौं कुवँरि जान नहिं पाई * बीचहि धरणि गिरी मुरझाई ॥
देखत संग सखी सब धाईं * जैसे तैसे गृह पहुँचाई ॥
सो अब तनुकी सुधि न सम्हारै * परी बिकल नहिं दृगन उघारै ॥
सकसकात तनु स्वेद बहाई * उलटि पलटि भरिलेत जँभाई ॥
कहति मोहिं कारे अहिखाई * कियो यत्न बहु गारुड आई ॥
ताहि कछू उपचार न लागै * तुमरो नाम लेत कछु जागै ॥
हौं पठई इक सखी सयानी * यह बिष तुम्हरो निहचै जानी ॥
यह कारो अहि रूप तुह्मारो * मुसकनि विष ता ऊपर डारो ॥
अब जो चाहो ताहि जियावो * बेगि चलो जिन गहर लगावो ॥
अतिहि विकल वह बिरह अधीरा * दरश दिखाय हरो तनु पीरा ॥
तुम अश्विनी कुमार कन्हाई * बेगि चलो हरि लेहु जिवाई ॥

दोहा—नजर दीठ इकरावरी, टेर कहत हम कान्ह ॥
नहिं जागति तो देहिंगी, नन्द द्वार सब प्रान ॥

सो०—व्याकुल जननी तास, घरनि महर वृषभानुकी ॥
गई यशोमति पास, वेगि जाय सुधि लीजिये ॥

कीरति आगम सुनत कन्हाई * कीनी बिदा सखी मुसुकाई ॥
जो कहुँ डसी भुजङ्गम प्यारी * तौ हम आय देहिंगे झारी ॥
ऐसे कहि हरि सदनहि आये * देखि यशोमति निकट बुलाये ॥
तू कछु जानत मंत्र कन्हैया * बूझति बिहँसि यशोमति मैया ॥
कीरति महरि बुलावन आई * कुवँरि राधिका कारे खाई ॥
आनहुँ झारि बेगि सँग जाई * कुवँरि जिवाये अतिहि भलाई ॥
गारुड भयो भले सुत जानी * आज सुनी श्रवणन यह बानी ॥

१ नेत्रन । २ घर ।

मैया एक मंत्र मैं जानौं ❀ तेरी सौं कहि सत्य बखानौं ॥
अहि काट्यो मो दृष्टि जुआवै ❀ मोपै क्योंहूं मरण न पावै ॥
जननि कह्यो सुत जाहु कन्हाई ❀ देहुराधिकहि जाय जिवाई ॥
जननी वचन सुनत ब्रजनाथा ❀ चले हर्षि कीरतिके साथा ॥
चलीमहरि हरि संगलिवाई ❀ गइ वृषभानु पुरा समुहाई ॥

दोहा—रुदितमहरि लखि कुवँरिको, अतिहिगई कुम्हिलाय ॥
शिथिल अंग बानी निरखि, लीनी कण्ठ लगाय ॥

सो०—तबहिं श्यामके पांय, परी कुवँरि लैके महरि ॥
मोहन देहु जियाय, अति व्याकुल मेरी सुता ॥

आये गारुड कुवँर कन्हाई ❀ कुवँरि कान्हने यह सुनि पाई ॥
धन्य धन्य आपनको जानी ❀ हृदय हर्ष दृग आनँदपानी ॥
प्रगट रोम तनु स्वेद बढाई ❀ विह्वलदेखि जननि अकुलाई ॥
अन्तर भाव भेद हरि जाने ❀ रसिक शिरोमणि मन मुसकाने।
तब कछु पढिके कुवँर कन्हाई ❀ मुरलि अंगसों दई छुवाई ॥
ततक्षण लोचन कुंवरि उघारे ❀ सन्मुख सुंदर श्याम निहारे ॥
निरखत दृगन परम सुख लीनो ❀ सकुच सँभारि बसन सम कीनो
बुझत बात जननी सों प्यारी ❀ आज कहा यह है महतारी ॥
जननी कहति हरषि उरलाई ❀ तोहिं मरतते कान्हजिवाई ॥
करत लाज तूकारी प्यारी ❀ करिवर बडी आज बिधि टारी ॥
यों कहि महरि हृदय अनुरागी ❀ नंदसुवनके पांयन लागी ॥
बडो मंत्र तुम कियो कन्हाई ❀ सुता हमारी मरतजिवाई ॥

दोहा—उर लगाय मुख चूमिके, पुनि पुनि लेत बलाय ॥
धन्यकोखि यशुमति महरि, जहां अवतरे आय ॥

१ आनंदजल। २ मैया। ३ बेटी।

सो०—कछु मेवा पकवान, कर्यो खान घनश्यामसों ॥
बिदा किये दै पान, कीरति श्याम सुजानको ॥

महरि मनहिं मनमें अनुमानी ❀ जोरी भली विधाता बानी ॥
ब्रज घर घर यह बात चलाई ❀ बडो गारुडू कुँवर कन्हाई ॥
सखी कहत हरिसों मुसकाई ❀ भले भले हो गारुडराई ॥
प्रगट्यो गारुड नाम तुम्हारो ❀ भले आज तुम विषहिं उतारो ॥
जननि कहति मेरो अति बारो ❀ अबधौं कौन करै निरवारो ॥
जान्यों कठिन बसन ब्रजकारो ❀ अब यह मंत्रहिं मतिहिं बिसारो ॥
फिरकारो कहुँ करहिं पसारो ❀ हम तब लैहैं नाम तुम्हारो ॥
यह गारुडी कहां तुम पाई ❀ प्यारी एकहि टेर जिवाई ॥
अब हम जानी बात तुम्हारी ❀ जाहु आपने सदन बिहारी ॥
रसिक मुकुटमणि कुंज बिहारी ❀ हँसिबशकीनी घोष कुमारी ॥
बिवश भई सब ब्रजकी बाला ❀ गये सदन मोहन नँदलाला ॥
ब्रजविलास बिलसत ब्रज प्यारो ❀ ब्रजवासी जनको रखवारो ॥

दोहा—कारो सुत नँदराय को, जाकी लीला नित्त ॥
तिनहींको हरि डसतहैं, जिनको उज्ज्वलचित्त ॥

सो०—धन्य धन्य ब्रज बाल, धनि धनि ब्रजके ग्वाल सब ॥
जिनके सँग नँदलाल, दुहत चरावत गाय नित ॥

प्रात होत बल मोहन लाला ❀ गाय बच्छ सबलै सँग ग्वाला ॥
चले चरावन ब्रज वन माहीं ❀ क्रीडा करत सकल मग जाहीं ॥
देखि मुदित सब ब्रजकी बाला ❀ वृन्दावन गये मदनगुपाला ॥
गैया बगर गई वन माहीं ❀ बैठे कान्ह कदमकी छाहीं ॥
सखालिये सँग सुबल सुदामा ❀ क्रीडा करत सहित बलरामा ॥

१ घर। २ गोपनकी कन्य।

ग्वाल जहाँ तहँ गाय चरावैं * आनँद भरे कृष्ण गुण गावैं ॥
करत विहार विविध सब ग्वाला * गये दूरि बन सघन विशाला ॥
कोऊ गैयन घेरन धायो * कोऊ बछरनलै बिलगायो ॥
हलधर रहे कहूं बनजाई * आप अकेले रहे कन्हाई ॥
मन मन कहत श्याम सुखदाई * सखा रहे कत बन बिरमाई ॥
गोरांभन कहुं सुनियत नाहीं * गये निकासि धौं कितवन माहीं ॥
आलस गात जानि मनमाहीं * बैठे बंशीबटकी छाहीं ॥

दोहा—सखा वृन्द हलधर सहित, लिये बच्छ अरु गाय ॥
वृन्दावन घन छांडिकै, रहे ताल वन जाय ॥

सो०—मन हरषे सब ग्वाल, देखि भूमि सुन्दर परम ॥
फरे विपुल तरु ताल, अति रस मय मीठे मधुर ॥

॥ अथ धेनुकवधलीला ॥

गोधन वृन्द दिये बगराई * लगे खान फल मन हरषाई ॥
अचयो बलरस ताल रसाला * बाढ्यो उर आनंद बिशाला ॥
सुरत नन्दनन्दनकी आई * कह्यो सखनसों कहां कन्हाई ॥
ल्यावहु घेरि जाय सबगैया * चलौ वेगि जहँ कुवँर कन्हैया ॥
सुनत सखा हलधरकी बानी * बनमें श्याम अकेले जानी ॥
आतुर गैयन घेरन धाये * टेर दई सब ग्वाल बुलाये ॥
तहां असुर इक धेनुकनामा * खरके रूप रहै वनधामा ॥
सोयो हुतो विटपकी छाया * सुनत शोरकर तामस धाया ॥
अति बलवान बिशाल कराला * परम भयंकर मानहुं काला ॥
दाऊ कहि सब ग्वाल पुकारे * भाजे जित तित भयके मारे ॥
असुर महाबल गर्व बढाई * बलके सन्मुख गरजो आई ॥

मत्त तालके रस बलराई ❀ देखि असुर मन रिस उपजाई॥
दोहा–बल सँभारि उठि कोपकरि, असुर प्रचाऱ्योजाय॥
अग्रज माता श्यामको, तिहुँ पुर जासु बडाय॥
सो०–बलको आवत जानि, असुर जोरि दोऊ चरण॥
चपर चलाई आनि, बहुरोहठठाढो भयो॥
बहुरो फिर मारनको धायो ❀ बल जूको तामस तब आयो॥
जबहिं असुर फिर चरण चलायो ❀ गहि लीनो करिकोप फिरायो
पटक्यो लै तरुताल हिलाई ❀ भयो प्राण बिन तरुहिं गिराई॥
तरुसों तरु टूटे भहराई ❀ उठ्यो सकल वन घन घहराई॥
और बहुत धेनुक परिवारा ❀ कीन्हों बल सबको संहारा॥
माऱ्यो असुर महा दुखदाई ❀ ग्वाल बाल सब करत बडाई॥
आये सब वृन्दावन माहीं ❀ जहँ तहँ श्यामहिं टेरत जाहीं॥
चढिचढि द्रुमन पुकारत ग्वाला ❀ आवहुहो मोहन नँदलाला॥
ल्याये घेरि मिली सब धेनू ❀ आवहु मधुर बजावहु वेनू॥
कोमल चरण कहूं मति धावहु ❀ कंटक कठिन मही इत आवहु॥
ऐसे हरिको टेरत जाहीं ❀ तृषितभये सब वनके माहीं॥
ग्वालबाल सब यमुनहिंआये ❀ बलरस मत्त न पहुँचनपाये॥
दोहा–गोप गाय अचवत भये, कालीदहको नीर॥
निकसत सब अकुलायकै, बैठ गये जल तीर॥
सो०–परे सकल मुरझाय, जहां तहां विष झारते॥
ग्वाल बच्छ अरु गाय, भये मनों विन प्राण सब॥
हरि ठाढे बंशीवट छाहीं ❀ बारहिं बार कहत मन माहीं॥
अबहिं रहे सब संग चरावत ❀ निकसि गये धौंकितबन धावत॥

गोरांभन ग्वालनके बैना * अनकत कछु न सुनत बन ऐना॥
तरु चढ़ि इत उत गैयन हेरत * लै लै नाम सखन को टेरत ॥
कालीदह तन आहट पाई * सोधलेत उत चले कन्हाई ॥
बन घन ढूंढत हरि तहँ आये * गाय ग्वाल सब मूर्च्छित पाये॥
मनमें ध्यान करतही जान्यो * काली अहि ह्यां आय समान्यो॥
रहत इहां खगपति भयमानी * अँचयो इन ताको विषपानी ॥
अमीदृष्टि प्रभु सकल निहारी * तुरत उठे सब भये सुखारी ॥
देखि कृष्णको अति सुखपाई * मिले सकल प्रेमातुर धाई ॥
बोले हरि मृदुवचन सुहाये * तुम सब मोहिं छोडि के आये ॥
किंतते कित इतनिकसे आई * मैं बन ढूंढि रह्यो पछिताई ॥

दोहा—खोज लेत आयो इहां, देखे सब बेहाल ॥
मुरछि परे काहे धरणि, भयो कहा जंजाल ॥
सो०—गाय वच्छ अरु ग्वाल, उठे एकही बार पुनि ॥
कहा कियो इह ख्याल, देखि मोहिं अचरज भयो ॥

सुनि हरि वचन परम सुखदाई * कहत सखा सब सुनहु कन्हाई॥
अचयो तृषित यमुन जल आई * तबहिं गिरे सब तट अकुलाई॥
कारण हम कछु जान्यो नाहीं * भये प्राण बिन सब क्षण माहीं ॥
इह हम जानी कुँवर कन्हाई * तुमहीं हमहिं जिवायो आई ॥
हौ तुम ब्रज जनके रखवारे * तहां तहां तुम हमहिं उबारे ॥
तबहरि बलदाऊको हेरो * कह्यो चलहु वन होत अँधेरो ॥
सखा बोलि ल्याये बलरामहिं * हँसे देखि सुन्दर घनश्यामहिं ॥
बडीदेर भइ तुम्हैं कन्हैया * रहे अकेले वनमें भैया ॥
चलहु वेगि अब घरको जाहीं * लेहु लिवाहि गाय वन माहीं ॥

हेरी देत चले सब ग्वाला ※ गावत गुण सुन्दर गोपाला ॥
गोधन आगे दये चलाई ※ सखन मध्य मोहन बलभाई ॥
चले ब्रजहि बन जन सुखदाई ※ निरखि बदन छबि मदन लजाई॥
दोहा—सुनि ब्रज सुन्दरि परस्पर, कहत मुरलि सुर घोर ॥
आवत वन वसि अहर निशि, आगम नंदकिशोर॥
सो०—धाईं गृहतजि काज, निरखनको मन भावतो ॥
सुन्दर सुत ब्रजराज, लाज साज सब छाँडिकै ॥
वे देखो आवत बल मोहन ※ सुबल सुदाम सुदामा गोहन॥
मेघश्याम तनु गैयन पाछे ※ शीश मुकुट कटि कछनी काछे ॥
कमल वदन कर वेणु बजावैं ※ गौरी राग मिले सुरगावैं ॥
नयन विशाल कमल ते आछे ※ कोटि मदन कीछबिको बाछे ॥
कुंडल श्रवण बदन छबि छाई ※ गोरज छबि कहुँ चंद्र छिपाई॥
निरखि मुदित सब ब्रजकी बाला ※ पहुँचे आय सदन नँदलाला ॥
ब्रज जीवन बल मोहन भैया ※ निरखि जननि दोउ लेत बलैया॥
ग्वाल कहत धनि यशुदा माता, धनि धनि बल मोहन दोउ भ्राता॥
नरतनु धरे देव ये कोऊ ※ ब्रज अवतार लियो इनदोऊ॥
येहैं सब ब्रजके रखवारे ※ गाय गोपके राखनहारे ॥
गर्दभ रूप असुर इक भारो ※ ताहि आज हलधर वन मारो ॥
हम सब यमुनातट मुरझाई ※ तहां कान्ह सब मरत जिवाई ॥
दोहा—अब हम काहू डरत नहिं, येहैं हमैं सहाय ॥
बल मोहनके बल फिरत, वन वन चारत गाय ॥
सो०—परत गाढ जब आय, तब तब होत सहाय हरि ॥
चिरजीवैं दोउ भाय, यशुमति ये तेरे कुँवर ॥

यशुमति सुनि ग्वालनकी बानी ※ कह्यो गर्ग सब सत्य बखानी ॥
नितनव चरित सुनत हरि केरे ※ हैं कोऊ ये बडन बडेरे ॥
धन्य धन्य ये ब्रजमें आये ※ धन्य धन्य हम सुत करि पाये॥
अतुलित कर्म दुहुनके जानी ※ दोउ जननी मन मांझ सिहानी॥
श्याम राम दोऊ नँदरानी ※ लिये लाय छाती हरषानी ॥
भूख जान तुरत अन्हवाये ※ पटरस व्यंजन सरस जिमाये ॥
भोजन करि अचये दोउ भाई ※ लीन्हे पान संत सुखदाई ॥
पौढे सेज दास हितकारी ※ ब्रज जन बासी हैं बलिहारी ॥
चिन्तामणि हरि जन सुखदानी ※ कालीकी चिन्ता उर आनी ॥
ग्वाल गाय नित बनको जाहीं ※ दुखपावत कालीदह माहीं ॥
विषधरको रहबो जलमाहीं ※ वृंदाबन ढिग नीकोनाहीं ॥
कालिहिकाढि इहां ते दीजै ※ यमुनाको जल निर्मल कीजै ॥

दोहा—यह विचार मनमें करत, भये नींद वश श्याम ॥
यशुमति हरि पौढायके, आपलगी गृह काम ॥

सो०—खबरि न बोलन देत, घरमें काहूको महरि ॥
बल मोहनके हेत, जागि परैं मति नींदते ॥

शिव सनकादि दिवसनिशिध्यावैं ※ कबहूं जाको अन्त न पावैं ॥
ब्रह्म सनातन आनँदखानी ※ सो नँदसदन सोवत सुखदानी* ॥
देखो नंद कान्ह अति सोवत ※ श्रमित जानि बनके सुख जोवत
मानत नाहिं कहो किन कोऊ ※ आप हठीले भैया दोऊ ॥
करसों पोंछत शुभग शरीरा ※ कहियत यहै प्रेमकी पीरा ॥
निजपलका तहँ लियो मँगाई ※ सोये हरिके ढिग नँदराई ॥
यशुमति हूं पौढी तहँ आई ※ निशिबीते अधिकी अधिकाई॥

* सुखमानी

जाग उठे तब कुवँर कन्हैया * कहां गई मोढिगते मैया ॥
सँग सोवत जान्यो बल भाई * अतिही श्याम उठे अकुलाई ॥
जागेनँद अरु महरि यशोदा * हरिको ऐंचिलियो नँद गोदा ॥
काहे झिझकि उठ्यो अनियासा * तुरतहि दीपक कियो प्रकाशा ॥
सपने गिरो यमुन जल जाई * काहू मोको दियो गिराई ॥

दोहा—नित प्रति मैं बरजतरहौं, तूहठि यमुना जाय ॥
सुधि रह गई अन्हानकी, जिन हो लाल डराय ॥

सो०—कौरे लै नँदराय, पौढाये निज संग तब ॥
वृन्दाबन तू जाय, किहि कारण जित तित फिरत ॥

अबतू वृन्दाबन जनि जाई * तहां कौनधौं रहत बलाई ॥
सोये दंपति बीच कन्हाई * तुरतहिगई नींद फिर आई ॥
सपनो सुनि जननी अकुलानी * कहत नँद सो यशुदारानी ॥
देख्यो धौं कह सुपन कन्हाई * या ब्रजके जीवन दोउ भाई ॥
यहे यत्न इनकोअब कीजे * गाय चरावन जान नदीजे ॥
गृहसंपति द्वै तनक ढुठौना * इनहीं लौं बल भोग ठठौना ॥
येबन जात चरावन गैयां * हँसी करत ब्रज लोग लुगैयां ॥
दंपति आपसमें इहि भांती * करत विचार बीति गइ राती ॥
तारागण सब गगनछिपाने * गयो तिमिर अम्बुज बिकसाने ॥
उठि यशुमति लागी गृह काजा * भूलिगयो निशि शोच समाजा ॥
प्रात स्नान यमुन नित जाई * नंदहि तुरतहि दियो उठाई ॥
मथन हारि ग्वालिनि सब जागीं * जित तित दही बिलोवन लागीं ।

दोहा—हरि प्यारी सुरभीनको, जम्यौ जुदधि बिलगाय ॥
सो हरि हित माखन लिये, मथति यशोदा माय ॥

सो०–सदमाखन निज पानि,मथत तुरत मथनी धर्‌यो ॥
बड भागिनि नँदरानि,माखन प्यारे लाल हित ॥
लगी जगावन हरिको जाई ❀ उठहु तात माता बलि जाई ॥
प्रगट्यो तरणि किरणि महिछाई ❀ खोलिदेहु मुख कमल कन्हाई
सखा द्वार सब तुमहिं बुलावैं ❀ तुम कारण सब धाये आवैं ॥
उठि तिनको मिलिकै सुखदीजे ❀ होत अबार कलेऊ कीजे ॥
तब हरि उठिकै दरशन दीनो ❀ माता निरख मुदित मनकीनो ॥
दाऊ जू कहि श्याम पुकार्‌यो ❀ नीलांबरगहि मुखते टार्‌यो ॥
मनु घनते शशि भयो नियारो ❀ प्रगट्यो सुन्दर मुख उजियारो॥
हँसत उठे सुन्दर दोउ वीरा ❀ गोर श्याम अति सुभग शरीरा ॥
शयन भवन ते बाहर आये ❀ लखि दोउ जननि परम सुखपाये॥
दँतवनलै दोउवन कर दीनी ❀ चौकी बैठि मुखारीकीनी ॥
मातन निज निज कर मुख धोयो ❀ नयननको आरस सबखोयो॥
अँचरन सों मुख कमल अँगोछे ❀ उर लगाय सब अंगन पोछे ॥
दोहा–करहु कलेऊ लाल दोउ,तब कहुँ बाहर जाउ ॥
मथ्यो तुरत मीठो मधुर,माखन रोटी खाउ ॥
सो०–दई दुहुन को मात,रोटी अरु माखन मधुर ॥
हरषि परस्पर खात,माता अंतर हेतु लखि ॥

॥ अथ कालीदमनलीला ॥

ऋषि नारद हरि भक्त सयाने ❀ प्रभुके मनकी रुचि पहिचाने ॥
गावत गुण हरि परम हुलासा ❀ गये तुरत मथुरा नृप पासा ॥
देखि कंस आदर अतिकीनो ❀ करि दंडवत बरासनदीनो ॥
नारद कह्यो कुशल नृपराई ❀ कछुक शोचवश परत लखाई ॥

तुम प्रताप मुनि कुशल सदाईं ❀ एक शोच मोहिं बडो गुसाईं ॥
ये दोउ ब्रजमें नंद कुमारा ❀ जानि परत मोहिं कोउ अवतारा॥
कहत जिन्हैं बलराम कन्हाई ❀ तिनकी गति मति जानि न पाई॥
तृणावर्त्तसे दैत्य पठाये ❀ सो उन पलइक माहिं नशाये ॥
बकी पठायदई पहिलेहीं ❀ ऐसनको बल सब लैलेहीं ॥
उनते भयो नहीं कछु काजा ❀ यह सुनि समुझि होत मोहिं लाजा
अब मुनि तुम कछु कहहु विचारा ❀ जिहि विधि मारहु नंदकुमारा।
मुनि हरिके गुण नीके जाने ❀ सुनि नृप वचन मनहिं मुसकाने ॥

दोहा—तब बोले मुनि नृपति सों, सत्य कही तुम तात ॥
वे दोऊ अवतारहैं, इन गति जानि नजात ॥

सो०—हैंये तुम्हरे काल, प्रगट भये ब्रज आयकै ॥
नंद गोपके बाल, तुम इनको राखो मतिहि ॥

एक बात मेरे मन आवै ❀ करहु कंस तुमको जो भावै ॥
काली अहि रह्यो यमुना आई ❀ तहां कमल फूले विपुलाई ॥
फूल तहां ते मांगि पठावहु ❀ दूत पठै नंदहि डरपावहु ॥
यह सुनि ब्रजके लोग डरैहैं ❀ यहै बात वेऊ सुनि पैहैं ॥
जैहैं अवशि फूलके काजा ❀ तहां घात करिहैं अहिराजा ॥
यह सुनि कंस बहुत सुखपायो ❀ भलो मंत्र मुनि मोहिं बतायो ॥
धनि धनि कहिपुनि२शिरनावत। हरषि चले मुनि हरि गुण गावत
तबहिं कंस इकदूत बुलायो ❀ ब्रजहि नंदके पास पठायो ॥
दीनों ताको पत्र लिखाई ❀ कहियो यहै नंदको जाई ॥
कोटि कमल कालीदह केरे ❀ पहुँचावहु लै काल्हि सबेरे ॥
कंसराज अति काज मँगाये ❀ बनिहै तुमको तुरत पठाये ॥

चल्यो दूत आतुर ब्रज धाई ❀ जानि लई सब कुँवर कन्हाई ॥

दोहा—आप रहे ता दिन घरहिं, वनहि पठाये ग्वाल ॥
ब्रजबासी जनके सुखद, ब्रज जीवन नँदलाल ॥

सो०—दूतहि आवत जान, आप गये बहराय हरि ॥
सुन्दर श्याम सुजान, खेलत ग्वालन संग मिलि ॥

आये नन्द यमुन जल न्हाये ❀ पैठत सदन छींक भइ बांये ॥
महर मलिन मन अशकुन जान्यो ❀ आज कहा उर शोच[1] समान्यो
तबहीं चल्यो दूत जब आयो ❀ नंद महर घरहीं में पायो ॥
बोललिये पाती[2] कर राखी ❀ नृपकी कही मुखागर भाखी ॥
कालीदहके फूल मँगाये ❀ ता कारण[3] अति डाट पठाये ॥
जो नहिं मोको फूल पठावहु ❀ तौकोउ ब्रजमें रहन न पावहु ॥
गोप नन्द उपनन्दजितेका ❀ डारौं मार न राखौं एका ॥
जो नहिं काल्हि कमल मैं पाऊं ❀ तो सुत तेरे बाँधि मँगाऊं ॥
यह सुनि नन्द गये मुरझाई ❀ और गोप सब लिये बुलाई ॥
तिन सबको सब बात सुनाई ❀ परी आय यह अति कठिनाई ॥
कोटि कमल कालीदह माहीं ❀ कहो कौन धौं काढन जाहीं ॥
कह्यो फूल जो काल्हि नपाऊं ❀ तो सुत तेरे बाँधि मगाऊं ॥

दोहा—मेरे सुत दोउ नृपति उर[4], खटकत हैं दिनरात ॥
आज कही यह बातसो, बल मोहन पर घात ॥

सो०—चढ़िहैब्रजपर धाय, काल्हि कंस अति कोप कर ॥
बन्यो मरण अब आय, को राखै कित जाइये ॥

मुहिं अपने जियको डर नाहीं ❀ शोच श्याम बलको उर माहीं ॥
अब उबार देखियत नहिं कोई ❀ बल मोहनहिं राखि को गोई ॥

१ विचार। २ चिट्ठी। ३ लिये। ४ हृदय।

बरु मोहिं राखै बाँधि नृपाला ❀ रहैं सदन बल मोहन लाला ॥
नन्द वचन सुनि सब ब्रजबासी ❀ भये दुखित मन परम उदासी ॥
काहू पै कछु बात न आई ❀ अति भय त्रसित गये मुरझाई ॥
चकित महा ब्रजबासी ठाढ़े ❀ मानहुं चित्र चित्र लिखि काढ़े ॥
नन्दघरन ब्रजनारि विचारैं ❀ अति व्याकुल नयनन जल ढारैं ॥
ब्रजहिं बसत सब जन्म सिरान्यो ❀ इहि विधि कंस न कबहुँ रिसान्यो ॥
कालीदहके फूल मँगाये ❀ कहो कौन विधि जात सो पाये ॥
अतिहि शोचवश सब नरनारी ❀ भये कंस भय बहुत दुखारी ॥
कोउ कह शरण चलो सब जाहीं ❀ शरण गये कहिये कछु नाहीं ॥
कोउ कह देहु जितो धन चाहैं ❀ ऐसे सब मिलि बुद्धि उपाहैं ॥

दोहा—यहै शोच सब मिलि पगे, नहीं कहूं निरबार ॥
ब्रज भीतर नँद भवनमें, घर घर यही विचार ॥
सो०—अन्तर्य्यामी जानि, खेलत ते आये घरहिं ॥
देखतही नँदरानि, दृग भर लिये लगाय उर ॥

चितवत माता कुँवर कन्हाई ❀ बूझत कत रोवत दुख पाई ॥
बूझहु जाय तात सों बाता ❀ मैं बलि जाउँ बदन जलजाता ॥
तुमहीं काज कंस अकुलाई ❀ बाहर मत कहुँ जाहु कन्हाई ॥
जाय तातको शोच मिटावो ❀ अपने मधुरे बचन सुनावो ॥
आयो श्याम नंद पै धायो ❀ जान्यो मात पिता दुख पायो ॥
बूझत नंदहि कुँवर कन्हैया ❀ तात दुखित कत तुम अरु मैया ॥
मोसों बात कहो किन सोई ❀ कहा शोच वश हो सब कोई ॥
नंदलाल कनियां बैठारे ❀ कहा कहौं तुम सों मैं प्यारे ॥
जबते जन्म भयो सुत तेरा ❀ करत कंस तुमसों अरुझेरा ॥

१ गृह । २ अतिशय । ३ लवलीन । ४ गृह । ५ अन्तरके जाननेहारे । ६ आँखें । ७ मीठे

केतीकरवर[1] टरीं तुम्हारी * कुलदेवन कीन्हीं रखवारी ॥
प्रथमहिं अधम पूतना आई * शकट तृणा पुनि आयो धाई ॥
वत्सबका अघ पुनि दुख दीन्हों * सबते ताहिं राखि विधिलीन्हों ॥
दोहा—कालीदहके फूल अब, पठये भूप मँगाय ॥
सबते यह गाढी परी, को करि लेय सहाय ॥
सो०—जो नहिं आवैं फूल, लिख्यो कंस मोहिं डाटिकै ॥
करौं ब्रजहिं निर्मूल[2], बांधि मँगाऊं तव सुतन ॥
बाबा तुम काहे दुख पाई * कहत कौन धौं करै सहाई ॥
सो देवता ब्रजहिंके माहीं * रहत हमारे संग सदाहीं ॥
लीन्हों जिन सब ठौर बचाई * करिलैहैं सोइ देव सहाई ॥
सोई कंसहि फूल पठैहै * ब्रजवासिनको शोच मिटैहै ॥
कंस केश[3] गहि सोई मारै * असुर मारि भूभार उतारै ॥
सब मिलि सोई देव मनावो * अपने मनते शोच मिटावो ॥
सुनत महर हरि मुखकी बानी * भये सुखी धीरज उर आनी ॥
इष्ट[4] देवको शीश नवायो * जहां तहां तुम श्याम बचायो ॥
शरण शरण प्रभु शरण तुम्हारी * अबहूं करहु सहाय हमारी ॥
जाते कंस त्रास मिटि जाई * रहैं सुखी बलराम कन्हाई ॥
मात पितहि हरि इहि ढँगलाई * आप चले खेलन हरषाई ॥
सखन मध्य[5] गये कुँवर कन्हाई * कह्यो खेलिये गेंद मँगाई ॥
दोहा—श्रीदामा यह सुनतही, गयो धाम[6] निज[7] धाय ॥
अपनी गेंदल आयके, दीन्हों हरिको आय ॥
सो०—चलो खेलिये धाय, बाहर घोष निकासिकै ॥
जहँ कोउ आय न जाय, गेंद खेल बनिहै तहाँ ॥

१ बलायें । २ जड़ते उजाड़ । ३ बाल । ४ कुलदेवता । ५ बीच । ६ घर । ७ अपने ।

सखन संगले बाहर जाई ❀ रच्यो गेंदको खेल कन्हाई ॥
इक मारत इक भाजत जाहीं ❀ रोकलेत इक बीचहि माहीं ॥
आपस मांझ परस्पर मारैं ❀ नाना रँग करिकै किलकारैं ॥
भाजत मारत दूजो जाहीं ❀ मारत धाय बहुरि सो ताहीं ॥
श्याम सखनको खेलत माहीं ❀ यमुना तट तन लीन्हें जाहीं ॥
आपन जात कमलके लालन ❀ सखा संग लीन्हें सब ख्यालन ॥
को जानहिं यह हरिके ख्याला ❀ यमुना निकट गये सब ग्वाला ॥
श्याम सखाको गेंद चलाई ❀ अंगमोर सो गयो बचाई ॥
परी गेंद यमुना जल माहीं ❀ ह्वै गयो खेल भंग तिहि ठाहीं ॥
पकरी धाय फेंट श्रीदामा ❀ मेरी गेंद देहु तुम श्यामा ॥
जान बूझ तुम गेंद गिराई ❀ बनिहै दीन्हें गेंद मँगाई ॥
और सखा मोको मति जानों ❀ मोसों मतिहिं ढिठाई ठानों ॥

दोहा—सखा हँसत सब तारि दे, भली करी तुम कान्ह ॥
दीन्ही गेंद बहाय जल, देहु श्रीदामहिं आन्ह ॥

सो०—सकल लोक शिरताज, पार न पावैं ब्रह्मशिव ॥
ताहि गेंदके काज, फेंट पकरि झगरत सखा ॥

छांडि देहु मेरि फेंट सुदामा ❀ रारि बढावत थोरेहि कामा ॥
बदले गेंद लेहु तुम मोसों ❀ फेट न गहौं कहौं मैं तोसों ॥
छोटो बडो न जानत काहू ❀ करत बराबर पकरत बाहू ॥
हम काहेको तुमहिं बराबर ❀ तुम उपजे अब बडे नंदघर ॥
ऐसे हम अब गये बिलाई ❀ तुमहु बराबर नाहिं कन्हाई ॥
सुनहु श्याम हम तुम इकजोटा ❀ कहा भयो तुम नंदके ढोटा ॥
गेंद दियेही बनै मँगाई ❀ मोसों चलि है नाहिं ढिठाई ॥

१ किनारे। २ झगडा। ३ न रहें।

मुँह सँभारि बोलत नाहिं मोसों * करिहौं कहा धुताई तोसों ॥
पुनि पुनि करत बराबर आई * तैं नाहिं जातन मोरि धुताई ॥
प्रथम पूतना शकटा मार्‍यो * कागासुर अरु तृणा पछार्‍यो ॥
बत्स बकासुर बनके माहीं * मार्‍यो सो कह जातन नाहीं ॥
अघ मार्‍यो पुनि देखत तोहीं * ऐसो धूत न जानत मोहीं ॥

दोहा—तुम मारे सो सांच सब, कतहीं लाल डराहु ॥
कंस कमल अब देहु तब, हमहिं मारियो जाहु ॥

सो०—कालिहहिपारिहै जानि, पकरि मँगैहै कंस जब ॥
देत फूल किन आनि, बहुत अचकरी करि रहे ॥

सांच कहौं मैं सुनु श्रीदामा * आयो इहां फूलके कामा ॥
कितक बापुरो कंस बतायो * जाके भय तुम मोहिं डरायो ॥
केश पकरि गहि ताहि पछारों * देखहुगे तुम देखत मारों ॥
कोटि कमल तिहि आज पठाऊं * बजते ताको त्रास नशाऊं ॥
कालीदह जल पियत मरे सब * गहि ल्याऊं सोई काली अब ॥
लीन्हीं रिस करि फेंट[2] छुडाई * चढे कदम पर धाय कन्हाई ॥
नीचे सखा हँसन सब लागे * श्रीदामाके डर हरि भागे ॥
रोय चले श्रीदामा घरको * जाय कहत मैं महरि महरको ॥
टेरत[3] कहि कहि सखा कन्हाई * लेहु गेंद मैं ल्यावत जाई ॥
यहकहिनटवर मदन गोपाला * कूदि परे जलमें नँदलाला ॥
हाय हाय करि सखा पुकारे * भयेश्यामाबिन बहुत दुखारे ॥
रोवत चले ब्रजहिं सब धाई * श्रीदामाको दोष लगाई ॥

दोहा—कोमल तनु अतिसाँवरो, साजे नटवर साज ॥
जलमें पैठि गये तहां, जहँ सोवत अहिराज ॥

१ धूर्तता । २ कमर । ३ पुकारना

सो०—यहि अंतर हरिमाय, भूखेहैं हैं जानि हरि ॥
खेलत ते अब आय, मोसों भोजनमांगिहैं ॥
यशुमति चली रसोई कारन * तबहीं छींक उठी इक ग्वालन ॥
ठिठकिरही उर शोचत ठाढी * भली नहीं कछु चिंता बाढी ॥
आई अजिर निकसि पछिताई * चली बहुरि सो दोष मिटाई ॥
माँजारी तब पंथ कटाई * बहुरो यशुमति बाहर आई ॥
व्याकुल भई निकरि गइ द्वारे * कह धौं खेलत मेरे बारे ॥
बायें काग दाहिने स्वर खरे * सुनिआई अतिव्याकुलफिरघर॥
क्षण बाहर क्षण आंगनमाहीं * टेरत हरिहि शांतमन नाहीं ॥
तबहीं नंद चले घर आवत * देख्यो श्वान श्रवण[२] फट कारत॥
दहिने काहू रोय सुनायो * माथेपर है काग उड़ायो ॥
सन्मुख गररी करत लराई * डरे नंद अशकुन बहु पाई ॥
आये घर मन मलिन विशेखी * व्याकुल मलिन वदन तियदेखी॥
बूझत यशुदहि नंद डराई * काहे तव मुख गयो झुराई ॥
दोहा—चली रसोई करन हौं, छींक भई मुहिं आज ॥
आगे है माँजारि पुनि, गई दूसरे भाज ॥
सो०—तबते मोजिय शोच, हरिधौं खेलत है कहां ॥
समुझ कंस कृत पोच[४], मेरे मनमें त्रास[३] अति ॥
नंद कहत पैठत घर माहीं * मोहिं शकुन नीके भय नाहीं ॥
आज कहा यह समुझि न जाई * हैं धौंकित बलराम कन्हाई ॥
महरि महर मन त्रास जनाई * खोजत हरिहि चले अकुलाई ॥
सखा सकल इहि अंतर धाये * रोवत ब्रजहि पुकारत आये ॥
महरि महर सों आय जनाई * यमुना बूडे कुँवर कन्हाई ॥

१ गधा । २ कान । ३ भय । ४ नीच ।

सुनि दम्पति बूझत अकुलाई ❀ कैसे कहाँ कहो समुझाई ॥
खेलत कदम चढे हरि धाई ❀ कूदि परे कालीदह जाई ॥
सुनतहि परी धरणि महँ मैया ❀ कीनो सपनो सत्य कन्हैया ॥
रोवत नंद यमुन तट आये ❀ बालक सब नंदहि संग धाये ॥
ब्रज घर जहां तहां यह बाता ❀ ब्रजबासी धाये बिलखाता ॥
कहां पर्‍यो गिरि कुँवर कन्हाई ❀ दई बालकन ठौर बताई ॥
त्राहि त्राहि करि नंद पुकारे ❀ गिरे धरणि नाहिं अंग सँभारे ॥
दोहा—लोटत अति व्याकुल धरणि, परन चलत जल धाय ॥
कहत श्याम तुम दियो दुख, मोको बैस बुढाय ॥
सो०—लोग उठे सब रोय, दीन वचन सुनि नंदके ॥
कहत विकल सब कोय, हरि तुम ब्रजसूनो कियो ॥
नंदहि गिरत सबहि गहि राख्यो ❀ ताक्षणको दुख जात न भाख्यो ॥
कहत गोप नंदहि समुझाई ❀ बन्यो मरण सबही को आई ॥
हरि बिनको जीवै ब्रजमाहीं ❀ कहो काह्न किहि जीवन नाहीं ॥
मोहमगन अति यशुमति मैया ❀ टेरत मेरे लाल कन्हैया ॥
आज कहां तुम बेर लगाई ❀ माखन धर्‍यो खाउ किन आई ॥
अति कोमल तुम्हरे मुख योगू ❀ जेवहु लाल लेहुँ मैं रोगू ॥
धौरी दूध धर्‍यो औटाई ❀ तुम निजकर दुहि गये अन्हाई ॥
सदमाखन अतिहित मैं राख्यो ❀ आज नहीं तुमने कछु चाख्यो ॥
प्रातहिते मैं दियो जगाई ❀ दँतवन करि जु गये दोउ भाई ॥
मैं चितवत तव पंथ कन्हाई ❀ देखत आज अबार लगाई ॥
बैठो आय संग दोउ भैया ❀ तुम जेंवह मैं लेहु बलैया ॥
शोकसिंधु बूडत नँदरानी ❀ तनुकी सुधि बुधि सबै भुलानी ॥

नंदयशोदा। २ रांते पीटते। ३ अवस्था। ४ पकर

दोहा—ब्रज युवती सुनि महरिके, वचन प्रेम आधीर ॥
अकुलानीं रोवत सबै, बढी कठिन उर पीर ॥
सो०—बरजत यशुदहिं ग्वाल, यह कहि कहि हरि ह्वैगले ॥
सुत बियोग विकराल, जात नहीं कहि मातको ॥
चौंक परी तनुकी सुधि आई * रोवत देखे लोग लुगाई ॥
तब जानीं दहगिरे कन्हाई * पुत्र पुत्र कहिके उठि धाई ॥
ब्रज वनिता सब संगहि लागीं * श्याम वियोग बिथा सब पागीं॥
कान्हकान्ह कहि सकल पुकारैं * तोरतलट उरसौं कर मारैं ॥
अति व्याकुल यमुनातट जाई * गिरी धरणि यशुमति अकुलाई ॥
मुरझि परी तनुदशा भुलाई * प्राण रह्यो हरि सुरतिसमाई ॥
ब्रजवासी सब उठे पुकारी * जल भीतर कहँ करत मुरारी ॥
शंकटमें तुम करत सहाई * अबक्यों नाहिं बचावत आई ॥
मात पिता अतिही दुख पावैं * रोय रोय सब कृष्ण बुलावैं ॥
आय गये हलधर तेहि काला * देखी जननी विकल बिहाला ॥
नाक मूंदि जल सींचि जगाई * जननी कहि कहि टेर लगाई ॥
बार बार जब हलधर टेर्‌यो * भयो चेत कछु बलतनु हेर्‌यो ॥
दोहा—कहत उठी बलरामसों, बनहि तज्यो लघु भ्रात ॥
कान्ह तुमहिं बिन रहत नहिं, तुमसों क्यों रहि जात ॥
सो०—मगन शोच सर मांझ, कहत लै आवहुकान्ह कोउ ॥
भूखे ह्वैगइ सांझ, आज कछू खायो नहीं ॥
कबहुँ कहत बनगयो कन्हाई * कबहुँ बतावत घर समुहाई ॥
कान्ह कान्ह कहि टेर लगावै * कित खेलत कहि लाल बुलावै ॥
अतिही मोह बिकल नँदरानी * करत बोध हलधर मृदुबानी ॥

१ लडका। २ बिछोहा। ३ सम्पूर्ण। ४ ध्यान। ५ माता।

कत रोवत तू यशुमति मैया ❀ नीके हैं घरु धीर कन्हैया ॥
श्यामहिं नेक कहूं डर नाहीं ❀ तू कत डरपत है मनमाहीं ॥
तेरी सौं मैं कहत पुकारे ❀ वह काहूके मेरे न मारे ॥
जिन काली भयहोहु दुखारी ❀ तू अपने मन देखु विचारी ॥
पहिले बकी कपट करि आई ❀ तब दिन दश के हते कन्हाई ॥
शकटा तृणावर्त्त पुनि आयो ❀ तू देखत हरि तिन्हैं नशायो ॥
वत्स बका अघ बनमें मारे ❀ विष जलते सब सखा उबारे ॥
अब वे कालीनाथ लैऐहैं ❀ कमल पठाय कंसको देहैं ॥
मोहिं भरोसो कान्हर केरो ❀ मानों सत्य कह्यो सुनु मेरो ॥

दोहा—मोहिं दुहाई नंदकी, अबहीं आवत श्याम ॥
नाग नाथ लै आवहीं, तौ कहियो बलराम ॥

सो०—सुनि हलधरके बैन, अति उदार हरिके चरित ॥
भयो कछुक उर चैन, जो कछु करहिं सु सोह सब ॥

बांह पकरि बलको बैठाई ❀ लै बलाय उर रही लगाई ॥
अति कोमल तनुधरे कन्हाई ❀ पहुंचे कालीके ढिग जाई ॥
हरिको देखि उरँगकी नारी ❀ रही चारुमुख चिह्न निहारी ॥
कहत कौन तू इत कित आयो ❀ अति कोमल तनु काको जायो ॥
बारहि बार कहति अकुलाई ❀ वेगि भाज इतते कित जाई ॥
देखै नाग जागकै जबहीं ❀ ह्वै है भस्म क्षणक में तबहीं ॥
सुनत नाग नारीकी वाणी ❀ बोले हँसि हरि सारँगपाणी ॥
पठयो माहिं कंस नृपराई ❀ तू याको अब देहु जगाई ॥
कंस कहा तू इनहिं बतैहै ❀ एक फूंकमें तू जरिजैहै ॥
अजहूं भाजि कह्यो करि मेरो ❀ लगत छोह देखत तनु तेरो ॥

१ कसम । २ माऱ्यो । ३ वचन । ४ सर्प-काली । ५ । स्त्री । ६ मोह

मरहु कंस जिन तोहिं पठायो ❋ तू कत इहां मरणको आयो ॥
बालक जानि दया अति मेरे ❋ दुख पैहैं पितु माता तेरे ॥
दोहा—अरी बावरी सर्प्पसों, कहा डरावत मोहिं ॥
जैसो मैं बालक प्रकट, अबहिं दिखावहुँ तोहिं ॥
सो०—तू किन देत जगाय, देखौं मैं याके बलहि ॥
यापै कमल लदाय, लैजैहौं इहि नाथ ब्रज ॥
सुनत वचन अहिनारि रिसानी ❋ छोटे वदन कहत वडिवानी ॥
खगपतिसों सरवर जिनठानी ❋ ताहि कहत नाथन अज्ञानी ॥
देखतहि ह्वैहै जर छारा ❋ केतिक तू बपुरो सुकुमारा ॥
बपुरो मोहिं कहत अहिनारी ❋ बोलत नाहिन बात सँभारी ॥
अबहीं तोहिं बपुरि करि डारौं ❋ एकहि लात खसम तुव मारौं ॥
सोवत काहू मारिय नाहीं ❋ चलि आई है बात सदाहीं ॥
ताते तु पति देहि जगाई ❋ देखौं मैं याकी मनसाई ॥
जो पै तोहिं मरन बुधि आई ❋ तौ तूही किन लेत जगाई ॥
तब हरि झटकि ताहि देगारी ❋ दाबी चरण पूंछ अहिकारी ॥
मसकी नेक धरणि सो लाई ❋ काली उरग उठ्यो अकुलाई ॥
आयो जानि गरुड भय बाढ्यो ❋ देख्यो बालक आगे ठाढ्यो ॥
तबहिं क्रोध करि गर्व बढायो ❋ झटकि पूंछ अति रिसकरि धायो ॥
दोहा—दांव घात लाग्यो करन, सहसौ फन फटकार ॥
बार बार फुंकार कर, डारत विषकी झार ॥
सो०—जरत यमुनको नीर, जात फेन उतरात विष ॥
परसत नाहिं शरीर, अरि मर्द मोचन श्यामके ॥
कियो युद्ध बहु उरग अघाई ❋ मुरे नहीं नेकहु यदुराई ॥

१ गरुड । २ छोटा । ३ पति । ४ पृथ्वी । ५ सहस्र-हजार । ६ पानी । ७ स्पर्श । ८ कालीका गर्व निवारणवारे ।

कहत परस्पर अहि की नारी * देखहु यह बालक अति भारी ॥
विषज्वाला जल जरत यमुनको * याके तनु परसत नहिं तनको॥
यह कछु मंत्र यंत्र धौं जानै * अतिकोमल विष नेक नमानै ॥
सहसौ फनन करत अहि घाता * अबलौं बच्यो पुण्य पितु माता॥
तब अहिराज श्याम तन हेरी * कहत पूंछ दाबी इन मेरी ॥
अतिहि क्रोधकरि आतुर धाई * हरिके अंग गयो लपटाई ॥
नखते शिखलौं अहि लपटाई * कहत करी इन बहुत ढिठाई ॥
कौतुकनिधि हरि सब गुण खानी * दियो दांव इहि अहिको जानी
तिहि अवसर सुर मुनि गन्धर्वा * अति व्याकुल आये ब्रजसर्वा॥
उरग नारि मन मन पछिताहीं * हरिको रूप समुझि मनमाहीं॥
कहैं गर्वकरि अति यहआयो * काल विवश पगइतहिं चलायो॥

दोहा—काली हरिसों लिपटकै, गर्व कियो मनमांह ॥
कहत मोहिं जानत नहीं, मैं सर्पनको नांह ॥

सो०—भंजन गर्व गोपाल ,गर्व भरे सुनि अहि वचन ॥
कीन्हो वपुष बिशाल, बिकल भयो अहिराजतन ॥

जबहिं श्यामतन अति विस्तारो * टूटन लग्यो अंग सब सारो ॥
शरण शरण तब उरग पुकारो * मैं नहिं जान्यो रूप तिहारो ॥
जीवदान प्रभु मोंको दीजे * अपनी शरण राखि मोहिं लीजे ॥
यह वाणी सुनतहि भगवाना * सकुचि गये हरि कृपानिधाना॥
यहै बचन गजराज सुनायो * गरुड छांडि ताके हित आयो ॥
यहै वचन सुनि द्रुपदसुताको * बसन बढाय दियो पुनि वाको ॥
यहै वचन सुनि लक्षा गृहते * लीने राखि पाण्डवन जरते ॥
यह वाणी सहिजात न श्यामहिं * दीनबन्धु करुणाके धामहिं ॥

१ सिंहल । २ चोटी । ३ राजा । ४ शरीर । ५ गजेन्द्रमोक्ष,ग्वानका हाथी । ६ द्रौपदी । ७ लुगडा-वस्त्र ।

लीनो अंगसंकोच कृपाला ❁ देख्यो विकल शिथिल जब ब्याला[1] ॥
पगसो चापि नाक धरि फोरी ❁ लीनो नाथ हाथ गहि डोरी ॥
कूदि चढे हरि ताके शीशा ❁ मनमन करत विचार अहीशा ॥
मैं यह सुन्यो हतो विधि[2]पाहीं ❁ कृष्ण अवतार होहि ब्रजमाहीं ॥
दोहा–ते गोकुलमें अवतरे, मैं जान्यो निरधार ॥
ये अविनाशी ब्रह्म है, ब्रज कृष्णा अवतार ॥
सो०–किये बहुत फन घात, बार बार पछितात मन ॥
अस्तुति करत लजात, रह्यो दीन ह्वै सकुचि अति ॥
देख्यो ब्याल बिहाल कृपाला ❁ दियो दरश निज दीनदयाला ॥
देखि दरश मनहर्ष बढाई ❁ बोल्यो दीन वचन अहिराई ॥
मैं अपराध कियो बिन जाना ❁ क्षमो नाथ तुम क्षमानिधाना ॥
तामस योनि कीट[3] विष जानों ❁ कौन भांति तुमको पहिचानों ॥
अब कीन्हों प्रभु मोहिं सनाथा ❁ दीनों दरश जगतके नाथा ॥
अशरण शरण नाथ तव बाना ❁ कहत सन्त सब वेद पुराना ॥
ते अपराध क्षमा सब कीजे ❁ अब प्रभु शरण राखि मोहिं लीजे ॥
आज धन्य यह मेरो माथा ❁ जापर चरण दिये मम नाथा ॥
अब ये चरण परसि प्रभु तेरे ❁ मिटे दोष दुख अघ[4] सब मेरे ॥
जो पदकमल पुनीत तुम्हारे ❁ निशिदिन रहत रमा उर धारे ॥
शिवविरञ्चिसनकादिकध्यावैं ❁ जे पद योगी ध्यान लगावैं ॥
जे पदपद्म सलिल सुर सरिता[5] ❁ तीन लोककी पावन करता ॥
दोहा–जिन पदपंकज[6] परसते, गति पाई ऋषि नारि ॥
सुर नर मुनि वन्दित तिन्हैं, सन्तत[7] प्राण अधारि ॥
सो०–फिरत चरावत गाय, श्रीवृन्दाबन जे चरण ॥

१ नाग । २ ब्रह्मा । ३ कीडा । ४ पाप । ५ आकाशगंगा । ६ कमलसे पद । ७ सदैव ।

भक्तनके सुखदाय,ब्रजबासी जन दुख हरण ॥
जे पद पंकज परम सुहाये * प्रभु मैं आज सुलभ[1] करि पाये ॥
गरुड त्रास ते इत भजि आयो * भलो कियो मोहिं गरुड सतायो॥
जाते दरश भयो प्रभु तेरो * अब भय ताप मिट्यो सब मेरो ॥
आज भयो मैं नाथ सनाथा * गह्यो नाथ मम प्रभु निज हाथा॥
सुनत दीन कालीकी बानी * दीनबन्धु अतिशय सुख मानी॥
फनप्रति चरण सरोज छुवाये * ताके सब सन्ताप[2] नशाये ॥
तब ब्रजनाथ भक्तहितकारी * यह अपने मनमाहिं विचारी ॥
कालीको ब्रज देश दिखैये * कमल भार[3] या पैलै जैये ॥
हैं हैं ब्रजके लोग दुखारी * करौं जाय अब तिनहिं सुखारी॥
कमल कंसको देउँ पठाई * कालिह चढैगो ब्रजपर आई ॥
लीन्हे अहिपर कमल लदाई * चले ब्रजहि ब्रज जन सुखदाई॥
लियो नाथ[4] गहि अहि उचकाई * फनपर ठाढे कुँवर कन्हाई ॥
दोहा—उरगनारि[5] कर जोरि कै,प्रभुके सन्मुख आय ॥
करत विनय अति दीन ह्वै,पति हित हरिहि सुनाय ॥
सो०—इत यशुमति उर माहिं,उठी लहर अति प्रेमकी ॥
कान्हर आयो नाहिं,कहत रोय बलराम सों ॥
कहत राम सुनु यशुमति मैया * अबहीं आवत कुँवर कन्हैया ॥
नेक धीर धरु मति अकुलाई * यह सुनि कै बलकी बलि जाई ॥
पुनि यह कहत कान्ह नाहिन अब * झूठहिं मोहिं प्रबोध[6] करत सब॥
भई बिना सुत व्याकुल मैया * कहत कहां मेरो बाल कन्हैया ॥
गिरी धरणि व्याकुल मुरझाई * रोय उठे सब लोग लुगाई ॥
ब्रजबासी सब भये बिहाला * कहत कहां मोहन नँदलाला ॥

१ सहज । २ दुःख । ३ बोझ । ४ कालीकी नाथ पकड । ५ कालीकी पत्नी । ६ समझावता ।

तुम बिन यह गति भई हमारी * आवत नहीं धाय बनवारी ॥
प्रातहिते जल माझँ समाने * तुमहि बिना युग याम बिहाने॥
अबको बसे जाय ब्रजमाहीं * धृग धृग जीवन तुमहिं बिनाहीं॥
अति व्याकुल रोवत नँदरा कल मनहुँ फणि मणी गँवाई॥
यशुमति धाय चलत जलमा ज युवती गहि बाहीं॥
हलधर सबहिनको समझावैं * बिना श्याम कोउ धीर न पावैं ॥

दोहा—कहत यशोदा नंदसों, धृग धृग बारहिं बार ॥
और किते दिन जियहुगे, मरत नहीं मोहिं मार ॥

सो०—कर देखहु मन ज्ञान, ऐसे दुखमें मरण सुख ॥
नंद भये बिन प्रान, मूर्छि परे सुनि तिय वचन ॥

तबहिं धाय बल पिता जगायो * बार बार कहि कहि समुझायो ॥
वृथा मरत काहे सब कोई * कान्हर मारनहार न कोई ॥
हलधर कहत सुनहु ब्रजबासी * वे अन्तर्य्यामी अविनाशी ॥
सब गुणसागर आनँद राशी * रमा सहित जलधीके बासी ॥
मेरो कह्यो सत्य करि मानो * आवत श्याम धीर उर आनो ॥
यमुनाके भीतर तिहि काला * उठ्यो सलिल झकझोर बिशाला॥
बोलि उठे आतुर बलरामा * वे देखो आवत घनश्यामा ॥
सुनत वचन लखिकै उठि धाये * यमुना नीर तीर सब आये॥
कोउ जलमें कोउ बाहर ठाढे * दरशातुर विरहानल बाढे ॥
प्रगट भये जलते तेहिं काला * ब्रज जन जीवन नंदके लाला ॥
कमल भार काली पर लीन्हे * नटवर भेष मनोहर कीन्हे ॥
भये सुखी सब ब्रजके बासी * लखि हरि बदन परम सुखराशी॥

छं०—हरि वदन लखि कै राशि सुखकी, मुदित ब्रजबासी भये॥

१ दशा। २ धिक्कार-तुच्छ। ३ दौड़। ४ श्रीकृष्ण। ५ नाश नहीं। ६ पानी। ७ दुःखसे भरे। ८ देखकर। ९ मनको लुभानेहारा। १० प्रसन्न।

मनहुँ बूडत नाव पाई, परम उर आनँद छये ॥
मात पितु लखि जो भयो सुख, जात सो कापै कह्यो ॥
पुलकतनमन हरषि गद्‌गद, प्रेम जल लोचन बह्यो ॥
चकित हरितन लखत इकटक, मिलनको आतुर हियो ॥
श्याम निरतत[1] अहिफनन पर, खौर चन्दनतनु कियो ॥
श्रवण कुण्डल लाल लोचन, चारु मुकुट बिराजहीं ॥
मनहुं मरकत गिरि शिखर मणि, मोर तापर राजहीं ॥
पीतपट कटिकाछनी उर, माल मणि भूषण सजे ॥
नृत्य ताण्डव करत फण प्रति, व्योम[2]दिव दुन्दुभि बजे ॥
भई जय ध्वनि गगन वर्षहिं, सुमन[3] सुर आनँद भरे ॥
गन्धर्व गुण गण गगन गावत, तान तालन अनुसरे ॥
उरगनारी श्याम सन्मुख, करत अस्तुति आवहीं ॥
नाथ अब अपराध क्षमि करि, करि कृपा पति पावहीं ॥
राखे चरण निज शीश याके, अति बडाई इन लई ॥
ऐसी बडाई औरको प्रभु, नाहिं तुम कबहूं दई ॥
शेष इक ब्रह्माण्ड भरि शिर, राखि मन गर्वित कियो ॥
कोटि कोटिब्रह्माण्ड तव तन, अधिक इन यह भरिलियो ॥
सुर असुर नर नाग खग मृग, कीट जन सब रावरे ॥
क्षमिय अब अपराध अहि के, शुभग सुन्दर सांवरे ॥
दोहा—सुनि अहि नारिनके वचन, करुणामय यदुराय ॥
उतरि परे अहिशीशते, यमुनाके तट आय ॥
सो०—तट पर कमल धराय, कालीको आयसु[4] दियो ॥
उरग द्वीप अब जाय, करहु बास निर्भय सदा ॥

१ नाचत । २ आकाश । ३ पुष्प । ४ आज्ञा

तब काला
धनि ऋषि शाप दियो है ताहा   ात आय सकत ह्या नाहीं ॥
तब मैं भागि बच   हिं सो खाई ॥
चरण चिह्न लखि तव फण मेरे   परिहै गरुड आय पग तेरे ॥
तू अब मति खगपतिहि डराई   अपने द्वीप करहु सुख जाई॥
वाते बडो कौन सुखनाथा   अभयदान पद परस्या माथा ॥
जे पद कमल भजन परतापा   जन प्रहलाद मिटे सन्तापा ॥
ते पद चिह्न शीश पर धारी   जन्म जन्मको भयो सुखारी॥
उरगिन सहित नाइ पद माथा * गयो उरग द्वीपहि अहिनाथा ॥
जैजै ध्वनि नभसुरन बखानी * धन्य धन्य जनके सुखदानी ॥
शरण राखि काली अहि लीन्हों * जलते काढि कृपा करि दीन्हों ॥
फन पर चरण चिह्न प्रगटाई * कठिन गरुडकी त्रास[3] मिटाई ॥
दोहा–धन्य धन्य प्रभु धन्य कहि, मुदित[4] सुमन बर्षाय ॥
गये देव निज निज सदन[5], हृदय परम सुख पाय ॥
सो०–द्वीप पठायो व्याल, सुरगण सुर लोकहिं पठे ॥
आयो निकसि गोपाल, ब्रजबासी जन सुखकरन ॥
धाय मिले सगरे ब्रजबासी * विरह ताप तनकी सब नाशी ॥
माता दौरि कण्ठ लपटानी * पुलकरोम तन गदगद बानी ॥
नयन नीर अति प्रेम अधीरा * उर लगाय मेटत उर पीरा ॥
कहि कहि मेरो बाल कन्हैया * दुहूं करन सों लेत बलैया ॥
धाय नन्द उर सों लै लाये * गये प्राण मानहु फिरि आये ॥
गदगद बैन नयन जल ढारो * कहत जन्म फिरि भयो तुम्हारो ॥
बार बार उर सा लपटावत * दारुण उरकी ताप नशावत ॥

१ गरुड । २ दुःख । ३ डर । ४ प्रसन्नतासे । ५ गृह

प्रेमाकुल देखी बल माता * मिले रोहिणी सों सुखदाता ॥
निरखिवदन कह यशुमति मैया * मैं बरजौं नित तुमहिं कन्हैया॥
यमुना तीर न्हान मति जाहू * तुम बरजो मानत नहिं काहू ॥
मैं निशि सपने मांझ डरान्यो * सोई कछू आय प्रकटान्यो ॥
कंस कमलके फूल मँगाये * ब्रजवासी सब अतिहि डराये ॥

दोहा—मैं गेंदहि खेलत यहां, आयों यमुना तीर ॥
मोहिं डारि काहू दियो, कालीदहके नीर[1] ॥

सो०—देख्यो उरग बिशाल, जाय तहां मैं डरो अति ॥
तब पूंछ्यो मोहिं व्याल, किन पठयो तोको इहां ॥

जब ऐसे मैं ताहि बतायो * कमल काज मोहिं कंस पठायो ॥
यह सुनतहिं अहि उठयो डराई * मोको फनपर लियो चढाई ॥
कमल लियो निज पीठ लदाई * आपुहि आय गयो पहुँचाई ॥
ऐसे जननी बोधं[2] कृपाला * सुनत वचन सब ब्रजकी बाला॥
लै लै हरिको उरसों लावैं * कठिन विरहकी शूल[3] मिटावैं॥
श्याम बिना बहुतै दुख पायो * सो हरि तिनको ताप नशायो ॥
लखे सखा सब आरत बाढे * प्रेमातुर मिलवेको ठाढे ॥
गये दौरि तिन पास कन्हाई * मिले धाय सब कण्ठ लगाई ॥
कहत सखा धनि धन्य कन्हैया * जो तुम कह्यो कियो सोइ भैया॥
तुम हो सब ब्रजके सुखदानी * कंस मारिहौ तुम हम जानी ॥
कहा भयो जो तुमहो बारे[4] * हैं तुम्हरे गुण सब ते न्यारे[5] ॥
भलो यदपि सिंहनको छोटो * कौन काज गज लम्बो मोटो ॥

दोहा—तुम हम पर रिस करि गये, सो अब देहु भुलाय ॥
यह सुनतहि हरि हँसि उठे, मिले बहुरि हरषाय ॥

१ जल । २ समझाकर । ३ पीडा । ४ छोटे । ५ पृथक् ।

सो०–जब हलधर अरु श्याम, मिले बिहँसि दोउ मन हिंमन ॥
निरखि मगन नरवाम, भेद न कोऊ जानहीं ॥
सब कोउ कहत धन्य बलरामा ※ तुम जो कही करी सोइ श्यामा ॥
तब हरि कह्यो नंदसों जाई ※ मेरे मनहिं बात यह आई ॥
आज बसैं सब यमुना तीरा ※ अति रमणीक सुगन्ध समीरा ॥
इहां कीजिये भोग विलासा ※ होत प्रात सब चलहिं अबासा ॥
कमल पठाय कंसको दीजे ※ सुनहु तात अब विलँब न कीजे ॥
गोप जाय आवैं पहुँचाई ※ कालिह चढै नतु ब्रजपर धाई ॥
यह सुनि नन्द बहुत सुख पायो ※ सब ब्रजवासिनके मन भायो ॥
तुरत ग्वाल बहु घरन पठाये ※ षटरस भोजन बहुत मँगाये ॥
यमुनातीर गोप समुदाई ※ भोजन कियो बहुत सुख पाई ॥
नंदराय तब शकट मँगाये ※ कोटि कमल तिनपर लदवाये ॥
बहुत भार दधि घृतके कीन्हे ※ ते अहिरन कांधे धर लीन्हे ॥
अपनी सरजे गोप सुहाये ※ तिनहिं संग करि नृपहिं पठाये ॥
दोहा–बहुत विनय करि कंसको, दीन्हों पत्र लिखाय ॥
कहियो मेरी ओरते, नृपसों ऐसी जाय ॥
सो०–गयो कमलके काज, कालीदह मेरो सुवन ॥
तुव प्रताप ते राज, आप गयो पहुंचाय अहि ॥
कोटि कमल नृप मांगि पठाये ※ तीनि कोटि तहँते हैं पाये ॥
सो राखे जल मांझ सजाई ※ आयसु होय तो देउँ पठाई ॥
तब गोपन सों कुवँर कन्हाई ※ ऐसे बोलि उठे मुसकाई ॥
नृपसों लीजो नाम हमारो ※ यह कारज हम कियो तुम्हारो ॥
कमल शकट दधि घृतके भारा ※ चले गोप ले नृपके द्वारा ॥

१ स्त्री । २ पवन । ३ घर । ४ छकड़ा । ५ पुत्र । ६ कालीनाग । ७ कंस ।

राजद्वार शकटन पहुँचाई ❀ जाय पौरियन खबरि जनाई ॥
तुरत पौरिया भीतर धाई ❀ समाचार सब नृपहि सुनाई ॥
सुनत बात यह मनहिं डरान्यो ❀ आपनिकासि आयो अतुरान्यो ॥
देखी शकट भीर अति भारी ❀ भयो चकित सुधि बुद्धि बिसारी ॥
कमलदेखि भय भयो बिशाला ❀ लगे ताहि मनो व्यालकराला ॥
नंद विनय तब गोपन भाषी ❀ दीनों पत्र भेंट सब राषी ॥
गोपन बहुरि कह्यो नृपराई ❀ नंदसुवन यह कह्यो कन्हाई ॥

दोहा—हम कालीदह जाय यह, कियो राजको काम ॥
नृप हमको जानत नहीं, कहियो मेरो नाम ॥

सो०—सुनत श्याम सन्देश, देखि कमल अति भय विकल ॥
भीतर गयो नरेश, मन बाढ़ी चिन्ता विपुल ॥

मनहीं मन यह करत विचारा ❀ यासों मेरो नाहिं उबारा ॥
दैत्य गये ते सबहि नशाये[१] ❀ काली ते ऐसे बचि आये ॥
ताहीपर कमलन लै आये ❀ सहँस[३] शकट भरि मोहिं पठाये ॥
कबहुं कहत गोपनको मारों ❀ इनको व्हांते तुरत निकारों ॥
फेर कछू मनमें भय पावै ❀ करत विचारन कछु बनि आवै ॥
पुनि सँभारि धीरज उन कीन्हो ❀ गोपन बोलि भीतरहि लीन्हो ॥
हृदय दुखित ऊपर सुख मानी ❀ पहिराये दीने मनमानी ॥
सरोपाव नन्दहुको दीन्हो ❀ कहियो काज बडो तुम कीन्हो ॥
तेरे सुत बलराम कन्हाई ❀ एक दिवस देखिहौं बुलाई ॥
यह सुनि अति पुरुषारथ कीन्हो ❀ कालीदहके फूलन लीन्हो ॥
यह कहि बिदा किये सब ग्वाला ❀ भयो कंस उर शोच विशाला
मनहीं मन शोचत हरिके गुन ❀ रह्यो काठ ज्यों भीतरही घुन ॥

१ सर्प । २ मारे । ३ हजार

दोहा—तब दावानल बोलि॰ ल्यो ताहि ॥
देखौं मैं तेरे बलहि, तू अब ब्रजको जाहि ॥
सो०—जाय कीजियो छार, ब्रज सब ब्रज वासिन सहित ॥
बचहिं न नन्दकुमार, ऐसो यत्न विचारि उर ॥
दावानल नृपकी सुनि बानी * चल्यो रिसाय गर्व उर आनी॥
करा भस्म इक पल मह जाइ * सहित गोप नँद सुवन कन्हाई ॥
नृपको काज आज करि आऊं जो कहुँ एक ठौरसब पाऊं ॥
इहां गोप कमलन पहुँचाई * आये यमुन तीर हरषाई ॥
नन्द तुरतसब निकट बुलाये *सुनत सकलब्रजजन जुरि आये॥
गोपन कही नन्द सों आई * लिये कमल नृप अति सुखपाई
दियो हर्ष तुमको पहिरायो * मुदित नन्द लै शीश चढायो ॥
अपने सब पहिराव दिखाये * लखि सब ब्रजवासिन सुख पाये
हरिको नाम सुन्यो जब राजा *हरषि कह्यो कीनो उन काजा ॥
इक दिन बल मोहन दुइ भाई * देखहुं गो मैं इहां बुलाई ॥
यह सुनि नन्द बहुत सुख पायो * हरषि भूप मो सुतन बुलायो
करी कृपा अति नृप हरि पाहीं *सब नर नारि हरषि मन माहीं ॥
दोहा—कहत श्याम बलराम सों, हँसि हँसि कै यह बात॥
नृप हम तुम देखन लिये, कह्यो बुलावन तात ॥
सो०—ब्रज जन परम हुलास, इक सुख हरि अहिते बचे ॥
मिट्यो कंसको त्रास, दुतिय कमल पठये नृपाहिं ॥

॥ अथ दावानलवर्णनलीला ॥

यहि विधि ब्रजजन अति सुखपायो, खान पान करिदिवसबितायो
सोये सब मिलि यमुना तीरा * राखि हृदय सुन्दर बलबीरा ॥

---

१ भेद । २ राख । ३ हर्षित । ४ पिता । ५ कालीनागसे ।

वहां असुर दावानल आयो ❀ चाहतहै सब ब्रजहि जरायो ॥
देखे सब ब्रजजन इकठाहीं ❀ कियो हर्ष अपने मन माहीं ॥
प्रकटी दावानल चहुँ ओरा ❀ अतिहि प्रचण्ड पवन झकझोरा॥
दशहू दिशिते घेरत आवै ❀ तृण[१] तरु खग मृग जीव जरावै ॥
जागि परे सब ब्रज नर नारी ❀ कहैं चहूं दिशि लगी दवारी[२] ॥
भये चकित सब अति मन माहीं ❀ काहू दिशि मग[३] दीखत नाहीं॥
चहत चलन भजि नहीं निकासू ❀ लेत सबै भरि शोच उसासू ॥
आयगई दव अतिहि निकटहीं ❀ चले कहत सब यमुना तटहीं॥
अब न देखियत कहूँ उबारा ❀ बढी अनल पहुँची नभ[४] झारा॥
ब्रजके लोग अतिहि अकुलाने ❀ जरे सकल मनमांझ डराने ॥

छं०—अति विकल सब डरे ब्रज जन, देखि अनल[५] भयावनो॥
भई धर[६] नभज्वाल पूरण, धूम धुंध डरावनो ॥
लपट झपटत जरत तरुवर, गिरत महि भहरायके ॥
उठत शब्द अघात चहुँदिशि, बढत झर झह रायके ॥
फटत फल फूटत पटकदल, जरत बरत लताघनी ॥
काँस चटकत बाँस पटकत, अँगार उचटत नभतनी ॥
हरिण मोर बराह वन पशु, विकल पन्थ न पावहीं ॥
जरत जहँ तहँ जीव खग मृग, विपुल जित तित धावहीं॥

दोहा—दावानल अति क्रोध करि, लियो दशहुँ दिशि घेर॥
उठी अनलज्वाला प्रबल, मानहुँ अचल सुमेर॥

सो०—धूम धुन्ध विकराल, भयो अँधेरो गगन सब ॥
बिच बिच चमकत ज्वाल, तडित माल जनु सघनघन

भये देखि ब्रजलोग दुखारे ❀ तब सब हरिकी शरण पुकारे ॥

१ तिनका । २ आग । ३ मार्ग । ४ आकाश । ५ अग्नि । ६ धरती ।

कहत श्याम तुम करो सहाई * जरत सकल ब्रज लेहु बचाई ॥
तृणा शकट बक अघ तुम मारे * कंस त्रासते तुमहिं उबारे ॥
जहँ जहँ परी गाढ हम आई * तहां तहां तुम करी सहाई ॥
अब हरि यत्न कछू सो कीजे * हमहिं बचाय अग्निसे लीजे ॥
व्याकुल गोप नन्द मन माहीं * करत विचार बनत कछु नाहीं ॥
यशुमति सबहिन कहत पुकारे * दई परयोहै ख्याल हमारे ॥
नाना रूप असुर बहु आये * कोउ खग कोउ पशुरूप बनाये ॥
कोऊ पवन रूप ह्वै आयो * भयो तहां कोउ पुण्य सहायो ॥
आज उरगसों बच्यो कन्हाई * मरु करमन नृप त्रास नशाई ॥
अब यह बाढी अग्नि अपारा * होत सकल ब्रजको संहारा ॥
किमि बचिहैं यह बालक दोऊ * मोहिं लखिपरत उपाय न कोऊ ॥

दोहा—सुनि जननीके वचन प्रभु, लखि सब ब्रज वेहाल ॥
कह्यो सबन धीरज धरो, मति डरपौ लखि ज्वाल ॥

सो०—कौतुक निधि गोपाल, को जानै तिनके गुणनि ॥
दुख सुख जिनके ख्याल, जनके हित कारक सदा

तब हरि कह्यो डरो मति कोई * बिनवहु देव बहुरि सब सोई ॥
जिन सहाय कीनी अबताई * सोई करै सहाय सदाई ॥
हरि हँसि सब सों आंखि मुँदाई * करिगये अग्निपान सुखदाई ॥
ह्वै गइ चहुँ दिशि शीतलताई * रह्यो न अग्निलेश कहुँ राई ॥
खोलि देहु दृग सब हरि बोले * सुनतहि तुरत सबन दृग खोले ॥
देखि चकित सब ब्रज नर नारी * कहत धन्य धनि तुम बनवारी ॥
धरणि अकाश बराबर ज्वाला * लपट झपट अतिही बिकराला ॥
नाहिं बरस्यो नहिं सींच्यो काहू * गयो बिलाय कहां धौं दाहू ॥

केसे यह सब अग्नि बुझानी * हम यह कछु न काहू जानी ॥
तब हँसि बोले कुवँर कन्हाई * वह करनी यह कहि न सुहाई॥
तृणकी आग प्रथम बहु जागै * फिरि तिहि बुझत बिलंब न लागै॥
सुनत श्यामकी कोमल बानी * भये सुखी सब त्रास नशानी ॥

दोहा—जीव जन्तु खग मृग जिते, भये सुखी ततकाल ॥
द्रुम बेली तृण हरित सब, प्रफुलित वन सुख माल ॥

सो०—श्याम सहायक जाहि, ताहि कहौ डर कौनको ॥
यह न बडाई वाहि, पांच तत्त्व उनके किये ॥

कहत परस्पर ब्रजकी नारी * हैं सखि बडे बीर बनवारी ॥
देखत कोमल श्याम सलोना * यह सखि जानतहै कछु टोना॥
नाथ्यो नाग पतालहि जाई * लायो तापर कमल लदाई ॥
मांगे कमल कंस नृपराई * कोटि कमल तिहि दिये पठाई॥
दावानल नभ धरणि बराबर * घेर लिये ब्रजके नारी नर ॥
नयन मुँदाय कहा धौं कीन्हों * रह्यो नहीं कछु ताको चीन्हों ॥
ये उतपात मिटे उनहींपै * और न होय सके किनहींपै ॥
यह कोउ सखी बडो अवतारा * है यहही कर्त्ता संसारा ॥
लखि हरि चरित यशोदा मैया * चकित निरखि मुख लेत बलैया
लखि सुत चरित मुदित नँदराई * करत गोप गण सकल बडाई॥
कहत देव मुनि अति अनुरागा * हैं ब्रजवासिनके बडभागा॥
जिनके संग श्याम सुख शीला * करत रहत नित नव रस लीला॥

दोहा—एक दिवस[1] निशि यमुन तट, बस सब गोपी ग्वाल ॥
होत प्रात निज निज सदन[2], आये सहित गोपाल ॥

सो०—हरि जनके सुखकार, बिलसत विविध विलासब्रज ॥

१ दिनरात । २ घर ।

सन्तन प्राण अधार, ब्रजबासी जन जाहिं बलि ॥

हरि ब्रज जनके दुख बिसरावन * करत चरित सुर मुनि मन भावन
तुरत सकल ब्रज लोग भुलाये * कौन कंस कब कमल मँगाये॥
कब हरि यमुना जलहि समाये * कालिनाग नाथि कब लाये ॥
कब दावानल जारन आयो * एक दिवस निशि कहां बितायो ॥
नहिं जानत कछु नंद यशोदा * करत श्याम सोइ बाल विनोदा ॥
माखन मांगत कुवँर कन्हाई * बार बार जननी सों जाई ॥
आतुर दधिहि मथन नँदरानी * सद माखन हरिको रुचि जानी॥
कहत तनक तुम रहत ललारे * तुम्हें देउँ नवनीत पियारे ॥
मैं बलि भूख लगीं तुम भारी * बात बनावत सुतहि दुलारी ॥
बूझत बात काहुकी कान्हहिं * कहत श्याम सों सुनतन कानहिं ॥
झूठहि देत हुँकारी जननी * भूल गई सब हरिकी करनी ॥
तब लौं मथि दधि माखन कीन्हो * तुरतहि लै सुतके कर दीन्हो॥

दोहा—लैलै अधरन परसि करि, माखन रोटी खात ॥
कहत प्रशंसा मधुर कहि, सुनत प्रफुल्लित मात ॥

सो०—जो प्रभु अलख अपार, दुर्लभ शिव सनकादिकहुँ॥
धन्य नन्दकी नार, ताको सुत कर मानई॥

॥ अथ प्रलम्बासुरवधलीला ॥

नित नव लीला करत कन्हाई * तात मात ब्रज जन सुखदाई ॥
मुदित सकल ब्रजके नर नारी * निशिदिन मुख हरिचंद निहारी॥
इक दिन श्याम राम दोउ भाई * खेलत सखन संग बन जाई ॥
नाना विधि सब करत कलोलैं * भांति भांतिकी वाणी बोलैं ॥
कबहूं मोर हंसकी नांई * बोलत हँसत श्याम सुखदाई ॥

कबहूं मधुरे स्वर सब गावैं * मध्य श्याम घन वेणु बजावैं ॥
कबहूं चढत तरुन पर जाईं * कूदि परत गहि डार नवाईं ॥
नाना विधिके खेलन खेलैं * बाल बिनोदमोदरस केलैं ॥
तहां प्रलम्ब असुर इक आयो * कंस ताहि दै पान पठायो ॥
सो छल रूप गोप वपु धारी * मिल्यो आय सब सखनमँझारी ॥
ताको ग्वालन काहू जान्यो * यह तो असुर श्याम पहिचान्यो ॥
बलदाऊको दियो जनाई[1] * ताहि हतनको[2] रच्यो उपाई ॥

दोहा—सखा बुलाये निकट सब, तिनहिं कह्यो नँदलाल ॥
फल बुझाय अब खेलिये, भये मुदित सुनि ग्वाल ॥

सो०—द्वै बालक करि राय, सखा लिये तब बांटि सब ॥
आधे इक दिशि आय, आधे एक दिशा भये ॥

निज निज जोट सखन जुरि लीन्हो * हलधर जोट दनुज[3] सँग कीन्हो
आपसमें यह होड लगाई * जो हारे सो पीठि चढाई ॥
भांडीर बनलौं लै जाही * फेर इहां पहुँचावै ताही ॥
फलको नाम बुझावन लागे * बूझदियो बल सबते आगे ॥
चले सखा चढि चढि निज जोरी * चढे दनुज बल घींच मरोरी ॥
भांडीर वन पहुँचे जाई * फिरे सखा सब ठांव छुवाई ॥
असुर चल्यो लै बलको आगे * प्रकट्यो दनुज शरीर अभागे ॥
तब बलदेव[4] कोप करि भारी * मुष्टि[5] एक ताके शिरमारी ॥
बिकसि[6] गयो शिर गिर्‌यो अधीरा * उतरि परे तब श्रीबलवीरा ॥
भयो पलकमें सो बिन प्राना * देखत सुर मुनि चढे विमाना ॥
भई गगन[7] ते जय जय बानी * फूलनकी वर्षा वरषानी ॥
बहुविधि अस्तुति बलहिं सुनाई * मुदित सकल सुर मुनि समुदाई ॥

१ बताय । २ मारनको । ३ दैत्यप्रलम्बासुर । ४ दाऊजी । ५ मुक्का । ६ फटगयो । ७ आकाश ।

दोहा—ग्वाल बाल चकित सबै, दौरि गये बल पास ॥
मृतक असुर तनु देखिकै, तब मन कियो हुलास ॥
सो०—धन्य धन्य बलराम, धन्य तुम्हारे मात पितु ॥
बडो कियो यह काम, कपट रूप मार्यो असुर ॥
यह शठ गोप भेष वन आयो ❀ हम काहू इहि जान न पायो ॥
जो यह शठ नहिं जात निपातो[1] ❀ तो काहू लरिकहिलै जातो ॥
हौ तुम वीर बडे दोउ भाई ❀ जहँ तहँ हमको होत सहाई ॥
वनके दुष्ट सकल तुम मारे ❀ हौ तुम हम सबके रखवारे ॥
ताहि कहो काको डर भैया ❀ जासु मीत बलराम कन्हैया ॥
देत ग्वाल सब बलहि बडाई ❀ धन्य धन्य[*] ब्रज जन सुखदाई ॥
दुष्ट मारि बल मोहन लाला ❀ आये सदन सहित सब ग्वाला ॥
ग्वालन कही आय सब बाता ❀ सुनत चकित ब्रजजन पितुमाता ॥
करत सकल बलराम बडाई ❀ जननी मुदित लिये उरलाई ॥
बल मोहन दोउ बीर निहारी ❀ दोऊ जननि जात बलिहारी ॥
भूखे जान बनहिंते आयो ❀ दोउ भइयन भोजन करवायो ॥
जो सुख लहत नंदकी रानी ❀ सो शारद नहिं सकै बखानी ॥
दोहा—सुतसनेहयशुमति मगन, निशि दिन जात न जान ॥
करत चरित सन्तन सुखद, भक्त बछल भगवान ॥
सो०—नित नव परम हुलास, ब्रजबासी हरि सँग लहत ॥
बिलसत विविध विलास, बाट घाट गृहबनसघन ॥

॥ अथ पनिघटलीला ॥

पनिघट यमुनाके तटमाहीं ❀ ठाढे श्याम कदमकी छाहीं ॥
सखा वृन्द चहुँ ओर बिराजैं ❀ कोटि काम छबि निरखत लाजैं ॥

१ मार्योजातो । * आयमिले तब हँसे कन्हाई

शीश मुकुट की लटक सुहाई ❀ सुरंग खौर केसर छबिछाई ॥
कुंडल झलक अकल घुघरारी ❀ कंठ कनक कंठी द्युतिकारी ॥
चटकीली लटकी बनमाला ❀ परसति चरण सरोज बिशाला॥
मुक्तमाल मणि माल सुहाई ❀ उर बिशाल पै अति छबिछाई॥
अरुण अधर दशननद्युति नीकी ❀ मुर मुसकान मोहनी जीकी॥
चटकीलो पट पीत बिराजै ❀ कटि तटि क्षुद्र घंटिका राजै ॥
भुज विशाल भूषण युत सोहै ❀ कर मुद्रिका मुदित मनमोहै ॥
तनु घनश्याम रसीले नैना ❀ हँसि हँसि कहत सखन सों बैना ॥
कनक लकुटिसों पग लपटान्यो ❀ भूषण सहित न जात बखान्यो
गहि द्रुम डार तिरीछे ठाढे ❀ अंग अंग अनुपम छबि बाढे ॥

दोहा—कबहुँ बजावत अधर धरि, करि मुरली ध्वनि घोर ॥
निकट बुलावत वन मृगन, कबहुँ नचावत मोर ॥

सो०—रहे गगन घन छाय, सुखद छांह शीतल किये ॥
वर्षाऋतु को पाय, निरखत सुत नँदरायको ॥

हरित भूमि चहुँ ओर सुहाई ❀ मनहुँ काम मसनंद बिछाई ॥
वहत समीर धीर सुखदाई ❀ शीतल अधिक सुगंध सुहाई ॥
बहत यमुन बाहुलते पूरी ❀ परत भँवर जहँ तहँ छबिरूरी ॥
उठत श्याम जल शुभगतरंगा ❀ छबितरंग जिमि हरिके अंगा ॥
या छबि सों पनिघट हरि ठाढ़े ❀ संग गोप बालकहित बाढ़े ॥
यमुना जल तिय भरन न जाहीं ❀ ग्वाल भीर देखत सकुचाहीं ॥
हरिके गुण मनमें सब जानैं ❀ रोकत टोकत शंक न मानैं ॥
तातें जाय सकत कोउ नाहीं ❀ दरश लालसा अति मनमाहीं ॥
सबके अन्तर्य्यामि कन्हाई ❀ युवतिनके मनकी गति पाई ॥

१ सुवर्णकी। २ चरणकमल। ३ सेज।

तब इक बुद्धि रची नँदलाला ❋ रसिक शिरोमणि मदनगुपाला ॥
सखन एक तरुतल बैठाई ❋ पनिघटते सब भीर मिटाई ॥
आप रहे द्रुम ओट छपाई ❋ हेरत युवतिन मग चितलाई ॥
दोहा—इहि अन्तर आवत लखी, युवती इक घनश्याम ॥
आप रहे द्रुम ओट हरि, यमुना तट गइ बाम ॥
सो०—नागरि जलहिं हिलोर, भरि गागरि शिर धर चली ॥
पाछेते चित चोर, घट लै दियो लुढाय महि ॥
गही चतुर ग्वालिनि भुज हरिकी ❋ पाई कनक लकुटिया करकी ॥
सब सों तुम करि रहे ढिठाई ❋ तैसेहिं मोसों लगत कन्हाई ॥
देन लगे तब हरि हँसि गागरि ❋ लेत नहीं ग्वालिनि अति नागरि ॥
कहत कि रीतो घट नहिं लेहौं ❋ जल भर देहु लकुटि तब देहौं ॥
कहा जो तुम नंद सुवन कन्हाई ❋ हम हूं बडे बापकी जाई ॥
एक गांव बस बास हमारो ❋ मैं नहिं सहिहौं कह्यो तुम्हारो ॥
एक कहो तो दश मैं कहिहौं ❋ मैं कछु तुम सों डरपि न जैहौं ॥
यह सुनि हँसि दीन्हे नँदलाला ❋ लियो चोरि चित मदनगोगुला ॥
कहत लकुटिया देरी मेरी ❋ मैं भरि देहौं गागरि तेरी ॥
देखत रूप सुनत मृदुबानी ❋ ग्वालिनि तनुकी दशा भुलानी
लागी हृदय मदनेकी सांटी ❋ मन परगयो प्रेमकी घांटी ॥
करते लकुटि गिरत नहिं जान्यो ❋ बिबश भई चित चेत हिरान्यो ॥
दोहा—तब घट भरि हरि भावते, दीन्हो शीश उठाय ॥
नेकहुँ सुधि ता तननहीं, चली ब्रजहिं समुहाय ॥
सो०—कियो दृगन में धाम, सुन्दर नट नागर सुखद ॥
जित देखे तित श्याम, पंथ ताहि दीखै नहीं ॥

१ वृक्षके नीचे । २ कामदेवकी सांटी ।

उतै अपर ग्वालिनि इक आई * कहत कहा तू रही भुलाई ॥
सूधे पंथ चलतहै नाहीं * कहा शोच तेरे मनमाहीं ॥
अबहीं हँसति भरन जल आई * कहाचली इत आप गँवाई ॥
ताको देखि कहत सुनु आली * मोपै श्याम मोहनी घाली ॥
मैं जल भरन अकेली आई * मेरी गागरि कृष्ण लुढाई ॥
तब मैं कनक लकुटि गहिलीन्हीं * उन मोतन लखिकै हँसि दीन्हीं॥
वहै हँसनि मोहिं परि ठगौरी * तबहीं ते मैं ह्वैगइ बौरी ॥
कहा कहौं तोसों अब आली * मेरेचित वह चितवन शाली ॥
बस्यो श्याम मेरे दृग माहीं * और कछू मोहिं दीसत नाहीं ॥
सुनत बात वह ग्वालि सयानी * आप बिलोकन को अतुरानी ॥
ताहि बाहँगहि घर पहुँचाई * आप गई जलको अतुराई ॥
देख्यो जाय श्याम तहँ नाहीं * इत उत लखिशोचति मन माहीं॥
दोहा—हरि देखत तरु ओटह्वै, ग्वालिनिमन दुख पाय ॥
चली नीर भरि गागरी, बार बार पछिताय ॥
सो०—मनके जाननहार, देखि ग्वालिनी बिकल अति ॥
प्रकटे नंदकुमार, आय अचानक निकटही ॥
गहिलीन्हीं अंकम भरिग्वारी * ताके तनुकी तपनि निवारी ॥
तातन चितै कह्यो तू कोरी * तोहिं कबहुँ देख्यों नहिं गोरी ॥
मन हरिलीन्हों रूप दिखाई * बहुरि भये तरु ओट कन्हाई ॥
मिलि हरिसों सुखपायो ग्वाली * छकी प्रेमरस लखि बनमाली ॥
नहिं जानत मैं कोकित आई * भई मगन मन तनु बिसराई ॥
घरको पंथ भूलिगइ नागरि * इत उत फिरत शीशलिये गागरि॥
और सखी इक उतते आई * देखि दशा तिन निकट बुलाई ॥

कहा फिरै भूली मगमाहीं * बूझत सखी सुनत कछु नाहीं ॥
चौंकपडी सपने ज्योंजागी * तासों बचन कहन तब लागी॥
श्याम बदन एकमिल्यो ढुटोना * तिनमोको कछु कीनों टोना ॥
मैं भरि गागरि शीश चढाई * औचक मोहिं अंक भरिलाई ॥
मोसों कह्यो कौन तू गोरी * देखी नाहिं कबहुं ब्रजखोरी ॥
दोहा—ऐसे कहि चितयो बिहँसि, मैं लखि रही भुलाय ॥
तबहिं भयो अंतर कहूं, मेरो चित्त चुराय ॥
सो०—कही सखी सों बात, ग्वालिनि लाज बिसारिकै ॥
निरखि नंदको तात, भई जलधिकी बूंद जिमि ॥
सोसखि सावधान करिताको * चली आप आतुर यमुनाको ॥
देखी श्याम युवति ढिग आई * ठाढे तरुकी ओट कन्हाई ॥
तासु अंग छबि रहे निहारी * गोरे बदन चूनरी कारी ॥
छूटी अलक बदन छबिछाई * मनहुं जलज अलि अवलि सुहाई॥
हाथन चूरी चारु बिराजैं * कनक मुँदरियन अति छबिछाजैं॥
सहज शृँगार उरोज उठोहैं * अंग अंग सुठि सुंदर सोहैं ॥
ग्वालिनि हरिको देख्यो नाहीं * जाने कहूं गये बनमाहीं ॥
जल भरिचली मनहिं पछिताई * गागरि नागरि शीश उठाई ॥
औचक श्याम गही लट आई * यह कहि कहां चली अतुराई ॥
चिबुक परस उरसों करलायो * ग्वालिनि मनहिं हर्ष अतिपायो॥
ऊपर कहत वंककर मोहन * छांडिदेहु मेरी लट मोहन ॥
उर परसत कछु सकुच न मानत * और ग्वालिसी मोको जानत॥
दोहा—छांडि देहु लट देखिहै, ब्रज युवती कोउ आय ॥
हाहा मैं पांयन परति, तुमको नंद दुहाय ॥

* इनऔचकमोहिंअंकमेंलाई । १ मेघ । २ कमल । ३ भौंरा । ४ पंक्ति । ५ स्तन । ६ ठोडी ।

सो०—इतने हीको मोहिं, सौंह दिवावत बावरी ॥
पहिंचान्यों नाहिं तोहिं, ताते मुख देखत तनक ॥
यों कहि श्याम छांडिलट दीन्हीं ❀ मुरि मुसकानि नागरिवश कीन्हीं
चली भवन मन हरि हर लीनों ❀ जिय यह कहति कहा हरि कीनों
पगद्वै चलत ठिठकि रहि जाई ❀ भूलगई मारग जिहि आई ॥
प्रेम मगन तनु सुधि बिसराई ❀ रहे दृगनमें श्याम समाई ॥
गृह गुरुजनकी सुधि जब आई ❀ तब कछु जियमें गई लजाई ॥
ज्यों त्यों करि पहुँची गृह माहीं ❀ उरते श्याम टरत क्षण नाहीं ॥
सखी संगकी बूझत आई ❀ कहां यमुन तट बेर लगाई ॥
और दशा भइ है कछु तेरी ❀ कहति नहीं हमसों सखि हेरी ॥
कहा कहों तुमसों री आली ❀ मोह्यो मोहिं श्याम वनमाली ॥
सुनहु सखीरी वा यमुना तट ❀ मैं जल भर्यो अकेली पनिघट ॥
लै गगरी शिर मारग डगरी ❀ कितहूं ते आयो मो ढिगरी ॥
औचक आनि गही लट मेरी ❀ कह्यो नेक मुख देखन देरी ॥
दोहा—मैं मृदु बचन अमोल सुनि, देखि वदन जलजात ॥
जकी चकी सीहै रही, उन परस्यो मो गात ॥
सो०—प्रफुलित हिये गुवारि, मनमोहनके रस विवश ॥
कुलकी लाज बिसारि, कही सखिन सों बात सब ॥
सुनत बात सब सखी सयानी ❀ श्याम विलोकनको अतुरानी ॥
इक क्षण श्याम न विसरत काहू ❀ सुनत भयो यह अधिक उछाहू ॥
घर घरते धांईं सब नागरि ❀ लैलै आईं जलकी गागरि ॥
चलीं यमुन तट अतिअतुराई ❀ देख्यो कुँवर नंदको जाई ॥
मोर मुकुट कटिकछनी सोहै ❀ कुंडल चटक लटक मन मोहै ॥

पीत बसन लखि तडित¹ लजाई ❁ नयन विशाल अधर अरुणाई ॥
देखत कह्यो सखिन ढिग जाई ❁ ठगत फिरत हो नारि पराई ॥
काहि ठग्यो कैसे ठग चीन्ह्यो ❁ तुमरो कहो कहा ठग लीन्हों ॥
कौन ठग्यो कहि कहा बखानै ❁ औरहिंके ठग तुमको जानै ॥
कहा ठग्यो सो हम नहिं मानैं ❁ कहो नाम धरि तब हम जानैं ॥
सर्वस ठगत पलकके माहीं ❁ कहा ठग्यो सो जानत नाहीं ॥
ठगके लक्षण मोहिं बतावहु ❁ कैसे मोको ठग ठहरावहु ॥

दोहा–ठगलक्षण हमपै सुनहु, फाँसी मृदु मुसकान ॥
रूप ठगोरीते ठगत, ब्रज तिय मन धन प्रान ॥

सो०–फिरत विकल बेहाल, लोक लाज कुल कान तजि ॥
ठगी नंदके लाल, भई विदित तिहुँ लोक तिय ॥

अपने लक्षण मोहिं लगावहु ❁ जैसे तुम सब चितहि चुरावहु॥
कहति कि प्रकटी तिहुँ पुर बाता ❁ ब्रजतिय ठगत नंदको ताता ॥
यह अति कहति कहत सब कोई ❁ सुर नर मुनि वेदहु नहिं गोई ॥
तीन लोकको ठाकुर जोई ❁ ब्रज बनितनवश कीन्हों सोई ॥
यों सुनि सब ग्वालिनि मुसुकानी ❁ कहो सखी सुनि हरिकी बानी
हरि तुम बात उलटि यह ठानत ❁ तुम्हरी नागरता हम जानत ॥
अति हि काह्न तुम करत ढिठाई ❁ छांडि देहु अब यह लँगराई ॥
काहूकी ढारतहो गगरी ❁ काहू लट गहि करत अचगरी ॥
काहू को अंकम भरि लावत ❁ ब्रज लोगनपै सबन हँसावत ॥
तुमते मग कोउ चलन न पावत ❁ बाट घाट डरपत सब आवत ॥
यमुना भरन देत नहिं पानी ❁ बहुत अचगरी अब तुम ठानी ॥
कहो तो यशुदहि जाय सुनावैं ❁ फेरि तुम्हे ऊखल बँधवावैं ॥

१ बिजुरी ।

दोहा—यह सुनि हरि रिस करि उठे, इँडुरी लई छुडाय ॥
कहो जाय सब मातसों, लीजो मोहिं बँधाय ॥
सो०—मोहिं कहत ठग चोर, आप भईं साहुनि सबै ॥
डारी गागरि फोर, कहत जाहु चुगली करन ॥
तब युवती सब हरि ढिग आई * कहत इँडुरी देहु कन्हाई ॥
नहिं तो तुमको गहि लै जैहैं * यशुमति पास न नेक डरैहैं ॥
बाट घाट तुम करत ढिठाई * काहु न नेक डरात कन्हाई ॥
इँडुरी लै फोरी सब गागरि * आज मिटावैं तुम्हरी लांगरि ॥
तब हरि चढे कदम पर जाई * इँडुरी दीन्ही जलहि बहाई ॥
बदन सकोरत भौंह मरोरत * मुरि मुसकनि सबके चितचोरत॥
कहत कहो मैयासों जाई * सब मिलि लीजो मोहिं बुलाई॥
तुम सब जुरि मोहिं मारन धाई * तब मैं इँडुरी जलहि बहाई ॥
ऐसो करि तुम मोको पायो * मानहु मोको मोल मँगायो ॥
यह सुनि युवति कहत मुसुकाई * कहति यशोमति सों हम जाई॥
वेदिन बिसर गये मनमोहन * बाँधे मात ऊखली गोहन ॥
ह्याईं रहो तौ बदहिं कन्हाई * जाउ कहूं तो नन्द दुहाई ॥
दोहा—कान्हहिं सौंह दिवायकै, लै उरहन सब बाम ॥
ऊपर रिस अंतर सुखी, चलीं नंदके धाम ॥
सो०—मथति महरि निज धाम, दधि माखन हरिके लिये ॥
तिहि अंतर ब्रज बाम, आवत देखी भीर अति ॥
मैं जानति हरि इनहिं खिझाई * ताते सब उरहन लै आई ॥
कहत युवति सब रिस भरि आई * ऐसो ढीठ कियो सुत माई ॥
भरन देत नहिं यमुना पानी * रोकत आँय[*] करत कुलकानी॥

१ यशोदा । * घाट ।

काहूकी गागरि ढरकावै * इँडुरी लै जलमाहिं बहावै ॥
काहूको घट डारत फोरी * गारी देत सहै नित खोरी ॥
महरि कहत तुमसों सकुचाहीं * हरिके गुण तुम जानत नाहीं ॥
अब नाहीं ब्रजबास हमारो * करत अचकरी सुवन तुम्हारो ॥
नेक नहीं सकुचत मन माहीं * महरिसुतहि तुम बरजत नाहीं ॥
यशुमतिसबहिनकहतनिहोरी * कहा करौं सो तुमहिं कहोरी ॥
जो हरिको मैं ह्यां गहि पाऊं * तो तुम सबको अबहि दिखाऊं ॥
तुमहूं जानति हौ गुण हरिके * ऊखल सों बाँधे मैं धरिके ॥
मारन लगी सांटि लै जबहीं * वर्ज्यो मोहिं तुमहिं तब सबहीं ॥
दोहा—अब घर आवहिं जबहिं हरि, तबहिं करौं सोइ हाल ॥
लरिकाईते अचकरो, मैं जानत गोपाल ॥
सो०—अब जो पकरन जाउँ, ताहि गहन पाऊं कहां ॥
सुनतहिं मेरो नाउँ, को जानै भाजि जाय कित ॥
यह अपराध क्षमो सब हमको * यहै कहत हौं मैं अब तुमको ॥
इहि विधि युवतिन बोध कराई * महरि सबनको घरन पठाई ॥
इतते घरन चलीं सब ग्वाली * उतते घर आवत वनमाली ॥
ह्वैगइ भेंट बीच मग आई * तुरत नयन हरि गये लजाई ॥
मात बुलावत जाहु कन्हाई * बहुत बडाई करि हम आई ॥
निरखिबदनहँसिकह्यो कन्हाई * मैं समुझाय लेउँ गो माई ॥
सकुचतही आये घर मोहन * द्वारहिते लागे हरि जोहन ॥
देखि जननि घरकारज लागी * गोपिन उरहनके रिस पागी ॥
भीतर रोहिणि पाक बनावै * कहि कहि तिन सों बात सुनावै ॥
हरुवै हरुवै तब हरि जाई * सुनत आप पाछे चित लाई ॥

१ पुत्र । २ धीरे धीरे ।

यहै कहति यशुमति रिसि आई ॥ गयो कहाधौं भाजि कन्हाई ॥
पनिघट रोंकत धूम मचावत ॥ यमुना जल कोउ भरन न पावत॥

दोहा–गारि देत बेटिन बहुन, वे आवत त्यां धाय ॥
हाहा मैं सबको करति, क्योंहू खोट छुटाय ॥

सो०–इँडुरी देत बहाय, सबकी गागरि फोरिकै ॥
कित धौं गयो पराय, यह कहि कहि थिरवत सुतहिं ॥

जाति पांतिसों कह लँगराई ॥ मारेहु मानत नाहिं कन्हाई ॥
तब पाछेते हरि उठि बोले ॥ मधुर वचन कोमल अति भोले ॥
तू मोहीं को मारन जानै ॥ उनके गुणन नाहिं पहिंचानै ॥
कहति जुवै मानत तू सोई ॥ तिनके चरित न जानत कोई ॥
कदमतीरते मोहिं बुलावैं ॥ बाते गढ़ि गढ़ि आप बनावैं ॥
मटकन गिरै शीशते गगरी ॥ नाम लगावत मेरे सिगरी ॥
फिरि चितई देखे हरि पाछे ॥ सुन्दर श्याम पीतपट काछे ॥
कह तू कहां रह्यो मो पाहीं ॥ मैं कह तोको जानत नाहीं ॥
हरि मुख देखतही नँदनारी ॥ तुरतहिं भूलिगई रिस भारी ॥
कहतकि उरहन सब लै आवैं ॥ झूठहि खोर कान्हको लावैं ॥
मैं जानत गुण उन सबहीके ॥ बातन जोरि बनावत नीके ॥
वे सब योबनकी मदमाती ॥ फिरत सदा हरिसों अठिलाती॥

दोहा–कहां श्याम मेरो तनक, वे सब योबन जोर ॥
अब उरहन जो आवहीं, तो पठऊं मुख मोर ॥

सो०–तू कित उनढिगजात, मैं बरजत मानत नहीं ॥
लावत झूठी बात, वे सब ढीठ गुवालिनी ॥

यह कहि चूम सुतहिं उरलायो ॥ मन मोहन मन हर्ष बढायो ॥

ब्रज घर घर यह बात जनाई ❀ पनिघट रोकत कुँवर कन्हाई ॥
श्याम वरण नटवर वपु काछे ❀ मुरली मधुर बजावत पाछे ॥
करत अचकरी जो मन भावै ❀ यमुना जल कोउ भरन न पावै ॥
बैठत आप कदमकी डारी ❀ सबन बुलावत दै दै गारी ॥
काहूकी गागरि गहि फोरै ❀ काहूकी इँडुरी गहि बोरै ॥
काहूको अंकमगहि लावै ❀ काहूको घट भूमि लुढावै ॥
नयन सैनदै चितहि चुरावत ❀ काहूसों मन अपनो लावत ॥
ब्रज युवती सुनि सुनि उठि धावैं ❀ बिनहरि दरशन क्षण कलपावैं ॥
कोउ बरजै कोउ कहै कोटि विधि ❀ सबके ध्यान श्याम सुन्दरनिधि
मन क्रम वचन तिन्हैं रति हरि सों ❀ नातो नेह न मानत घरसों ॥
निशिदिन जागत सोवत माहीं ❀ नंद नँदन क्षण विसरत नाहीं ॥

दोहा—यह लीला सब करत हरि, ब्रज युवतिनके हेत ॥
कृष्ण भजे जो भाव जिहि, तेहितेसो फलदेत ॥

सो०—चिन्तामणि जेहि नाम, चिंतत फलदायक जनन ॥
सबहींको सब वाम, जैसो को वैसो सदा ॥

सुनि यह श्रीवृषभानु दुलारी ❀ पनिघट ठाढे कुंज बिहारी ॥
देखनको चित अति अतुराई ❀ कह्यो सखिन सों कुँवरि बुलाई ॥
चलहु यमुनतट ल्यावहिं पानी ❀ सुनत बात यह सब हरषानी ॥
इक इक कलश सबन गहिलीनों ❀ तुरत गमन यमुना तट कीनों ॥
देखे तहां कुँवर नँदलाला ❀ सुन्दर श्यामल नयन विशाला ॥
प्यारी मन अति हर्ष बढायो ❀ प्यारिहि देखि श्याम सुख पायो ॥
रहे रीझि हरि दीठि लगाई ❀ भर्यो नीर प्यारी मुसकाई ॥
चली घरहि यमुना जल भरिकै ❀ सखिन मध्य गागरि शिर धरिकै

मंद मंदगति चलति सुहाई ❀ मोहन मनहिं मोहनी लाई ॥
चले श्याम संगहि उठि लागे ❀ विवश भये प्यारी रस पागे ॥
सखियन बीच नागरी सोहै ❀ गागरि शिर पै हरिमन मोहै ॥
डुलत ग्रीव लटकत नकबेसर ❀ वंदन विन्दु आड दिये केसर ॥
दोहा—लोचन लोल विशाल अति, मुरि मुरि चितवत जाय ॥
भृकुटी धनुष कटाक्ष शर, हरि दृग मृगन लगाय ॥
सो०—अँग अँग छबि समुदाय, मानहु सेना कामकी ॥
अंचल ध्वज फहराय, ठटकि चलत हरि मन हरत ॥
रीझे श्याम निरखि छबि प्यारी ❀ संगहि चले लागि बनवारी ॥
कबहुँक आगे जात कन्हाई ❀ कबहुँ रहत पीछे चित लाई ॥
नाना भांतिन भाव बतावैं ❀ प्यारिहि निज अभिलाष जनावैं ॥
कनक लकुट लै करके माहीं ❀ आगे पंथ सँवारत जाहीं ॥
देखत जहां प्रिया परछाहीं ❀ तहां मिलावत निजतनु छाहीं ॥
छबि निरखत तनु वारि जनावैं ❀ पीतांबर लै शीश फिरावैं ॥
कबहु श्याम पाछे रहि जाहीं ❀ निरखत कुवँरी छबि ललचाहीं ॥
गागरि ताकि कांकरी मारैं ❀ उचटि उचटि तिय अंगन पारैं ॥
ओट पीतपट शीश नवाई ❀ इहि मिस निकसत ढिग ह्वै आई ॥
प्यारी अपने जिय अनुमाने ❀ मेरे हित हरि भाव न ठाने ॥
सखियन मध्य नागरी जाई ❀ नहिं पावत लग लगन कन्हाई ॥
कियो चरित तब रसिकबिहारी ❀ सखिन सहित मोही सुकुमारी ॥
दोहा—मिस करि निकसे निकट ह्वै, निरखि वदन मुसकाय ॥
मन हरि लीनो सबनको, दियो काम उपजाय ॥
सो०—भई विवश सुकुमार, अंग उँमग आँगी दरकि ॥

मोंहे नंदकुमार, सुधि बुधि बिसरी देहकी ॥
सखिन संग पहुँची घर आई ❋ अटकि रह्यो मन हरि सँग जाई॥
पुनि पुनि उर यह करत विचारा ❋ कैसे मिलहिं श्याम सुकुमारा॥
गागरि निज निज गृहपहुँचाई ❋ बहुरि सखी प्यारी ढिग आई॥
बार बार सब कहत निहोरी ❋ चलिये यमुना जलहि बहोरी॥
तिनको उत्तर देत न प्यारी ❋ चित उरझो चितवन परवारी ॥
ठग सी रही मनहि मन शोचै ❋ प्रेम विवशदृग बारि विमोचै ॥
देखि दशा बूझत सब ग्वारी ❋ कहा भयो तो कोरी प्यारी ॥
शोचति कहा कहै किन सोरी ❋ काहू लयो चोर कछु चोरी ॥
उत्तर हमैं देत क्यों नाहीं ❋ कहा ठगी सीहै मन माहीं ॥
गहिगहि भुजा कहति सब गोरी ❋ चलहि न यमुना आवहि खोरी॥
तब सखिय न वृषभानु दुलारी ❋ लीन्हीं सबन निकट बैठारी ॥
जलजनयन जल भरि अनुरागी ❋ हरिके चरित कहन सब लागी॥

दोहा—कहौ सखी कैसे चलैं, वा यमुनाकी ओर ॥
गैल न छांड़त सांवरो, रसिया नंदकिशोर ॥
सो०—धरै न कोऊ नांव, इह शंकनि डरपत हियो॥
एक भांतिको गांव, वह चंचल मानै नहीं॥

मोको देखत जहां कन्हाई ❋ मेरे संग लगत उठि धाई ॥
इत उत नयन चुराय निहारै ❋ मोको मगमें आनि जुहारै ॥
आगे चलत लकुट करलाई ❋ मेरो पंथ सँवारत जाई ॥
सो वहु मोहिं निहोरो लाई ❋ फिर चितवै मोतन मुसकाई॥
जब मैं यमुनाको जल भरिके ❋ चलति गागरी शिरपर धरिके॥
तब घट में वह कांकरि मारै ❋ उचटि लगत तब अंग निहारै॥

मेरे उर अंचर फहराई * सो वह देखि देखि ललचाई ॥
कबहूं पीताम्बर शिर फेरै * बार बार करि मोतन हेरै ॥
कबहूं आपनि छबि दरशावै * मेरे चितको आनि चुरावै ॥
जब देखौं तब मोतनु हेरै * नेक नहीं दृग इत उत फेरै ॥
जहां जाति मेरी परछाईं * तहां मिलाय रहत निज छाईं ॥
जब लग लागन पावत नाहीं * तब वाको जिय अति अकुलाहीं ॥

दोहा—मोतनु छूवै हरि चले, ताहि भरत है अंक ॥
हौं सकुचत बोलों नहीं, लोक लाजकी शंक ॥

सो०—ब्रज घर २ यह शोर, को जानै कहियत कहा ॥
चितवत यह चितचोर, विवश होत सखि प्राण तब ॥

कहिये कहा सखी जिय जैसी * भइ गति सांप छछूंदर कैसी* ॥
घरते निकसत बन नहिं आवै * लोक लाज कुल कानि मिटावै ॥
जो घर रहौं रह्यो नहिं जाई * तनु घरमैं मन जहां कन्हाई ॥
कितो करौं आवत इत नाहीं * बँध्यो पीत पट आंचर माहीं ॥
अब तो मेरे मन यह रांची * करि हौं प्रीति श्याम सँग सांची ॥
ब्रजके लोग हँसौ किन कोई * कुल मर्य्याद जाउ किन सोई ॥
कहा लाभ सो कहहु सयानी * जामें होय जीवकी हानी ॥
सोनो कहा कान जिहि टूटै * अंजन कहा आंखि जिहि फूटै ॥
कहा कांच संग्रहते होई * जो अमोल मणि करते खोई ॥
विष सुमेर कहु कौने काजा * सुखद बूंद इक ओषधि राजा ॥
कुलकी कानि कांच किरचाई * चिन्तामणिकी खानि कन्हाई ॥
कहा लेहुँ कह तजौं सयानी * सिखवहु मोहिं सखी जिय जानी ॥

दोहा—मोको अब सूझै नहीं, बिनु वह मृदु मुसुकान ॥

* सतावे ।

कांपे न्यारो होतरी, चूनो हरदी सान ॥
सो०—मेटि लोककी कानि, पतिव्रत राखौं श्याम सौं ॥
यहै बनी अब आनि, भलो बुरो कोऊ कहौ ॥
सुनत गोपिका राधा बानी * हरि अनुराग सिंधु मन मानी ॥
गद्गद कंठ पुलकतनु आये * लोचन जलज प्रेम तनु छाये ॥
भईं प्रेमवश गोप कुमारी * लोक सकुच कुल कानि बिसारी ॥
बारहिं बार कहत ब्रज नारी * धन्य धन्य वृषभानु दुलारी ॥
हम सब तोसों सत्य बखानै * तैं हरि भली भांति पहिचानै ॥
यह मोहन सबको मन मोहै * तिय लखि विवश न होय सुकोहै ॥
अंग २ प्रति अति छबि छाजै * समता काम कोटि द्युति लाजै ॥
सुवन श्याम दोउ पाणि पकरिकै * करत वेणु धुनि अधरन धरिकै ॥
तब यह दशा सबनकी होई * जड़ चेतन मोहत सब कोई ॥
वन मृग निकट धाय सब आवैं * खग ह्वै मौन न अंग डुलावैं ॥
तृण गहि दंत धेनु रहि जाहीं * थनते क्षीर पियत बछ नाहीं ॥
यमुना बहिबे ते रहि जाई * जलचर प्रकटत बाहर आई ॥
दोहा—जड चेतन चेतन जडहि, सुनत होत कल बैन ॥
कै विष कै मद कै अमी, किधौं भऱ्यो रस मैन ॥
सो०—गृहवन कछु न सुहाय, सुनत श्रवण वह मधुरधुनि ॥
गृहकारज बिसराय, चकित थकित रहियत सबै ॥
बाट घाट जहँ मिलत कन्हाई * मोहत सुन्दर रूप दिखाई ॥
नई २ छबि क्षण २ माहीं * झलकावत सब अंगन माहीं ॥
ऐसी को जु देखि नाहिं मोहै * नंदसुवन सम सुन्दर को है ॥
वह सखि सबहीके मन भावै * सब कोउ वाहि देखि सुख पावै ॥

१ गौ। २ दूधा।

लोक लाज कुल कौने कामहिं ❋ जो पावैं सुन्दर बर श्यामहिं ॥
पै यह मोहिं अगम अति लागै ❋ यह सुख मिलै नहीं बिन भागै॥
इनको गर्ग कह्यो नँदपाहीं ❋ बिना सुकृत ये प्रापत नाहीं ॥
तुमहू इनको तप करि पायो ❋ ऐसे नंदहि गर्ग सुनायो ॥
कहँ सखि इतनो भाग हमारो ❋ जो बर पावहिं नंददुलारो ॥
ताते मो मनमें यह आवै ❋ कीजे जो सबके मन भावै ॥
तप कीजे हरिके हितलागी ❋ पूजि गौरिपतिसों बर मांगी ॥
नंदसुवन सुन्दर बर[1] पावें ❋ और सकल कामना नशावैं ॥

दोहा—जप तप संयमनेमते, प्रभु प्रकटत पाषान[2] ॥
ताते अब तप कीजिये, और उपाय न आन ॥

सो०—कीजे यह दृढ नेम, प्रात जाय यमुना नदी ॥
पूजहिं सब करि प्रेम, तौ पावहिं पतिकरि हरिहि ॥

तपकरि योगी जन हरि ध्यावैं ❋ मन बांछित फल तपकरि पावैं॥
सकल कामनाके शिव दाता ❋ कहत वेद विधि पंडित ज्ञाता ॥
हमको मन बांछित सखि एहा ❋ नंदसुवन पदकमल सनेहा ॥
सुनत सप्रेम सखी की बानी ❋ श्रीवृषभानुसुता हर्षानी ॥
यहै मंत्र सबके मन मान्यो ❋ धन्य २ कहि ताहि बखान्यो ॥
कहत सबै कीजै सखि सोई ❋ जाविधि नंदनँदन हित होई ॥
वृथा जन्म जग जान न दीजे ❋ यशुमति सुतसों हितकरि लीजे॥
यहै मंत्र सबहिन दृढ कीन्हों ❋ नँद नंदनसों पतिव्रत लीन्हों ॥
धन्य धन्य ब्रज गोप कुमारी ❋ जिनके हित पति कृष्णमुरारी ॥
मन वच क्रम हरिसों मन मानी ❋ लोक लाज तिनका सम जानी ॥
इक क्षण श्याम न उरते टरहीं ❋ नेम धर्म ब्रत हरि हित करहीं ॥

१ पति । २ पत्थरते ।

जिनको यश शारद[1] श्रुति गावैं ❋ ब्रजवासी जन कहा बतावैं ॥
दोहा—जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिहू, ब्रज युवतिन मन माहिं ॥
सदा एक तुरिया रहत, और अवस्था नाहिं ॥
सो०—ऐसो कौन प्रवीन, चहै प्रेम ब्रज तियनको ॥
हरि छबि जल मन मीन, बिछुरि सकत नहिं एकपल ॥

अथ चीरहरण लीला ॥

भवन[2] रवन सबहिन बिसरायो ❋ ब्रज युवतिन हरिसों मन लायो
यहै बासना सब उर जामी ❋ होय गुपाल हमारो स्वामी ॥
कामबासना करि उर धायो ❋ हरिके हेत तपहि मन लायो ॥
षटदश[3]सहस गोपकी कन्या ❋ करन लगीं तप हरि हित धन्या॥
रहत क्रिया युत तप को साधे ❋ छांड दई सब भोग उपाधे ॥
प्रातकाल यमुनाजल न्हाहीं ❋ प्रहर* प्रयन्त रहैं जल माहीं ॥
जपहिं उमापति हर वृषकेतू ❋ सुन्दर श्याम कृष्णपति हेतू ॥
शीत भीत मनमें नहिं ल्यावैं ❋ नयन मूंदिके ध्यान लगावैं ॥
बार बार यह कहैं मनाई ❋ हम बर पावहिं कुँवर कन्हाई ॥
जलते बहुरि निकसि सब आई ❋ पूजहिं गोपेश्वर शिव जाई ॥
चन्दन विल्वपत्र जल धारा ❋ अक्षत सुमन सुगंध अपारा ॥
प्रीति सहित सब शिवहि चढावैं ❋ धूप दीपकरि अस्तुति गावैं ॥
छंद—करहिं अस्तुति गानबहुविधि, पाणि पंकज जोरहीं ॥
बारबार नवाय मस्तक, प्रेम सहित निहोरहीं ॥
जय महेश कृपालु शिव, आनन्दनिधि गिरिजापते ॥
कैलासपति कल्याण अगजग, नाथ सर्व नमामि ते ॥
जटाजूट त्रिपुण्ड शशि कल, गंगयुत शोभित शिरे ॥

१ सरस्वती । २ घर । ३ सोलहहजार । * प्रहरएक रहैं जलके माहीं ।

कमलनयनविशाल सुन्दर,चारुकुण्डलश्रुतिधरे ॥
नीलकंठ भुजंग भूषण, भस्म अंग दिगम्बरे ॥
अर्द्धंग गौरि बिशाल उर, शिरमालधर करुणाकरे ॥
कर्पूर गौरि प्रसन्न आनन, पंचवक्त्र त्रिलोचने ॥
काम प्रद सुखधाम पूरण, काम शोच विमोचने ॥
भगवान भौ भव भय हरण, भूतादि पति शंभुहरे ॥
प्रणत जन पूरण मनोरथ, जगत पति मन्मथ अरे[1] ॥
वृषभ बाहन त्रिपुरे[2] अरि, मृगराज बरछालाम्बरे ॥
शूलपाणि त्रिशूल मूलन, मूलकर शिवशंकरे ॥
सुर असुर नर नाग तव पद, वन्दि मनबांछित लहैं ॥
पूजते पदकमल प्रभु हम, कृष्णपति चाहति अहैं ॥
दोहा–तुम सर्वज्ञ सुजान शिव, जानत जनमन पीर ॥
परम दान दीजे हमैं, सुन्दर बर बलबीर ॥
सो०–यह बरदान न आन, शिव तुमसों चाहत अहैं ॥
कृष्ण कमल पद ध्यान, रहै हमारे उर सदा ॥
यहि विधिब्रज तिय नेम निबाहैं * शिवको पूजि कृष्ण पतिचाहैं ॥
नित प्रति प्रात यमुन जल खोरैं * प्रीति रीति सों मन नहिं मोरैं ॥
सविता[3] सों बहु भांति निहोरैं * गोद पसारि युगल[4] कर जोरैं ॥
तेजराशि दिनमणि जगस्वामी * जगत चक्षु सब अन्तर्य्यामी ॥
प्रणत मनोरथ पूरण कारी * हम पर होहु दयालु मुरारी ॥
काम हमारे तनुहिं जरावै * नन्द सुवन बर हमको भावै ॥
होय हमारो पति नँदलाला * करहु कृपा सो दीनदयाला ॥
ऐसे हरि हित गोप कुमारी * करैं नेम व्रत तप तनुधारी ॥

१ कामके शत्रु । २ त्रिपुरके बैरी । ३ सूर्य । ४ दोनों ।

गेह देहकी सुरति विसारी ❋ कृशतन भईं परम सुकुमारी॥
बर्ष दिवस यों कहत बिहान्यो ❋ प्रभु अन्तर्य्यामी सब जान्यो ॥
मोहित शिव पूजत ब्रज नारी ❋ और कामना सकल निवारी॥
सकल भावके हरि हैं ज्ञाता ❋ सकल देव द्वारा फल दाता ॥

दोहा—देखि नेम यह प्रेममय, गोपिनको गोपाल॥
भये प्रसन्न कृपालु चित, जनहित दीनदयाल॥

सो०—मो कारण जल न्हात, भये जलहिमें प्रकट हरि ॥
सुन्दर श्यामल गात, नव किशोर वरवपु धरे ॥

न्हात जहां युवती सब आछे ❋ मींजत पीठि सबनके पाछे ॥
चकित सबन पाछे हरि हेरो ❋ देख्यो कान्ह कुँवर नँदकेरो ॥
मनमें हर्षित भईं सब नारी ❋ व्रत फल प्रकटे कुंजबिहारी॥
नवल किशोर ध्यान मन लायो ❋ सोई प्रगट रूप दरशायो ॥
दृष्टि परतही सकल लजानी ❋ लागीं अंग दुरावन पानी ॥
एक एकको भेद न जानैं ❋ हरिको सब अपने ढिग मानैं॥
कहत लाज लागत नहिं तुमको ❋ बिना बसन देखतहो हमको ॥
हँसि निकसे तब कुँवर कन्हाई ❋ चीर हारले चले पराई ॥
हांक देत सब शपथ दिवावैं ❋ फिरहु बसन भूषण हम पावैं॥
डारि बसन भूषण तब दीन्हे ❋ गोपिन तुरत दौरिके लीन्हे ॥
चीर फटे भूषण सब टूटे ❋ लेत न बनै तहां नहिं छूटे ॥
एक एककी लाज लजाहीं ❋ बसन अभूषण पहिरत जाहीं॥

दोहा—लगे श्याम ढीठी करन, यह कहि २ पछितात॥
अन्तर गति आनन्द अति, झूठहि खीझत जात॥

सो०—लोगन कहत सुनाय, कान्ह करत लँगराइ अति॥

१ सौगंद ।

यशुमतिके ढिगजाय, कहत चलो कहिये सबै ॥
चलीं यशोमति पै सब ग्वारी ❀ प्रेम विवश तनुदशा विसारी ॥
पुलक अंग अँगिया दरकानी ❀ टूटे हार लिये निज पाणी ॥
चीर चीर नख घात बनाई ❀ यह मिसकरि उरहन ले आई ॥
देखो महरि श्यामके ये गुन ❀ ऐसे हाल किये सबके उन ॥
चोली चीर हार दिखराये ❀ टेर करत इतको भजि आये ॥
और बात इक सुनहु न माई ❀ ढीठ भयो अति कुँवर कन्हाई ॥
बिना वसन हम न्हाति जहां सब ❀ मींजत पीठ जाय पाछे तब ॥
और कहत तुमसों सकुचावें ❀ उर उघारिके तुमहिं दिखावें ॥
महरि विचारत कहत कहा सब, भयो श्याम यहि लायक धौं कब
सुनि युवतिनके मुख यह बानी ❀ बोली बिहँसि नंदकी रानी ॥
बात कहौ सो जो निबहैरी ❀ बिनाभीत नहिं चित्र लहैरी ॥
तुमको कहत लाज नहिं आवति ❀ चोरी रही छिनारो लावति ॥
दोहा—तुम चाहति हो गगनते, गहन तरैया वाम ॥
सो कैसे करि पाइहौ, तुम लायक नहिं श्याम ॥
सो०—मैं बूझी सब बात, तुमसों हौं कहिहौं कहा ॥
वृथा फिरत अठिलात, मुष्ट करौ सुनिहै जगत ॥
यहि अन्तर हरि आय गये घर ❀ शीश मुकुट लीन्हें मुरलीकर ॥
अति कोमल तनु भूषण सोहैं ❀ बाल भेद देखत मनमोहैं ॥
जननी बोलि बांह गहि लीनी ❀ कहत सबनिसों रसरिसभीनी ॥
देखहुरी तुम सब इत आवो ❀ इनहींको अपराध लगावो ॥
देखहु समुझि लाज नहिं आवत ❀ इनहींके नख उर न दिखावत ॥
मेरो कान्ह अबहिं सुत बारो ❀ तुम कोउ औरहि जाय निहारो ॥

१ हाथ । २ आकासते । ३ चुप

देखत हरिहि युवति भई भोरी * कहत महरि कछु तुमहिं न खोरी
देन उरहनो तुमको आई * नीकी पहिरावन हम पाई ॥
आपसमें सब कहत सुनाई * देखहुरी यह भाव कन्हाई ॥
यमुना तीर मिले जब आई * कहां गई तबकी तरुणाई ॥
इनके गुण ऐसेको जानै * और करत औरेही ठानै ॥
घर आवतही भये नन्हाई * ऐसे मनके चोर कन्हाई ॥

दोहा—देखि चरित नँदलालके, भई बाल मति भोर ॥
सुधि बुधि मन कछु थिर नहीं, कहत औरकी और ॥

सो०—सकुचीं बहुरि सँभारि, विवश देखि अपनी दशा ॥
चलीं घरन ब्रजनारि, हरि मुखकमल निहारिकै ॥

गईं घरन ब्रज गोप कुमारी * चित हरिलीनो मदन मुरारी ॥
नेक न मन लागत घर माहीं * धाम कामकी सुधि कछु नाहीं॥
मात पिताको डर नाहिं मानो * गारि देत कोउ सुनत न कानो ॥
प्रात होतही गोप कुमारी * गईं यमुन तट सब सुकुमारी ॥
देखत जहां जाय नँदनंदन * मोर मुकुट शोभित तनु चंदन ॥
मकराकृत कुण्डल उर माला * पीत वसन दृग कमल विशाला॥
दरश देखि अँखियां तृपतानी * भईं सुखी उरतपन बुझानी ॥
कहत परस्पर मिलि सब ग्वाली * यमुना निकट गये वनमाली ॥
कौन भांति करि आज अन्हैबो * बनत नाहिं अब यमुना ऐबो ॥
कैसे करि हम वसन उतारैं * कान्ह हमारी ओर निहारैं ॥
मिँजत पीठ औचकही आई * वसन अभूषण लै भजिजाई ॥
कहौ फेरि कैसे तब पावैं * अब नाहिं कान्ह घाट पै आवैं ॥

दोहा—कहत सकुचकी बात सब, ऊपर मन आनंद ॥

अन्तरगतिके वृत्तको, जानत सब नँदनंद ॥
सो०—जानी जान नराय, लाजान्तर युवती करत ॥
सो अब देउँ मिटाय, अन्तर भलो न प्रेममें ॥
और बात यक श्याम विचारी ❀ येजल भीतर न्हात उघारी ॥
जोतिय जलमें नांगी न्हाई ❀ ताको दोष होत अधिकाई ॥
ताको दोष नाश तब पावै ❀ नांगी परपति सम्मुख आवै ॥
सो इनको यह दूषण टारौं ❀ और लाज अन्तर निरवारौं ॥
करौं आज इनसों विधिसोई ❀ इनको हित मम कौतुकहोई ॥
जो कछु चूक दासते होई ❀ आप सुधारि लेत हरि सोई ॥
अन्तर प्रभुको नेक न भावै ❀ भजै निरंतर जब हरि पावै ॥
अन्तर रहित भक्ति हरिप्यारी ❀ कहत वेद सब सन्त पुकारी ॥
तबहरि मनयह कियो विचारा ❀ इनके बसन हरौं इक बारा ॥
प्रभु सबकी तब दृष्टि बचाई ❀ कदमवृक्ष चढि रहे लुकाई ॥
जब गोपिन हरि देख्यो नाहीं ❀ चकित विलोकी इत उत माहीं ॥
जाने सदन गये नँदलाला ❀ न्हान चलीं तब सब ब्रजबाला ॥
दोहा—धरे उतारि उतारि सब, तटपर भूषण चीर ॥
नग्न होय अस्नान हित, पैठीं यमुना नीर ॥
सो०—ग्रीवालौं जलमाहिं, पैठि करति स्नान सब ॥
मुख छवि कही न जाहिं, कनककंज फूले मनहुँ ॥
बार बार बूझत जलमाहीं ❀ प्रेम सहित मन मुदित नहांहीं ॥
शिवसों विनती करत निहोरी ❀ कबहूं रवि वन्दैं कर जोरी ॥
यहै कामनाकरि सब ध्यावैं ❀ नँदनंदनको पति करि पावैं ॥
कामातुर सब गोपकुमारी ❀ धरैं ध्यान उर कुंजविहारी ॥

१ वृत्तांत । २ वस्त्र । ३ डुबकगये । ४ वर । ५ नंगी । ६ सुवर्णके कमल

मूंदहिं नयन दरश चितलावैं * शब्द विचार श्रवण सुख पावैं ॥
भुज जोरत अंकम हितलागी * मगन प्रेमरस तिय बडभागी ॥
प्रभु अन्तर्य्यामी सब जानैं * देखैं कदम चढे सुख मानैं ॥
कहत धन्यधनि ब्रजकी बाला * मेरे हित तप करत विशाला ॥
प्रीति रीति सबकी पहिचानी * क्षण क्षणकी सेवा हरि मानी ॥
काहू भाव मोहिं कोउ ध्यावै * मोहिं विरद राखे बनिआवै ॥
कियो बहुत श्रम मम हित कारण * अब इनको दुखकरों निवारण[१]।
उपजी कृपा समुझि जनपीरा * उतरे तरुतें[२] श्रीबलबीरा ॥

दोहा–प्रेम मगन युवती सबै, रहींध्यान मन लाय ॥
हरि सब भूषण वसन लै, चढे कदमपर जाय ॥

सो०–भूषण वसन अपार, सोरह सहस वधूनके ॥
हरे एकहीं वार, लै राखे तरुनीपपर[३] ॥

कर्‌यो नीपतरु अति विस्तारा * फूले सुमन सुगंध अपारा ॥
लैलै बसन डार अटकाये * जहां तहां भूषण लटकाये ॥
नीलाम्बर पाटाम्बर सारी * श्वेत पीत चूनरि अरुणारी ॥
जहां तहां शाखन प्रतिसोहैं * देखत छवि बसन्त मनमोहैं ॥
सो तरुशाखा परम सुहाई * बैठे छबिकी राशि कन्हाई ॥
युवतीसुकृति तरुण धरि मानो * फर्‌यो सुकृति पूरण फल जानो ॥
देखत कदम चढे नँदलाला * बसन बिना जलमें सब बाला ॥
ध्यान करतते जब सब जागीं * तब जल बाहर निकसन लागीं ॥
जलते निकरि आय तट देख्यो * भूषण बसन तहां नहिं पेख्यो
इत उत चितै चकित भईंभारी * सकुचिगईं फिर जल सुकुमारी ॥
नाभि प्रयन्त नीरमें ठाढी * भुजलगाय उरचिन्ता बाढी ॥

१ दूर करों । २ वृक्ष । ३ कदमवृक्ष

कँपत शीतमें अति अकुलानी ❋ बार बार कहि कहि पछितानी ॥
दोहा—ऐसो को भूषण बसन, सबके एकहि बार ॥
तटते लये चुरायके, लगी न नेक अबार ॥
सो०—हम जानत यह बात, अम्बर हरि हर लेगये ॥
और कोनको गात, जो ब्रजमें ढीठो करे ॥
दीन होय तब युवति पुकारी ❋ हो कहुँ श्याम जाहिं बलिहारी ॥
दरश दिखाय विनय सुनि लीजे ❋ अम्बर देहु कृपा अब कीजे ॥
थरथर काँपत अँग सुकुमारी ❋ देखि श्याम नहिं सके सँभारी ॥
बोलि उठे तब मदनगोपाला ❋ कहा कहत मोसों ब्रजबाला ॥
कतहौ जलमें मरत जडाई ❋ लेहु बसन भूषण इत आई ॥
तुम पट भूषण सुरति बिसारी ❋ तब मैं लै कीन्ही रखवारी ॥
अब अपने पट भूषण लीजे ❋ रखवारी कछु हमको दीजे ॥
जब ऐसे हरि बोल सुनायो ❋ तब सबके मन धीरज आयो ॥
सुनि हरि वचन सकल हरषानी ❋ लखे कदम ऊपर सुखदानी ॥
कहत सुनो सखि हरिकी बातैं ❋ बसन चुराय करैं ये घातैं ॥
हम सब जलके बीच उघारी ❋ माँगत हैं हम सों रखवारी ॥
तब हँसि बोलीं ब्रजकी बाला ❋ सुनहु श्याम सुन्दर नँदलाला ॥
दोहा—तन मन धन अर्पों तुम्हैं, है जु तुम्हारे पास ॥
अब अम्बर दीजे हमैं, जानि आपनी दास ॥
सो०—तब हँसि कह्यो कन्हाय, जो तन मन मोको दियो ॥
लेहु बसन ह्यां आय, तौ मानो मेरो कह्यो ॥
सुनहु श्याम घन बात हमारी ❋ नग्न कौन बिधि आवैं नारी ॥
हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई ❋ बिना बसन क्यों देह दिखाई ॥

१ वस्त्र । २ नंगी

यह मति आप कहां धौं पाई ❀ आज सुनी यह बात नवाई ॥
पुरुष जात यह कहत न जानहु ❀ हाहा ऐसो मन जनि आनहु ॥
कहत श्याम जो नग्न न ऐहौ ❀ तौ तुम पट भूषण नहिं पैहौ ॥
जो तन मन दीन्हो तुम मोही ❀ तौ राखत कित लज्जा द्रोही ॥
यह अन्तर मोसों जनि राखौ ❀ मानि लेहु तुम मेरो भाषौ ॥
शीत सहत कत नवल किशोरी ❀ लाज देहु जलहीमें बोरी ॥
जलते निकसि बेग इत आवो ❀ हाथ जोरि मोहि विनय सुनावो ॥
ज्यों जलमें रविते कर जोरो ❀ त्यों ह्वै सन्मुख मोहिं निहोरो ॥
यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी ❀ ऐसी बात न कहो मुरारी ॥
हाहा लागहिं पाँय तिहारे ❀ पाप होत हैं जाडन मारे ॥

दोहा—छांडि देहु यह टेक हरि, बरु भूषण तुम लेहु ॥
शीत मरत हम नीरमें, बसन हमारे देहु ॥

सो०—दूषण होत अपार, जो तिय अँग देखहि पुरुष ॥
ताते नंदकुमार, नारी नग्न न देखिये ॥

तुमको छोह होत नहिं राई ❀ बडे निठुर हो कुँवर कन्हाई ॥
ऐसो करो जो तुमको सोहै ❀ आज तुम्हारी पटतर कोहै ॥
आजहि ते हम दासि तिहारी ❀ कैसे अंग दिखावहिं नारी ॥
अंग दिखाये भूषण पैहौ ❀ नातर जलमें बैठी रैहौ ॥
मेरे कहे निकसि सब आवो ❀ थोरे में मो भलो मनावो ॥
कत अंतर राखत हो हम सों ❀ बार बार मैं भाषत तुमसों ॥
लेहु आय अपने पट भूषण ❀ यह लागै हमको सब दूषण ॥
मो हित तुम कीन्हो तप भारी ❀ अब कत लज्जा करत हमारी ॥
मैं अन्तर्य्यामी सब जानी ❀ करिहौं तुम्हरे मनकी मानी ॥

अब पूरण तप भयो तुम्हारो ❋ अन्तर इतो दूरि करि डारो ॥
सुनि यह मोहनके मुख बानी ❋ सब युवती मनमें हरषानी ॥
तब सबहिन यह बात विचारी ❋ अब तो टेक परे बनवारी ॥

दोहा–कहत परस्पर मिलि सबै, हरि हठ छांडत नाहिं ॥
बसन बिना कैसे बनै, कौन भांति घर जाहिं ॥

सो०–चलौ लीजिये चीर, इनहीं को हठ राखिकै ॥
मनमोहन बलबीर, जो कछु कहैं सो कीजिये ॥

यह विचार जल बाहर आई ❋ बैठि गई तट अतिहि लजाई[1] ॥
बार बार हरि निकट बुलावै ❋ त्यों त्यों अधिक लाज को पावै ॥
कहत श्याम अम्बर अब दीजे ❋ हाहा इतनो हठ नहिं कीजे ॥
बहत समीर शीत अति भारो ❋ मानेंगी उपकार तुम्हारो ॥
हम दासी तुम नाथ हमारे ❋ हम सबकी पति हाथ तुम्हारे ॥
कहत श्याम यह तजो सयानी ❋ छोड़हु लाज करहु मम बानी ॥
अपने बसन लेहु ह्यां आई ❋ देहौं तुमको नन्ददुहाई ॥
आवहु सकल लाजको त्यागे ❋ करहु शृंगार आय मो आगे ॥
तब सबहिन यह मनमें जानी ❋ करिहैं श्याम आपनी ठानी ॥
कर कुच अंग ढांकि भइँ ठाढी ❋ बदन नवाय लाज अति बाढी ॥
गईं कदमतर हरिके पासा ❋ कहति देहु अब हमको बासा ॥
हरि बोले यों बसन न पावो ❋ हाथ जोरि मोहिं विनय सुनावो ॥

दोहा–जो कहिहो करिहैं सबैं, हँसि बोलीं ब्रजबाम ॥
लैहैं दांव हमहूं कबहुं, सुनो श्याम अभिराम ॥

सो०–उभय कमल कर जोरि, सलज सहास निहारि हरि ॥
मांगत सकल निहोरि, कहत देहु अब बसन प्रभु ॥

१ लज्जायुक्त

लखि युवतिन की प्रीति कन्हाई * रीझे भक्तन के सुखदाई ॥
धन्य धन्य बोले गोपाला * निश्चय प्रीति करी तुम बाला ॥
देखि निरन्तर गोपकुमारी * दीन्हे बसन अभूषण डारी ॥
अति आतुर सब पहिरन लागीं * प्रेम प्रीतिके रस मति पागीं ॥
तब हँसि बोले कुंजबिहारी * मैं पति तुम मेरी सब प्यारी ॥
अन्तर शोच दूरि करि डारो * मेरो कह्यो सत्य उर धारो ॥
शरद रात तुम आश पुरैहौं * अंकन भरि सबको उर लैहौं ॥
अब तप करि तुम मत तनु गारो * मैं तुमते क्षण होत न न्यारो ॥
करसों परश सबन सुख दीन्हो * विरह ताप तनुको हरि लीन्हो ॥
बिदा करी हँसि नँदके लाला * निज निजसदन गईं ब्रजबाला[1] ॥
गोपिन उर अति हर्ष बढायो * मन मन कहति कृष्ण बर पायो ॥
ब्रजबासी जनके सुखदाई * आये अपने सदन कन्हाई ॥

दोहा–इहि विधि ब्रज सुन्दरिनको, हित करि सुंदरश्याम ॥
ब्रज विलास बिलसत विविध, सकल लोक अभिराम ॥

सो०–सुंदर घन सुखरास, सब विधि करि सबके सुखद ॥
नित नव करत बिलास, मुदित सकल ब्रज लोग लखि ॥

॥ अथ वृन्दावन वर्णनलीला ॥

हरि लखि मात पिता सुख पावैं * बाल भाव बहु लाड लडावैं ॥
नवल किशोर सुभगतनुश्यामा, निरखत मुदित सकल ब्रजबामा ॥
ग्वाल बाल सब सम[2]करि जानैं * सखा प्राण प्रीतम करि मानैं ॥
नित उठि गाय चरावन जाहीं * क्रीडा करैं विविध ब्रजमाहीं ॥
इकदिन सोवत सदन[3] कृपाला * आये द्वार बुलावन ग्वाला ॥
चलहु श्याम बन धेनु चरावन * यह सुनि जननी[4] लगी जगावन ॥

१ ब्रजकी स्त्री । २ बराबरके । ३ घरमें । ४ यशोदा ।

उठहु तात मैया बलि जाई ❋ टेरत ग्वाल बाल बल भाई ॥
बदन दिखाय सबन सुख देऊ ❋ दँतवन करि कछु करहु कलेऊ ॥
भई बेर बनको नँदलाला ❋ अब मति सोवहु मदनगोपाला ॥
देखनको छबि अति अतुराई ❋ सखा द्वार सब टेर लगाई ॥
सोवत ते हरि जागत नाहीं ❋ सुनत बात आलस मन माहीं ॥
कबहूं बसन ढांपि मुख सोवैं ❋ कबहुँ उघारि जननि तनु जोवैं ॥
खोलत नयन पलक झुकि आवैं, सोछबि निरखि मातु सुख पावैं ॥

दोहा—उठो लाल जननी कह्यो, तब चितये हँसि मन्द ॥
पटगहि पुनि पुनि फेर मुख, तबहिं उठे ब्रजचन्द ॥

सो०—कबके टेरत ग्वाल, बलदाऊ यह कहि उठे ॥
बनको भई अबार, गईं गाय आगे निकसि ॥

यह सुनि तुरतहि उठे कन्हाई ❋ यशुमति जल झारी भरिलाई ॥
दुहुं भैयन करवाय मुखारी ❋ पोंछे मुख जननी निज सारी ॥
करहु कलेऊ अब कछु प्यारे ❋ एक थार दोउ सुत बैठारे ॥
दधि माखन रोटी अरु मेवा ❋ करत प्रात दोउ भ्रात कलेवा ॥
करत निकट बैठे मनमोदा ❋ दृग सुख लूटत महरि यशोदा ॥
मात प्रेमते अति तृपताई ❋ अँचवन करजु उठे दोउ भाई ॥
द्वारे टेर उठ्यो इक ग्वाला ❋ बन कहँ बेगि चलहु नँदलाला ॥
बल मोहन आवहु दोउ भैया ❋ आगे निकसि गईं हैं गैया ॥
ग्वाल वचन सुनि अति अतुराई ❋ कछु अँचयो कछु नाहिं दोउ भाई
मुरली मुकुट लकुट पट लीन्हो ❋ निकसि दौरि बनहीं मन दीन्हो ॥
केतिक दूरि गईं चलि गैया ❋ ग्वालहि बूझत जात कन्हैया ॥
कछु वन पहुंची हैहैं जाई ❋ कछु मग मिलिहैं कुवँर कन्हाई ॥

१ दांतन ।

दोहा—बन पहुँचत सुरभी लई, बल मोहन दोउ धाय ॥
कहत सबन सों जात कित, हमहूं पहुँचे आय ॥
सो०—तुम आये अतुराय, जेंवत पर लखिके हमैं ॥
तुम सँग रहत बलाय, अब हम दूरि जरायहैं ॥
यह सुनि सखा धाय सब आये ❀ हरिको अंकम भरि उर लाये ॥
तुमहौ सबहिनके सुखदाई ❀ हमको तजि मति जाहु कन्हाई ॥
आज कुमुद[1] बन चलहु चरावन शीतल सुखद स घन अति पावन
सुनत कह्यो अति हर्ष कन्हाई ❀ नीकी कही बात यह भाई ॥
अपनी अपनी गाय बुलावो ❀ एक ठौर करि सबन चरावो ॥
यह सुनि ग्वाल सुरभि गण घेरत ❀ लै लै नाम गाय सब टेरत ॥
धौरी धूमरि राती कबरी ❀ पियरी गोरी गैनी कजरी ॥
खैरी फुलही रौंची चौरी धूरी हमरी मुंडी भौरी ॥
लीली कपिली सुवरन जेती लाखी निकही रतनी तेती ॥
ऐसे सुरभी टेरि बुला सब मिलि चले कुमुद बन धाई ॥
तब बल कह्यो दूरि मति जाहू नंद रिसैहैं अरु यशुदाहू ॥
बलको कह्यो मानि सुखदाई ❀ बोलि लिये सब सखा कन्हाई ॥
दोहा—कहत सबन समुझाय हरि, कौन कुमुद बन जाय ॥
बुरो मानि हैं नंद सुनि, और यशोदा माय ॥
सो०—लावहु गाय फिराय, चलिये वृन्दावन सुखद ॥
सुरभी चरत अघाय, वंशीवट यमुना निकट ॥
यह कहि श्याम चले अगुवाई ❀ फेरी गाय ग्वाल सब धाई ॥
वृन्दावनहिं चले मनमोहन ❀ हर्षित सखा वृन्द तब गोहन[2] ॥
करत कुलाहल आनँद भारी ❀ पहुँचे वृन्दावन बनवारी ॥

---

१ कमोदवन। २ संग।

सुरभी गण चहुँदिशि बगराई ❀ कहत सखा सब हर्ष बढाई ॥
जादिन अघ हति श्यामसिधाये ❀ ता दिनते या वन अब आये ॥
देखत वन सब भये सुखारी ❀ बहत मनोहर त्रिविध[2] बयारी ॥
विटपनकी शोभा चित दीन्हे ❀ देखत श्याम सखन सँग लीन्हे ॥
नव किशलयदलसुमन सुहाये ❀ मनहुँ बसन्त शृंगार बनाये ॥
मधुर मिष्ट सुन्दर सुखकारी ❀ फलके भार रहीं नव डारी ॥
मनहुँ देखि श्यामहिं सुखपाई ❀ देत भेंट तरु शीशनवाई ॥
सुमन[3] भँवर गुंजत छबि पावैं ❀ अस्तुति मनहुँ मधुर सुर गावैं ॥
एक पांव ठाढे सब आगे ❀ जहँ तहँ थकित मनहुँ अनुरागे ॥

दोहा—बेलि विविध लपटीं ललित, फूलि रहीं बहुरंग ॥
शोभितसहित शृँगारजिमि, नारि पतिनके संग ॥

सो०—हालि उठत सब पात, मन्द पवन लागत कबहुँ ॥
आनँद उर न समात, बार बार पुलकत मनहुँ ॥

कुंज पुंज मंजुल सुखदाई ❀ शीतल सुमन सुगंध सुहाई ॥
हरि विश्राम हेत बन जानो ❀ रचे विचित्र सदन बहु मानो ॥
बोलत हैं कल खग[4] बहुरङ्गा ❀ कीर[5] कपोत[6]कोकिला भृङ्गा ॥
मनहुँ भेरि सब आनँद गावैं ❀ जहँ तहँ बरही[7] नृत्य दिखावैं ॥
तरुदल खरक पवन गति साजे ❀ मधुर सुरन बाजन ज्यों बाजे ॥
क्रीडत मर्कट[8] शुभगतिलीने ❀ करत कला ज्यों नट परवीने ॥
मृग गण चितवत आनँद बाढे ❀ मनहुं तमाशगीर सब ठाढे ॥
पाय श्याम घनहित वनराई ❀ करी मनहु आनंद बधाई ॥
वनशोभा कछु वरणि न जाई ❀ ऋतु वसंत जहँ रहत सदाई ॥
जहां स्वभाव काल गुण नाहीं ❀ वैरभाव नहिं खग मृग माहीं ॥

१ गौवनकेझुंड । २ शीतलमंदसुगंधयुत । ३ फूल । ४ पंछी । ५ तोता । ६ कबूतर । ७ मोर । ८ बंदर ।

सदा एकरस परम प्रकाशी ❁ परम सुखद आँनदकी राशी ॥
चिन्तामणि सब भूमि सुहावन। कोमल विमल सुभग अति पावन

दोहा—शोभा वृन्दाविपिनकी, वरणि सके असकौन ॥
शेष महेश गणेश विधि[1], पार न पावत तौन ॥

सो०—महिमा अमित अपार, श्रीवृन्दावन धामकी ॥
जहँ नित रहत बिहार, परब्रह्म भगवान हरि ॥

देखि श्याम वन भये सुखारी ❁ बैठे तरु[2]तर विपिनविहारी[3] ॥
वृन्दावनकी करत बडाई ❁ बलदाऊ सों कहत कन्हाई ॥
मैं यह वन देखत सुख पावत ❁ वृन्दावन मोको अति भावत ॥
कामधेनु सुरतरु विसरावत ❁ रमा[4] सहित वैकुंठ भुलावत ॥
यह यमुना तट यह बन यावत ❁ ये सुरभी अति सुखद सुहावत ॥
यह सुख त्रिभुवन कितहुँन पावत ❁ ताते मैं तनु धरि इत आवत ॥
दाऊजू तुम सच कर मानों ❁ यह वृन्दावन जड मति जानों ॥
चितवनमें आनंद की रासा ❁ प्रेम भक्तिको यहां निवासा ॥
परमधाम मम परम सुहावन ❁ पावनहूते पावन[5] पावन ॥
जे तरु वृन्दावनके माहीं ❁ कल्पवृक्ष तिनकी सरि नाहीं ॥
कल्पवृक्षके तर जब जाई ❁ तब मांगेवाञ्छित फल पाई ॥
वृन्दावन तरु चिंतत जोई ❁ प्रेम भक्ति मम पावत सोई ॥

दोहा—जाके वश मैं रहत हौं, अपनी प्रभुता त्याग ॥
प्रेम भक्तिसो लहत नर, वृन्दावन अनुराग ॥

सो०—श्रीमुख वरण्यो श्याम, श्रीबृन्दावनकोमहत[6] ॥
सुख पायो बलराम, सुनत कान्हके वचन वर ॥

सखा वृन्द सुनि श्रीमुख बानी ❁ प्रेम मगन तनु दशा भुलानी ॥

१ ब्रह्मा। २ वृक्ष। ३ वृन्दावनबिहारी। ४ लक्ष्मी। ५ पवित्रतेहू पवित्र। ६ माहात्म्य

चितवत हरिमुख पलक बिसारी, जिमि चकोर गण शशिहि निहारी
कहत चकित सब अति सुख पावत, निजलीलाहरिप्रगट जनावत
पुनि पुनि पुलक कहत शिर नाई * सुनहु श्यामघन कुँवर कन्हाई॥
वार वार तुमको कर जोरैं * हमहिं काह तुम तजहु न भोरैं॥
जहां जहां तुम तनुधरि आवो * तहां तहां जनि चरण छुडावो॥
तब हँसि बोले कुँवर कन्हैया * ब्रजते तुम्हैं नटारौं भैया॥
तुम मेरे मनको अति भावत * तुमते मैं बहुतै सुख पावत॥
या ब्रजसम त्रिभुवन कहुँ नाहीं * तुम्हरे ढिग मैं रहत सदाहीं॥
मैं तुम हेत देह यह धारी * तुमते ब्रजलीला विस्तारी॥
है यह ब्रज मोको अति प्यारो * तातें कबहूँ होत न न्यारो॥
ऐसे हरि ग्वालनके माहीं * गुप्त बात कहि कहि समुझाहीं॥

दोहा—मधुर बचन सुनि श्यामके, सखा वृन्द सुख पाय॥
प्रेम पुलकि तनु मुदित मन, रहे सबै गहि पाय॥

सो०—धनि धनि धनि तुम श्याम, धनिब्रज धनि वृन्दा विपिन॥
तुम्हरे गुण अभिराम, हम सब अज्ञ न जानहीं॥

सुनहु श्याम घन नंददुलारे * तुम प्रभु हम सब दास तुम्हारे॥
दुर्लभ यह हरि संग तुम्हारो * कबधौं फेरि गोप तनु धारो॥
नाजानिये बहुरि ब्रजनाथा * कब तुम फिरिहौ सुर मुनि साथा॥
कब तुम छाक छीनिके खैहौ * कबधौं फिरि ऐसे सुख दैहौ॥
बलि बलि जइये श्याम तुम्हारी * अब इक विनती सुनहु हमारी॥
सुन्दर मुरली नेक बजावो * अधरसुधारस श्रवणन प्यावो॥
तुम्हैं नन्दकी सौंह दिवावैं * मुरली धुनि सुनि हम सुख पावैं॥
तुम्हरे मुख यह बाजत नीकी * हम सबकी जीवन है जीकी॥

१ मीठे। २ मूर्ख

सुनत सखनकी कोमल बानी ❀ प्रेम सुधारस सों लपटानी ॥
गुण गम्भीर गुपाल कृपाला ❀ भक्त वश्य प्रभु दीनदयाला ॥
भये प्रसन्न भक्त सुखदाई ❀ चितये कमल नयन समुदाई ॥
करते लकुट निकट धरि दीनो ❀ पाछे मुरलीको गहिलीनो ॥
दोहा—पकरि दुहूं कर अधर धर, मधुर मुरलि धुनिगान ॥
मोहिलियो चर अचरनभ[1], जल थल श्याम सुजान ॥
सो०—भई थकित[2] गति पौन, यमुना जल लीन्ही शयन[3] ॥
ह्वै गये खग मृग मौन[4], रहे जहां तहँ चित्रसे ॥
उपजावत गावत गति सुंदर ❀ राग रागिनी ताल विविधवर ॥
सखावृन्द सुनि तनमन वारैं ❀ निरखत मुखछबि पलक बिसारैं॥
चलत नयन भ्रुकुटी पुट नासा ❀ करपल्लव मुरली सुरश्वासा ॥
मानहुँ निरतक भाव बतावैं ❀ शुभगति नायक सैन सिखावैं ॥
कुंचित अलक वदन छबि देई ❀ मनहुँ कमल रस अलिगण लेई॥
कुंडल झलक कपोलन माहीं ❀ मनहु सुधारस मकर[7] भ्रमाहीं ॥
दशनदमक मोतिन लर ग्रीवां ❀ मनहु सकल शोभाकी सीवां ॥
तिलक विचित्र भालछबि छाजे ❀ मनहु महा छबि दशन बिराजे
चमकत मोर चंद्रिका चारू ❀ मनहु सकल शृंगार शृँगारू ॥
श्याम गात उर गजमणि माला ❀ सँग शोभित वनमाल विशाला
मरकतगिरि[9] मनो सुरसरि[10] धारा ❀ बैठी पंगति कीर[11] किनारा ॥
कटि पटपीत तडित[12] दुति हारी ❀ पदपंकजनूपुर रुचिकारी ॥
दोहा—ग्रीवा लटकनमुरकि पर, शोभित छबिसमुदाय ॥
प्रेम मगन निरखत मुदित, गोप बाल सुख पाय ॥
सो०—सुन्दर श्याम सुजान, देत परम सुख सखनको ॥

१ आकाश । २ पवनचलने सों रहिगयी । ३ बहिबेते रहिगयो । ४ चुप्प ह्वैगये । ५ घूंघवारी अलक । ६ भौंरनके समूह । ७ मगर । ८ नार । ९ पन्नाको पर्वत । १० गंगा । ११ तोता । १२ बीजली ।

चारत तन मन प्रान, धन्य धन्य कहि ग्वाल सब ॥
रीझत ग्वाल रिझावत श्यामा * लेत मुरलिमें सबको नामा ॥
हँसत ग्वाल सब देकर ताला * लेत हमारो नाम गुपाला ॥
कहत श्याम अब तुमहुं बजावो * ऐसे हमको गाय सुनावो ॥
हँसि मुरली तिनके कर दीन्हो * अधरन धर अमृतरस लीन्हो ॥
लैलै निज कर सकल बजावत * हरिके स्वरको रूप न पावत ॥
आस पास सोहत सब बालक * मधि प्रभु प्रीति रीतिके पालक ॥
हँसि हँसि सबके चित्त चुरावैं * सब मिलि प्रेमानंद बढावैं ॥
जैसे श्री मुरलीधर गायो * काहू पै सो रूप न आयो ॥
हँसि हँसि कहत परस्पर भाई * हरिकी समको सकै बजाई ॥
चतुरानन[1] पंचानन[2] ध्यावैं * सहसानन[3] नव नित गुण गावैं ॥
सुर नर मुनि कोउ पार न पावैं * सो ग्वालन सँग वेणु बजावैं ॥
ब्रजबासी जनको प्रतिपाला * भक्त वश्य प्रभु दीनदयाला ॥
दोहा—कारण करण अनंत गुण, निगम[4] नेत जिहि गाव ॥
सो ग्वालन सँग गावहीं, देखहु भक्ति प्रभाव ॥
सो०—वृन्दाबन की रेनु, ब्रह्मादिक बांछित सदा ॥
जहां श्याम सुख देनु, ग्वालन सँग चारत सुरभि ॥

॥ अथ द्विजपत्नीयाचनलीलावर्णन ॥

बिहरत वृन्दावन वनवारी * विविध भांति लीला अनुसारी ॥
कबहूं सखन संग मिलि गावैं * कबहूं मुरली मधुर बजावैं ॥
कबहूं गैयन घेरत धाई * कबहूं यमुनाके तट जाई ॥
करत कुलाहल आनँद भारी * देत दिवावत रसकी गारी ॥
ऐसे लीला करत अपारा * भये क्षुधारत[5] गोपकुमारा ॥

१ ब्रह्मा । २ महादेव । ३ शेष । ४ वेद । ५ भूखे

कहत भये तब हरिसों जाई * हमको क्षुधा लगी अधिकाई ॥
यह सुनि प्रभु भक्तन हितकारी * अपने मन यह बात विचारी ॥
सुनि सुनि मेरे गुण गण गाना * करत रहत द्विज तिय मन ध्याना
तिनको दरशन आज दिखाऊं * तिनके मनकी ताप नशाऊं ॥
तब हरि ग्वालन कह्यो बुझाई * यज्ञ करत त्यां द्विज समुदाई[1] ॥
तिनके निकट जाउ तुम भाई * प्रथम प्रणाम कीजियो जाई ॥
कहियो हमको कृष्ण पठायो * तुमपै भोजन मांगन आयो ॥

दोहा—यह सुनि ग्वाल गये तहां, जहां विप्र[2] समुदाय ॥
यज्ञ करत अहंमित[3] लिये, विद्याको बल पाय ॥

सो०—ग्वालन करी प्रणाम, कह्यो तिन्हैं कर[4] जोरिकै ॥
हमैं पठाये श्याम, मांग्यो है भोजन कछू ॥

वनमें राम कृष्ण दोउ भैया * आये इतहि चरावन गैया ॥
वे कछु आज भयेहैं भूखे * यह सुनि विप्र है गये रूखे ॥
कह्यो यज्ञ हित करी रसोई * अहिरन पहिले देय न कोई ॥
यह सुनिग्वालसकल फिरिआये * हरिसों तिनके वचन सुनाये ॥
सुनि हलधर तनचितै कन्हाई * बोले वचन मन्द मुसुकाई ॥
ये द्विज धर्म कर्म लपटाने * बिना भक्ति मोको नहिं जाने ॥
तब ग्वालनसों कह्यो मुरारी * जाउ जहां इनकी सब नारी ॥
उनको है दृढ भक्ति हमारी * वे मानैंगी कहो तुम्हारी ॥
उनसों भोजन मांगहु जाई * कहियो भूखे भये कन्हाई ॥
तब द्विज नारिन ढिगये आये * हाथ जोरि तिनके शिर नाये ॥
कह्यो राम अरु कुँवर कन्हैया * वनमें भूखे हैं दोउ भैया ॥
मांग्योहै कछु भोजन तुमसों * आज्ञा देहु सो कहिये उनसों ॥

१ माथुर (चौबेन्की स्त्री) । २ माथुरब्राह्मण । ३ अहंकार । ४ हाथ

दोहा—ग्वालनके सुनि वचन सब, हर्षि उठीं द्विज वाम ॥
कहत हमारो भाग्य धनि, भोजन मांग्यो श्याम ॥
सो०—करत रहीं नित ध्यान,सुनि सुनि जिनके गुण श्रवण॥
सफल जन्म निज जान, तिनको भोजन ले चलीं॥
षट रस के व्यंजन विधि नाना*कोमल भांति अमित पकवाना॥
खीर खांड सिखरन दधि न्यारो*माखन लियो श्यामको प्यारो।
कहँलग वरणों कहौं प्रकारा * प्रेम सहित लीन्हे भरि थारा ॥
बहुते ग्वालनके कर दीने * बहुते अपने शिर धरि लीने ॥
नयनन दरश लालसा बाढी * उपजी चाह हृदय अति गाढी ॥
चलीं पतिनकी कानि बिसारी * देखनको प्रभु गोप विहारी ॥
ग्वालन सों पूंछत यह बाता * कित हैं हरि जनके सुखदाता ॥
जिनके पुरुष हते घरमाहीं * तिनको जान देत सो नाहीं ॥
कहत जात तुम कित अतुराई* लोकलाज तनु दशा भुलाई ॥
तिनसों कहत भईं ते नारी * हमको श्रीगोपाल हँकारी ॥
भोजन मांग्यो है हम पाहीं* तिनहिं देन ग्वालन सँग जाहीं॥
तिनको दरशदेखि सुख पैहैं* बहुरि तिहारे घर हम ऐहैं ॥
दोहा—यह सुनि पति अति क्रोध करि, तिनहिं दिखायो त्रास।
कहत भईं तुम बावरी, बैठति नाहिं अबास ॥
सो०—जिनके उर नँदलाल, बसे लकुट मुरली लिये ॥
तिनहिं न भय यम काल, कौन भांति रोके रुकहिं ॥
हरिपै हमैं जान पिय देहू * कहारोंकि अपयश शिर लेहू ॥
देखन देहु नंदके लालहि * त्रिभुवन पति प्रभु मदन गुपालहि ॥
इतनी बात मानि पिय लीजै* हा हा हमैं दान यह दीजे ॥

वे हैं यज्ञपुरुष भगवाना ❀ अन्तरयामी कृपानिधाना ॥
करत यज्ञ विधि तिन्हैं विसारी ❀ कहा सरैगी बात तिहारी ॥
कहँ लगि कहौं बात समुझाई ❀ जात दरशकी अवधि बिहाई ॥
जो तुम स्वामी जानत नाहीं ❀ तो हम सत्य कहैं तुम पाहीं ॥
मनतो मिल्यो जाय नँदलालहि ❀ करिहो कहा रोकिकै ख्यालहि॥
लेहु सँभारि देह यह सारी ❀ जासों पिय तुम कहत हमारी॥
को राखै इतने जंजालहि ❀ मिलि हैं प्राण यशोदा लालहि ॥
जो निश्चय नहिं श्याम सनेहा ❀ तौ यह कौन काज की देहा ॥
सब सखियनके आगे जाई ❀ देखोंगी छबि कुँवर कन्हाई ॥

दोहा—ऐसे देह अरु गेह तजि, पतिकी कानि निवारी ॥
पहुँची सबते प्रथमही, जो रोकी ब्रजनारी ॥
सो०—कठिण प्रेमको पंथ, तहां नेमकी गम[3] नहीं ॥
कहत सकल सद्ग्रंथ, जहां नेम तहँ प्रेम नहिं ॥

ऐसे भोजन लै द्विजबाला ❀ पहुँची वन जहँ मोहन लाला ॥
नटवर भेष चित्र तन कीने ❀ ठाढे सखा संग भुज दीने ॥
मोर मुकुट बैजन्ती माला ❀ कर मुरली दृग नयन बिशाला ॥
कुण्डल अलक तिलक झलकाहीं ❀ कोटिकामछबि पटतर नाहीं ।
मुख मृदुहँसनि लसनि पटपीरो ❀ निरखत नयन ताप भयो सीरो ॥
भोजन लै हरि आगे राखे ❀ अपने भाग्य धन्य करि भाषे ॥
तिन्हैं देखि हरि मन सुख मान्यो, वचनन करि तिनको सन्मान्यो
तिन सों बहुरो कह्यो कन्हाई ❀ गृह पति तजि तुम कित इतआई ॥
कहियत विप्र वेद[2] अधिकारी ❀ हो तिनकी तुम पतिब्रत नारी ॥
वे सब यज्ञ करत बन माहीं ❀ तुमबिन यज्ञ होय है नाहीं ॥

१ समय । २ वेद । ३ गम्य नहीं ।

यह तुम कछू भलो नाहिं कीन्हो * पतिको कह्यो मानि नहिं लीन्हो
पति आयसु तिय पालै जोई * चारि पदारथ पावै सोई ॥

दोहा—पति देवता सुतीय कहँ, वेद वचन परमान॥
जाहु वेगि तुम पतिन पहँ, ताते यह जिय जान॥

सो०—सुनि हरि वचन प्रमान, कर्म धर्म मानो सुखद॥
द्विज तिय परम सुजान, बोलीं सब कर जोरिकै॥

सुनहु श्यामघन अन्तर्यामी * तुमहीं सकल जगतके स्वामी ॥
यज्ञ पुरुष तुमहीं सुखधामा * तुमहीं सबके पूरण कामा ॥
विविध यज्ञ करि तुमको ध्यावैं * तुमते चारि पदारथ पावैं ॥
सकल धर्म ते शरण तुम्हारी * है सब जीवनको सुखकारी ॥
यह हम सुनी पतिन मुख बानी * कहत वेद इतिहास बखानी ॥
ताते शरण तुम्हारी आई * यह दूषण नहिं हमैं गुसाई ॥
तव मायावश सकल भुलाने * ताते पतिन न तुम पहिंचाने ॥
तिनको दोष क्षमा प्रभु कीजे * हमको शरण आपनी दीजे ॥
चारि पदारथ हूते भारो * है प्रभुदरशन शरण तुम्हारो ॥
ताते नहीं निरादर कीजे * अपने चरण शरण रख लीजे ॥
सुनि प्रभु द्विजपत्नी की बानी * भये प्रसन्न भक्त सुखदानी ॥
धन्य धन्य प्रभु तिनको भाख्यो * हितकारि तिनको भोजन राख्यो

दोहा—दै अपनी दृढ भक्ति हरि, तिन्हैं कह्यो घर जाहु॥
ह्वै हैं तुम्हरे दरशते, शुद्धि तुम्हारे नाहु॥

सो०—हरि आयसु धरि माथ, पाय भक्ति वरदान वर॥
राखि हृदय ब्रजनाथ, चलीं हर्षि द्विजतिय सदन॥

नँद नंदनकी करत बडाई * द्विजपत्नी सब घरको आईं ॥

१ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। २ पति।

देखत तिन्हैं विप्र समुदाई ❋ भये पुनीत विमल मति पाई ॥
धन्य धन्य कहि तियन बखानी, आप कहत हम अति अज्ञानी॥
जिनके हेतु यज्ञ हम कीन्हो ❋ तिन मांग्यो भोजन नहिं दीन्हो
हम विद्या अभिमान भुलाने ❋ अविगतिकी गति कैसे जाने ॥
परब्रह्म प्रभुजन सुखदाई ❋ भक्तन हित प्रगटे प्रभु आई ॥
तिनको हम पहिचान्यो नाहीं ❋ बारबार यह कहि पछिताहीं ॥
हैं ये तिय अतिशय बडभागी ❋ कृष्णचरण पङ्कज अनुरागी ॥
ब्रह्मादिक खोजत हैं जिनको ❋ देख्यो जाय प्रगट इन तिनको ॥
ऐसे बहु विधि तिय[1]न सराहीं ❋ आदर करि लीन्ही घरमाहीं ॥
प्रेमप्रीति करि जो हरि ध्यावै ❋ सो नर नारि अभयपद पावै ॥
नरनारी कछु नाहिं बिचारा ❋ प्रभुको केवल प्रेम पियारा ॥

दोहा—भाव तियनको धारि उर, तहँ हरि कृपानिकेत ॥
सखन सहित भोजन करत, रुचि सों प्रीति समेत ॥

सो०—ब्रह्मलोक लौं शोर, ग्वालनके सँग खात हरि ॥
छीनि छीनिकै कौर, करत परस्पर हासरस ॥

अति हित भोजन तहँ हरि कीनो ❋ सखावृन्दको अति सुख दीनो
वनमें फिरत चरावत गैयां ❋ बैठे आय कदम की छैयां ॥
भये सखा सिगरे इकठाहीं ❋ गैयां बगर रहीं वनमाहीं ॥
दुपहर घाम जान मनमाहीं ❋ लागे चलन सघन वनछाहीं ॥
बैठे ग्वालबाल चहुँ उरियां ❋ आगे धरीं दूधकी घरियां ॥
मध्य श्याम सुन्दर नँदनन्दा ❋ उडगणमें[2] जिमि पूरणचन्दा ॥
मोर मुकुट कटि कछनी काछे ❋ कोटि कामकी छबिको बाछे ॥
कबहूं मुरली मधुर बजावैं ❋ कबहुँ सखन मिलि सारँग गावैं॥

१ स्त्रीनको । २ तारागणनमें ।

कोऊ सखा नृत्यको करहीं ❀ कोऊ टटकारी उच्चरहीं ॥
करत केलि ऐसे बन माहीं ❀ देखि देखि सुरवृन्द सिहाहीं ॥
कोऊ ताल बजावत नीके ❀ उपजावत कोउ आनँद जीके ॥
कहत धन्य ये ब्रजकी बाला ❀ विहरत जिन सँग कृष्ण कृपाला ॥
दोहा—धन्य विटप धनि भूमि यह, धनि वृन्दावन चन्द ॥
धनि ब्रज कहि वर्षैं सुमन, रीझ रीझ सुरवृन्द ॥
सो०—मन मन देव सिहाहिं, वन विहार हरिको निरखि ॥
श्री वृन्दावन माहिं, हम न भये द्रुमलता तृण ॥
श्रीदामा सब कह्यो बुझाई ❀ खेलहिमें सब रहे भुलाई ॥
गैयां कितहिं चरति को जानें ❀ यह सुनिके सब खेल भुलानें ॥
जित तित हेरनेको उठि धाये ❀ गैयां जाय घेरि लै आये ॥
जे सुरभी आईं नहिं जानी ❀ चरत सघन वन मांझ सयानी ॥
तिनको तरु चढि कान्ह बुलाईं ❀ मुरली टेर सुनत उठि धाईं ॥
ऐसी गैयां श्याम सधाईं ❀ मुरली सुनि सब हरिपै आईं ॥
जब जब गैयन श्याम बुलावैं ❀ हूंहूं करि सब हरिपै आवैं ॥
तिनपर कर फेरत मनमोहन ❀ पीतांबर सों झारत छोहन ॥
करत प्यार तिनपर वनमाली ❀ हस्तकमल की सब प्रतिपाली ॥
हरिको निरखि गाय सुख पावैं ❀ तिनके भाग्य कहत नहिं आवैं ॥
जब हरि गैयन करसों परसैं ❀ लखि २ कामधेनु मन तरसैं ॥
कहत कहा जो कामद कीनो ❀ हमको विधि ब्रज जन्म न दीनो ॥
दोहा—धनि २ ब्रजकी धेनु ये, चारत त्रिभुवन नाथ ॥
झारत पोंछत दुहत नित, हितकारि अपने हाथ ॥
सो०—मनहीं मन पछिताहिं, कामधेनु ब्रज धेनु लखि ॥

१ देवगण । २ ढूंढनेको । ३ देखके